व्यवस्थाविवरण की प्रस्तावना

(1) महत्व :

(क) यह पुस्तक पुराने नियम की उन चार पुस्तकों में से एक है, जिन्हें नये नियम में प्राय: दुहराया गया है । (‘उत्पत्ति’, ‘व्यवस्था विवरण’, ‘भजन स.’ और ‘याशायाह’) व्यवस्थाविवरण को 83 बार नया नियम में लिया गया है ।

(ख) जे.ए. थॉम्पसन, टिण्डेल पुराना नियम रीका क्रम “व्यवस्थाविवरण” में लिखते हैं :-

> “व्यवस्थाविवरण पुराने नियम की पुस्तकों में एक महान पुस्तक है, बाईबल के अन्य सभी पुस्तकों की अपेक्षा व्यवस्था विवरण गृहस्थ संबंधी एवं निजी धर्म के सभी वर्गों को प्रभावित करते हुए बेहतर शासित हुई है ।” (प्र.क्र.11)

(ग) यह पुराने नियम की पुस्तकों में, प्रभु यीशु मसीह की प्रिय पुस्तक रही होगी :

- (1) जब यीशु की परीक्षा शैतान के द्वारा जंगल में हो रही थी, तब बार-बार यीशु ने इस पुस्तक के वचनों का इस्तेमाल किया
  - (i) मत्ती 4:4, लूका 4:4 – व्य : 8:3
  - (ii) मत्ती 4:7, लूका 4:12 – व्य : 6:3
  - (iii) मत्ती 4:10, लूका 4:8 – व्य 6:13
- (2) पहाड़ी उपदेश कदाचित् यह एक बाह्य रूपरेखा अनुमोदन में है । (मत्ती : 5-7)
- (3) प्रभु यीशु मसीह ने व्य: 6:5 को लेते हुए, इसे सभी आशाओं में मुख्य आशा बताया है । (मत्ती 22:34-40, मर: 12:28-34) लूका : 10:25-28)
- (4) प्रभु यीशु मसीह ने पुराने नियम की इन भागों को (उत्पत्ति-व्यवस्थाविवरण) को प्राय: अधिकांश लिया, क्योंकि प्रभु यीशु के दिनों में यहूदी लोग यह सोचते थे कि यह भाग केनोन (नियम, व्यवस्था) की बहुत ही अधिकारी भाग है ।

(घ) परमेश्वर के द्वारा नये स्थान में पिछले प्रकाशन का पुन: व्याख्या करना, यह धर्मग्रन्थ में एक मुख्य उदाहरण है । निर्ग: 20:11 और व्य: 5:15 एक उदाहरण के तौर पर यह दस आशाओं के बीच थोड़ी भिन्न होगी ।

निर्ग : 20 जो है सीनै पर्वत पर दिया गया, जो जंगल परिभ्रमण से संबंधित है । जबकि व्य: 5, मोआब की भूमि पर लोगों को तैयार करने के लिए, जब वे वुनान देश में प्रवेश करके उस पर अधिकार करने ही वाले थे ।

(ङ) व्यवस्थाविवरण संदेशों का एक क्रम हैं, जिसे मूसा के द्वारा मोआब की भूमि (पूर्वी यरदन) पर दिया गया, सभी तीन उपदेश जो है वो सभी एक स्थान की नियुक्ति का उपदेश है । सभी शायद एक ही स्थान को दर्शाये –

(1) ‘‘यरदन के पार जंगल में अर्थात सूप के सामने के अराबा में और पारान और तोपेल के बीच और लातान हसेरोत और दीफाहाब में,’’ व्य: 1:1

(2) ‘‘यरदन के पार मोआब देश में’’, व्य : 1:15

(3) ‘‘यरदन के पार बेतपोर के सामने की तराई में,, एमोरियों के राजा हेशबोनवासी सीहोन के देश में,’’ व्य: 4:46

(4) ‘‘मोआब के देश में,’’ 29:1

(य) व्यवस्थाविवरण, पुराने नियम के विद्वानों के बीच आज एक वार्तालाप को केन्द्र बना हुआ है । व्यवस्थाविवरण और पंचतत्व के बाकी पुस्तकों के बीच के साहित्यिक रचना के सिद्धांतों के विषय पर आधुनिक विद्या विभाजित है ।

(2) पुस्तक का नाम :

(क) इब्रानी भाषा में पुस्तकों के नाम तानख (पंचतत्व) उनके प्रथम दस शब्दों में एक है । सामान्य रूप में उनका प्रथम शब्द :

(1) उत्पत्ति, ‘‘आदि में’’

(2) निर्गमन, ‘‘ये है उनके नाम’’

(3) लैव्यवस्था, ‘‘और उसने बुलाया’’

(4) गिनती, ‘‘मरूस्थल में’’

(5) व्यवस्थाविवरण, ‘‘जो बातें कही, वे ये हैं’’

(ख) तालमुद में व्यवस्थाविवरण को ‘‘व्यवस्था का दुहराव’’ कहा गया हैं । (मिश्नाह हटोराह – उत्पत्ति 17:18)

(ग) पुराने नियम को चालीस व्यक्तियों के द्वारा (सेप्ट्युजेन्ट LXX) यूनानी भाषा में 250. ई.पू. के लगभग लिखा गया, वे लिखते है कि व्यवस्थाविवरण ‘‘दूसरी व्यवस्था’’ है क्योंकि 17:18 केगलत अनुवाद के कारण (जैसे :– इसकी नकल अपने लिए कर लें)

(घ) हम अपने अंग्रेजी भाषा के शीर्षक में जो जेरोन के बाईबल के लैटिन भावान्तर में हय कहते हैं ‘‘दूसरी व्यवस्था’’ (ड्यूटरोमियम)

(ङ) यह पुस्तक परमेश्वर की वाचा को किस प्रकार हमें रखनी है, उसकी शिक्षा देती है,

(1) ‘‘इस व्यवस्था की पुस्तक में ’’28,:61

(2) ‘‘यह व्यवस्था,’’ 1:5; 4:8, 17:18, 19;27: 3,8,26

(3) दूसरे वाक्य खण्ड में वर्णन 4:1, 45;6:17, 20;12:1

(3) कैननाइजेशन (संत के रूप में अधिकारिक घोषणा):

यह पुस्तक टोरह (व्यवस्था) की पुस्तक में सम्मिलित है । जो इब्रानि नियम के तीनों भागों को एक बनाती है।

(क) टोरह अथवा व्यवस्था - उत्पत्ति - व्यवस्थाविवरण

(ख) भविष्य वक्ताएँ :-

(1) प्राचीन भविष्य वक्ताएँ - यहोशू - राजाओं की पुस्तक (रूत को छोड़कर)

(2) अंतिम भविष्य वक्ताएँ - याशायाह - मलाकी (दानियल और विलावगीत को छोड़कर)

(ग) लिखित पत्र :

(1) मेलीगोथ (5 सूची पत्र)

(i) श्रेष्ठगीत

(ii) सभोपदेशक

(iii) रूत

(iv) विलापगीत

(v) ख्स्तेर

(2) दानियल

(3) बुद्धि साहित्य

(i) बुद्धि साहित्य

(ii) अय्युब

(iii) भजन स.

(iv) नीति वचन

(4) 1, 2 इतिहास

(4) शैली

(क) व्यवस्थाविवरण विभिन्न शैलियों का मिश्रण है

(1) ऐतिहासिक वृतान्त

(i) अध्याय, 1-4

(ii) अध्याय 34

(2) उपदेश - अध्याय 6-11

(3) मार्गदर्शन - 12-28 अध्याय

(4) भजन/स्तुतिगीतें,गीत - 32 अध्याय

(5) आशीर्वाद - 33 अध्याय

(ख) व्यवस्थाविवरण स्वयं एक मार्गदर्शन की पुस्तक के रूप में बखान करती है जो यहोवा की ओर से हमारे जीवन के लिए (टोरह) व्य : 29:21; 30:10; 31:26 यह पुस्तक विश्वास और भविष्य की पीढ़ीयों पर जीवन के नियमों की शिक्षा देती है ।

(ग) परमेश्वर के लिखित प्रकाशन के द्वारा, परमेश्वर का विशेष अगुवा पुन: स्थापित किया गया । मानव अगुवे रहेगें, लेकिन लिखित प्रकाशन एक अधिकारिक जेसे जोर देती है ।

(5) लेखक :

(क) यहूदी परंपरागत

(1) प्राचीन परम्परा एकमत है कि मूसा लेखक था ।

(2) यह निर्दिष्ट में हैं :

(i) तालमुद - बाबा बथरा 14 बी

(ii) मिश्नाह

(iii) बेन सिराच कासभोपदेशक 24:27 (185 ई.पू. के करीब लिखा गया)

(iv) सिकंदरिया का फिलो

(v) फ्लेवियस जोसेफस

(3) स्वयं धर्मग्रन्थ :

(i) न्यायियों 3:4 और यहोशू 8:31

(ii) "मूसा ने कहा" :

1. व्य: 1:1,3
2. व्य: 5:1
3. व्य: 27:1
4. व्य: 29:2
5. व्य: 31:1, 30
6. व्य: 32:44
7. व्य: 38:1

(iii) "यहोवा ने मूसा से कहा" :

1. व्य: 5:4-5, 22
2. व्य: 6:1
3. व्य: 10:1

(iv) "मूसा ने लिखा" :

1. व्य: 31:9, 22, 24
2. व्य: 17:14
3. निर्ग: 24:4, 12
4. निर्ग : 34:27-28
5. गिनती : 33:2

(4) प्रभु यीशु मसीन ने व्यवस्थाविवरण को लेते हुए, निर्दिष्ट किया, "मूसा ने कहा"/ मूसा ने लिखा

(i) मत्ती: 19:7-9, मर. 10:4-4 - व्य. 24:1-4

(ii) मर : 7:10 - व्य, 5:16

(iii) लूका; 16:31, 24:27, 44; यहून्ना 5:46-47, 7:19, 23

(5) पौलूस स्वीकार करता है, मूसा को एक लेखक के रूप में:

(i) रोमियों : 10:19 - व्य. 32:21

(ii) I कुरि. 9:9 - व्य. 25:4

(iii) गल. 3:10 - व्य. 27:26

(iv) प्रे. का. 26:22, 28:23

(6) पतरस पेन्तिकुस्त उपदेश में मूसा को लेखक के रूप में स्वीकार करता है - प्रे.का. 3:22

(ख) आधुनिक विद्या

(1) 18 वीं और 19 वीं शताब्दी के अनेक अध्यात्मवादी, साथ ही ग्रेफ-वेहलअुसेन सिद्धात के अनेक लेखक भी (जे.ई.डी.पी.) स्वीकृत करते हुए कहते है कि योशिय्याह का राज्य जब यहूदा में था तब व्यवस्थाविवरण एक याजक/भविष्यवक्ता के द्वारा उसके अध्यात्मिक सुधार के लिए किया गया, इसका मतलब यह हुआ कि यह पुस्तक लगभग 621 ई.पू. में मूसा के नाम में लिखा गया था ।

(2) वे इस आधार पर कहते है :-

(i) II राजा, 22:8, II इतिहास, 34:14-15, "मुझे यहोवा के भवन में व्यवस्था की यह पुस्तक मिली" ।

(ii) अध्याय 12 तम्बू के सिर्फ एक तरफ के बारे में बताता है, एवं अंतिम मंदिर के विषय

(iii) अध्याय 17 अतीत के राजा के बारे में बताता है ।

(iv) वास्तव में एक मान्य व्यक्ति के नाम में पुस्तक लिखना पहले से ही पूर्वी के पास और यहूदी मंडली में एक सामान्य बात थी ।

(v) लेखन की समानता, शब्दकोष और ग्रामर के बीच व्यवस्थाविवरण और यहोशू, राजाओं और यिर्मयाह में समानता है ।

(vi) व्यवस्थाविवरण में मूसा की मृत्यु पाई जाती है (अध्याय 34)

(vii) पंचतत्व में स्पष्ट अतीत सम्प्रदायिक संबंधी जोड़ :

(1) व्य; 3:14

(2) व्य; 34:6

(viii) कभी-कभी ईश्वरों के विभिन्न को व्याख्या करने में अनुपयोगी : एल, एल, शद्दाई, एलोहीन, यहोवा, ऐतिहासिक काल और संदर्भ में कृत्रिम रूप से एक करता है ।

(ग) स्पष्ट रूप से कुछ सम्प्रदायिक संबंधी जोड़ पाये जाते है । यहूदी शास्त्री मिस्र में प्रशिक्षित थे, जहाँ वे लगातार प्राचीन मूल शब्द को आगे पीछे करते थे । मेसोपोटामियन शास्त्री भौतिक वस्तु को जोड़ने में असंतुष्ट थे । व्यवस्थाविवरण में कुछ उदाहरण है :-

(1) 27:3;8 (2) 28:5 8 (3) 29: 21, 29 (4) 30:10-19

(5) 31:24

(6) दिनांक :

(क) यदि मूसा के द्वारा लिखा गया है तो तब भी दो संभावनाएं समय से संबंधित और मिस्र से निर्गमन के दौरान :

(i) यदि I राजा 6:1 यथाशब्द हेतु लेते है तब लगभग 1445 ई.पू. (थुतमोस III और अमेनहोटेप II का 18 वां राजवंश)

(1) LXX के पास 480 वर्ष के बजाय 440 वर्ष है ।

(2) यह गिनती पीढ़ीयों को प्रभावित कर सकती है न कि सालों या वर्षों को (लाक्षणिक संकेत)

(ii) पुरातत्व घटनाएँ 1290 ई.पू. निर्गमन के लिए (19 वीं मिस्र राजवंश)

(1) I सेती (1390-1290) थेबेस से डेल्टा प्रदेश - जोमान/टेनिस से मिस्र में आया ।

(2) रामेसेस II (1290-1224)

(अ) उसका नाम एक शहर में पाया गया, जिसे इब्रानी गुलामों ने बनाया था ।

(ब) उसके पास 47 पुत्रियाँ थी ।

(स) उसके बड़े पुत्र के कारण वह सफल नहीं हो पाया ।

(iii) पलिशितियों के सभी मूख्य दिवारों से घिरे शहर नष्ट किये गये और दुबारा उन्हें 1250 ई.पू. के लगभग बनाया गया ।

(ख) अनेक लेखकों की आधुनिक विद्या सिद्धांत :

(i) जे (J) यहोवा - 950 ई.पू.

(ii) ई (E) एलोहीम - 805 ई.पू.

(iii) जेई (JE) सन्धि - 750 ई.पू.

(iv) डी (D) व्यवस्थाविवरण - 650 ई.पू.

(v) पी (P) पुरोहित, याजक - 400 ई.पू.

7. ऐतिहासिक योजना प्रमाण के मूल कारण :

(क) 2000 ई.पू. के हित्ती लेख हमें एक आधुनिक, ऐतिहासिक समकालिक सदृश व्यवस्थाविवरण (साथ ही निर्गमन - लैव्य. और यहोशू 24) का ढाँचा प्रस्ताव करते है । यह लेख नमूना 1000 ई.पू. में बदला गया जो हमें व्यस्थाविवरण की ऐतिहासिक घटना देते है । और आगे पढ़ने के लिए इन क्षेत्रों में, देखें जी.ई. मेण्डेनहाल के नियम और वाचा इस्राइल में और प्राचीन पूर्व के पास और एम.जी. क्लिने, महान राजा की लेख ।

(ख) हित्ती आदर्श और इसकी व्यवस्थाविवरण सदृश :

(i) प्रस्तावना (व्य. 1:1-5, वक्ता की परिचय, यहोवा)

(ii) राजा के पिछले कर्मो की पुर्ननिरीक्षण (व्यक्ष 1:6- 4:49, परमेश्वर के द्वारा इस्राइल के लिए, पिछले कर्म)

(iii) मेल संबंध (व्य. 5–26)

(अ) सामान्य (व्य. 5–11)

(ब) विशेष्य (व्य. 12–26)

(iv) संधि पत्र का परिणाम (व्य. 27–29)

(अ) लाभ (व्य. 28)

(ब) परिणाम (व्य. 27)

(v) ईश्वर की गवाह (व्य. 30:19, 31:19, 32 भी, मूसा के गीत एक गवाह के रूप में कार्य करते है)

(अ) संधि पत्र की प्रतिलिपि ईश्वर के मंदिर में रखी गई ।

(ब) संधि पत्र की प्रतिलिपि मंदिर के बर्तन में रखा गया ताकि वर्ष में एक बार पढ़ा जाए ।

(स) उत्तर काल के असिरिया और सिरिया लेख से हित्ती लेख का अनोखापन था:

(1) राजा के पिछले कर्मों का ऐतिहासिक पुर्ननिरीक्षण

(2) श्रापित भाग कम बोला गया था ।

(ग) 1000 ई.पू. में हित्ती संधि पत्र आदर्श थोड़ा (एक भाग निकाल दिया गया) बदल दिया गया था, व्य. का नमूना, मूसा और यहोशू के समय में अच्छा अनुकुल है ।

(घ) हित्ती लेखों के अच्छे वार्तालाप के लिये देखें, के ए.किचन, प्राचीन पूर्व दिशा और पुराना नियम, पृ.क्र. 99–102

(8) साहित्य संबंधी ईकाई (संदर्भ)

(क) पुस्तक की प्रस्तावना, 1:1–5

(ख) प्रथम प्रवचन, 1:6–4:43 (आज के लिए यहोवा का पिछला कर्म)

(ग) द्रितीय प्रवचन, 4:44–26–19 (यहोवा की व्यवस्था, आज और प्रत्येक पिन के लिए)

(i) सामान्य – दस आज्ञाएँ (5–11)

(ii) विशेष उदाहरण और प्रार्थना पत्र (12–26)

(घ) तृतीय प्रवचन, 27–30 (यहोवा की व्यवस्था भवष्यि के लिए 27–29)

(i) श्राप (27)

(ii) आशीषें (28)

(iii) नवनिर्मित वाचा (29–30)

(ङ) मूसा के अंतिम वचन, 31–33

(i) "अलविदा" प्रवचन, 31:1–29

(ii) मूसा के गीत, 31:30–32:52

(iii) मूसा की आशीषें 31:1–29

(च) मूसा की मृत्यु, 34

(9) वास्तिविक सत्य

(क) वायदे की जमीन में पहुंचने से पहले अंतिम तैयारी। अब्राहम के साथ परमेश्वर का वाचा पूरा हो चुका है। (उत. 15)

(ख) उत. 12:1–3 देश और संतान का वायदा। पुरानानियम, देश पर केन्द्रित करता है; लेकिन नया नियम "संतान" पर ध्यान केन्द्रित करेगा (गल. 5)

(ग) मूसा लोगों को तैयार करता है एक स्थापित कृषि संबंध जीवन बनाम एक भ्रमणकारी जीवन। वह सीनै बाधा को लेता है वायदे की जमीन के लिए। एक मतलब में व्यवस्थाविवरण इस्रायल का सविधान है।

(घ) यह पुस्तक परमेश्वर की विश्वास योग्यता जो भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य में है, प्रदर्शित करती है। वाचा, किसी तरह एक शर्त है। इस्राइल अवश्य प्रत्युत्तर और विश्वास में, पश्चाताप और आज्ञाकारिता में लगातार बने रहें। यदि वह ऐसा नहीं करती तो 27–29 अध्याय का श्राम वास्तव हो जाएगा। मूसा एक मुख्य उदाहरण है परमेश्वर के प्रेम और न्यायका ! यहाँ तक परमेश्वर का विशेष अगुवा आज्ञाकारिता के लिए उत्तरदायी है। अनााकारिता हमेशा परिणामों की ओर ले जाता है।

व्यवस्थाविवरण- 1
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

एन.के.जे.पी.	एन.आर.एस.वी.	टी.ई.वी.	एन.जे.बी.
कनान में प्रवेश की पिछली आज्ञा	ऐतिहासिक पुन:दृष्टि	प्रस्तावना	मूसा की प्रथम वार्तालाप (1:1-4:43) समय और जगह
1:1-8	1:1-5	1:1-5	1:1-3
			1:4-5
			होरेब पर अंतिम शिक्षा
	1:6-8	1:6-8	1:6-8
जाति संबंधी अगुवे की नियुक्ति		मूसा न्यायियों को नियुक्त करता है	
1:9-18	1:9-18	1:9-15	1:9-18
		1:16-18	
इस्राइल अस्वीकार करता है देश में प्रवेश करने के लिए		कादेश बर्ने से जासूसों को भेजा जाता है	आदेश इस्राइली विश्वास को खो देते है ।
1:19-25	1:19-21	1:19-21	1:19:28
	1:22-25	1:22	
		1:23-25	
1:26-33	1:26-33	1:26-28	
		1:29-33	1:29-33
इस्राइल के विद्रोह के लिए दंड		प्रभु,इस्राइल को सजा देता है	आदेश पर यहोवा की शिक्षा
1:34-40	1:34-40	1:34-38	1:34-40
		1:39-40	
1:14-46	1:41-45	1:41	1:41-46
		1:42-45	

तीन पाठ्य काल चक्र (देखें पृ.vii, प्रस्तावना भाग में)

निम्नलिखित वास्तविक लेखक का उद्देश्य इस वाक्य खण्ड तुल्यता पर

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टीका क्रम जिसका मतलब है कि बाईबल की व्याख्या करने के लिए आप स्वयं जिम्मेवार है । हम में से प्रत्येक के पास जो प्रकाश है, उसमें चलना अवश्य है । आप, बाईबल और पवित्रात्मा, व्याख्या करने में मुख्य है । आपको इसे एक टीका लिखनेवला के पास नहीं छोड़ना चाहिए । एक स्थान में बैठकर अध्याय को पढ़े, विषय को पहचाने (पाठ्य कला चक्र = 3, पृ.vii) एवं आपके विषय विभाजन के साथ चार आधुनिक अनुवादों को जो ऊपर दिए गये है, तुलनाकरें । वाक्यखण्ड ईश्वर प्रेरणा नही है, लेकिन यह एक मुख्य चीज है जो लेखक का उद्देश्य, कौन सा व्याख्या का ह्रदय है । प्रत्येक वाक्यखण्ड का एक और सिर्फ एक विषय है ।

(1) प्रथम वाक्यखण्ड

(2) द्वितीय वाक्यखण्ड

(3) तृतीय वाक्यखण्ड

(4) इत्यादि

वचन और वाक्यखण्ड अध्ययन

एन.ए.एस.बी. पद, 1:15

जो बातें मूसा ने यरदन के पार जंगल में अर्थात सूप के सामने की अराबा में और पारान और तोपेल के बीच, औरलाबान हस्तेरोत और दीजाहाब में, सारे इस्रालियों से कही वे ये है । होरेब से कादेश बर्ने तक सेईट पहाड़ का मार्ग ग्यारह दिन काहै । चालीसवें वर्श के ग्यारहवें महीने के पहले दिन को जो कुछ यहोवाने मूसा को इस्रालियों से कहने की आज्ञा दी थी, उसके अनुसार मूसा उनसे ये बातें कहने लगा। अर्थात जब मूसा ने एमोरियो के राजा अशतारोतवासी ओग को एद्रेई में मार डाला, इसके बाद यरदन के पार मोआब देश में वह व्यवस्था का विवरणों को करने लगा ।

1.1. “जो बातें” यह पुस्तक के लिये इब्रानी शीर्षक है । इब्रानी क्रिया “कहीं” (बीडीबी 180, केबी 210, पील सिद्धता) संज्ञा “शब्द” से संबंधित है (बीडीबी 182) । क्योंकि स्वयं यह किताब कहती है कि जो बातें मूसा ने कही, मैं विश्वास करता हूं कि यह संभवतया को अलग करती है कि यह बिल्कुल बाद के संपादन करने वाला, संपादक अथवा ग्रंथ संग्रह करने वाले का

काम है । वास्तव में हमारे पास मूसा की बातें है, जो वास्तव में यहोवा के वचन है (7:4, 11:13-14; 17:3; 29:6) यह नही कहना है कि वहाँ कुछ भी संप्रदायक संबंधी जोड़ नहीं है अथवा मूसा स्वयं की मृत्यु का वर्णन किया है । लेकिन वस्तु की मात्रा और अध्यात्म विद्या मूसा की है ।

समान वाक्यखण्ड व्यवस्थाविवरण को भागों में विभाजन करना प्रतीत होता है :

(1) "जो बातें," 1:1 (1:1-5, प्रथम प्रवचन की प्रस्तावना)

(2) "व्यवस्था यह है," 4:44 (4:44-49 द्वितीय प्रवचन की प्रस्तावना)

(3) "यह आज्ञा है,"" 6:1

(4) "वाचा की यह बाते है," 29:1 (तृतीय प्रवचन का प्रारंभ)

(5) "यह आशीष है," 33:1

जबकि मै। लेखक/दिनांक के विवाद संबंधी जारी पर व्याख्याकररहा हू मुझे साफ तौर पर वर्णन करने दो, कि मैं सभी ग्रंथ ईश्वर प्रेरणा से है यह विश्वास करता हू ।
(II तिमु. 3:15-17) । लेखक काऔर दिनांक का संस्करण कामयाबी संस्करण है, न कि ईश्वर प्रेरणा संस्करण । सभी नियुक्त पद का अद्‌भुत लेखक पवित्रात्मा है । क्या यह पूर्व अनुमान विषयक है, जिसे अवश्य पुन: दृष्टि और अध्ययन करना कोई धर्मग्रन्थ का टीका की सुरक्षा है उससे पहले अवश्य ही पुन: दृष्टि और अध्ययन करना चाहिए । ईश्वरीय प्रेरणा और व्यवस्था के सिद्धांत दो खंभे है जहाँ पर बाईबल अधिकृत विश्राम लेते है ।

❖ "**जिसे मूसा ने कहा**" वहाँ बहुत सारे लोग थे, जिन्होने मूसा के साथ मिस्र को छोड़ा था, और यह शारीरिकता में असंभव है उसके लिये कि एक समय में इतने लोगों को बोले । संभवतया मूसा ने बड़ों (प्राचीनों) को बोला और उन्होंने उसे छोटे झुण्ड में बताया अथवा यह एक लिखित दस्तावेज बतलाने की शास्त्रीय पद्धति है ।

❖ **"सभी इस्राइल को" देखें विशेष शीर्षक जो नीचे है ।**

1. **विशेष शीर्षक : इस्राइल (नाम)**

(क) (EL) एल परसिस्टेथ (1) नामों का अर्थ अनिश्चित है (बीडीबी 975)

(ख) (EL) एल आग्रह करने दो (आज्ञार्थ)

(ग) (EL) एल विवाद करने दो

(घ) (EL) एल झगड़ने दो

(ङ) जिसने परमेश्वर के साथ लड़ाई किया (उत. 32:28)

2. पुराने नियम मे ंप्रयोग

(क) जाबोक नदी के पास आत्मिक श्रेष्ठ पुरूष के साथ लड़ाई करने के बाद याकूब का नाम (निकालने वाला, एड़ी पकड़ने वाला, बी.डी.बी. 784, उत. 25:26) बदल गया। इब्रानी नाम जो है कई बार ध्विन क्रीड़ा होते है, न कि शब्द साधनें (32:28)। उसका नाम इस्राइल होता है (उत. 35:10; 32:13)।

(ख) उसके सभी बारह बेटों के लिए एक एकत्रित नाम जैसे इसे उपयोग किया गया है। (उत. 32:32, 49:16, निर्ग: 1:7, 4:22, 28:11, व्य. 3:18, 10:6)

(ग) निर्गमन के पहले औरबाद बारह गोसों के द्वारा यह देश बनाकर नियुक्त किया गया है। (उत. 47:27, निर्ग. 4:22; 5:2) (व्य. 1:1; 18:6, 33:10)

(घ) शाऊल, दाऊद और सुलेमान के संगठित साम्राज्य के बाद गोत्र रेहोबोआ के नीचे अलग हो गया (I शफा :12)

(1) पृथक शुरू होता है यहाँ तक की अधिकारियों के अलगाव से भी पहले (II शमु. 3:10; 5:5, 20:1; 24:9; I राजा 1:35; 4:20)

(2) उत्तरीय गोत्रों को नियुक्त किया जाता है जब तक सामरिया और असिरिया का विनाश 722 ई.पू. में हुआ (II राजा :17)

(ङ) यहूदा का उपयोग कुछ स्थानों में हुआहै (याशा.1, मीका, 1:15-16)

(च) असिरिया और बेबीलोन की देश से बहिस्कृत किये जाने के बाद यह फिर से याकूब के वंशजो के द्वारा एक एकत्रित या संगठित नाम हुआ (याशा; 17:7-9, यिर्म. 2:4, 50:17-19)

(छ) जनसामान्य काउपयोग याजकों से विपक्षता में किया गया है,(इति. 9:2, एज्रा: 10:25, नहे. 11:3)

❖ **"यरदन के पार"** संभवता इसका मतलब "प्रदेश में " (बीडीबी 719)। अगले दो वाक्य बहुत ही विशेष है जैसे कि इस्राइल के तम्बू की भूगोल शास्त्र स्थापन जब मूसा ने उन्हें प्रकाशन दिया। यह एक मुहावरे के लिए हुआ (क) यरदन के पूर्व क्षेत्र (गिनती: 35:14, व्य. 1:1, 5; 4:41, 46, 47, 49) और (ख) पश्चिमी क्षेत्र (व्य. 3:20, 25; 11:30; 9:1) यह संगठित मुहावरों की मांग करता है जिससे कि यह साबित करने पाए कि कौन सी नदी के किनारे का मतलब है (आर.के. हेरीसोन, पुराने नियम की प्रस्तावना पृ.क्र. 636-638)

❖ “**जंगल**” यह रेगिस्तान नहीं है लेकिन न बसने योग्य चारागाह भूमि है (बीडीबी 184)

❖ “**आराबा**” यथा शब्द यह गर्मी से झुलसा हुआ भूमि है (बीडीबी 787)। यह यरदन घाटी को प्रदर्शित करता है (महान रिफ्ट घाटी) जो गलील की झील से अकाबा की खाड़ी (तुर्की से मोझामबिक्यु यथार्थ से) इसलिए यह मृत सागर के उत्तर से दक्षिणी (आधुनिक उपयोगी) दोनों क्षेत्रों को प्रदर्शित करता है और हम ठीक-ठीक कौन सा अभिप्राय है निश्चित नहीं है । यह यरदन का पूर्व किनारा अथवा पश्चिम किरना प्रदर्शित कर सकता है । (11:30) मिस्र से सीनै, बैलगाड़ी से यात्रा पद 1 इस्रालियों का सारांश है ।

❖ “**सूप**” यथा शब्द यह (मिस्त्री ऋण शब्द) “नरकट” है (बीडीबी 693) यह नमक पानी पौधों (योना 2:5) अथवा अधिक सामान्य ताजे पानी पौधों (निर्ग. 2:5) को प्रदर्शित कर सकते है । यहाँ यह अनुवाद हो सकता है, “नरकट का क्षेत्र” या सूप काशहर और पद. 40 से संबंधित हो सकता है (यथा शब्द लाल समुद्र, “नरकट का समुद्र”) ।

❖ “**पारान**” शब्द “पारान” (बीडीबी 803) एक जंगल क्षेत्र को प्रदर्शित कर सकता है जोसीनै के जंगलों का उत्तर में था, लेकिन यहूदिया के जंगलों के दक्षिण (गिनती, 13:3,26) में था कोदश- बर्निया को मरूद्यान को इन जंगली क्षेत्रों में लिया गया है (देखें विशेष विषय 2:1 पर)

❖ “**तोपेल**” इस शब्द का मतलब “सफेद रंग” (बीडीबी 1074), यह एक अनजान स्थान है, लेकिन यह यरदन के पूर्वी तरफ जो मोआब के प्रदेश में प्रकट हुए है ।

❖ “**लाबान**” इस शब्द का मतलब “सफेद” बीडीबी (526 III), यह एक अनजान स्थान है । कुछ विद्वान इसे सीनै से मोआब के मार्ग पर रखते है, (गिनती 33:20-21 का लिबनाह) जबकि दूसरे विद्वान इसे एक शहर या गांव जो मोआब में यरदन के पूर्वी किनारे पर है ।

❖ “**हजेरोत**” यह स्थान का नाम है (बीडीबी 348) जो विद्वानों को लिए स्थापित करने का कारण हो चुका है कि यह स्थापना “अराबा” के बाद प्रदर्शित किया गया है, इस्राइल का तम्बू स्थापना सीनै पर्वत और मोआब की भूमि के बीच रखा गया (1:2) यदि ऐसा है, तो लाबान होगा लिखना (गिनती 33:20-21) और हजेरोत प्रदर्शित करेगा गिनती 33:17-18 । यह वह स्थान या जहाँ हारून और मरियम ने मूसा की अगुवापन या उसकी केतुरा से नये शादी के लिए बड़बड़ाया था । (गिनती : 12)

❖ **“दीजाहाब”** यह नाम (अरामिक “के जगह” और इब्रानी “सोना” के संयोग) मतलब “सोने की जगह” (बीडीबी 191) यहूदी धर्माधिकारियों ने इसे, मिस्रियों ने यहूदियों को सोना दिया जब वे मिस्र को छोड़ रहे थे, वर्णित करते है (निर्ग. 3:22, 11:2, 12:35), लेकिन संदर्भ में यह एक था (क) मोआब में यरदन के पूर्वी किनारा और बाद में दूसरे प्रदर्शित जगह उनके द्वारा जोड़ना या (ख) सीनै पर्वत से मोआब के मार्ग पर

1:2 “होरेब... कोदेश बर्नियां तक ग्यारह दिन का मार्ग” यह पद इस्रालियों की चाल का सारांश हो सकताहै जो होरेब/सीनै पर्वत से कादेश मरूद्यान तक था, लेकिन यदि ऐसा है, यह पद 1 और 3 के बीच अनुकुल नहीं होता है, यह शायद दिखाने के लिए शामिल किया गया है कि यात्रा ग्यारह दिन का मार्ग लिया होगा, लेकिन अविश्वास के वजह से यह पूरा पीढ़ी (38 वर्ष जोड़) लिया । ग्यारह दिन का यह मार्ग होरेब/सीनै पर्वत की भूमि को निश्चित करता है जैसे सीनै प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर में ।

ध्यान दें कि व्यवस्था के दिये जाने के स्थान को “होरेब” कहा गया है । होरेब इब्रानी शब्द में “निरर्थक” या “नाश” (बीडीबी 352, के बी 349), सीनै (बीडीबी 696) इब्रानी शब्द नहीं है और वे दोनों जगह को प्रदर्शित करते है जहाँ मूसा ने इस्राइलियों को यहोवा से मिलाने लाया (होरेब, निर्ग 3:1, व्य. 1:6, 190;4:10, 15; 5:12 और सीनै निर्ग. 19 लैव्य. 7:38;25:1, 26:46, 27:34, गिनती 1:1,9,3:1, 4,14,9:1;5

“होरेब” नाम क्यों ज्यादातर व्यवस्थाविवरण में उपयोग हुआ है और “सीनै” निर्गमन में कई बार अनुपयोग है । मूसाकी लिखावट में विभिन्न साहित्य संबंधी है – यह प्रदर्शित कर सकता है :-

(1) विभिन्न शास्त्रीयों के द्वारा मौखिक पंम्पराएँ ली गई हो ।

(2) मूसा ने विभिन्न शास्त्रीयों को लिया हो ।

(3) कई कारणों से अगले शास्त्रीयों के द्वारा बदलाहट ।

(4) विभिन्न शास्त्रीय

विशेष विषय – सीनै पर्वत की स्थापना :

(क) यदि मूसा यथाशब्द कह रहा था और आलकांरिक रूप से नहीं जो उसने फिरौन को तीन दिन यात्रा के लिए विनती किया (3:18; 5:3, 8:27), यह कोई अधिक लंबा समय नहीं था कि दक्षिणी सीनै प्रायद्वीप में साम्प्रदायिक स्थान पर प्रवेश करने में इसलिए कुछ विद्वान कादेश बर्निया के निकट पर्वत पर रखते हैं ।

(ख) साम्प्रदायिक स्थान को ''जेबेल मूसा'', कहा गया है, पाप के जंगल में इसके संबंध में बहुत बातें है :

(1) पर्वत के पहले अत्यधिक समतल भूमि है ।

(2) व्य. 1:2 कहताहै सीनै पर्वत से कोदश बर्निया तक ग्यारह दिन का मार्ग है ।

(3) ''सीनै'' शब्द इब्रानी शब्द नही हे, शायद यह पाप के जंगल से जुड़ा हो सकता है, जो एक छोटे निर्जन जंगल को प्रदर्शित करता है । पर्वत के लिये इब्रानी नाम होरेब (जंगल) है ।

(4) 400 ए.डी. से सीनै पर्वत साम्प्रादायिक स्थान रह चुका है। यह ''मिधानियो का स्थान'' में है जो सीनै प्रायद्वीप और अरब के बड़े क्षेत्रों में शामिल किया गया है ।

(5) ऐसा प्रतीत होता है कि भौतिक विज्ञान ने निर्गमन खाते में कुछ प्रदर्शित शहर की भूमि को निश्चित कर लिया है । (एलिम, डोफाफाह, रेपीदीम) जैसे सीनै प्रायद्वीप के दक्षिणी किनारे पर स्थित है ।

(ग) सीनै पर्वत की साम्प्रदायिक भूमि स्थापित नहीं हुआ था जब तक ''सिल्विया की यात्रा'' 385-8 ए.डी. के लगभग लिखा गया था । (एफ.एफ.बुस, प्रेरितों के काम की टीका पृ. 151)

❖ **''सेईर की चोटी''** बीडीबी 973 कहता है शब्द ''सेईर'' मतलब हो सकता है (क) बकरी (ख) रावेंदार (ग) रोवेंदार जैसे पेड़ों के साथ अच्छी लकड़ी में, जबकि के.बी 1989 ''रोवेंदार'' इसके यह मतलब करके स्वीकार करता है ।

पुराने नियम में इस शब्द को एदोम के साथ शामिल किया गया है (उत. 14:6, 36:20-21, 30 व्य. 1:2, 44; 2:1, 4-5, 33:2) इसलिए, वास्तविक में यह पर्वतों से पूर्ण क्षेत्र था जिसे एदोन के द्वारा शामिल किया गया था ।

❖ **"कादेश बर्निया"** यह एदोम की सीमा पर एक बड़ी प्रायद्वीप है (गिनती : 20:16) लगभ 50 मीत, बेर्सेवा के दक्षिणी तरफ, चार प्राकृतिक बसंत के साथ । इसके नाम पर दो तथ्य है – प्रथम "पवित्र" जो इब्रानी शब्द से है (बीडीबी 873) । दूसरा अनजान है । यह उनके जंगल परिभ्रमण का धुरा हुआ (गिनती : 13–14)

1:3 "चालीसवां वर्ष" यह सिर्फ व्यवस्थाविवरण में दिनांक है । "चालीस" (बीडीबी 917) कई बार बाईबल में उपयोग हुआ है जो एक लंबे समय को, समय का अनिश्चित अवधि को प्रदर्शित करता है । वास्तविक काल निर्णय लिया 38 वर्ष का प्रतीत होता है (सीनै से मोआब की भूमि तक)

❖ **"ग्यारहवें महीने के प्रथम दिन पर"** लेखक हर प्रकार से स्थान और समय स्थापन के लिये इस्राइल के इन शब्दों पर प्रयास कर रहा है. देखे विशेष विषय जो नीचे है :

विशेष विषय : प्राचीन, पूर्वी कलेण्डर के पास

कानानी I राजा 6:1, 37–38, 8:2	सेमेरियन–बेबीलोन (नीपुर कलेण्डर)	इब्रानी (गीजर कलेण्डर)	आधुनिक अनुरूप
अबीब (जौ की "हरी बालें")	नीसानु	नीसान	मार्च–अप्रेल
जीन (बसंत भड़कीला)	आयारू	इयार	अप्रेल–मई
	सीमानु	सीवान	मई–जून
	दु–उजु	तामुज	जून–जुलाई
	अबु	अब	जुलाई–अगस्त
	उलुलु	एलुल	अगस्त–सितम्बर
इथानीम (सदैव पानी स्त्रोत)	तेसरितु	तीसरी	सितम्बर–अक्टुबर
कुल (वर्षा उत्पन्न पर)	अराह–शम्मा	मारकेशवान	अक्टुबर–नवंबर
	किसलिमु	चीसलेव	नवंबर–दिसम्बर
	तेबितु	तीबेथ	दिसम्बर–जनवरी
	शबातु	शेबात	जनवरी–फरवरी
	अदारू	अदार	फरवरी–मार्च

❖ **"मूसा ने इस्राइल के संतानों को उन सभी बातों के अनुसार बोला , जिसे यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी कि वह उन्हें बताए"** परमेश्वर लेखक है, मूसा चैनल है, लेकिन ये सभी आज्ञाएँ यहोवा के वाचा-बनावट से आती है ।

मूसा के लिखावट में ईश्वरीय नामों के लिए विभिन्नताएँ है - आगे कुछ उदाहरण व्य. 1-4 से ।

(1) प्रभु (यहोवा), 1:3, 8, 27, 34, 37, 41, 42, 43,45; 2:12, 14, 15, 17, 21, 31; 3:2, 20;21, 26 (दो बार); 4:12,14,15, 21, 27

(2) प्रभु (यहोवा) हमारा परमेश्वर (एलोहिम) 1:1, 19,20, 25, 41, 2:29, 36, 37, 3:3, 4:7

(3) प्रभु (यहोवा) आपका परमेश्वर (एलोहिम) 1:10, 21,26,30,31,32, 2:7 (दो बार) 30; 3:18, 20, 21, 22; 4,10, 19, 21 23 (दो बार) 24, 25, 29, 30, 31, 34, 40

(4) प्रभु (यहोवा) परमेश्वर (एलोहिम) आपके पिताओं का 1:11, 21; 4:1

(5) परमेश्वर (एलोहिम) 1:17, 2:33, 4:24 (परमेश्वर ईर्ष्या रखने वाला), 31 (दयालु परमेश्वर) 32, 33

(6) प्रभु (एदोन) परमेश्वर (यहोवा) 3:24

(7) प्रभु (यहोवा) वह परमेश्वर है (एलोहिम) 4:35, 39

बहुत सारे विचार इन तथ्यों के बारे में है :-

(1) अत्यधिक लेखक

(2) अत्यधिक शास्त्री

(3) अध्यात्मवादी अलगाव

(4) शास्त्रीय सत्यता

पुराने नियम के विद्वान समर्पित करे कि लेखक, संग्रह या संकलन, प्रकाशन, और शास्त्री कार्यों को व्यवस्था की किताबों को संगठित या (जोड़ना) करना, पुराने नियम की रहस्य है । हमें अवश्य सावधानी रखनी है कि हमारे आधुनिक पश्चिमी साहित्य सिद्धांत या हमारे एक संघ सैद्धांतिक कल्पना एक और सिर्फ एक व्याख्या न होने पाए । रहस्य मतलब रहस्य ।

विशेष विषय : ईश्वर के लिए नाम

I EL (एल)

1. ईश्वर के लिए जातिगत प्राचीन शब्द का वास्तविक अर्थ अनिश्चित है, हालांकि कई विद्वान विश्वास करते है कि यह ''अकादियन रूट'' सामर्थी होना या ''शक्तिशाली'' होना से आया है । (उत. 17:1, मिनती 23:19, व्य. 7:21, भ.स. 50:1)
2. कनानियों के सब देवताओं के मंदिर में सर्वोच्च परमेश्वर (EL) एल. है (रास समरा मूलग्रंथ)
3. बाईबल में एल (EL) सामान्य तौर पर किसी दूसरे शब्दों के साथ मिश्रित नहीं किया गया है। ये संधियाँ परमेश्वर के विशिष्ट गुण को बताने में सहायक हुई है ।
   (i) एल एलियोन (''सर्वोच्च परमेश्वर ''), उत. 14:18-22, व्य. 32:8, याशा. 14:14
   (ii) एल. - रोई (''परमेश्वर जो देखता है '' या ''परमेश्वर स्वयं को प्रकट करता है '')
   (iii) एल. - शद्दाई (''सर्वशक्तिमान परमेश्वर '' या ''सर्व दयालु परमेश्वर या ऊंचाई का परमेश्वर '')
   (iv) एल - ओलम (''अनंत परमेश्वर '') उत. 21:33 । यह शब्द अध्यात्मिक सिद्धांत के अनुसार दाऊद के साथ परमेश्वर के वायदे को जोड़ा गया है । (II शमु 7:13,16)
   (v) एल - बेरिट (''वाचा का परमेश्वर'') न्या. 9:46
4. एल के साथ समानता :-
   (i) यहोवा, भ.स. 85:8, याशा: 42:5
   (ii) एलोहिम, उत. 46:3; अय्युब 5:8, ''मैं एल हूं'' तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर
   (iii) शद्दाई, उत. 49:25
   (iv) ''ईर्ष्या रखने वाला'' निर्ग. 34:14, व्य. 4:24; 5:9; 6:15
   (v) ''कृपालु व्य. 4:31, नहें. 9:31, ''विश्वासयोग्य व्य. 7:9: 32:4
   (vi) ''महान और अद्‌भुत'' व्य. 7:21, 10:17, नहें. 1:5, 9:32, दानि. 9:4
   (vii) ''ज्ञानी'' I शमु 2:3

(viii) मेरा दृढ़ शरणस्थान : II शमु. 22:33

(ix) "मेरा प्रतिशोध लेने वाला" II शमु: 22:48

(x) "पवित्र याशा" 5:16

(xi) "सामर्थी याशा"; 10:21

(xii) "मेरा उद्धारक" याशा ; 12:2

(xiii) "महान और सामर्थी" यिर्म 32:18

(xiv) "बदला लेने वाला" यिर्म 51:56

5. सभी मुख्य पुराने नियम के नामों का मिश्रण परमेश्वर के लिये यहोशू 22:22 में पाया गया है (एल. एलोहिम, यहोवा, दुहराया गया)

II एलियोन :

1. इसका मूल अर्थ "उंचा", "सर्वोपरि" या "शिरोमणी" (उत. 40:17, राजा; 9:8 II राजा, 18:17,नहे. 3:25, यिर्म 20:2, 36:10, भ स. 18:13)
2. यह एक समानान्तर में उपयोगी हुआ है जो परमेश्वर के अनेक दूसरे नामों/पदवी के लिये है ।
   (i) एलोहिम – भ.स. 47:12; 73:11; 107:11
   (ii) यहोवा – उत. 14:22 ; II शमु 22:14
   (iii) एल – गिनती 24:16
   (iv) एलाह – कई बार दानि. 2-6 और एज्रा 4-7 में हुआ है, टलायर के साथ जोड़ा गया (अरामिक में "ऊंचा परमेश्वर") दानि. 3:26, 4:2, 5:18, 21
3. अन्य जातियों के द्वारा कई बार उपयोग किया गया
   (i) मेल्किसेदेक, उत. 14:18-22
   (ii) बालाम, गिनती 24:16
   (iii) मूसा, देशों के लिये बोला, व्य. 32:8
   (iv) नये नियम में लूकारचित सुसमाचार, अन्य जातियों के लिए लिखा गया, साथ ही यूनानी समानता हुपसिस्टोस इस्तेमाल करता है (1:32, 35; 76; 6:35; 8:28, प्रे.का. 7:48, 16:17

III एलोहिम (बहुवचन), एलोआह (एकवचन) कविता में मुख्यत: उपयोग किया गया है

(i) यह शब्द पुराने नियम के बाहर नहीं पाया गया है ।

(ii) यह शब्द इस्रायल के परमेश्वर या सभी देशों के परमेश्वर को नियुक्त कर सकता है (निर्ग. 12:12, 20:3) अब्राहम का परिवार बहुदेव पूजा संबंधी लोग थे (यहोशू 24:2)

(iii) यह इस्राइलि न्यायियों का प्रदर्शित कर सकता है (निर्ग. 21:6, भ.स. 82:6

(iv) शब्द एलोहिम जो है वो दूसरे आत्मिक लोगों के लिए भी उपयोग हुआ है । (स्वर्गदूत, दुष्टात्मा) व्य. 32:8, (LXX) भ.स. 8:5, अय्युब 1:6, 38:7 यह मानव न्यायियों को प्रदर्शित कर सकती है ।

(v) बाईबल में यह प्रथम शीर्षक/नाम है ईश्वर के लिए (उत.1:1) यह उत: 2:4 तक अन्य उपयोग हुआ, जहाँ यह यहोवा के साथ मिला या जुड़ा । सामान्य तौर पर यह (अध्यात्मिक) परमेश्वर सृष्टिकर्ता संभालने वाला, और इस ग्रह पर सभी को जीवन देने वाला है करके प्रस्तुत करती है । (भ.स. 104)

एल के साथ ये सभी पर्यायवाची है (व्य. 32:15-19) । यहोवा के साथ यह समानान्तरण हो सकता है जैसे भ.स. 14 (एलोहिम) बिल्कुल जैसे भ.स. 53 (यहोवा) दिखता है, अद्भुत नामों में बदलाहट को छोड़कर ।

(vi) हालांकि बहुवचन और देवताओं के दूसरे नामों का उपयोग, यह शब्द कई बार इस्रइल के परमेश्वर के लिए नियुक्त हुआ है । लेकिन अधिकत यह एकवचन क्रिया में होता है जो अद्धेतवाद संबंधी उपयोग को निर्दिष्ट करता है ।

(vii) यह अन्य जातियों के द्वारा कई बार उपयोग किया गया ।

(1) मलिकसेदेक उत. 14:18-22

(2) बालाम, गिनती 24:16

(3) मूसा, सभी जातियों के लिए बोला ; व्य. 32:8

(viii) यह अदभुत है कि एक सामान्य नाम इस्राएल का परमेश्वर जो अद्धैतवाद है बहुवचन में है हालांकि यहाँ निश्चित नहीं है, यहाँ कुछ सिद्धांत दिये गये है :-

1. इब्रानी में अनेक बहुवचन है, अधिकतर जोर देने के लिए हुए है । अधिक निकट संबंधी वाद के इब्रानी ग्रामिटिकल फिचर (व्यारकण रूप) को "गौरव का बहुवचन" कहा गया है, जहाँ बहुवचन एक विचार को गौरवशाली बनाने के लिये हुआ है ।

2. शायद यह दिव्य सलाह को प्रस्तुत करें, जो स्वर्ग में परमेश्वर के साथ मिलता है और वह उसकी आज्ञा देता है (राजा 23:19-23, अय्युब 1:6, भ.स. 82:1, 89:5,7

3. यह भी संभव है कि यह नियें नियम प्रकाशन जो एक परमेश्वर के तीन व्यक्तिव है उसे प्रभावित करें । उत. 1:1 परमेश्वर सृष्टि करता है, उत. 1:2 आत्मा मंडराता है और नये नियम में यीशु परमेश्वर है, पिता को सृष्टि करने में सहायक है (यहून्ना : 1:3, 10, रोमियों 11:36, I कुरन्थि, 8:6 कुलु. 1:15, इब्रा 1:2, 2:10)

IV यहोवा

1. यह नाम ईश्वरीयता को प्रभावित करता है जैसे परमेश्वर वाचा बनाता है; परमेश्वर जैसे उद्धारक, छुड़ाने वाला । मुनष्य वाचा तोड़ देता है । लेकिन परमेश्वर ईमानदार है उसके वचन, वायदा, वाचा में (भ.स.103).

   यह नाम प्रथम प्रदर्शित हुआ एलोहिम के साथ मिश्रित में (उत. 2:4) । उत. 1-2 में दो बार सृष्टि करना नहीं है; लेकिन दो बातें : (1) परमेश्वर ब्रम्हांड का सृष्टिकर्ता (वस्तुत्व और (2) परमेश्वर मनुष्य को विशेष रूप से बनायाख उत. 2:4 विशेष प्रकाशन का का प्रारंभ, मनुष्य के उद्देश्य और विशेष पद के बार में, साथ ही पाप की समस्याऔर विद्रोह शामिल हुए एक अच्छे या गौरवशाली पद के साथ में ।

2. उत. 4:26 में लिखा है "मनुष्यों ने यहोवा को पुकारना शुरू किया (यहोवा) जिस तरह निर्ग. 6:3 यह बताता है शुरू के वाचा वाले लोग (पूर्वजों और उनके परिवार) सिर्फ परमेश्वर को एल-शद्दाई के नाम से जानते थे । नाम,यहोवा सिर्फ एक वर्जित हुआ निर्ग. 3:13-16 विशेष पद; 14 । जिस तरह मूसा की लिखावट में कई बार प्रचालित शब्द के द्वारा शब्द अनुवाद किया न कि निरूप्त किया (उत. 17:5, 27:36, 29:13-35) । कई सिद्धांत होगें, इस नाम के अर्थ को जानने के लिए (आई.डी.बी. सेलिया गया पृ.क्र. 409-11):

   (क) अराबिल मूल भाषा से, "तीक्ष्ण प्रेम दिखाने के लिए"
   (ख) अराबिक मूल भाषा से, "बहना" (यहोवा जैसे आंधी परमेश्वर)
   (ग) अगरटिक (कनानी) मूला भाषा से "बातें करना"
   (घ) एक फोइनीमियन छपाई से, एक कारणात्मक सहभागी अर्थ "वह जो संभालता है", या "वह जो निर्माण करता है" ।

(ङ) इब्रानी क्वेल से "वह जो है" या "वह जो उपस्थित है" (भविष्य के अनुसार "वह जो होगा")

(च) इब्रानी हिफिल से "वह जो मूल (प्रयोजन) करता है" ।

(छ) इब्रानी मूल भाषा से "रहना" (उत.3:20) अर्थ "हमेशा जीवित रहना, सिर्फ जीवता"

(ज) निर्ग: 3:13-16 के संदर्भ से अपूर्ण रीति से एक पूर्ण भाव से उपयोग हुआ "मैं लगातार होऊंगा जो मै हुआ" या "मैं लगातार होऊगां जो मैं हमेशा रहने वाला हूं" (जे.वाश वाट्स, पुराने नियम में सिन्टेक्स की छानबीन, पृ.67) पूरा नाम जो यहोवा है कई बार छोटे रूप में या एक असली रूप से -

(1) याह (हाल्लेलु - याह)

(2) याहु (नामें, उदा - याशायाह)

(3) यो (नामें, उदा. योयल)

3. यहूदियों में यह वाचा का नाम बहुत ही पवित्र हुआ (टेट्राग्रामेटन) यहूदी कहने के लिए डरते थे ताकि वे आज्ञा को न तोड़ दे निर्ग. 20:7; व्य. 5:11; 6:13 । इसलिए उन्होंने इब्रानी शब्द को पूर्ति किया, "मालिक", "गुरू" "पति", "प्रभु"- एडोन या एडोनाई (मेरे प्रभु) उनके पुराने नियम पद में पढ़ते समय यहोवा आये तो वे उच्चारण प्रभु करते, क्यों कि अंग्रेजी अनुवाद में प्रभु लिखा गया है यहोवा आने पर ।

4. जैसे एल के साथ, यहोवा कई बार दूसरे शब्दों के साथ मिलकर अनेक इस्राइल के वाचा के परमेश्वर के चरित्रों को प्रकट करताहै । जबकि कई मिलावट शब्द है, यहां कुछ दिये गये है :-

(क) यहोवा - यिरे (यहोवा पूर्ति करानेवाला), उत. 22:14

(ख) यहोवा - रोफेका (यहोवा चंगाई देनेवाला) निर्ग. 15:26

(ग) यहोवा - निस्सि (यहोवा मेरा संग है) निर्ग. 17:15

(घ) यहोवा - मेल्किसेदेक (यहोवाजो आपको पवित्र करता है) निर्ग. 31:13

(ङ) यहोवा - शालोम (यहोवा शांतिदाता है) क्या 6:24

(च) यहोवा - शाबोत (सेनाओं का यहोवा) । शमु 1:3 11; 4:4, 15:2, कई बार भविष्यवक्ताओं में)

(छ) यहोवा – रो 'ई' (यहोवा मेरा चरवाहा है) भ.सा. 23:1
(ज) यहोवा – सिदकेनु (यहोवा हमारी धार्मिकता है) यिर्म. 23:6
(झ) यहोवा – शम्मा (यहोवा यहाँ है) यहेजकेल : 48:35

1:4

NASB, NRSV **"उसके बाद उसने हराया"**
NKJV **"उसके बाद उसने घात किया था"**
TEN **"उसके बाद प्रभु ने हराया था"**
NJB **"उसने हराया था"**

क्रिया (BDB 645, KB 697 हिलफिन अनिश्चित) मतलब मारना और सैद्धांतिक लपेट से है कि वह यहोवा था । वह प्रथम कारक और सिर्फ कारक है ।

❖ **"सिहोन"** सिहोन (बीडीबी 695) प्रदेश का अमोरि राजाथा, अगला ओग, बाशान काराजा, जो यरदन के पूर्वी तरफ पर है । मूसा को परमेवर ने आज्ञा दिया (2:4–9) कि मोआब औरएदोम (लूत से वंशज जो उसकी पुत्रियों के द्वारा उत. 19:30–38) के यहूदी सबधियों पर आक्रमण ना करें । हेशबोन की राजधानी शहर, मुख्य शहर थी जिसे इस्राइली सैनिकों ने जीता (2:26–37 गिनती 21:21–32)।

❖ **"ओग"** ओग (डीबीबी 728) प्रदेश काराजा, जिसे बाशान कहा जाता है, जहाँ दो बहुत बड़ी शहर थी (यहोशू 2:4) और अनेक गांव (3:1–10) थी । वह रफिम (दानव; 3:11) में से एक था, जिसने कनानपर निवास किया (2:20, यहोशू 12:4) यह इन दानवों की वंशावली थी (2:11) हेब्रोन पर जिसने इस्राइलियों के दो विश्वासयोग्य जासूस के समाचार को तिरस्कृत करने का कारण था (गिनती 13:22)

विशेष विषय – निर्गमन का दिनांक

(क) निर्गमन के दिनांक पर, दो विद्धान राय होगी :

(i) I राजा 6:1 में लिखा है, निर्गमन से सुलेमान के मंदिर बनाये जाने का समय 480 वर्ष का है ।

1. सुलेमान ने 970 ई.पू. में राज्य करना प्रारंभ किया । यह अनुमानित कवारकर के युद्ध को उपयोग करके किया गया है (853 बी.सी) जैस एक निश्चित प्रारंभिक दिनांक ।

2. मंदिर का निर्माण उसके पौधे वर्ष के राज्य में हुआ (965 ई.पू.) और निर्गमन लगभग 1445/6 ई.पू. में घटित हुआ ।

(ii) 18 वीं मिस्री राजवंश में यह घटित हुआ ।

1. फिरौन की क्रूरता होगी थलमोस III (1490–1436 ई.पू.)

2. फिरौन की निर्गमन होगी अमेनहोटेप II (1436–1407 ई.पू.)

(i) यरीहों की सत्यता पर आधारित घटना पर कुछ विश्वास करते है कि अमेनहोटेप के III राज्य के दौरान यशीहों – और मिस्र के बची कुटनीतिज्ञ पत्र व्यवहार घटित नहीं हुआ (1413–1377 ई.पू.)

(ii) अमरना मूलग्रंथ तथ्य कुट–नीतिज्ञ पत्र व्यवहार ओस्ट्रेका पर लिखा गया जो हबिरन कनान की भूमि पर आया, अमेनहोटेप III के राज्य में । इसलिए निर्गमन अमेनहोटेप III के राज्य में घटित हुआ ।

(iii) न्यायियों की अवधि अधिक लंबा नहीं है यदि 13 वीं शताब्दी निर्गमन का दिनांक है ।

3. इस दिनांक के साथ कुछ समस्याएँ :

(क) सेप्ट्युजेन्ट (LXX) के पास 480 साल के बजाय 440 साल है ।

(ख) यह संभवत: है कि 480 वर्ष 12 पीढ़ीयों के 40 वर्ष प्रत्येक के लिए, प्रस्तुत करती है इसलिए आलकांरिक संख्या है ।

(ग) हारून से सुलेमान तक याजकों की 12 पीढ़ीयों है (1 इति. 6) और उसके बाद सलेमान से दूसरे मंदिर तक 13.1 यहूदी, यूनानी समान, पीढ़ीयों को 40 वर्ष की अवधि है (संख्या की चिन्ह) (बिमसन की रिडेटिंग निर्गमन और विजय)

4. तीन निर्धारित विषय जो दिनांक प्रस्तुत करते है :

(क) उत. 15:13, 16 (पृ.का. 7:6) 400 वर्ष की दासत्व

(ख) निर्ग 12:40-41 (गल. 3:17)

1. एम.टी - 450 वर्ष का मिस्त्र में प्रवासी
2. LXX - 215 वर्ष का मिस्र में प्रवासी
3. न्या. 11:26 – जेपे थाह के दिन और (1445 दिनांक सहायक) के बीच 300 वर्ष का है ।
4. प्रे.का. 13:19, निर्गमन, परिभ्रमण औरविजय - 450 वर्ष

5. राजाओं की पुस्तक का लेखक विशेष ऐतिहासिक पदों को उपयोग किया और क्रम गिनती नहीं किया (एडविन थिले, इब्रानी राजाओं की वंशावली पृ.क्र. 83-85)

(ख) पुरात्तव से तीव्र घ्रमाण 1290 ई.पी. या 19 वीं मिस्त्री राजवंश के दिनांक की ओर संकेत करते है ।

1. इसी दिन युसुफ योग्य था उसके पिता और फिरौन से मिलने में । प्रथम, पैदाइशी फिरौन जिसने मिस्र की राजनधानी को फैलाना शुरू किया नील नदी के मुहाने पर त्रिभुजाकार नदी वाहित मिट्‌टी की भूमि से थेबेस के पीछे से, अबारिस/जोन/टेनिस जगह जो पुराना हिकसोस राजधानी थी, शेती I (1390-1290)

(i) यह मिस्र के हिक्सोस राज्य के बारे में दो भागों कीसूचना करता अनुकुल दिखाई पड़ता है ।

(क) एक कब्र के ऊपर लगाने का खड़े बस पत्थर पाया गया रामसेस II के समय स्थापित जो 400 वर्ष पहले से स्मरणार्थ उत्सव की स्थापना की ।

(ii) यह प्रस्तुत करती है कि युसुफ का सामर्थी होना हिक्सोस (सेमिटिक) फिरौन के समय था । नये मिस्री राजवंश निर्ग. 1:8 में प्रकट हुई ।

2. हिक्सोस, एक मिस्त्रि शब्द का मतलब "दूसरी भूमि का राज्यकर्ता" जो एक अन्य मिस्त्री सेमिटिक राजा का एक संघ था जिन्होंने 15वीं और 16वीं राजवशों के दौरान मिस्त्र को संभाला था (1720-1570 बी.सी.) कुछ इन्हें युसस्र के सामर्थी होने से संबंधित करते है । यदि हम 430 वर्ष का निर्ग. 12:40 से 1720 ई.पू. का शेष निकलते है, तो हम लगभग 1290 ई.पू. का दिनांक प्राप्त करेगें ।

3. शेती I का पुत्र रामसेस – II (1290–1224) था । यह नाम निर्ग: 1:11, इब्रानी गुलामों द्वारा बनाये गये अधिकतम शहर में निर्दिष्ट है । और इसी जिला में मिस्र के निकट गोरोन को रामसेस कहा गया है, उत. 47:11, अवारिस/जोआन/टेनिस "रामसेस का घट" के नाम से जाने जाते थे 1300–1100 ई.पू. से ।

4. थुतमोसेस III महान कारीगर के नाम से जानागया, जैसे रामसेस II था ।

5. रामसेस II के पास 47 पुत्रियां थी जो अलग जगहों में रहती थी ।

6. पुरातत्व ने दिखाया कि कनान शहर के बहुत सारी दिवारें (हेजोट, देबीर, लकीरा) तोड़े गए और दुबारा लगभग 1250 ई.पू. में पुन: निर्मित किया गया । अनुमति में 38 वर्ष का जंगल परिभ्रमण अवधि 1290 ई.पू. के दिनांक को यह अनुकुल करता है ।

7. पुरातत्व ने एक उल्लेख प्राप्त किया; इस्राइलियों का दक्षिणी कनान पर होने में, रामसेस के उत्तराधिकारी मरनेपाथ की यादगार पत्थर पर (1224–1214 ई.पू.) (मरनेपाथ का कब्र लुढ़का पत्थर, 1220 ई.पू. दिनांक)

8. एदोम और मोआब ने गत 1300 के ई.पू.में एक मजबूत देश का पहचान को प्राप्त किया । ये देश 15 वीं शताब्दी में (ग्लूयेक) मान्यता प्राप्त नहीं की थी ।

9. पुस्तक का शीर्षक रिडेडिंग द एक्सोडस और कौन्केस्ट, जॉन. जे. बिमसन के द्वारा, शेफिल के राष्ट्र विद्यालय द्वारा छपाई, 1978, सभी पुरात्तव उल्लेख, प्रारंभिक दिनांक के लिए विवाद करता है ।

विशेष विषय – पलिश्तियों के पूर्व इस्राइली निवास

(क) लोगों के अनेक सूची है :

(i) उत. 15:19–21(10)

1. केनाइट 2. केनीजाइट 3. कदमोनाइट 4. हिटाइट
5. पेरिजाइट 6. रिफेम 7. अमोराइट 8. गिरगेशाइट
9. जेरग्रासाइट

(ii) निर्ग. 3:17 (6)

1. केनेनाइट 2. हिटाइट 3. अमोराइट 4. पेरीजाइट
5. हिवाइट 7. जेबूसाइट

(iii) निर्ग. 23:28(3)

1. हिवाइट्स 2. केनेनाइट्स 3. हिटाइट्स

(iv) व्यवस्थाविवरण - 7:1

1. हिटाइटस 2. गिरगेशाइट्स 3. अमोराइट्स 4. केनेनाइट्स
5. पेरिजाइट्स 6. हिवाइट्स 7. जेबूसाइट्स

(v) यहोशू 24:11 (7)

1. अमोराइट 2. पेरिजाइट 3. केनेनाइट 4. हिटाइट
5. गिरगेशाइट 6. हिवाइट 7. जेबूसाइट

(ख) नामों का प्रारंभ अस्पष्ठ है क्योंकि इतिहासिक डाटा की कमी के कारण उत. 10: 15-19 कनान हाम का पुत्र से संबंधित अनेक शामिल करता है ।

(ग) उत. 15:19-21 के लंबी सूची से वर्णित सारांश -

1. केनाइट - बीडीबी 884
- इस्राइली नहीं है
- "कूटकार" या "सुनार" से संबंधित है जो एक धातु का काम करना या संगीत (उत. 4:19-22) को प्रदर्शित कर सकता है ।
- हेब्रोन से उत्तरी सीनै के क्षेत्र को जोड़ता है ।
- जेत्रो, मूसा का ससुर केनाम को जोड़ता है । (न्या 1:16:4:111)

2. केनीजाइट - बीडीबी 889
- यहूदियों का संबंधी
- एदोम की कुल (उत. 15:19;30:15, 42
- नीगेव के निवासी
- यहुदा में संयोग किया (गिनती 32:12, यहोशू 14:6, 14)

3. कदमोनाइट - बीडीबी 870 II
- इस्राइली नहीं है, संभवत: इस्माइल की पीढ़ीयों (उत. 25:15)
- नाम संबंधित "पूर्वियों में रहने वाले से"
- नीगेव में निवास
- संभवत संबंधित "पूर्व के मनुष्य" (अय्युब 1:3)

4.	हिटाइट	–	बीडीबी – 366
		–	इस्राइली नहीं है
		–	हेत की वशांवली
		–	अन्टोलिया की राज्य से (एशिया माहूनर, तुर्की)
		–	कनान में बहुत पहले उपस्थित थे (उत. 23,यहोशू 11:3)
5.	पेरिजाइट	–	बीडीबी 827
		–	इस्राइली नहीं, संभवत : हरियन्स
		–	यहुदा के जंगली क्षेत्र में निवास (उत. 34:30, न्या. 1:4, 16:10)
6.	रिफेम	–	बीडीबी 952
		–	इस्राइली नही है,संभवत: दानव (उत. 14:5, गिनती 33:33 व्य. 2:10–11, 20)
		–	यरदन के पूर्वी किनारे पर निवास
		–	योद्धाओं/नायकों का क्रम
7.	अमोराइट	–	बीडीबी 57
		–	उत्तरी पश्चिमी सेमिरिक संघ लोग, हाम से उत्पन्न हुए (उत. 10:16)
		–	कनान पर निवास के लिए जाति संबंधी उपाधि हुई। (उत. 15:16, व्य. 1:7, यहोशू 10:5, 24:15, II शमु. 21:2)
		–	नाम का मतलब हो सकता है "पश्चिम"
		–	आईएसबीआई, भाग–1, पृ. 119, कहता है शब्द निर्दिष्ट करता है –
		(क)	प्राय: पलिश्तियों का निवास
		(ख)	पहाड़ी देश की आबादी जैसे नीचली भूमि किनारे के लिये बाधा थी।
		(ग)	एक विशेष संघ लोगों के साथ उनका निजी राजा था

8.	केनेनाइट	-	बीडीबी 489
		-	हाम से (उत. 10:15)
		-	सभी जातियों की सामान्य उपाधि, यरदन के पश्चिम कनान में ।
		-	कनान का अर्थ अनिश्चित, संभवत: ''व्यापारी'' या ''लाल-बैगंनी रंग''
9.	गिरगेशइट	-	बीडीबी 173
		-	हाम से उत्पन्न (उत. 10:16) या कम से कम ''एक पुत्र से (उदा. देश का) कनान,'' आईएसबीई,, भाग.2, पृष्ठ 1232)
10.	जेबुसाइट	-	बीडीबी 101
		-	हाम से (उत. 10:16)
		-	जेबुस/शालेम/यरूशलेम के शहर से (यहोशू : 15:63, न्या. 19:10)
		-	यहोजकेल, 16:3, 45 स्वीकृत करता है कि वे एक मिश्रित जाति जो अमोरियों और हित्ती से थे ।
11.	हिवाइट्स	-	बीडीबी 295
		-	हाम से (उत. 10:17)
		-	LXX के अनुवाद में होराइट (उत. 34:2, 36: 20-30, यहोशू 9:7)
		-	कदाचित इब्रानी शब्द ''गुफा'', इसलिए गुफा में रहने वाले ।
		-	वे लबानोन के उच्च भूमि में रहते थे (यहोशू 11:3, न्या. 3:3) II शमु 24:7 में, वे टायर और सीदोन के बाद सूची में आये थे ।

❖ **''अस्ट्रोथ''** इस शहर (बीडीबी 800) का नाम दिया गया, कनानियों के उपज देने वाला परमेश्वर बालआशेरा/अस्टरटे का स्त्री जाति पत्नी कहलाने के बाद । रिफेम को प्रदर्शित करने के कारण, यह संभव है कि इस शहर को उत. 14:5 में उल्लेखित किया गया है ।

❖ **“एड्रेई”** यह “ओग” की बड़ी शहरों में से एक थी (यहोशू 12:4,13:12) इस्राइलियों ने यही तंबू बनाया था । यह यरदन के पूर्वी–किनाने पर मृत सागर के उत्तरी स्थापन है ।

❖ **“मूसा ने वचन दिया”** यह क्रिया (बीडीबी 383, के.बी. 381, हिलफिल सिद्ध) संकेत करता है “इच्छा समर्पण” (उत. 18:27, निर्ग : 2:21, न्या. 19:6) ।

❖ **“व्यवस्था की व्याख्या करना”** इस क्रिया (बीडीबी 93; केबी 106, पील सिद्ध) का मतलब, स्पष्ट करनाया समझने योग्य बनाना । यह शब्द का प्रकटीकरण सिर्फ यहाँ पर और दूसरी दो जगहों पर जहाँ इसे अनुवाद “लिखा” गया है (27:8; इब्रा 2:2) । उपदेश (शिक्षा) जो स्पष्ट या समझने योग्य नहीं है वह व्यर्थ है, और इस पारस्परिक स्वीकृति संदर्भ में, खतरा है ।

शब्द “व्यवस्था” (टोरह बीडीबी 260) इब्रानी शब्द “शिक्षा” या “उपदेश” (4:8, 44; 27:3, 8;26; 28:58, 61; 29:20, 28; 31:9, 11, 12; 32:46) के लिए है । इस संदर्भ में यह मूसा के प्रवचन जिसे इस्राइलियों को, यरीहों से आगे यरदन के पूर्वी ओर, मोआब की भूमि पर, इस्रालियों का मूसा बगैर यरदन पार होने से पहले यह प्रवचन दिया गया ।

एनएएसबी (आगे बढ़ाया गया) मूल ग्रन्थ: 1:6–8

हमारे परमेश्‍वर यहोवा ने होरेब के पास हमसे कहा था, तुम लोगों को इस पहाड़ के पास रहते हुए बहुत दिन हो गए है; इसलिए अब यहाँ से कूच करो, और एमोरियों के पहाड़ी देश को,औरक्या अराबा में, क्या पहाड़ों में, क्या नीचे के देश में, क्या दक्खिन देश में, क्या समुद्र के किनारे, जितने लोग एमोरियों के पास रहते है उनके देश को, अर्थात् लबानोन पर्वत तक, और परात नामक महानद तक रहनेवाले कनानियों के देश को भी चले जाओ । सुनो मैं देश को तुम्हारे सामने किए देता हूं, जिस देश के विषय यहोवा ने अब्राहम, इसहाक और याकूब तुम्हारे पितरों से शपथ खाकर कहा था कि मैं इसे तुमको और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश को दूंगा, उसको अब जाकर अपने अधिकार में कर लों ।

1:6 “यहोवा” यह इस्राएल के परमेश्‍वर के लिए अनमोल नाम है (यहोवा बीडीबी 217) देखें विशेष विषय : ईश्‍वरीय नामों के लिये 1:5

❖ "हमारे परमेश्वर" व्यक्तिगत बहुवचन सर्वनाम एक पारस्परिक स्वीकृति, प्रारंभ करना और सीनै पर स्वीकृत किये जाने को सूचित करता है । एलोहिम ईश्वर का नाम है । यह परमेश्वर सृष्टिकर्ता, पूर्ति करने वाला, सभी सृष्टि निर्माण को संभालने वाला है (उत 11–2:3) देखें, विशेष विषय – ईश्वरीय नामों में 1:3.

❖ "**होरेब**" देखें, लेख पुस्तक 1:2 में ।

❖ "**तुम लोगों के इस पहाड़ पर रहते हुए बहुत दिन बीत गये है**" अब परमेश्वर लोगों से कहता है, यही उनका समय है, जो उसने प्राथमिक अवस्था में उन्हें आज्ञा दी थी, कनान में अधिकार करने के लिए (उत. 15:13–21, गिनती 13–14) । होरेब पर्वत पर लगभग एकवर्ष तक ठहरे रहे । (तुलनात्मक निर्ग. 19:1 के साथ गिनती 10:11)

1:7

एनएएसबी "नई दिशा अपनाते हुए अब यहाँ से प्रस्थान करो"
एनकेजेवी "अब यहाँ से कूच करो "
एनआरएसवी "आपकी यात्रा को पुन: शुरू करो"
टीईवी "तम्बू को तोड़कर और आगे बढ़ो"
एनजेबी "लगातार आपकी यात्रा पर आगे बढ़ो"

प्रथम क्रिया (बीडीबी 815, केबी 937, क्वेल आज्ञासूचक) मतलब "नई दिशा अपनाना" लेकिन यह विभिन्न तरह से उपयोग किया गया है :

1. किसी चीज/किसी को देखने के लिए मुड़ा, निर्ग. 2:12, 16:10, गिनती 12:10
2. इसलिए मुड़ना जैसे कि दिशा को बदलना,उत: 18:22; 24:49, निर्ग. 14:25, 21:33, व्य. 1:7, 24; 2:3; 9:15; 10:5
3. दूसरे देवताओं की ओर मुडना लैव्य 19:4, व्य. 29:18; 30:18, 20
4. सहायता के लिए खोज करना लैव्य. 19:31; 20:6
5. पहुचने से पहले
   (अ) संध्या, व्य. 23:11
   (ब) सुबह, निर्ग. 14:27

द्वितीय क्रिया (बीडीबी 652, केबी 704, क्वेल आज्ञात्मक) का अर्थ "बाहर निकालना", "ऊपर निकालना", "बाहर करना" जो गिनती की पुस्तक में कई बार उपयोग किया गया जब इस्राइली उनके शिविर स्थान की ओर बढ़ रहे थे । इसका इस्तेमाल (प्रयोग) व्यवस्था विवरण में लागतार हुआ है । (1:7, 19, 40:2:1, 24) । यह वास्तिवक रूप में तंबू को खूँटी से बाहर निकालने को प्रकट करती है ।

❖ **"और चले जाओ"** यह तीसरी समानांतर क्वेल आज्ञात्मक है (बीडीबी 97, केबी 112)

❖ पलिश्ति देश के चार प्राकृतिक दशा का खण्ड उत्तर से दक्षिण तक फैलते हुए दर्शाया गया है :

1. "अमोरियो के पहाड़ी देश में" – यह यरदन के पूर्वी किनारा और सीहोन और ओग के राज्य को निर्देश करता है ।
2. "अराबा में" – यह यरदन दर्रा घाटी को निर्देश करता है (बीडीबी 787, 1:1, 17; 2:8, 3:17; 4:49, 11:30; यहोशू ; 8:14, 11:2, 16; 12:3, 18:18)
3. "पहाड़ो के देश में और नीचे के देश में" – यह मृत सागर के पश्चिम और दक्षिण क्षेत्र को निर्देश करता है, बाद में एप्रैम और यहूदाके जातीय बंटवारा हुआ ।
4. "दक्खिन देश में" यह गर्मी से सुलझाया हुआ रेगिस्तान भूमि जो मृत सागर के और पश्चिम दक्खिन में है ।
5. "समुद्र के किनारे" यह समुद्र तट भूमि जो मिस्र से लबानोन तक फैला हुआ है ।

यह सभी एक साथ प्रमाण देने के लिए लिया गया है कि उत. 15 में अब्राहम को देश देने का वायदा किया गया था ।

1.8 पद 8 एक आज्ञाओं का क्रम है :

1. "देखिए" – बीडीबी 906, केबी 1157, क्वेल आज्ञात्मक
2. "जाकर" – बीडीबी 439, केबी 441, क्वेल आज्ञात्मक (देखें विशेष विषय 8:1 में)

❖ **"मैं उस देश को तुम्हारे सामने किए देता हूं"**– इब्रानी शब्द "किये देता हूं" उसी प्रकार है जैसे "दिया गया है" (बीडीबी 678, केबी 733,क्वेल सिद्ध) परमेश्वर अब उन्हें देश दे रहा था जैसे उसने अब्राहम के साथ वायदा किया था (उत. 12:1, क्रम 5; 15:12–21, निर्ग 6:8) लेकिन उन्हें इस पर अधिकार करना था । शर्त रूपी जानकारी यहाँ तक की यह मूल वाचा है (4:1, 5:33, 6:18; 8:1, 16:20; 30:16, 19) ।

❖ **"जिस देश के विषय यहोवाने अब्राहम, इसहाक और याकूब तुम्हारे पितरों से शपथ खाया था"** देखें विषय : पूर्वजों से वाचा का वायदा 9:5 पर ।

देखें 4:37; 6:10; 9:5, 10:11, 15;30:20; उत. 12:5-7, 13:14-17, 15:18;26:3; निर्ग. 32:13; 33:1 । यह देश, दक्षिण में कादेश बर्नियासे बेबलोस और जेफान, जेदाद और लेबो-हामात, उत्तर में (संभवत: यहां तक जैसे पूर्वी दूरी जैसे एप्रात के ऊंचे झील की भूमि, उत. 15:18) देखें मेकमिलन बाईबल एटलस, पृ. 47)

कई स्थानों में जहां वायदे की जमीन के सामान्य सीमाओं का वर्णन दिया गया है (निर्ग. 34:1-12; व्य. 1:6-8; 3:12-20; 11:24; यहोशू 1:3-4) । यह केवल राजा दाऊद के राज्य के समय हीसभी सामान्य क्षेत्र इस्रायल के नियंत्रण में था ।

NASB (आगे बढ़ाया गया) मूल ग्रंथ : 1:9-15

"फिर उसी सयम मैंने तुमसे कहा," मैं तुम्हारा भार अकेले नहीं उठा सकता; क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को यहां तक बढ़ाया है कि तुम गिनती में आज आकाश के तारों के समान हो गये हो । "तुम्हारे पितरों का परमेश्वर तुम को हजार गुणा और भी बढ़ाए और अपने वचन के अनुसार तुम को आशीष भी देता रहें । परन्तु हमारे झंझट और बोझ और झगड़े रगड़े को मैं अकेला कहां तक सहा सकता हूं ? इसलिए तुम अपने अपने गोत्र मं से बुद्धिमान और समझदार और प्रसिद्ध पुरूष चुन लो, और मैं उन्हें तुम पर मुखिया ठहराऊगां । इसकेउत्तर में तुमने मुझसे कहा, जो कुछ तु हमसे कहता है उसका करना अच्छा है । इसएिल मैंने तुम्हारे गोत्रों के मुख्य पुरूषों को जो बुद्धिमान और प्रसिद्ध पुरूष थे चुनकर तुम पर मुखिया नियुक्त किया, अर्थात हजार-हाजर, सौ-सौ, पचास-पचास और दस-दस के ऊपर प्रधान और तुम्हारे गोत्रों के सरदार भी नियुकत किये ।"

1:9 "**उस समय में**" व्यवस्थाविवरण में यह एक पुनरामन वाक्यखण्ड है । प्रथम चार अध्याय यहोवा के अनुग्रहकारी कार्य, इस्रायल सुविधा पर होने की पुन: दृष्टि है। (1:9, 16, 18;2:34; 3:4, 8, 12, 18; 4:14)।

❖ "**मैं तुम्हारा भार अकेले नहीं उठा सकता**" - देखें निर्ग. 18:13-26 में मूसा को मित्रों की सलाह इस समस्या के बारें में (मूसा सिर्फ न्यायाधीश होता है) ।

1.10 "**तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम का यहाँ तक बढ़ाया है**" यह भाग परमेश्वर को वायदे जो पूर्वजों से था(उत: 13:16, 17:2, 20; 22:17; 48:4, लैव्य. 26:9, व्य. 7:13)

❖ **"आकाश के तारों के समान"** – यह वाक्यखण्ड उत. 15:5; 26:4, व्य. 10:22; 28:62में भी पाया गया है । दूसरे समानान्तर वाक्यखण्ड, सुन्दररीति से वर्णन, इस्राइलियों की अनगिनत गिनती (उत. 16:10) है : पृथ्वी की धूत उत. 13:16, 28:14,गिनती 23:10) और "समुद्र की बालू" (उ. 22:17; 32:12) । यह सभी एक व्यक्ति से जो 100 वर्ष की उम्र तक पुत्ररहित था (अब्राहम)

व्य. 1:28 में इस्रायली जो तारों की गिनती से अधिक और वे कनान के वासियों से भयभत होने लगें, क्योंकि उनकी :

1. गिनती
2. आकार
3. दीवारों से घिरी शहर

क्या लोहे के सदृश !

❖ **"तुम्हारे पितरों का परमेश्वर"** यह कई बार उपाधि स्वीकृत करते हुए दुहराया गया है कि वही परमेश्वर जिसने अब्राहम, इसहाक और याकूब से बातचीत किया थाख अब तक उनके पीढ़ीयों के भाग्य और जीवन में सक्रिय है ।

❖ **"तुम को हजार गुणा और भी बढ़ाए"** सामान्य तौर में यह एक मुहावरा वाक्यखण्ड है । संख्या 1,000, दस की अपवत्य (दूबार) थी और इसलिए महानता या बहुतों का चिन्ह है (भ.स. 90:4 ; II पत. 3:8) यहां नीदोते भाग-1, पृ. 417 से अतिशयोक्ति से पूर्ण प्रयोगों की सूची दी गई है :

1. परमेश्वर का कार्य आशीष देने में, व्य. 1:11, अय्युब 42:12, भ.स. 144:13
2. परमेश्वर के वाचा की वायदा व्य. 7:9 ; भ.स. 105:8
3. अविश्वास के कारण संग्रमिक श्राप, व्य. 32:30, याशा. 7:23; 30:17, आमोस 5:3
4. परमेश्वर के प्रभुत्व देना भ.स. 90:4
5. परमेश्वर के वाचा की वायदा, व्य. 7:9 ; भ.स. 105:8
6. परमेश्वर का क्रोध विपरीत परमेश्वर का प्रेम, निर्ग. 34:7, व्य. 5:9-10
7. परमेश्वर का मंदिर में होने की आशीष, भ.स. 84:10

1:12 **"विवाद"** इसका मतलब "मुकदमा" (बीडीबी 936)

1:13 **"चुनना"** यह क्रिया (बीडीबी 396, 12 बी 393) एक केवल आज्ञात्मक है । यह ध्यान दें कि मूसा लोगों को आज्ञ दे रहा था (उनके अगुवों) समाज के लिए, स्वयं के साथ (मूसा नियुक्त करता है) उत्तरदायित्व लेने के लिए । ये नये न्यायाधीश (जाति संबंधी अगुवें) होने वाले थे :

1. "बुद्धिमान" (बीडीबी 314) अर्थ विचारपूर्ण के योग्य और अच्छा चुनने के योग्य (युसुफ ; उत. 41:33, 39; दाऊद, II शमु. 14:20, I राजा, सुलेमान 2:9, 3:12:5:21)
2. "समझदार" (बीडीबी 106, केबी122, निफिल पार्टिसीपेल) अर्थ जिनके पास कार्य स्वतंत्रता, अन्तर जानने, और बुद्धिमता है (युसुफ, उत. 41:33, नकरात्मक में यिर्म ; 4:22)
3. "प्रसिद्ध पुरूष" – बीडीबी 393, केबी 390, क्वेल पेसिव पार्टिसिपेल) यह एक सामान्य शब्द के साथ एक बहुत बड़ी ज्ञान का विषय है ।
   (i) NASB, TEV, NJB, JPSOA – प्रसिद्ध व्यक्ति
   (ii) NKJB – ज्ञानकारी
   (iii) NRSV, REB – प्रतिषिष्ठत
   (iv) JB – प्रमाणित
   (v) NIV – आदरणीय
   (vi) NET– जाना हुआ

❖ **"मैं उन्हें मुखियां ठहराऊंगा"** क्रिया (बीडीबी 962, केबी 1321) एक क्वेल अपूर्ण है, एक लोगों के समूह को ध्यान में रखकर कहा गया है । मूसा इन चुने हुए व्यक्तियों को अगुवाई और न्याय करने के लिए नियुक्त करता है (निर्ग. 1:11; 18:21, व्य. 17:14, 15 न्या. 11:11) किन्तु, वास्तव में यह यहोवा था जिसने "लिया"" (बीडीबी 542, केबी 434, क्वेल अपूर्ण, वी.15) उन्हें, जो परमेश्वर के चुनाव को बताता है (4:20, 34, I राजा 11:37) मानव प्रगति एक अदभुत योजना का अनुसरण करती है ।

1:15 **"हजार-हजार और सौ-सौ, पचास-पचास और दस-दस के ऊपर प्रधान"** ये विभाजन बाद में एक संग्रामिक संघ हुई (निर्ग 18:2डी) देखें नीचे की विशेष विषय :

विशेष विषय : हजार (एलेफ)

यह इब्रानी शब्द हजार के लिए है (बीडीबी 48) । किन्तु यह विभिन्न तरह से प्रयोग हुआ है ।

1. एक पारिवारिक संघ, यहोशू 22:14, न्या. 6:15, I शमु 23:23, जकयहि : 9:7, 12:6
2. एक संग्रामिक संघ, निर्ग. 18:21, 25, व्य.1:15
3. शब्दानुसार हजार, उत. 20:16, निर्ग 32:28
4. एक चिन्ह संख्या,उत. 24:6, निर्ग. 2:6, 34:7, व्य. 7:9, यिर्म. 32:18
5. अगेरीटिक संबंधी अलुफ का अर्थ "मुखिया" उत. 36:15

NASB, NKJV – सरदार
NRSV, TEV – अधिकारी
NJB – शास्त्री

यह शब्द (बीडीबी 1009) एक शास्त्री को वास्तविक रूप से प्रस्तुत करता है, लेकिन यह व्य. 1:15, 20:5, 8, 9 या यहोशू 1:10, 32 के प्रयोग में अनुकुल दिखाई नहीं पड़ता है । इस संदर्भ में यह एक छोटे न्यायी या सहायक जो जातीय संबंधी अगुवे है प्रस्तुत करता है ।

यूएसबी के द्वारा द हेण्डबुक ऑन ड्यूटरोनोमी में लिखेते है "वे प्राचीन के साथ (गिनती 11:16) और न्यायियों (व्य. 16:18, यहोशू 8:33) और संग्रामिक संदर्भ में प्रकट हुए है (व्य. 20:5, 8, 9, यहोशू 1:10; 3:2) पृ. 26

NASB (आगे बढ़ाया गया) मूल ग्रंथ 1:16-18

"और उस समय मैंने तुम्हारे न्यायियों के आज्ञा दी तुम अपने भाईयों के मुकदमें सुना करो और उनके बीच और उनके पड़ोसियों और परदेशियों के बीच भी धर्म से नय किया करो । न्याय करते समय किसी का पक्ष न करना, जैसे बड़े की वैसे ही छोटे मुनष्य की भी सुनता, किसी का मुंह देखकर न डरना, क्योंकि न्याय परमेश्वर का काम है, और जो मुकदमा तुम्हारे लिए कठिन हो, वह मेरे पास ले आना, और मैं उसे सुनुंगा । और मैंने उसी समय तुम्हारे सारे कर्तव्य तुम को बता दिए ।

1:16:17 मूसा ने इन नये न्यायियों को अपक्षवादी होनेकी आज्ञ दी (16:19; 24:17) अपक्षवादी, परमेश्‍वर का एक चरित्र है (10:17) । इस्रायल, एक समाज और लोगों का साधन था जो कि यहोवा के चरित्र को प्रकट करें ताकि यह संसार उनके भरोसे और विश्‍वास में यहोवा के स्थान में आने पाए । पाप में गिरन से (उत. 3) यह परमेश्‍वर की योजना रही है । इस्राइल पराजय हुई, लेकिन आदर्श इस्राइी (यीशु मसीह, याशा. 53) सफल हुआ (यहु.14:5-7, 8-11)

❖ "**परदेशी**" गैर यहूदियों को कानूनी राज्य में बराबरी से व्यवहार करना था (लैव्य. 19:33-34, 34) इस्राइल को उनके साथ अच्छे से बर्ताव करना था (लैव्य 23::22, व्य. 10:19 ; 24:17, 27:19) इस्रायल भी मिस्र में परदेशी थे (निर्ग. 22:21;23:9) और महसूस किये थे ।

❖ "**धर्म से**" देखे नीचे विशेष विषय :

विशेष विषय : धार्मिकता

"धार्मिकता" एक प्रामाणिक विषय है जिसे एक बाईबल के विद्यार्थी केअवश्य ही इस धारणा को एक निजी विस्तृत अध्ययन बनाना चाहिए ।

पुराने नियम में परमेश्‍वर के चरित्र को "खरा" या "धर्मी" के रूप में व्याख्या किया गया है । मेसोपोटामिया शब्द स्वयं एक नदी नरकट से आता है जो एक निर्माण यंत्र के लिए प्रयोग हुआ है जिससे दीवार की सीधाई, समतल और चहारदीवारी को देखने के लिए प्रयोग हुआ था । परमेश्‍वर ने इस शब्द को उसके स्वयं के स्वभाव को लाक्षणिक रूप से प्रयोग होने के लिए चुना । वह सीधा छोर (न्यासी) है जिसके द्वारा सभी चीजे जाँचा गया है । यह धारणा परमेश्‍वर के धर्मिकता और साथ ही साथ उसके सही न्याय को स्वीकृत करती है ।

परमेश्‍वर के स्वरूप और समानता में मनुष्य बनाया गया था (उत. 1:26-27, 5:1, 3, 9:6) मानव जाति, परमेश्‍वर के साथ संगति के लिए बनाये गये थे । सभी सृष्टि परमेश्‍वर और मानव जाति के परस्पर संबंध के लिए विश्राम स्थान या विश्राम आश्रम है । परमेश्‍वर चाहता था कि उसकी अच्छी सृष्टि, मानवजाति, उसे जाने, उससे प्रेम, करे, उसकी सेवकाई करे, और उसके समान होने पॉए । मानवजति के ईमानदारी को जांचा गया (उत. 3) और प्रथम जोड़ी (युगल) इस जांच में पराजय हुए । इसका परिणाम परमेश्‍वर और मानव जाति के बीच में संबंध का दरार आ गया । उत. 3, रोमि 5:12-21)

परमेश्वर ने पुर्नगठन और संगति को बनाने का वायदा किया (उत. 3:15) उसने यह स्वयं की इच्छा और उसके निजी पुत्र के द्वारा किया । मानव जाति दरार को भरने में अयोग्य थे (रोमि. 1:18–3:20) ।

मनुष्य के पतन के बाद, परमेश्वर की प्रथम कदम पुन: स्थापित करने की ओर, वाचा की धारणा के आधार पर उसकी निमंत्रण और मानव जाति का पश्चाताप, विश्वासयोग्यता, आज्ञाकारिता, प्रतिवचन था । क्योंकि मनुष्य के पतन के कारण, मानव विशिष्ट कार्य करने में आयोग्य था (रोमि 3:21–31, गल. 3) । स्वयं परमेश्वर को आरंभिक करना था, मानवजाति जो वाचा विहन करती है संग्रहित करने के लिए । उसने इसके द्वारा ऐसाकिया :

1. यीशु मसीह के कार्य के द्वारा मानव धर्मी की घोषणा (अदालती धार्मिकता)
2. मसीह के कार्य के द्वारा मानव धार्मिकता मुफ्त में दिया जाना (दोष लगाया हुआ धार्मिकता) ।
3. आत्मा के निवास की पूर्ति करना जो धार्मिकता को मानव जाति में उत्पन्न करती है (मसीह के समान, परमेश्वर की समानता का संग्रहण)

किन्तु, परमेश्वर एक वाचायुक्त प्रतियुत्तर की मांग करता है, परमेश्वर आज्ञा देता है (मुफ्त देता) और प्रदान करता है, लेकिन मानव जाति को अवश्य प्रतिउत्तर और प्रतिउत्तर में लगातार देना है ।

1. पश्चाताप 2. विश्वास
3. आज्ञाकारी 4. दीर्घ प्रयत्न

धार्मिकता, इसलिए, एक पारस्पिरिक स्वीकृति, परस्पर संबंध का कार्य परमेश्वरऔर उसके अच्छी रचना के बीच में है । यह परमेश्वर के चरित्र, मसीह के कार्य और आत्मा की सामर्थ के आधार पर है, जिसे प्रत्येक निजी और लगतार प्रतिउत्तर अच्छे से देना है । इस विचार या धारणा को "विश्वास के द्वारा धार्मिकता" कहा गया है । यह धारणा सुसमाचार में प्रकट किया गया है, लेकिन इन शब्दों में नहीं । यह पौलूस के द्वारा परिभाषित मुख्य तौर पर किया गया, जिसने युनानी शब्द "धार्मिकता" को विभिन्न नमुनों में 100 बार से अधिक प्रयोग में लाया है ।

पौलूस, एक शिक्षित रब्बी होकर, डिकाइओस्युन शब्द का उपयोग करताहै यह इब्रानी अर्थ में शब्द एसडी सेप्ट्युजेन्ट में प्रयोग किया गया है न कि युनानी शास्त्र समूह से । युनानी लिखावट में शब्द किसी में जुड़ा हुआ अर्थ में यह हमेशा पारस्परिक शब्द में परिभाषित हुआ है । यहोवा, धर्मी, नीति–विषयक, नैतिक परमेश्वर है । वह चाता है कि उसके लोग सृष्टि

बनायें । यह ईश्वर भक्ति की एक नये जीवन में यह नया परिणाम है (धार्मिकता के लिए रोमन कैथोलिक की दृष्टि) इस्रायल और धार्मिक (परमेश्वर की इच्छा) के बीच में । यह भिन्नता प्रकट होती है इब्रानी और युनानी शब्द में, जो अंग्रेजी में अनुवाद होकर "न्यायी" (समाज) से संबंधित) और "धार्मिकता" (धर्म से संबंधित) है ।

यीशु का सुसमाचार (शुभ संदेश) वह है जो परमेश्वर के साथ संगति के लिए पाप में गिरे मानवजाति के पुन: संग्रहित करना । यह पिता के प्रेम, कृपा और अनुग्रह, पुत्र के जीवन, मृत्यु पुर्नउत्थान, और आत्मा के मंडराने और सुसमाचार की ओर लाने के द्वारा पूरा होगा । धार्मिकता परमेश्वर के द्वारा किया गया मुफ्त कार्य है, लेकिन यह ईश्वर भक्ति से अवश्य शुरू होना है (ऑगस्टीनका पद, जो दोनों को प्रभावित करता है, सुधार महत्व पर सुसमाचार की मुक्तता और रोमन कैथोलिक, प्रेम और विश्वासयोग्यता के परिवर्तित जीवन पर महत्व देते है) सुधार के लिए शब्द "परमेश्वर की धार्मिकता" एक कर्म संबंधसूचक है (परमेश्वर के लिए एक पापी मानव जाति को स्वीकार योग्य बनाने का कार्य (पवित्र आस्था का) जो कैथोलिक के लिए यह एक कर्ता संबंध सूचक है, जो परमेश्र के समान अधिक होने की प्रक्रिया है (अनुभवी प्रगतिशील पवित्रता) । वास्तव में यह निश्चित रूप में दोनों है !!)

मेरी दृष्टि में बाईबल की सभी, उत.4 – प्रका. 20 तक अदन की संगीत में परमेश्वर की एकत्रीकरण करने कीलेखन प्रमाण है । बाईबल की शुरूआत परमेश्वर और मानवजाति की एक सांसारिक योजना में संगति के साथ हाती है (उत: 1–2) और बाईबल उसी योजना के साथ समाप्त होती है (प्रका.21–22) परमेश्वर का स्वरूप और उद्देश्य पुन: संगठित होगा !

ऊपर दिये गये विवादों का प्रमाण लेख, नये नियम के पद्याशों से चुने गए व्याख्या कर रहे है, सुनानी शब्द समूह का :

1. परमेश्वर धर्मी है (परमेश्वर को न्यायी जैस प्राय: जोड़ा गया)
   - अ. रोमि 3:26
   - ब. II थिस्सुलु 1:5–6
   - स. II तिमिथुयुस 4:8
   - द. प्रका. 16:5
2. यीशु धर्मी है
   - अ. प्र.का. 3:14, 7:52, 22:14 (मसीहा का नाम)
   - ब. मत्ती 27:19
   - स. I यहु. 2:1, 29, 3:7

3. परमेश्वर की इच्छा उसके सृष्टि के लिए धर्मी है

अ. लैव्य. 19:2

ब. मत्ती 5:48 (5:17-20)

4. परमेश्वर का उद्देश्य पूर्ति करने और धार्मिकता उत्पन्न करने के लिए

अ. रोमि 3:21-31

ब. रोमि. 4

स. रोमि 5:6-11

द. ग. 3:6-14

य. परमेश्वर के द्वारा प्रदान

(i) रोमि. 3:24 ; 6: 23

(ii) I कुरन्थि. 1:30

(iii) इफि. 2:8-9

प. विश्वास से प्राप्ति

(i) रोमि 1:17 ; 3:22, 26, 4:3, 5, 13; 9:30; 10:4, 6, 10

(ii) I कुरन्थि 5:21

(फ) पुत्र के द्वारा कार्य

(i) रोमि 5:21-31

(ii) II कुरन्थि 5:21

(iii) फिलिप्पियों; 2:6-11

5. परमेश्वर की इच्छा पर है कि उसके अनुयायी धर्मी हो

अ. मत्ती, 5:3-48; 7:24-27

ब. रोमि. 2:13; 5:1-5; 6:1-23

स. I लिमिथियुस 6:11

द. II तिमुथियुस 2:22; 3:16

य. I यहु. 3:7

प. I पत. 2:24

6. परमेश्वर, धार्मिकता के द्वारा इस संसार का न्याय करेगा

अ. प्रे. का. 17:31

ब. II तिमु. 2:24

धार्मिकता परमेश्वर का एक चरित्र है, मसीह के द्वारा पापी मानवजाति को मुफ्त में प्रदान किया गया । ये है :-

1. परमेश्वर की एक इच्छा
2. परमेश्वर का वरदान
3. मसीह का कार्य

लेकिन यह धर्मी होने की प्रक्रिया भी है जिसे उत्साह और दृढ़तापूर्वक से अनुसरण करना अवश्य हे, जो एक दिन पूर्ण होगा, द्वितीय आगमन पर । परमेश्वर के साथ संगति उद्धार पर पुन: पहुंचना है, लेकिन पूरे जीवन की प्रक्रिया मृत्यु पर आमने-सामने का सामना करना है ।

यहाँ इस विवाद की समाप्ति के लिए एक अच्छा उद्धरण हुआ है । यह एक शब्दकोष जो पौलूस की औरउसके पतियों जिसे IVP के द्वारा प्रकाशित किया :-

"केल्विन", लुथर से अत्यधिक, जोर देते है परमेश्वर की धार्मिकता संबंध रखने वाले रूप में । लुथर की दृष्टि में परमेश्वर की धार्मिकता ऋणमुक्ति की छबि रखती है । केल्विन हमारे लिए परमेश्वर की धार्मिकता को प्रदान या संदेश (बातचीत) की अद्‌भुत गुण है । (पृ. 834)

परमेश्वर का संबंध विश्वासियों के लिए मेरे पास 3 छबि है :

1. सुसमाचार एक व्यक्ति है (पूर्वी कलिसिया और केल्विन का मत)
2. सुसमाचार सत्य है (ऑगस्टीन और लुथर का मत)
3. सुसमाचार एक जीवन परिवर्तन करने वाला है (रोमन कैथोलिक कलिसिया का मत)

वे सभी सत्य है और एक स्वस्थ, सत्य, मसीही इन्जील संबंधी के लिए एक साथ रखना अवश्य है । यदि एक की भी महत्व समाप्ति या कम हुआ, समस्या प्रकट होती है ।

हमें यीशु को अवश्य अपनाना है !

हमें सुसमाचार पर विश्वास करना अवश्य है !

हमें यीशु की समानता का पीछा अवश्य करना है !

❖ **"न्याय करते समय किसी का पक्ष ना करना"** शब्द "पक्षपात" यर्थाथ "बाह्यआकृति" है (बीडीबी 815) । क्रिया (बीडीबी 647, केबी 699, हिफिल अपूर्ण) का अर्थ "ईनान देना" । बात यह है कि जैसे एक व्यक्ति न्यायी के पास आता है, न्यासी को देखने और पहचानने की प्रयत्न नहीं करना है कि कौन उसके सामने आ रहा था, लेकिन मुकदमा को सुंदर और बिनापक्षपात के सुनना है । न्यायी को हर मुकदमा को बिना पक्षपात के करना है । (लैव्य. 19:15)

❖ **"किसी का मुंह देखकर ना डरना"** - यह क्रिया (बीडीबी III 158, केबी 185,क्वेल अपूर्ण) का अर्थ "डरावन" या "भय" । इस संदर्भ में "भय" अपनाया गया है । व्य. में इस शब्द को दो संदर्भों में उपयोग किया गया है । परमेश्वर के अगुवे/न्यायी मनुष्य के मुकदमें पर भय नहीं होना है, जब वे निर्णय लेते है (1:17) परमेश्वर के लोगों को झुके भविष्यवक्ताओं के संदेशों से भय नहीं रखना है (18:22)

भ.स. में कई बार इस शब्द का प्रयोग वाचा के विश्वासियों की आदर और भय परमेश्वर के लिए है स्पष्ट करने के लिए । (33:8 ; 22:23)

❖ **"जो मुकदमा तुम्हारे लिए कठिन हो, वह मेरे पास ले आना"** मूसा लोगों के लिए परमेश्वर का प्रतिरूप है । वह एक भविष्यवक्ता के जैसे दिखाया गया है (पद:18; 18:15-22)

NASB (लिया गया) मूल ग्रंथ : 1:19-21

"तब हम होरेब से प्रस्थान करके अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञानुसार उस सारे बड़े और भयानक निर्धन प्रदेश में होकर चले, जिसे तुमने एमोरियों के पहाड़ी देश के मार्ग में देखा, और हम कोदशबर्ने तक आए । वहां मैंने तुम सेकहा, तुम एमोरियों के पहाड़ी देश तक आ गए हो जिसको हमारा परमेश्वर यहोवा दे रहा है । देखों, उसदेश को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सामने किए दे रहा है, इसलिए अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उस पर चढ़ो, और उसे अपने अधिकार में ले लो, न तो तुम डरो और न तुम्हारा मन कच्चा हो ।

1:19-25 "तब हम प्रस्थान करके" क्रिया (बीडीबी 652, केबी 740) क्वेल अपूर्ण) निर्गमन के लिए प्राय: उपयोग हुआ है (निर्ग. 12:37; 13:20; 14:15, 16:1; और कई बार गिनती 33 में) । ये आयतें यात्रा से संबंधित है जो सीनै पर्वत से कादेशबर्ने तक है ।

1:19 "होरेब" पवित्र पर्वतों के दो नाम, होरेब और सीनै, पर्यायवाची के रूप में प्रयोग हुए है, होरेब एक 'उपसर्ग' शब्द है । सीनै सिमेटिक नहीं है लेकिन संभवत: जंगल के पाप से संबंधित है । प्रदेश में मरूस्थली सामान्य छोटा पौधा के लिए पाप एक शब्द है । कुछ विश्वास करते है कि होरेब पर्वत पर्यटन और सीनै चोटी है, लेकिन हम वास्तव में निश्चित रूप से नहीं जानते है ।

❖ **"सारे बड़े और भयानक निर्जन प्रदेश में"** सामान्य तौर में शब्द "निर्धन" (बीडीबी 184) का अर्थ बिना निवास करने वाली हरिभूमि, लेकिन यह यात्रा सीनै प्रायद्वीप की मरूस्थली (निर्जन) स्थान से उन्हें पार कर दिया। वहां पर प्राकृतिक पानी का कुछ ही स्त्रोत था। परमेश्वर ने अदभुत रीति से उन्हें चालीस वर्ष की अवधि के दौरान भोजन और जल को प्रदान किया। वर्तमान में, यह मरूस्थल एत–तिह कहा गया है, जिसका मतलब "परिभ्रमण" है। यह यात्रा लगभग 100 मील की दूरी और बहुत विषम देश को पार करना था।

❖ **"अमोरियों के ऊंचे पहाड़ी देश"** यह कनान की भूमि के दक्षिणी भाग को प्रदर्शित करती है।(दक्खिन, अराबा)

❖ "जिसको हमारा परमेश्वर हमें दे रहा है" ईश्वरीय नामों के लिए देखें विशेष विषय 1:3 शीर्षक पर, परमेश्वर ने इनके द्वारा अगुवाई किया :

1. मूसा के वचन।
2. शेकेना महिमा का आकाश, जो तम्बू के ऊपर ठहरा, जब यह इस्रयल के पीछे चला।

❖ **"हम कादेशबर्ने तक आए"** पवित्र के लिए इब्रानी शब्द "कादोश" है (बीडीबी 871) जिससे हम "कादेश" प्राप्त करते है। कादेश–बर्निया का अर्थ "पवित्र – (अनजान) है। संभवत: "पवित्र शहर" या "पवित्र स्थान"। यह इस्राइलियों के लिए एक महत्वपूर्ण निवास स्थान था जैसे यह अब्राहम के लिए था क्योंकि यह क्षेत्र में सबसे बड़ा मरूद्यान था।

1:20–21 ये आयतें टीका लिखने वालों के लिए समस्याओं का कारण बनी हुई है क्योंकि सर्वनाम "हमारा" और "तुम्हारा" के बीच प्रयोग में बदलाहट है। जो व्य. की पूरी पुस्तक में सामान्य है। यचही एक कारण है कि क्यों कुछ लोग विश्वास करते है कि व्य. अनेक लोगों के द्वारा लिखा गया है। मैं सोचता हूं कि मूसा ने लिखा (या समिर्पित किया) प्रकाशनों की धिक संख्या को, लेकिन यह स्पष्ट है कि उसकी लिखावटों को बाद के शास्त्रियों के द्वारा शोधकर प्रकाशित किया गया और मौलिक शास्त्री के व्याख्या क्रमानुसार हो सकते है।

1:21 "देखो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा सामने किए दे रहा है...अधिकार में ले लो" यह शायद एक निर्देश है पद 8 में से, जहां परमेश्वर, मूसा के द्वारा लोगों को देश पर अधिकार करने के लिए कहा जिसे उसने पूर्वजों से वायदा किया था (12:5–7; 13:14–17; 15:18; 26:3)।

यह पद, आयतें 7 और 8 के समान, विभिन्न आशाओं को रखती है :

1. ''देखो'' बीडीबी 906, केबी 1157, क्वेल आज्ञात्मक
2. ''चढ़ो'' – बीडीबी 748, केबी 828, क्वेल आज्ञात्मक
3. ''अधिकार में ले लो'' – बीडीबी 439, केबी 441, क्वेल आज्ञात्मक
4. ''डरो मत'' बीडीबी 431, केबी 432, क्वेल आज्ञार्थक के रूप में प्रयोग
5. ''कच्चा न हो मन'' – बीडीबी 369, केबी 365, क्वेल अपूर्ण, लेकिन आज्ञार्थक के रूप में प्रयोग

NASB, NRSV	–	''न तो तुम डरो और तुम्हारा मन कच्चा न हो''
NKJV	–	''न तो तुम डरो या निरूत्साहित हो ''
TEV	–	''न तो तुम हिचकिचाओं या भयभीत हो''
NJB	–	''न तो तुम भयभीत हो या निरूत्साहित हो ''

ये रूकावटें यहोवा से, उसकी वाचा का वायदा और उपस्थिति में । उनके भरोसे के आधार परथा, यह वाक्यखण्ड पुराने निमयमें 12 बार प्रकट हुआ है (31:8, यहोशू 1:9, 8:10; 10:25 ; I इति 22:13; 28:20 ; I I इति. 20:15, 32:7 ; यिर्म 30:10 ; 46:27) ।

NASB (लिया गया) मूल ग्रन्थ 1:22-25

''तुम सब आकर मेरे पास कहने लगे, हम अपने अपने आगे पुरूषों को भेज देगें जो उस देश का पता लगाकर हम को यह संदेश दें कि हमें कौन से मार्ग पर चलना होगा और किस किस नगर में प्रवेश करना पड़ेगा ? इस बात से प्रसन्न होकर मैंने तुमसे बारह पुरूष, अर्थात प्रत्येक कुल पीछे एक पुरूष चुन लिया और पे पहाड़ पर चढ़ गये और एशकोल नामक नाले पर पहुंचकर उस देश का भेद लिया । उस देश के फलों में से कुछ फल हाथ में लेकर हमारे पास आए और हम को यह संदेश दिया कि जो देश हमारा परमेश्वर यहोवा हमें दे रहा है वह अच्छा है ।''

1:22 गिनती 13:1-3 इस पद के लिए अप्रधान स्थान है । यह कुलों के लिए मूसा की आज्ञाओं का पुन: पुकार है :

1. ''भेजना'' – बीडीबी 1081, केबी1511, क्वेल कोहार्टेटिप
2. ''पता लगाना'' बीडीबी 343, केबी 340, क्वेल अपूर्ण, आज्ञार्थक में प्रयोग
3. ''वापस लाना'' बीडीबी 996, केबी1411, हिलफिल अपूर्ण, आज्ञार्थक में प्रयोग

1:23 "मैंने तुमसे बारह पुरूष, अर्थात प्रत्येक कुल पीछे एक पुरूष" मूसा सुन्दर ढंग से कोशिश और कुल के पीछे प्रत्येक एक पुरूष को शामिल करता है ताकि प्रत्येक खुद को महत्वपूर्ण अनुभव कर पाये ।

1:24 "एश्कोल नामक नाले पर" इस शब्द (बीडीबी 79) का अर्थ "समूह" या "आधार" है । गिनती 13:23-24 कहती है कि वे अंगुर के एक गुच्छे को काटा जो बहुत ही विशाल था तभी यह एक डंडें पर दो व्यक्ति के द्वारा लाया गया । यह कैसा नाला(या वादी) इसका इब्रानी नाम पड़ा, लेकिन पलिस्तिन दक्षिण में यह स्थान अनिश्चित है, संभवत: हेब्रोन के कहीं कुछ निकट (गिनती 13:22, 23)

❖ **"भेद लिया"** भेदिया (बीडीबी 919) जो यह प्रस्तुत करता है कि वे भूमि पर चले । उनके पास सवारी के लिए कोई जानवर नही था यह विश्वास की एक वास्तविक कदम था उनके चलने के लिए पूरे देश में और इसके निवासियों के द्वारा दिखाई दिया जाना है ।

1:25 "जो देश हमारा परमेश्वर यहोवा हमें दे रहा है वह अच्छा है" क्या ही एक अद्भुत या सामर्थीवाला की निश्चिता ! तब भी, वे सैद्धातिक निश्चितता पर कार्य नहीं किये, लेकिन उनके भय पर किये (पद: 21)

NASB (लिया गया मूल ग्रन्थ : 1:26-33)

"तो भी तुमने वहां जाने से मना किया, किन्तु अपने परमेश्वर यहोवाकी आज्ञा के विरूद्ध होकर अपने डेरे में यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे यहोवा हम से बैर रखता है, इस कारण हमको मिस्र देश से निकाल ले आया है कि हमको एमोरियों के वश में करके हमारा सत्यानाश कर डाले । हम किधर जाएँ ? हमारे भाईयों ने यह कहके हमारे मन को कच्चा कर दिया है कि वहाँ के लोग हम से बड़े और लंबे है, और वहां हमने अनानुवाशिंयों को भी देखा है । मैंने तुम से कहा; उनके कारण भय मत खाओ और न डरो । तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जो तुम्हारे आगे-आगे चलाता है वह आप तुम्हारे ओर से लड़ेगा, जैसे कि उसने मिस्र में तुम्हारे देखते तुम्हारे लिये किया, फिर तुमने जंगल में भी देखा कि जिस रीति कोई पुरूष अपने पुत्र को उठाये चलता है, उसी रीति हमारा परमेश्वर यहोवा हमको इस स्थान पर पहुंचने तक, उस सारे मार्ग में जिससे हम आए है, उठाये रहा । इस बात पर भी तुमने अपने उस परमेश्वर यहोवा पर विश्वास नहीं किया । जो तुम्हारे आगे-आगे इसलिए चलता रहा कि डेरे डालने का स्थान तुम्हारे लिए ढूंढे, और रात को आग में और दिन को बादल में प्रकट होकर चला, ताकि तुम को वह मार्ग दिखा जिस से तुम चलो ।"

1.26 “विद्रोही” क्रिया (बीडीबी 598; केबी 632, हिलफिल अपूर्ण) जो व्यवस्थाविवरण में एक सामान्य शब्द होता है (1:26, 43; 9:7, 23,24 ; 21:18, 20; 31:27; और भ.स. में थी) । यह अरामिक कोगनेर में अर्थ होता है “विवाद करने के साथ” और सीरियाक में, “हठ करने के साथ” । यह पूर्ण इच्छा, जाना हुआ अनाज्ञाकारिता को बताता है ।

❖ **“परमेश्वर यहोवा की आज्ञा”** पद 8 और 21 में जोआज्ञा, उनके ऊपर चढ़ने और देश को प्राप्त करने लिए था ।

1.:27 “अपने डेरे में बुड़बुड़ाने लगे” लोग उनके डेरे में बुड़बुड़ाने लगे (बीडीबी 920, केबी 1188, निफिल अपूर्ण) ; वे यह सभी के सामने नहीं कर रहे थे, लेकिन परमेश्वर ने उनके हृदय को देखा (भ.स. 106:25) और जानता था कि वे उसके विरूद्ध में विद्रोह कर रहे थे (“कलंकित कानाफूसी”, नीति 16:28; 18:8, 26:20,22) । परमेश्वर सिर्फ हम क्या कहते हैं उसे ही नहीं जानता (पद 25) लेकिन हमारे हृदय में,हमारी सोच में क्या है वह भी जानता है (गिनती 14: 1-6)

❖ **“परमेश्वर हम से बैर रखता है”** इस पद में लोग परमेश्वर के स्वभाव और विचार को विरोध कर रहे है (9:28) । वे परमेश्वर के प्रावधान और अद्‌भूत वायदों को जो सीनै से कादेश की यात्रा के दौरान किया था सभी को भूल गये थे और उनके वर्तमान स्थिति पर ध्यान देना शुरू कर दिया था जिससे वे स्वयं को भ्रष्ट होने जैसे देख रहे थे ।

1:28 “हमारे भाईयों ने यह कहकर हम को कच्चा कर दिया है” लोगों ने जासूसों पर उनके अविश्वास के लिए निन्दा करने की कोशिश की । शब्द “कच्चा” (बीडीबी 587, केबी 606) एक व्यक्ति के लिए रूपक होते हए भयभीत और इच्छा को खोने से रोकना है । (20:8, यहोशू 2:11; 5:1; 7:5; और संभवत: 14:8) ।

❖

NASB, REB **“बड़े और लंबे”**

NKJV **“महान और लंबें”**

NRSV

NJB, NIV **“समार्थी और लंबे”**

NET **“गिनती में अनेक और लंबे”**

यह विभिन्न अनुवादों से स्पष्ट है कि प्रश्न प्रथम शब्द के बारे में है । क्या यह पर्यायवाची या नये सूचनाओं को यह जोड़ता है ?

विशेषण का मुख्य तौर पर अर्थ ''महान'' है । यह इस्तेमाल किया गया है :

1. फैलाव में महान
2. संख्या में महान
3. अत्यन्तता में महान
4. महत्वता में महान

यह शब्द सामान्य और अत्यधिक रोमान्टिक चौड़ी क्षेत्र है, जो सिर्फ संदर्भ ही इसके अर्थ को स्पष्ट कर सकता है । सेप्ट्युजेन्ट इन शब्दों को समझते है जैसे ''अत्यधिक घना बसा हुआ और समार्थशाली'' । बाकी के अनुवादों की समस्याओं को पुराने निय में ''दानवों '' की जगह में रखा ।

❖ **''अनाकिम''** शब्द का अर्थ यथाशब्द ''लंबी गर्दन वाले'' है । यह दानवों को प्रदर्शित करती है (उत. 6) ।

विशेष विषय : इस शब्द का प्रयोग लंबे/सामर्थी योद्धाओं या जन समूह के लिए किया जाता है

ये बड़े/लंबे/सामर्थी लोग विभिन्न नामों के द्वारा बुलाये गये है :

1. नेफिलिम (बीडीबी 658) – उत. 6:4; गिनती 13:33
2. रिफेम (या तो बीडीबी 952 या बीडीबी 952II) उत. 14:5, व्य 2:11; 3:11, 13;यहोशू, 12:4; 13:12;II शमु. 21:16, 18, 20, 22; I इति. 20:4, 6,8
3. जमजुमिम (बीडीबी 273) जुजिम (बीडीबी 265) – उत. 14:5, व्य. 2:20
4. एमिम (बीडीबी 34) – उत. 14:5; व्य. 2:10–11
5. अनाकिम (अनाक के पुत्रों, बीडीबी 778) – गिनती 13:33; व्य. 1:28; 2:10–11, 21; 9:2, यहोशू 11:21–22; 14:12, 15

❖ **''वहाँ के नागर बड़े बड़े और ऊंचाई आकाश से बातें करती है''** भौतिक शास्त्र से हमने इन शहरों के बारे में कुछ घटना को प्राप्त किया है । लकीश एक दक्षिणी अमोरियों का शहर था, जिसकी दीवार 29 फीट पतली थी । इन शहरों की दीवारें एक प्रासगिंक ऊँची कगूंरा या मीनार था । एक व्यक्ति समझ सकता है कि इस्रायली कैसे घबराये हुये होंगे जब उन्होंने इन शहरों को देखा (''किला बनाना'' बीडीबी 130, केबी 148,क्वेल निष्क्रिय वृदन्त अर्थात् ''पहुंच के बाहर'') ।

यह अतियुक्ति ''आकाश सक बातें करती है'' उसी आलंकारिक तरह से उपयोग हुआ है जैसे बेबिलोन में जिगुरेट्स के नामों का प्रयोग हुआ है । (उत. 11:4) ।

1:29

NASB **''भौचक्के मत हो, न ही उनसे डरो''**
NKJV **''भयभीत मत हो और न ही उनका डर खाओ''**
NRSV **''भय मत खाओ और न डरो''**
TEV **''उन लोगों से भयभीत मत हो''**
NJB **''भय मत खाओ, उन लोगों से भयभीत मत हो''**

प्रथम क्रिया (बीडीबी 791, केबी 888, क्वेल अपूर्ण) अर्थात् ''काँपने का कारण'' । अरामिक में अर्थ ''काँपना'' और सिरियाई में ''दुर्घटना के कारण ऊपर आना या प्रचण्डता से ऊपर आना'' है (:21; 20:3; 31:6) ।

दूसरी क्रिया (बीडीबी 431, केबी 432, क्वेल अपूर्ण) का अर्थ ''भय'' या ''श्रद्धायुक्त'' भय है । यह भय के एिल यह सामान्य शब्द है ।

1. शत्रुओं में – व्य. 1:21, 29; 2:4 ; 3:2,22; 7:18, 19; 20:1, 3; 31:6 यहोशू 11:6
2. पृथ्वी के लोगों को परमेश्वर के लोगों का भय – व्य. 28:10 (यहोशू 4:24) यहोशू 8:24
3. इस्राइल को यहोवा का भय, श्रद्धायुक्त भय, आदर देना है – व्य. 4:10, 5:5; 6:2, 13, 24; 10:12, 20; 13:11; 14:23; 17:13, 19; 19:20; 21:21 25:18, 28:58, 31:12, यहोशू 4:24

1:30 ''तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जो तुम्हारे आगे-आगे चलता है'' यह पद्यांश एक सामर्थी उत्साहना पद्यांश है जो परमेश्वर के विशेष दान को प्रकट करती है उसकी व्यक्तिगत उपस्थिति और प्रावधान । याद रखें पद: 30 में वह युद्ध पर उनके सामने जाताहै (9:3); पद 33 में वह उनकी अगुवाई के लिए निर्धन प्रदेश में उनके सामने सामेन जाता है ।

❖ **''वह आप तुम्हारी ओर से लड़ेगा''**, यह एक ''पवित्र युद्ध'' या हेरेम का उदाहरण है (बीडीबी 355, व्य. 2:24,3:6, 7:2; 20:16-18, यहोशू 6:17,21; 8:26; 10:1,28, 37; 11:12, 20-21) । यह परमेश्वर का न्याय अमोरियों । कनानियों के ऊपर उनके पाप के

कारण था, न कि परमेश्वर उसके लोगों पर कृपादृष्टि कर रहा है (उत. 15:16) । परमेश्वर ने कनान के लोगों को बहुत मौके दिये पश्चाताप के लिए, लेकिन उन्होने पश्चाताप नहीं किया, इसलिए उसका न्याय उनके ऊपर आया था । परमेश्वर अपने लोगों का भी न्याय करेगा, जब वे कनानियों की क्रियाओं को इसी प्रकार करेगें; (असिरिया और बेबीलोन निर्वासन) ! यहाँ, परमेश्वर उसके लोगों को भय मत खाओ कहता है लेकिन उस पर भरोसा रखने कहता है क्योंकि वह उनके पक्ष में है (व्य. 3:22; 20:4, यहोशू 10:14, 42; 11:5-6) !

1:31 "जिस रीति कोई पुरूष अपने पुत्र को उठाए चलता है उसी रीति हमारा परमेश्वर यहोवा हम को उठाये रहा" "उठा चलना" (बीडीबी 669, केबी 724, क्वेल अपूर्ण) शारीरिक रूप से किसी व्यक्ति या किसी चीज कोई उठाना या "किसी को संभालने" को प्रदर्शित कर सकता है । परमेश्वर जैसे पिता (माता-पिता) एक अदभुत बाईबल संबंधी, व्यक्तिगत पारिवारिक रूपक है (8:5, 32:6, निर्ग. 4:22, भ.स. 27:10; 68:5;103:13; निति; याशा. 1:2, 63:16, यिर्म 3:19, होशे 11:1-4, मलाकि 1:6 प्रे.का. 13:18) पुराने नियम में "पुत्र" इस्रायल के लिए, यहोवा के पितृभाव संबंध में संयुक्त रूप है, लेकिन दाऊद राजा और उसके विशेष राजकीय वंशावली के लिए एक व्यक्ति होताहै (मसीहा, भ.स. 2:2, 7; पृ.का. 13:33)

1:32 "इस बात पर भी" यह परमेश्वर के विशेष, व्यक्तिगत उपस्थिति और चिंता को शामिल करता है जो अब्राहम की बुलाहट में लेकर (उत. 13) निर्गमन कि है (निर्ग. - गिनती) ।

❖ **"तुमने अपने उस परमेश्वर पर भरोसा नहीं किया"** क्रिया (बीडीबी 52, केबी 63, हिलफिल कृदन्त) एक मुख्य सैद्धांतिक शब्द है । यह व्यक्तिगत संबंधी केन्द्र वाचा के आधार से है ।

विशेष विषय : विश्वास (पिसटिस (संज्ञा), पिसटियुओं (क्रिया) पिसटोस (विशेषण)

(क) बाईबल के यह एक महत्वपूर्ण शब्द है (इब्रा. 11:1,6) । यह यीशु के प्रचार का विषय है (मर. 1:15) । दो नई वाचा की मांग यहां पर मौजूद है : पश्चाताप और विश्वास (1:15, प्रे.का. 3:16,19; 20:21) ।

(ख) इसके शब्द साधन

1. पुराने नियम में 'विश्वास' शब्द का अर्थ, ईमानदारी, स्वामीभक्ति, या भरोसा करने योग्य और परमेश्वर के चरित्र का व्याख्या (वर्णन) न कि हमारा है ।

2. यह एक इब्रानी शब्द (एमुन, एमुनाह, बीडीबी 53) से आया हुआ है, जिसका अर्थ "निश्चित होना" या स्थिर रहना है । उद्धारक विश्वास एक मानसिक सहमत (सच्चाइयों को रखना), नैतिक जीवन (जीवनकला) और आदि रूप में एक संबंधी (एक व्यक्ति का स्वागतम्) और संकल्पित समर्पण (एक निर्णय) उस व्यक्ति से है ।

(ग) पुराने नियम में इसके प्रयोग

यह अवश्य ही महत्व देना है कि अब्राहम का विश्वास आने वाले मसीहा में नहीं था, लेकिन परमेश्वर का वायदा, कि उससे एक बच्चा और जातियाँ उत्पन्न होगी (उत. 12:2, 15:2-5, 17:4-8, 18:14) । अब्राहम ने इस वायदे का प्रत्युत्तर परमेश्वर में भरोसा रखकर दिया । उसके पास तब तक संदेह औरसमस्याएँ इस वायदे के बारे में था, जिसे पूरी होने के लिए 13 वर्ष का समय लिया था। उसका अपूर्ण विश्वास उसी तरह परमेश्वर के द्वारा स्वीकृत किया गया, परमेश्वर दोषी मानव जाति के साथ काम करने की इच्छा रखता है जो उसे प्रतिउत्तर और उसके वायदे में विश्वास करत है, यहाँ तक यदि उसका आकार एक राई के दाने के बराबर भी हो (मत्ती 17:20) ।

(घ) नये नियम में इसका प्रयोग

शब्द 'विश्वास' जो है यूनानी शब्द (पिसट्यू) से आया है, जिसे "विश्वास करना", निर्भरता और भरोसा रखना, में भी अनुवाद किया जा सकता है । उदाहरण के लिए, यहुन्नारचित सुसमाचार में संज्ञा प्रकट नहीं करता है, लेकिन कई बार क्रिया का प्रयोग हुआ है । यहु. 2:23-25 में यीशु नासरी के समान मसीहा के प्रति जैसे भीड़ की बाहरी प्रयोग के लिये "विश्वास करना" है यहु. 8:31-59 में और प्रे.का. 8:13, 18-24 । एक प्राथमिक प्रतिउत्तर से अधिक बढ़कर वास्तविक बाईबल संबंधी विश्वास है । यह एक चेले की क्रिया के द्वारा इसका अनुसरण अवश्य ही होना चाहिए (मत्ती 13:20-22, 31-32)

(ङ) विभक्ति के साथ इसका प्रयोग

1. एइस का अर्थ "अंदर" । यह अनोखी रचना विश्वासियों को यीशु में विश्वास भरोसा रखने में महत्व देती है ।

(i) उसके नाम में (यहु. 1:12;2:23; 3:18,I यहुन्ना 5:13)

(ii) उसमें (यहु. 2:11; 3:15, 18; 4:39; 6:40, 7:5, 31,39, 48; 8:30; 9:36; 10:42,;11:45, 48; 17:37, 43; मत्ती 18:6, प्रे.का. 10:45, फिलि. 1:29, I पत 1:8)

(iii) मुझमें (यहु. 6:35, 7:8; 11:25, 26) 12:44, 46:14:1,12; 16:9; 17:20)

(iv) पुत्र में (यहुन्ना 3:36; 9:35, I यहु.5:10)

(v) यीशु ने (यहु. 12:11; प्रे.का. 19:4, गत. 2:16)

(vi) ज्योति में (यहु. 12:36)

(vii) परमेश्वर में (यहु. 14:1)

2. *एन* का अर्थ "में" जैसे यहु. 3:15 में, मर 1:15, प्रे.का 5:14

3. *एपी* का अर्थ "मैं" या पर, जैसे (मती 27:42; प्रे. का. 9:42, 11:17; 16:31;22:19, रोमि 4:5, 24; 9:33; 10:11; I तिमु 1:16; I पत. 2:6) में

4. सम्प्रदान कारक के साथ विभक्ति नहीं है जैसे ग. 3:6, प्रे.का. 18:8; 27:25 I यहु. 3:25; 5:10 में

5. *होटी*, जिसका अर्थ "उस पर विश्वास करना" सारणी देता है जैसे क्या पर विश्वास करना है ।

(i) यीशु मसीह, परमेश्वर का एक पवित्र जन है (यहु: 6:69)

(ii) यीशु मसीह "मैं हू" हैं (यहु. 8:24)

(iii) यीशु में पिता और पिता उसमें हैं (यहु. 10:38)

(iv) यीशु, मसीहा है (यहु. 11:27; 20:31)

(v) यीशु, परमेश्वर का पुत्र है । (यहु. 11:27 ; 20:31)

(vi) यीशु, पिता के द्वारा भेजा गया था (यहु. 11:42, 17:8, 21)

(vii) यीशु ही एक, पिता के साथ था (यहुन्ना 14:10-11)

(viii) यीशु पिता से आया हुआ था (यहु. 16:27,30)

(ix) यीशु ने उसका परिचय, परमेश्वर के वाचा नाम में दिया, "मैं हूं" (यहुन्ना 8:24;13:19)

(x) हम उसके साथ रहेगें (रोमि 6:8)

(xi) यीशु मरा और फिर से जी उठा (I थिस्सु. 4:14)

1:33 जो तुम्हारे आगे आगे इसलिए चलता रहा कि डेरे डालने का स्थान तुम्हार लिए ढूंढे, और रात के आग में और दिन को बादल में प्रकट होकर चला, ताकि तुम को वह मार्ग दिखाए जिससे तुम चलो । परमेश्वर लोगों के सामने रात को आग में और दिन को बादल में प्रकट होकर चला, जिसे "शेकेना महिमा की बादल" से जाना जाता है (निर्गध 13:2-22, 11:19, 24; 19:16-18; 20-21; 24:15, 18; 33: 9-10; लैव्य 16:2;गिनती 9:15-23; 14:14 भ.स.74:14) यह बादल ईश्वरीय उपस्थिति का निर्वासन का चिन्ह है और यह पूरे बाईबल में पाया गया है (I राजा: 8:10;एहेज. 1:4 दानि. 7:13; मती: 24:30; 26:64, 26:64, प्रे.का. 1:9-1; I थिस्तु 4:17; प्रका. 1:17) वह बादलों पर आने वाला है ।

NASB (लिया गया) मूल ग्रन्थ : 1.34-40)

"परन्तु तुम्हारी वे बातें सुनकर यहोवा का कोप भड़क उठा, और उसने यह शपथ खाई निश्चय इस बुरी पीढ़ी के मनुष्यों में से एक भी उस अच्छे देश को देखने न पाएगा जिसे मैंने उनके पितरों को देने की शपथ खाई थी । यहुन्ने का पुत्र कालेब ही उसे देखने पाएगा, और जिस भूमि पर उसके पांच पड़े है, उसे मैं उसको और उसके वंश को भी दूंगा; क्योंकि वह मेरे पीछे पूरी रीति से हो लिया है ।और मुझ पर भी यहोवा तुम्हारे कारण क्रोधित हुआ और यह कहा तु भी वहां जाने न पाएगा । नून का पुत्र यहोशू जो तेरे सामने खड़ा रहता है, वह तो वहां जाने पाएगा, इसलिए तु उसको हिसाब दे; क्योंकि उस देश को इस्राइलियों के अधिकार के लिये लूट में चले जायेगें, और तुम्हारे जो बच्चे अभी भले बुरे का भेद नहीं जानते ; वे वहां प्रवेश करेगें, और उनको मैं वह देश दूंगा, और वे उसके अधिकारी होंगे । परन्तु तुम लोग घूमकर कूच करो और ला समुद्र के मार्ग में जंगल की ओर जाओं ।

1:34 **"यहोवा का कोप भड़क उठा और उसने यह शपथ खाई"** यही संदर्भ शपथ खाई (बीडीबी 989 केबी 1396, निफूल अपूर्ण) का प्रयोग हुआ है जब इस्रायल के साथ एक वाचा संबंधी पर परमेश्वर ने स्वयं को रखा था । अनाज्ञाकारिता श्राम के प्रति वाचा के परिणाम पर यहां पर स्वयं को सौंप रहा है । ध्यान दें कि परमेश्वर का वायदा अब्राहम से सफल होने वाली पीढ़िया थी, लेकिनश्राम सिर्फ एक पीढ़ी के लिए था, जो प्राथमिक बुराई (यहोवा का वायदा उन्हें कनान देने में लेकिन उनका अविश्वास) पीढ़ी की थी ।

1:35 सभी सग्रांमिक उम्र के अनुसार (20 वर्ष और उसने ऊपर के), जिन्होने यहोवा की आज्ञा का अनुसरण करने से इन्कार और देश को पाना चाहा, वे सजा को प्राप्त किये और वे निर्जन प्रदेश में उनकी मृत्यु तक घूमते रहे (38 वर्ष तक) नये नियम में इब्रा. की किताब अध्या 3–4 में इस अविश्वास के बारे में बताता है ।

सिर्फ दो जासूसों ने सुनिश्चित वृतान्त को लेकर आया, कालेब (पद. 36) और यहोशू (1:38) अलगावित थे । वाचा की अनाज्ञाकारिता का परिणाम इस्रायल पर और मूसा के लिए वाचा का श्राप या (व्य. 27–29 व्य. 3:26–27) ।

❖ **"अच्छे देश को"** यह एक बार–बार होने वाला आर्वतक संदर्भ है (निर्ग. 3:8 ; व्य. 1:35; 3:25, 4:21; 22; 8:7, 20; यहोशू 23:13) । अच्छी निर्दिष्ट (क) परमेश्वर की उपस्थिति (परमेश्वर अच्छा है, भ.स. 86:5; 106:1; 107:1; 118:1, 29; 145; 9; और आमोस की समानान्तर भी विशिष्ठ चिन्ह है 5:4, 4, 14, 15) और (ख) "जिस देश में मधु और दूध की धारा बहती है" (निर्ग.3:8, 17; 13:5; 33:3; गिनती 13:27; 14:8; 16:13, 14; व्य. 6:3; 11:9;26:9, 15; 27:3; 31:20 यहोशू 5:6) ।

1:36 **"जिस भूमि पर उसके पांव पड़े है"** वह भूमि जिसे कालेब को मिलेगा और हेब्रोन के चारों ओर उसके द्वारा सम्पत्ति पाने को स्थापन किया गया है । हम सोचते है कि यह एश्कोल घाटी के पास ही है (यहोशू 15:13) जहां दानवों का निवास था ।

❖ **"पूरी रीति से"** इसका अर्थ "पूरे मन से" (बीडीबी 569, केबी 583, पील अपूर्ण) यह बिना मिश्रित विचार को प्रकट करता है, कालेब ने यहोवा को उसके पूरे मन से प्रेम किया और उसके पीछे हो लिया । यह एक सच्ची भक्ति का लक्षण है (गिनती 14:24; 32:11–12; यहोशू 14:8, 9, 14; I राजा 11:6) । इस पद्यांश से यह मिलता है, "पूरे मन और ह्रदय के साथ" (व्य. 6:5; 10:12; 13:3; 30:2; I राजा 9:4; 11:4) ।

1:37 **"और मुझ पर भी यहोवा तुम्हारे कारण क्रोधित हुआ"** मूसा स्वयं की अनाज्ञाकारिता के लिए लोगों के ऊपर दोष लगाने की कोशिश कर रहा था (व्य. 3:26; जैसे आदम ने कोशिश किया, उत. 3:12) लेकिन संकेत है गिनती 20:7–13,24; 27:14; व्य. 4:21

क्रिया ''क्रोधित'' (बीडीबी 60, केबी 72),हितपल अपूर्ण) जो है संज्ञा ''नथुना'' या ''नाक'' से आया है । स्पष्ट रूप से यह प्रदर्शित करता है (1) नथुना का जगमगाना जैसे एक क्रोध का शारीरिक चिन्ह या (2) नासिका संबंधी आवाज से घर्घर करना । यह शब्द का प्रयोग अद्वैत क्रोध के लिये स्थिरता से प्रयोग किया गया है (ईश्वर को मनुष्य के आकार का मानना) (निर्ग. 32:12; व्य. 1:37; 4:21, 9:8, 20; II राजा ; 24:20)

इस शब्द का दूसरे रूप में प्रयोग ईश्वरीय संबंध में संदर्भ है ''विलम्ब से क्रोध करता है'' जो परमेश्वर के धीरज और संयम को महत्व देती है (निर्ग. 34:6 गिनती 14:18, नेह. 9:17; निति. 14:29) ।

1.38 **''नून का पुत्र, यहोशू, जो तेरे सामने खड़े होता है''** पद्यांश जो तेरे सामने खड़े होता है ; एक इब्रानी मुहावरा है जो एक अगुवे को प्रदर्शित करता है । यहोशू जो है मूसा का दाहिना हाथ मनुष्य और शायद यह उसके आनेवाली अगुवापन का किरदान की भविष्यवाणी थी ।

❖ **''उसको हियाव दो''** क्रिया (बीडीबी 304, केबी 302, पील आज्ञात्मक) का अर्थ ''समर्थी बनाना'' (3:28) यहोशू 1:6, 7, 9, 18 में यहोवा स्वयं यह करता है ।

❖ **''क्योंकि उस देश को इस्राइलियों के अधिकार में वही कर देगा''** यह वायदा फिर से पूर्वजों से की गई भविष्यवाणी (उत. 12, 15,18, 26) जो उनके पीढ़ियों का कनान पर अधिकार के बारे में था (3:28; 31:7, यहोशू 11:23) ।

1.39 **''फिर तुम्हारे बाल बच्चे जिनके विषय में तुम कहते हो कि ये लूट में चले जायेंगे''** यह गिनती 14:3,31 को प्रदर्शित करता है । क्योंकि युवाओं के अविश्वास के कारण परमेश्वर उनसे कह रहा है कि बच्चे निश्चित उस देश परअकधार करेगें जैसे उसने वायदा किया है ।

❖ **''जो बच्चे अभी बले और बुरे का ज्ञान नही जानते''** ऐतिहासिक रूप में यह उन बच्चों को प्रदर्शित करता है जो मिस्र से बाहर आये हुए थे । परमेश्वर ने उन पर जिम्मेदारी नहीं रखा जब तक वे वाचा की समझ और समर्पण के योग्य नहीं बने थे ।

इस मूल ग्रंथ में दो बातें/खंबे इसमें दिखाई देते है :-

(1) ''मैं उन्हें यह दूंगा'' (परमेश्वर की श्रेष्ठत्व, पद 8)

(2) ''वे उसे अपने अधिकार में कर ले'' (मानव जाति की पंसद और उत्तरदायित्व पद : 8 में)

विशेष विषय नीचे देखें :

विशेष विषय : जवाबदेही का वर्ष (जीवनकाल)

कलिसिया, पौलूस का अनुकरण करते हुए, उत: 3, पर जैसे मानव का पाप/बुराई का स्रोत है करके ध्यान केन्द्रित करती है । यह ऑगस्टीन/केल्विन के सिद्धांत पर पुष्टिकरण, जो पूर्ण दुष्टता पर महत्व देते है । (मानव जाति की अयोग्यता का प्रत्युतर परमेश्‍वर को असहाय था) । यह केल्विन के सिद्धांत के पांच मूल में से एक और मसीही के मुख्य सिद्धांत में बनी थी ।

किन्तु यहूदी गुरूओं ने उत:3 को कभी भी बुराई का स्त्रोत नहीं माना (कुछ ने उत: 6 पर ध्यानकेंद्रित किया), लेकिन प्रत्येक की जिम्मेदारी उनके ज्ञान और समर्पणता के आधार पर है । वे दो विचारों को स्थिति में रखेंगे (नेफर्स), एक अच्छा और एक बुरे को । एक वह अधिकतर बड़ी बन जाती है, इसलिए, मानव जाति सिर्फ व्यस्क की अवधि और वाचायुक्त ज्ञान/समर्पणता के बाद ही उत्तरदायित्व होते है । (बार मिजवाह, 13 वर्ष लड़कों के लिए और बेट मिजवाह 12 वर्ष लड़कियों के लिए) दूसरे बाईबल संबंधी इस आध्यात्मिक दृष्टि के अनुसार, योना 4:11 औरयाशा : 7:15–16 है ।

तुलनात्तमक शब्दों में इसे रखते है :

(1) पौलूस/ऑगस्टीन/केल्विन, परमेश्‍वर की श्रेष्ठता और मान जपति की आयोग्यता पर केन्द्रितभूत होते है ।

(2) यहुदी गुरू/यीशु मसीह/पौलूस, वाचायुक्त उत्तरदायित्व पर केन्द्रितभूत होते है ।

यह एक या/अथवा नहीं है, लेकिन दोनों/और ! अध्यात्मविद्या सिद्धांतों के प्रकट परसावधानी रखे । यह जानने पाए कि बाईबल संबंधी सच्चाई का प्रस्तुतिकरण खिंचावपूर्ण जोड़ों में किया गया है । विश्‍वासियों को भक्ति जीवन खिवांव के अंदर ही जीना है न कि इच्छा तीव्रता से,आसान उत्तरों का कलंक खेल को खेलने के द्वारा !

1:40 "लाल समुद्र के मार्ग से यह एक मार्ग जिसे राजा का मार्ग" के संबंध में मालूम होता है, जो अकावा की खाड़ी के किनारे एल्ताह से कादेश बर्निया तक जाती है (गिनती 14:258 । यह निर्गमन में मिस्त्रियों का पानी से पार होने को नहीं दिखाता है, जब तक इसका अर्थ "सामान्य निर्देश विषय में " ।

विशेष विषय : लाल समुद्र

I. नाम

(अ) शब्दानुसार नाम याम सुफ है ।

1. ''समुद्र की घासें'' या ''समुद्र की नरकट'' (मिस्रि मूल)

2. ''समुद्र की आखिरी छोर तक (पृथ्वी की)'' (सेमिरिक मूल)

(ब) यह प्रदर्शित कर सकता है

1. खारा जल, 1 राजा 9:26 (अकाबा की खाड़ी);यहु. 2:5 (मेडिट रेनियन समुद्र)

2. ताजा जल, निर्ग 2:3 ; याशा; 19:26

(स) सेफ्युजेन्ट ने प्रथम अनुवाद में इसे ''लाल समुद्र'' कहा । संभवत: ये अनुवाद इसे एदोम (लाल) की समुद्र से संबंधित किये थे । यह नाम लैटिन भाषान्तर और किंग जेम्स अंग्रेजी अनुवाद के द्वारा स्थिर किया गया ।

II. स्थापना

(अ) अनेक पानी के प्रथम अंश इस नाम के द्वारा प्रमाणित हुए है :

1. मिस्र और सीनै प्रायद्वीप केबीच पानी का संकरा अंश लगभग 190 मील लंबा था (स्युऐज की खाड़ी)

2. सीनै प्रायद्वीपऔर अरबिया के बीच पानी का अंश लगभग 112 मील लंबा (अकाबा की खाड़ी)

(ब) यह नील डेल्टा के समीप पर टेनिस जोआन अवारीस, रामसेस उत्तर पूर्वी भाग में छिदले दलदली क्षेत्र से संबंधित हो सकता है, जो मेनजालेह झी के दक्षिणी किराने पर है (दलदली प्रदेश) ।

(स) यह दक्षिण के गुप्त जलों में लाक्षणिक रूप से प्रयोग किये जा सकते है, कई बार समुद्र की छोर तक प्रयोग हुए है (पृथ्वी की) । इसका मतलब यह प्रदर्शित कर सकता है ।

1. आधुनिक लाल समुद्र (स्युएज की खाड़ी याअकाबा की खाड़ I राजा 9:26)

2. भारतीय समुद्र (हेरोजेटल 1.180)

3. परसिया खाड़ी (जोसेफस, एण्टिक 1.7.3)

III. गिनती 33 में सुफ

(i) गिनती 33:8 में पानी का अद्भुत रीति से विभाजन होना ही सुफ कहलाता है ।

(ii) गिनती 33:10,11 में याम सुफ के द्वारा इस्राईलियों को डेरे खड़े करने के लिए कहा गया ।

(iii) जल की प्रधान अं. की दो भिन्नताएँ :

1. प्रथम, लाल समुद्र नहीं है (स्युऐज की खाड़ी)
2. द्वितीय, संभवत: लाल समुद्र है (स्युऐज की खाड़ी)

IV. पुराने नियम में तीन प्रकार से सुफ का प्रयोग हुआ है :

1. यहोवा के द्वारा जल को विभाजित करा, इस्राइलियों को उस पार भेजना था, लेकिन मिस्रि सैनिकों को डुबाकर मारना था ।
2. लाल समुद्र की उत्तर दक्षिणी फैलाव (स्युऐज की खाड़ी)
3. लाल समुद्र की उत्तर पूर्वी फैलाव (स्युऐज की खाड़)

V. संभवत: याम सूफ का अर्थ "समुद्र नरकट" नहीं है क्योंकि

1. लाल समुद्र (नाभकीय जल) में कोईनरकट वृक्ष जिससे कागज बनता है) नही था/है ।
2. मिस्त्री शब्दसाधन में भूमि को अनुमानित किया गया है,न कि झील को ।

VI सेमिटिक मूल शब्द "छोर" से सुफ आया है, और दक्षिणी की गुप्त अनजान जल को प्रदर्शित करती है (देखें बेर्नर्ड एफ. बेट्स, लाल समुद्र या नरकट समुद ? याम सुफ का क्या है वास्तविक अर्थ इन अपरोयेस टू द बाईबल बोल.1, पृ.क्र. 291-304).

NASB (व्याख्या किय गया) मूलग्रंथ 1:41-46

"तब तुमने मुझ से कहा, हम ने यहोवा के विरूद्ध पाप किया है, अब हम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार चढ़ाई करेगें और लड़ेंगे । तब तुम अपने-अपने हथियार बाधकर पहाड़ पर बिना सोचे समझे चढ़ने को तैयार हो गए । तब यहोवा ने मुझसे कहा, 'उनसे कह दे कि तुम मत चढ़ो, और न लड़ो, क्योंकि मैं तुम्हारे मध्य में नहीं हूं कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने शत्रुओं से हार जाओ ।' यह बात मैंने तुमसे कह दी, परन्तु तुम ने न मानी, किन्तु ढिठाई से चहोवा की

आज्ञा का उल्लंघन करके पहाड़ पर चढ़ गये । तब उस पहाड़ के निवासी एमोरियों ने तुम्हारा सामना करने को निकलकर मधुमक्खियों के समान तुम्हारा पीछा किया, और सेईरदेश के होर्मा तक तुम्हें मारते–मारते चले आए । तब तुम लौटकर यहोवा के सामने रोने लगे; परन्तु यहोवा ने तुम्हारी न सुनी, न तुम्हारी बातों पर कान लगाया। और तुम कादेश में बहुत दिनों तक पड़े रहे, यहां तक कि एक युग हो गया ।

1:41 "हमने यहोवा के विरूद्ध पाप किया है, "अब हम अपने परमेश्वर की आज्ञानुसार चढ़ाई करेंगे और लड़ेंगे" इसका प्रगटीकरण परिणाम संबंधी पश्चाताप है । अध्यात्मविद्यासे यह कई बार मौके को चुक जाने को दिखाता है, क्योंकि अविश्वास के कारण, पुन: नहीं हो सकता है । इस संदर्भ में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है कि वे यहोवाकी आज्ञा को नहीं मान रहे थे (पद 43) । यह अध्यात्मिक सच्चाई कई पुराने नियम की ऐतिहासिक वृतान्तों का मुख्य केन्द्र बना हुआ है ।

1:42 "मैं तुम्हारे मध्य में नहीं हूं" विजय को प्राप्त करना उनका संग्रामिक सामर्थ नहीं था, लेकिन यहोवा की उपस्थिति थी (पढ़ 43) ।

1:43 इस्राइल के समानान्तर व्याख्या पर ध्यान दें :

(1) "तुमने नहीं सुना" – बीडीबी 1033, केबी 1570 क्वेल अपूर्ण

(2) "तुमने आज्ञा के विरूद्ध विद्रोह किया" – बीडीबी 598, केबी, हिलफिल अपूर्ण

(3) "स्वयं के विचार से कार्य किया" – बीडीबी 267, केबी 268, हिलफिल अपूर्ण

यदि इस्राइल, यहोवा की बात पहले सुने होते और ऐसा ही किये होते तो वे सफलता को प्राप्त करते, लेकिन अब ऐसा करके,यह उनके लगातार स्वयं स्थापित असभ्यता को दिखाता है ।

इस संदर्भ में स्पष्ट दिखाता है कि आज्ञाकारिता उसके वाचायुक्त वायदों, उपस्थिति और सामर्थ की पूर्णतया से संबंधित है ।

1:44 "उस पहाड़ी के निवासी एमोरियों ने" देखें विषेश विषय: पलिश्तिके इस्राइली पूर्व के निवासियों 1:4 पर

- NASB "कुचल डाला"
  NKJV "तुम्हें बाहर निकाल दिया"
  NRSV "तुम्हें मार डाला"
  TEV "तुम्हारा शिकार किया"
  NJB "तुम्हारा पीछा किया"

क्रिया (बीडीबी 510, केबी 507, हिलफिल अपूर्ण) का अर्थ ''भारकुट खण्डों में करना''। यह गिनती 14:45 में बताया गया है ।

विशेषण का उपयोग जैतून के कूटके हुए तेल के लिए हुए था । (निर्ग.39:40; गिनती 28:5) । इसका प्रयोग इनके नाश के लिए हुआ (क) सोने का बछड़ा (व्य. 9:21)और (ख) मूर्तियों के टुकड़े-टुकड़े किये जाने के लिए (मीका, 1:7)

❖ **''सेईट से''** सेईट दर्शाता है एदोम को ।

❖

NASB, NKJV
NJB **''होर्मा तक''**
NRSV, TEV **''दूरी जितनी होर्मा तक''**

होर्मा का अर्थ ''शाप का स्थान'' है । शब्द (बीडीबी 356) का अर्थ ''नाशवान के लिये समर्पित'' है, जो गिनती 21:3 को प्रभावित करती है । इसे वास्तविक रूप से जेफात कहा गया है । (न्या. 1:17) इस्राइलियों ने इसे नाश करने के बाद, उन्होंने इसे भक्तिपूर्ण नाश हुआ/यहोवा के लिए (मरीहो के समान, यहोशू 6-7) इसे बेर्शबा के उत्तरी पूर्व, शिमौन के जातियु बटवारें में स्थान दिया गया ।

शब्द-संसाधन (बीडीबी 723III) संकेत करता है कि कनानियों/एमोरियों ने इस्रालियों का पीछा एदोम (सेईट) से बेर्शेबा के उत्तर पूर्व क्षेत्र तक किया, जहां उन्होंने पूर्णतया से उन्हें हराया । यहोवा उन विद्रोहियों और हठी लोगों के साथ नहीं था ।

1:45 ''तब तुम लौटकर यहोवा के सामने रोने लगे'' बाहरी रूप से लोग रोने लगे, लेकिन परमेश्वर उनके हृदय को जानता था । यह दुख परिणामों के आधार पर था, न कि पश्चाताप के लिए था ।

❖ **''परन्तु यहोवा ने तुम्हारी न सुनी, न तुम्हारी बातों पर कान लगाया''** ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने उनकी नही सुनी, लेकिन उसने उन पर ध्यान नहीं दिया । उसने उनकी सुनी, लेकिन कहां ''नहीं''। पाप हमेशा परिणाम को लेकर आता है यहाँ तक क्षमा किया गया पाप भी !

चर्चा योग्य प्रश्न

यह एक मार्गदर्शक अध्ययन टीका है जिसका मतलब बाईबल के अनुवाद करने के द्वारा आप ही स्वयं उत्तरदायी होगें हमारे पास जो प्रकाश है उसी पर प्रत्येक को चलना है । आप, बाईबल और पवित्रात्मा अनुवाद करने में प्रधान है । आपको सिर्फ टीका का लिखने वाले पर ही नहीं छोड़ देना है ।

ये विवादपूर्ण प्रश्न आपको इस पुस्तक मुख्य प्रकाशन के द्वारा सोचने में सहायक बनेगी । वे सोचने में उत्साहपन लेकर आयेगें न कि निश्चितता को ।

1. व्य. की मुख्य उद्देश्य क्या है ?
2. सीहोन और ओग यहां संक्षेप रूप में क्यों है जबकि वे अध्याय 2 और 3 में पूर्ण विवाद किया गया है ?
3. मूसा के न्यायाधीश पद्धति की एक बड़ी विषय की सूची बनाओं ?
4. दानव कहां से आये थे ?
5. क्यों इस्रायल पर परमेश्वर इतना क्रोधित था ?
6. क्या इस्रालिययों का पश्चाताप परमेश्वर के निर्णय को प्रभावित किया ?

*****

व्यवस्था विवरण 2

आधुनिक अनुवादों का वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
निर्जन वर्ष	ऐतिहासिक पुन: दृष्टि (1:1-3:29)	निर्जन में वर्षकाल	कादेश से अमोन तक
	1:46-2:8 अ	1:46-2:1	
2:1-7			2:1-7
		2:2-6	
		2:7	
2:8-15		2:8-9	2:8-13
	2:8 ब -13 अ		
		2:10-12	
	2:13 ब - 15	2:13-15	2:13 ब-15
2:16-23	2:16-25	2:16-19	2:16-25
		2:20-23	
2:24-25		2:24-25	
राजा शीहोन की पराजय		राजा शीहोन को इस्राइल हराता है	शीहोन के राज्य की विजय
2:26-37	2:26-30	2:26-29	2:26-29
		2:28-30	2:30-37
	2:31-37	2:31-37	

तृतीय चक्र अध्ययन (देखें पृ. vii प्रस्तावना भाग में)

लेखक के वास्तविक विचार इस वाक्य खण्ड तुल्यता पर

यह एक मार्गदर्शक अध्ययन टीका क्रम है,जिसका अर्थ, बाईबल के अनुवाद करने के द्वारा आप स्वयं ही उत्तरदायी होंगे । हमारे पास जो प्रकाश है उसी पर प्रत्येक को चलना है । आप, बाईबल और पवित्रात्मा अनुवाद करने में प्रधान है। आपको सिर्फ टीकाक्रम को लिखने वाले पर नहीं छोड़ देना है ।

एक क्रम से अध्याय को पढ़िये । कर्ता या विषय के पहचाने (अध्ययन चक्र #3, पृ.vii)चार आधुनिक अनुवादों को जो ऊपर है उनके साथ आपके विषय को तुलना कीजिए । वाक्यखण्ड प्रेरणा से नहीं है, लेकिन यह लेखक के विचार को जानने की कुंजी है, जो व्याख्या का हृदय है । प्रत्येक वाक्यखंड में एक और सिफ एक विषय है ।

(क) प्रथम वाक्यखण्ड

(ख) द्वितीय वाक्यखण्ड

(ग) तृतीय वाक्यखण्ड

(घ) इत्यादि

अध्याय 2 का संक्षेप रेखाचित्र

(क) एदोम के साथ इस्राइल का संबंध (पद, 4-7)

(ख) मोआब के साथ इस्राइल का संबंध (पद, 8-15)

(ग) अम्मोन के साथ इस्राइल का संबंध (पद 6-19)

(घ) पद 20-23 तक रिफेम एक अप्रधान वचन से संबंधित है ।
(देखें विशेष विषय 1:28 में)

(ङ) यरदन के पूर्वी किनारे पर एमोरियों के साथ इस्राइल का संबंध

वचन और संक्षिप्त वचन अध्ययन

NASB (व्याख्या) मूल ग्रंथ : 2:1-7

"तब उस आज्ञा के अनुसार, जो यहोवा ने मुझको दी थी, हम ने घुमकर कूच किया और लाल समुद्र के मार्ग के जंगल की ओर गए और बहुत दिन तक सेईट पहाड़ के बाहर-बाहर चलते रहे । तब यहोवा ने मुझेसे कहा, तुम लोगों को इस पहाड़ के बाहर-बाहर चलते हुए बहुत दिन बती गए, अब घूमकर उत्तर की ओर चलो । और तुम प्रजा के लोगों को मेरी यह आज्ञा सुना, कि तुम सेईट के निवासी अपने भाई एसावियों की सीमा के पास होकरन जोने पर हो; और वे तुम से डर

जायेगें । इसलिए तुम बहुत चौकस रहो; और न छेड़ना, क्योंकि उनके देश से मैं तुम्हें पांव रखने की जगह तक न दूंगा, इस कारण कि मैंने सेईट पवर्त एसावियों के अधिकारमें कर दिया है । तुम उनसे भोजन रूपये से मोल लेकर खा सकोगें, और रूपया देकर कुआं से पानी भरके पी सकोगें । क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हाथों के सब कामों के विषय तुम्हें आशीष देता आया है, इस भारी जंगल में तुम्हारा चलना फिरना वह जानता है; इन चालीस वर्षों में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग-संग रहा है और तुम को कुद घटी नहीं हुई ।

2.1 “**जंगल**” अनेकों जंगल निर्गमन से जुड़े हुए हैं ।

विशेष विषय : निर्गमन का जंगल

(क) शूर काजंगल – उत्तर पूर्व मिस्र में (निर्ग. 15:22)

(ख) पारान का जंगल – मध्य सीनै प्रायद्वीप (उत. 21:21, गिनती, 10:12, 12:16, 13:3, 26

(ग) पाप का जंगल –दक्षिणी सीनै प्रायद्वीप (निर्ग. 16:1; 17:1; गिनती 33:11,12; सीनै का जंगल भी कहा गया है निर्ग: 19:12, निगती 1:1, 19; 3:4, 9:1,5)

(घ) जीन का जंगल – दक्षिणी कनान (गिनती 13:21; 20:1, 27:14; 33:36; 34:3; व्य. 32:51)

❖ “**लाल समुद्र के मार्ग से**” यह अराबा मार्ग (अकाबा की खाड़ी के मार्ग पर) को प्रदर्शित करती है जो यरदन दरार घाटी में है,जो लाल समुद्र की उत्तर और दक्षिणी दोनों तरफ बहती है (पद 8) । यह एक चौड़ी घाटी है जो एल्ताह की शहर या अकाबा की खाड़ी पर एजियोन गेबर के पास से प्रारंभ होती है और एदोम और मोआब और अमोरी से दमिश्क के राज्य, सीरिया के हृदस से जाती है । पुराने नियम में राजा का मार्ग कहा गया है । (गिनती 20:17, और 21:22)

शब्द लाल समुद्र (बीडीबी 410 निर्साणित 693 के साथ) यर्था है । नरकट का समुद्र/घासें । यह शब्द अनजान और गुप्त जल दक्षिण की ओर के लिये प्रयोग हुआ है । यह पानी के प्रधान अंश को प्रदर्शित कर सकती है इस्रायली निर्गमन में पार किये और, जैसे यहां और 1:40, पानी के प्रधान अंश जो सीनै प्रायद्वीप की पूर्वी तरफ अकाबा की खाड़ी पर स्थित है । पुराने नियम के एक पद्यांश में शब्द भारतीय समुद्र को प्रदर्शित करता है । देखें विशेष विषय 1:40 में ।

❖ **"जो यहोवा ने मुझसे कहा था"** व्यवस्थाविवरण स्वयं वर्णन करता है जैसे एक प्रकाशन यहोवा से मूसा को (पद : 1, 2, 9, 17, 31) यहोवा ने उसके लोगों को इनके द्वारा निर्देशित किया :

(क) मूसा को सीधा प्रकाशन

(ख) शेकेना की चाल महिमा का आकाश

(ग) उरीम और थुमीम का प्रयोग (महायाजक)

❖ **"सेईट पर्वत"** यह एदोम की भूमि को प्रदर्शित करती है (पद 5; 1:2 निर्ग. 3:1; 17:6)

2:3

NASB	**"चक्कर लगाया"**
NKJV, NRSV	**"किनारे किनारे चला"**
TEV	**"भटकते रहना"**
NJB	**"बहुत दूर चले गये"**

इस क्रिया (बीडीबी 685, केबी 738, क्वेल अनिश्चित निर्माण पढ़ 3 में औरएक आज्ञातम्क पद 1 में) का अर्थ "बाहर बाहर घूमना", "चक्कर लगाना", "चारों ओर" बुरी अविश्वास पीढ़ी के कारण इस्रालियों के पास सही निर्देश नहीं था । वे 38 वर्ष तक कादेश-बर्निया के चारों ओर चक्कर मारते रहे । लेकिन मूसा को यहोवा विशेष, स्पष्ट निर्देश देने वाला है । "चक्कर लगाना" या "किनारे-किनारे चलना" इस मूल शब्द में अच्छी बैठती है ।

अब घूमकर उत्तर की ओर चले यह गिनती 20 से संबंध रख सकती है । जहां इस्रालियों ने पूछा कि वे एदोम की भूमि को पार करना है, लेकिन एदोमियों ने उन्हें जाने नहीं दिया । उन्होने पूछा कि हमें अपने देश से होकरजाने दें और उन्होंने भी कहा नहीं । यह एक शीघ्र होने वाली घटना का ज्ञाज्ञ तथ्य है (आईसीसी. पृ.34) यहां वे पूछ रहे है कि वे राजा के मार्ग सेहोकर जानाचाहते है जो इन देशों के बीच से होकर जाता है । वे भोजन और पानी खरीदना भी चाहते है, लेकिन एदोमियों और मोआबियों (लूत और एसाब के द्वारा इस्राइल के संबंधी) ने कहा "नहीं" । एदोम से होकर जाने की बजाय वे उनके सीमा के बाहर से गये ।

इसी प्रकार अनेक इब्रानी शब्द, इस एक (बीडीबी 815, केबी 937) पास राशिभूत है यथार्थ अर्थ (यहां) और एक पुष्टिकरण, आलंकारिक अर्थ, "घूमकर" इब्रानी शब्द कई बार "पश्चाताप" के लिये अनुवाद हुआ । (II राजा 17:13, II इति 30:6; याशा 44:22; यिर्म 3:11-4:2, होशे 14:1)

2:4 **"आज्ञा"** इस शब्द (बीडीबी 845, केबी 1010, पील आज्ञात्मक) के समान "नई दिशा" अपनाना (बीपीडी 815, केबी 937, क्वेल आज्ञात्मक पद;3 में, दिखाता है कि यहोवा की आज्ञाओं को मूसा शत प्रमाणित कर रहा है । (जैसे हीथपील अनिश्चित प्रयोग हुआ जैसे एक आज्ञार्थक पद; 5 में "उन्हें न छेड़ना") । वह व्यक्तिगत तौर से उनकी यात्रा का निर्देश दिया ।

❖

NASB	**"तुम्हारे भाईयों"**
NKJV,	**"तुम्हारे भाईयों"**
NRSV	**"तुम्हारे सगोत्र"**
TEV	**"तुम्हारे दूरस्थ संबधी"**
NJB	**"तुम्हारे संबधी"**

इब्रानी शब्द "भाई" के दुविधापन को अंग्रेजी अनुवाद दिखाता है (बीडीबी 26) । इसका प्रयोग कई बार एदोम के लिए हुआ है (एसाव की वंशावली, गिनती 20:14; व्य. 2:4, 8, ओबघाह, पद : 10)

❖ **"वे तुम से डरेगें"** यह एक भविष्यवाणी का कथन हे, जो छुटकारे का गीत की ओर जाता है जिसे मरियम ने लाल समुद्र पार, अद्‌भुत रीति से होने के कारण परामेश्वर की स्तुति के लिजए गाई थी । परमेश्वर ने बताया कि "एदोम और मोआब, इस्राइलियों से डरेगें" (निर्ग:15:15)

2:4, 9, 19 इस अध्याय के पूरे भाग में परमेश्वर के प्रभुत्व से संबंधित अनेक सूची योग्य संदर्भ है :-

"मैं नही दूंगा" (पद 4, 9 19)
"मैने दे दिया है" (पद 5,9)
"यहोवा ने दिया" (पद 12)
"हमारा यहोवा परमेश्वर हमें दे रहा है" (पद 29)
"हमारे परमेश्वर ने उसको हमारे द्वारा हरा दिया" (पद 33)

यह अध्याय अन्तरराष्ट्रीय सीमाओं में परमेश्वर की प्रभुत्व को दर्शाता है (32:8, नहे. 9:2) क्यों प्रत्येक वाक्यखण्ड प्रभाव डालाता है कि यहोवा ही है जिसने एक निश्चित जन सकूह को निवास करने के लिए एक देश दिया । यह अध्याय दिखाता है कि यहोवा ने केवल इस्राइल को

देश नहीं दिया, लेकिन उसने अमुक को प्रत्येक देश दिया । कुछ लोगों ने उनकी (देश) भूमि, पापों के कारण खोई, (उत. 15:16) और इसाइल भी एक अवधि के लिए उसकी (देश) भूमि को खोई (असिरिया और बेबीलोन की बुधुआई) उसकी पाप अनेक ईश्वरों पर विश्वास करने वालों केदिनों में, यह एक अद्‌भुत कथन है एक ही ईश्वर पर विश्वास करने वालों के द्वारा । एक ही और सिर्फ एक ही परमेश्वर है (व्य. 6:4-6) वही सिर्फ अकेला है जो एदोमियों मोआबियों और अमोरियों इत्यादि भी देश देता है (सेप्टुयुजेन्ट (LXX) में व्य. 32:8)

NASB, NRSV,

REB **"इसलिए बहुत चौकस रहो"**

NKJV, **"इसलिए तुम बहुत ही चौकसपूर्वक रहो"**

TEV **"अगले पद; 5 के साथ इस शब्द संसाधन कामिश्रण में, उन्हें न छेड़ना"**

NJB **"और तुम सुरक्षितपूर्वक रहोगे"**

मूलार्थक वाक्यखण्ड "इसलिए बहुत चौकस रहो" (एक संगम, क्रिया (बीडीबी 1036, केबी 1581, निफेल अपूर्ण) और क्रिया विशेषण (बीडीबी 547) । सेप्टयुजेन्ट भी के समान है ।

इस वाक्यखण्ड को, अनेक नमुनों में, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में कई बार प्रयोग किया गया है (2:4; 4:9, 15, 23; 6:12, 8:11; 11:16; 12:13, 19, 30 15:9, 24:8) । यह संकेत करता है "अपने मन को चौकस रखों" "ध्यान दें, जो आप कर रहे हो आपके कार्यो की दुविधापन के विषय में स्पष्ट रूप से विचारें " ।

2:5

NASB **"तुम्हें पांव रखने का ठोर तक न दूंगा"**

NKJV **"एक पांव तक रखने न दूंगा"**

NRSV, NJB **"पांव रखने की जगह तक न दूंगा"**

TEV **"एक पांव को स्थिर रखने न दूंगा"**

यह एक अपूर्व इब्रानी शब्द है (बीडीबी 204) । यह एक पांव रखने की जगह को बताता है । इसी के समान मूल 11:24 और यहोशू 1:3 में प्रयोग हुआ है । एक विचार में यह यहोवा की ओर से उत्साहना का शब्द है । उसने एदोम औरमोआब दोनों को देश दिया हुआ था । इसके प्रत्येक इंच पर उनका अधिकार था । वह इस्राइल को देश देने की क्रिया में था। उसका उपहार स्वरूप देश सुरक्षित था ।

अब इसका अन्ततः अवश्य ही, पाप के कारण ही से, इन देशों ने (एदोम और मोआब) उनके देश को खोया और लोगों के जैसे नष्ट हुए । सभी उपहार स्वरूप देश अधीन थे । यह भी इस्रायल की सच्चाई है (असिरिया और बेबिलोन बहिष्कार करता है) सभी परमेश्वर की वाचायें (उत. 6 और 15 के अलावा) अधीन है ।

उसके मुक्ति देने का वायदा निश्चित है (निरपेक्ष) लेकिन प्रत्येक व्यक्ति/राष्ट्र अवश्य ही प्रत्युत्तर और लगातार प्रत्युत्तर में विशिष्ठ कार्यलीन होना है । एक लगातार होने वाली, आज्ञाकारी विश्वास प्रामाणिक संबंधित है । पुराने और नये नियम दोनों में यहोवा, विश्वास, पश्चाताप, आज्ञाकारिता, दीर्घ प्रयत्न की आकांक्षा करता है ।

2:6 इस्रायल को उनके देश के ऊपर एदोन का प्रभुत्त्व देख, जिसे परमेश्वर (यहोवा) नेदियाथा, उन्हें भोजनऔर पानी दोनों को खरीदना था ।

1. "भोजन मोल लो" (बीडीबी 991, केबी 1404, क्वेल आज्ञत्मक)
2. "पानी खरीदो" (बीडीबी 500, केबी 497, क्वेल आज्ञात्मक)

2.7 "**इन चालीस वर्षों में तुम्हारे परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग-संग रहा हे, और तुम को कुछ घटी नहीं हुई है**" यह पद्यांश परमेश्वर के प्रेम को बतताताहै, तब भी जब इस्राइल ने उसके विरोध में विद्रोह किया था । (परमेश्वर के वायदा जो उन्हें कनान देश दने में, उनमें विश्वास की कमी पाई गई)

जंगल में भटकने का समय, इस्राइल की पीढ़ी को थोड़े से विश्वास के कारण एक न्यास था, लेकिन बाद में यह यहोवा की व्यक्तिगत उपस्थिति और प्रावधान में बदल गया । यहूदी गुरू इसे यहोवा और इस्रायल के बीच आनन्दपूर्ण मिलन की अवधि कहते है । यहोवा ने प्रबंध किया :

1. सुरक्षा
2. व्यक्तिगत नीति
3. भोजन
4. पानी
5. कपड़े जो कभी नहीं फटने पाए
6. युद्ध में विजय

NASB मूल ग्रंथ : 2:8–15

''यों हम सेईर निवासी और अपने भाई एसावियों के पास से होकर, अराबाके मार्ग, और एलत और एस्योनगेबर को पीछे छोड़कर चले । फिर हम मुड़कर मोआब के जंगल के मार्ग से होकर चले । और यहोवा ने मुझसे कहा, मोआबियों को नसताना, और न छेड़ना, क्योंकि मैं उनके देश से कुछ भी तेरे अधिकार में न कर दूंगा क्योंकि मैंने आर को लुतियों के वंशजों के अधिकार में किया है । (पुराने दिनों में वह वहां एमी लोग बसे हुए थे, जो अनाकियों के समान बलवन्त और लंबे लंबे और गिनती में बहुत थे । और पुरानें दिनों में सेईर में होरी लोग बसे हुए थे, परन्तु एसावियों ने उनको उस देश से निकाल दिया, और अपने सामने से नष्ट करके उनके स्थान पर आप बस गए, जैसे कि इस्राइलियों ने यहोवा के दिए हुए अपने अधिकार के देश में किया । अब तुम लोग कूच करके जेरेद नदी के पारजाओ । तब हम जेरेद नदी के पास आए । और हमारे कादेश बर्ने को छोड़ने से लेकर फेरेद नदी पर होने तक अड़तीस वर्ष बीत गए, उस बीच में यहोवा की शपथ के अनुसार उस पीढ़ी के सब योद्धा छावनी में से नष्ट हो गए । और जब तक वेनष्ट न हुए तब तक यहोवा का हाथ उन्हें छावनी में से मिटा डालने के लिए उनके विरूद्ध बढ़ा ही रहा ।''

2:8 ''यों हम सेईर निवासी और अपने भाई एसावियों के पास से होकर'' इस ''भाइयों'' का प्रयोग कुछ ताने की तरह का है । वे संबंधी थे । वे एक ही पूर्वजों, इसहाक और रिबका से आये हुए थे, लेकिन वे संबंधियों के सिवाय हर प्रकार का व्यवहार कर रहे थे ।

'सेईर' एदोम देश में स्थित पर्वतीय पक्ति को प्रकटीकरण करती है । इसलिए 'सेईर' और ''एदोम'' पर्यायवाची है ।

2.8,27 ''अराबा के मार्ग'' यह ''राजाओं के प्रधान सड़क को दिखाता है'', जो आकाबा की खाड़ी से दमिश्क तक जाती है (पद1 और गिनती; 20:17, 19; 21:22) ।

2.8 ''एलात'' शब्दानुसार यह ''ताड़ के वृक्षों'' को दिखाता है (बीडीबी 19) । संभवत: यह एफियोन–गेबेर के समीप है (I राजा:9:26), जो अकाबा के खाड़ी के उत्तरी छोर पर स्थित है ।

❖ **''मोआब के जंगल के मार्ग ''** मेकमिलन बाईबल एटलस, मानचित्र 10, इस निर्जन मार्ग को समानान्तर में जैसे ''राजाओं के प्रधान सड़क'' के रूप में दिखाता है, लेकिन पूर्व के लिए है । दक्षिणी छोर एदोम से होकर जाता है और जिसे ''एदोम के जंगल के मार्ग '' के नाम से जाना जाता है । (II राजा 3:8) । राजा का प्रधान सड़क और यह छोटा निर्जन मार्ग, रब्बात–बेने–

अम्मोन पर, जो यरीहों के पूर्व में स्थित है, वहां मिलता है ।

2.9 "मोआबियों को न सताना और न छेड़ना" यह एदोम के बारे में 2:5, से समानान्तर है । शब्द अलग अलग है लेकिन विचार एक है ।

दोनों क्रियाएं आज्ञार्थक है :-

1. "सताना" (बीडीबी 894 III, केबी 1015, क्वेल आज्ञात्मक, निर्ग 23:22, एस्ते 8:11)
2. "छेड़ना" (बीडीबी 173, केबी202, हितपील आज्ञार्थक, पद 19, 24, नीति 25:4,दानि. 11:10)

❖ **"आर"** यह या तो सामान्य में मोआब या इसके राजधानी शहर से संबंध है । (गिनती, 21:1528, व्य. 2:9, 1829; याशा 15:1) यह अम्मोन नदी के बायी किनारे पर स्थापित था ।

❖ **"लूतियों के वंशजों के अधिकार"** देखें उत. 19:38 ।

2:10-12 ये आयतें एक सम्प्रदायिक संबंधी व्याख्या है, जैसे पद 20-23; 3:9,11,13-14 है । ये सभी दानवों के लिए शब्द है; (क) एमिम (पद 10,11) (ख) अनाकिम (पद 10, 11, 21) और (ग) रपीम (पद 11, 20) । इन शब्दों का अर्थ हो सकता है या तो (1) बडी यालंबी आकर में ; (2) एक विशेष जाति संबंधी उत्पत्ति के लिए; या (3) आगामी याशायाह और यिर्मयाह में, इसका प्रयोग मृत्यु के प्रदेश के लिए हुआ है । संभवत: यह यहां पर आकार को दिखाता है । देखे विशेष विषय 1:28 में ।

2:12 "होरी" यहां हुरीयों (एबीसी वोल, 3, पृ. 335-338)और होरी (बीडीबी 360) के बीच संबंध के विषय में कुछ शर्त है । मैं विश्वास करता हूं कि वहां विभिन्न प्रकार के लोग थे,हालांकि यहां पर स्वामताभिमानी होने को कुछ नहीं है (नेट बाईबल पृ. 348 # 5) । होरी एक सेईर/एदोम के प्रदेश में रहने वाले जाति समूह है, पहले एदोम एक देश था (उत. 14:6, 36:20-30)

2:13 "अब तुम लोग कूच करके पार जाओ" ये दोनों क्रियाएं (बीडीबी 877, केबी 1086 और बीडीबी 716, केबी 778) दो क्वेल आज्ञात्मक है । मूसा को सचमें क्या करना है अभी तक

यहोवा कह रहा है ।

❖ **"जेरेद नदी"** यह मोआब ओर एदोम के बी की एक वादी का नाम है (गिनती 21:12 वादी एक धारा से बही हुई इकट्ठी मिट्टी से पूर्ण शिकार जहां पानी वर्षा के ऋतु में बहती है, एक ऋतु संबंधी स्त्रोत, न कि नदी है । पानी की धारा से इक्टठी मिट्टी प्राय: एक "मार्ग" का रूप लेती है । यह एदोम और मोआब के बी सीमा का रूप लिया ।

शब्द "जेरेद" का अर्थ (बीडीबी 279) मालूम नहीं हुआ ।

2:14 "अब यह हमारे अड़तीस वर्ष कासमय लिया था" यह जंगल में भटकने के का एक सारांश पद है (पद: 7)।

2:14-16 "उस पीढ़ी के सब योद्धा" प्रत्येक पुरूष 20 और 50 वर्ष की उम्र के बीच को योद्धा के रूप में सम्मिलित हुआ है (निर्ग 30:14; 38:26,गिनती 1:3, 14:29) । इन सभी बुरी अविश्वास पीढ़ी (विश्वास की कमी यहोवा के वायदे दिये जाने पर) को मरना था (पद 15) उससे पहले कि सब नये इस्रायली उस वायदे को देश को प्राप्त करते है ।

❖ **"यहोवा की शपथ के अनुसार"** देखें गिनती 14:28-29, व्य. 1:34-35

2:15 "यहोवा का हाथ देखें" विशेष विषय नीचे दिया गया है ।

विशेष विषय : एक मानव के जैसे परमेश्वर को वर्णित किया गया है (ईश्वर को मनुष्य केआकार का मानने का सिद्धांत)

(क) पुराने नियम में भाषा के प्रकार बहुत सामान्य है ।

(I) शारीरिक देह के अंग

1. आँख - उत. 1:4,31; 6:8; निर्ग. 33:17; गिनती 14:14; व्य 11:12; जर्कयाह 4:10
2. हाथ - निर्ग. 15:17,गिनती 11:23; व्य. 2:15
3. भुजा - निर्ग. 6:6;15:16 गिनती 11:23; व्य. 4:34;5:15
4. कान - गिनती, 11:18; I शमु. 8:21; II राजा 19:16; भ.स. 5:1;10:17; 18:6
5. चेहरा - निर्ग 32:30; 33:11;गिनती, 6:25; व्य. 34:10; भ.स. 114:7
6. अंगुली - निर्ग; 8:19; 31:18; व्य. 9:10; भ.स. 8:3
7. आवाज - उत. 3:8, 10; निर्ग. 15:26; 1919, व्य. 26:17; 27:10
8. चरण - निर्ग. 24:10 यहोजेकल;43:7
9. मानव रूप - निर्ग. 24:9-11, भ.स. 47; याशा: 6:1; यहे. 1:26
10. यहोवा का दूत - उत. 16:7-13; 22:11-15;31:11, 13; 48:15-16;

निर्ग. 3:4,13-21; 14:19;न्या. 2:1; 6:2; 13:3-22

(II) शारीरिक क्रियाऐं

1. सृष्टि की बनावट पर बोलना - उत. 1:3, 6, 9, 11, 14, 20, 24, 26
2. अदन (उदा. की आवाज) में चलना - उत. 3:8; 18:33; हब्बकूक; 3:15
3. नेह के जहाज के दरवाजे को बंद करना - उत. 7:16
4. बलिदानों की सुगंध लेना - उत. 8:21; लैव्य 26:31;आमोस 5:21
5. नीचे आना - उत. 11:5; 18:21; निर्ग 3:8, 19:11; 18, 20
6. मूसा को दफन करना - व्य. 34:6

(III) मानवीय भाव

1. पछताना/पश्चाताप - उत 6:6-7, निग. 32:14, न्या. 2:18, I शमु 15:29-35, आमोस; 7:3,6
2. क्रोध - निर्ग. 4:14, 15:7; गिनती 11:10; 12:9; 22:22; 25:3, 4; 32:10, 13, 14 व्य. 6:5, 7:4, 29:20
3. ईर्ष्या - निर्ग. 20:5; 34:14; व्य. 4:24; 5:9, 6:15; 32:16, 21; यहोशू 24:19
4. विमुख/घृणा - लैव्य 20:23, 26:30; व्य. 32:19

(IV) पारिवारिक रूप

(i). पिता

1. इस्रायल का - निर्ग. 4:22, व्य. 14:1; 39:5
2. राजा का - II शमु 7:11-16, भस. 2:7
3. पिता सदृश क्रियाओं के लक्षण - व्य. 1:31; 8:5; 32:1, भ.स. 27:10; नीति 27:10;यिर्म. 3:4; 22; 31:20; होशे 11: 1-4; मला. 3:17

(ii) माता-पिता - होशे 11:1-4

(iii) माता - भ.स. 27:10 (पालन-पोषण करने वाली माता के समान); याशा: 49:15; 66:9-13

(iv) जवान विश्वासयोग्य प्रेमी – होशे 1–3

(ख) इस भाषा के प्रकार को प्रयोग करने का कारण

(i) स्वयं को मान जाति पर जाहिर करने को परमेश्वर के लिए यह आवश्यक था । परमेश्वर का व्यापक विचार जैसे पुरूष के लिये एक ईश्वर को मनुष्य के आकार मानने का एक सिद्धांत है क्योंकि परमेश्वर आत्मा है !

(ii) मानव जीवन के अत्यधिक महत्वपूर्ण रूप को परमेश्वर लेता है और गिरे हुए मानवों के सन्मुख स्वयं को प्रकट करता है । (पिता, माता, अभिभावक, प्रेमी)

(iii) हालांकि परमेश्वर आवश्यक रूप से कोई भी शारीरिक रूप में सीमित नहीं रहता है (निर्ग. 20; व्य. 5)

(iv) ईश्वर को मनुष्य के आकार मानने का सिद्धांत अन्तत: यीशु मसीह का अवतार है । परमेश्वर शारीरिक, छुनेयोग्य बना (1 यहुन्ना : 1:1–3) परमेश्वर का संदेश, परमेश्वर का वचन हुआ (यहुन्ना; 1:1–18)

NASB मूल ग्रंथ 2:16–25

"जब सब योद्धा मरते–मरते लोगों को बीच में से नष्ट हो गए है । तब यहोवा ने मुझसे कहा, अब मोआब की सीमा, अर्थात आर को पार कर; और जब तू अम्मोनियों के सामने जाकर उनके निकट पहुंचे, तब उनको न सताना और न छेड़ना, क्योंकि मैं अम्मोनियों के देश में से कुछ भी तेरे अधिकार में न करूंगा, क्योंकि मैंने उसे लूत के वशंजों के अधिकारमें कर दिया है । (वह देश भी खाइयों का गिना जाता है क्योंकि पुराने दिनों में खाई, जिन्हें अम्मोनी जामाजुम्मी कहते थे, वे वहां रहते थे; वे भी अनाकियोंके समान बलवान और लंबे–लंबे और गिनती में बहुत थे; परन्तु यहोवा ने इनकों अम्मोनियों के सामने से नष्ट कर डाला, और उन्होंने उनको उस देश से निकाल दिया, और उनके स्थान पर आप रहने लगे, जैसे कि उसने सेईर के निवासी एवासियों के सामने से होरियों को नष्ट किया, और उन्होंने उनको उस देश से निकाल दिया और आज तक उनके स्थान पर वे आप निवास करते है । वैसाही अव्वियों को, जो अज्ज़ा नगर तक गावों में बसे हुए थे, उनको कप्तोरियों में जो कप्तोर से निकले थे नष्ट किया, और उनके स्थान पर आप रहने लगे) । अब तुम लोग उठकर कूच करो, और अर्नोन के नाले के पार चलो सुनो, मैं देश समेत हेराबोन के राजा एमोरी सीहोन को हाथ में कर देताहूं, इसलिए उस देश को अपने अधिकार में लेना आरंभ करो,और उस राजा से युद्ध छेड़ दो । और जितने लोग धरती पर रहते है उन सभी के मन में आज ही के दिन से तेरे कारण डर और थरथराहट

समवाने लगूंगा; वे तेरा समाचार पाकर तेरे डर के मारे कांपेंगे और पीड़ित होंगे ।

2:16 "सब योद्धा अंत में नष्ट हो गये" यह परमेश्वर के प्रेम और परमेश्वर के न्याय के बीच में तुल्यता दिखाता है । परमेश्वर का उद्देश्य नाश करना नहीं है, लेकिन उसके लोगों को उनकी गलतियों में से खीसखने में सहायता करना है । इसलिए, वह इन लोगों को 38 वर्ष तक भटकने और मृत्यु दंड की आज्ञा सुनाई, लेकिन उसने उन्हें भोजन खिलाया, उसने प्रेम किया, और उसने उनके लिए पूर्ति कराई । यह अचानक मृत्यु नहीं थी लेकिन यह असमय मृत्यु थी । हर एक व्यक्ति जो 20 वर्श की उम्र और उससे बढ़कर जो कादेश-बर्निया तक आये थे, सिफ यहोशू और कालिब के अलावा (छोड़कर) अब सब मर चुके थे ।

2:19 यह 2:5 और 2:9 से समानान्तर है । ये पद 9 के क्रिया के समान ही है । यहां प्रथम (बीडीबी 849, केबी 1015) आज्ञार्थक है अर्थ में, लेकिन रूप में नहीं है । द्वितीय (बीडीबी 173, केबी 202) एक हितपील आज्ञार्थक है । लूत के द्वारा अम्मोनि लोग इस्राइलियों के संबंधी थे ।

2:20 "(वह देश भी रपाइयों का गिना जाता था)" यह एक जाति संबंधी समूह था जो इस स्थान पर निवास करते थे । वे जमजुमीम के नाम से भी पुकारे जाते थे । पद 21 हमें बताता है कि वे दानवों में से थे (पद 9) देखें विष विषय 1:28 में ।

❖ "जमजुमीम" देख उत: 14:5

2:21 लूत (पद 9-10, 21-22) और एसाव (पद 5, 22) की पीढ़ियों पर यहोवा विश्वास योग्य बना हुआ था । ठीक वही "पवित्र युद्ध" शब्द कोष का प्रयोग इस्राएल के विजेताओं के लिए विजय की व्याख्या का प्रयोग एदोम और अम्मोन की विजय उनके जाति संबंध देश का व्याख्या करने के लिए हुआ है ।

2:23

NASB, NRSV
TEV, REB **"अविव्म"**
NKJV, **"अविम"**
NJB **"अविव्यों"**

इन शब्दों के (बीडीबी 732) दो अर्थ है :

(क) एक जन समूह जो पलिशति देश के दक्षिण में निवास किये हुए थे । वे आईगीनलोग (पलिश्ति) के द्वारा विजय को प्राप्त किये थे । यहां तक आलब्राइट ने उन्हें हिकसोस निर्णय के साथ संयुक्त करता है (एबीसी बोल. 1 पृ. 531) इस अध्याय में स्थानों के वास्तविक निवासियों

की सूची है जिन्होंने पराजय और अपने अधिकार को खोया था ।

(ख) आगामी यहोशू में यह शब्द बेन्जामीन के जातीय व्याख्यान में एक शहर का नाम हुआ (यहोशू 18:23) । कुछ स्नातकों को यह संदेह हुआ है कि ये लोग ''ऐ'' से आये थे ।

❖ **''कप्तोरियों ने जो कप्तोरी से निकले थे''** ये शब्द संभवत: क्रेत, साइप्रस, कापादो किया, उत्तरी मिसग को द्वीप हो सकता है । (उत. 10:13) । हम पूर्णतया से नहीं जानते हैं । कप्तोरियों (कप्तोर का बहुवचन) संभवत: पलिश्तियों के संबंध या पड़ोसी थे (उत. 10:14; यिर्म, 47:4; आमोस 9:7)

2:24 इस आयत में अनेक आज्ञाएँ है :

1. ''उठो'' – बीडीबी 877, केबी 1086, क्वेल आज्ञात्मक, उत. 13:17
2. ''कूच करो'' – बीडीबी 652, केबी 704, क्वेल आज्ञात्मक, व्य. 1:19–21
3. ''पार चलो'' – बीडीबी 716, केबी 778, क्वेल आज्ञात्मक, याशा. 23:12
4. ''देखो'' – बीडीबी 906, केबी 1157, क्वेल आज्ञात्मक
5. ''आरंभ करो'' – बीडीबी 320 III , केबी319, हिलफिल आज्ञात्मक, व्य. 2:31
6. अधिकार में लो – बीडीबी 439, केबी 441, क्वेल आज्ञात्मक, व्य. 1:8, 21; 2:32; 9:23
7. ''युद्ध छेड़ दो'' –बीडीबी 173, केबी 20, हितपेयल आज्ञात्मक, व्य 2:5, 9, 19,दानि: 11:10

यहोवा आज्ञा, उत्साहपन, चुनौती उसके लोगों को दे रहा है ताकि वे उस पर भरोसा और उसके वचन की आज्ञा को मानने पाएं उनके माता–पिता ने नहीं किया था । यदि वे विश्वास में अक्यासिक है तो यह देश उनका था ।

❖ **''अमोरी''** देखें सूची 1:4 में । इस राज्य की राजधानी हेशबोन थी । यह रूबेनके जाति संबंधी प्रदेश के विभक्त से हुआ ।

❖ **''जैसे यहोवा का हाथ''** यह परमेश्वर के बारे में एक मुनष्य–शरीर–रचना का वर्णन है (पद 15) । परमेश्वर के पास हाथ नहीं है । उसके पास शारीरिक अंग नहीं है । परमेश्वर आत्माहै, लेकिन सिर्फ अर्थपूर्ण बातें परमेश्वर के बारे में, शब्दों से उसके बारे में बोलनेसे हम समझ सकते है ।

2.25 ''मैं समवाने लगूंगा'' ये दो शब्द पद 24 में आज्ञात्मक है । परमेश्वर एक योद्धा के समान उनके बदले में तैयार था यदि वे उस पर भरोसा रखते है और स्थानिक निवासियों के साथ युद्ध के

मैदान में प्रवेश करने पर था ।

❖ "डर और थरथराहट" प्रथम शब्द का अर्थ (बीडीबी 808) "भय में होना" या "भयभीत" है ।

1. इस्रायल के शत्रु उनसे भयभीत होगे – व्य. 2:25; 11:25; भ.स. 105:38
2. इस्रायल यदि पाप करता है तो वे यहोवा से भयभीत होगें – व्य. 28:66-67
3. यहोवा से भयभीत होना है –भ.स. 119:120

द्वितीय शब्द का अर्थ (बीडीबी 432) "भय" है ।

1. परमेश्वर का भय – निर्ग. 20:20
2. परमेश्वर को आदर – भ.स. 2:11, 5:8; 90:11; 119:38
3. मृत्यु का भय – भ.स. 55
4. इस्रायल का भय – व्य. 2:25

❖ "**जितने लोग धरती पर रहते है**" यह एक स्पष्ट अतिश्योक्ति है (पूरी पृथ्वी, 4:19; दानि 9:12) । यह कनान के निवासियों के बारे में बता रही है ।

❖ "कापेंगे और पीड़ित होंगे" यह "भयभीत और भय" से समानांतर है । प्रथम क्रिया (बीडीबी 919, केबी 1182, क्वेल पूर्ण) का अर्थ "कापंना" या "फड़कना" है (नीति 29:9, याशा, 14:9) । द्वितीय क्रिया (बीडीबी 296, केबी 297, क्वेल पूर्ण का अर्थ "नृत्य" "तेजी से चक्कर खाना" (विलाप 4:6) या पीड़ा से शरीर को मोड़ना है (याशा 23:4, 26:18 (जन्म देना))

NASB मूल ग्रंथ 2:26-31

"मैंने कदेमोत नामक निर्जन प्रदेश से हेशबोन के राजा सीहोन के पास तेल मेल की बतों कहने को दूत भेजे, मुझे अपने देश में से होकर जाने दे, मैं राजपथ पर चलाजाऊंगा औरदाहिने और बाएं हाथ न मुड़ुगां । तुम रूपया लेकर मेरे हाथ भोजनवस्तु देना कि मैं खाऊँ, और पानी भी रूपया लेकर मुझको देना कि मैं पीऊँ; केवल मुझे पांव-पांव चले जाने दे, जैसा सेईर के निवासी एसावियों ने और आर के निवासी मोआबियों ने मुझसे किया, वैसा ही तु भी मुझसे कर, इस रीति मैं यरदन पार होकर उस देश में पहुंचुंगा जो हमारा परमेश्वर यहोवा हमें दे रहा है । परन्तु हेशबोन के राजा सीहोन ने हमको अपने देश में से होकर चलने न दिया, क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उसका चित्त कठोर और उसका मन हठीला कर दिया था, इसलिए कि उसको तुम्हारे हाथ में कर दे, जैसा कि आज प्रकट है । यहोवा ने मुझसे कहा, सुन मैं देश समेत सीहोन के तरे वश में कर

देने पर हूं । उस देश को अपने अधिकार में लेना आरंभ कर ।

2.26 "केदमोत" यह अमोन नदी के उत्तरी क्षेत्र (या आबादी) को प्रस्तुत करता है; लेकिन कहाँ स्थित है मालूम नहीं है । आगामी यह एक लेवियों का शहर बना (यहोशू 21:37)

2:27 "मुझे अपने देश में से होकर जाने दे, मैं राजपथ पर चला जाऊंगा" प्रथम क्रिया (बीडीबी 716, केबी 778, क्वेल कोहोरटेटिव) का अर्थ प्राय: इन ऐतिहासिक सारांश में हुआ है (2:4, 8, 13, 14, 18, 24, 27, 28, 29, 30; 3:18,21, 25, 27, 28; 4:14, 21, 22, 26) । दूसरी पाठ्य पुस्तक संबंधी लक्षण यह है कि इब्रानी शब्द "मार्ग"या "सड़क" के साथ दोहरा संबंध सूचक है । यही एक मार्ग को बताता है कि वे मुख्य राजपथ से हट न जायें । यह राजा के राजपथ को निर्देश करता है जो एदोम, मोआब और सीहोन के राज्य से होकर गुजरता है । मूसा स्वीकृत करता है कि वे, यहां तक कि जब उनका राजा इस्रायल को जगुजरने से मना कर रहा था, तब भी वे इस राज्य सेबिना हानि पहुंचे ही चले गए । यही प्रस्ताव वही है जो कि मूसा ने एदोम से किया था (पद 29) (पद 6) ।

❖ **"मैं दाहिने और बाँए हाथ न मुडुगाँ"** ध्यान दें कि मूसा एक संयुक्त विचार से कह रहा है । बाईबल में कई सारे भ्रम के होने से, बाईबल संबंधी प्रकाशन के संयुक्त व्यवहार बनाम आधुनिक, पश्चिमी समाजों पर अकेले व्यक्ति की दृष्टि से हानि के लिए सूचित किया जा सकता है । अकेल व्यक्ति के अधिकार और सौभाग्य के पास पुराने नियम के सामाजिक एकत्रीकरण किया हुआ है ।

यह संदर्भ पुराने नियम मुहावरा पर आधारित बाईबल संबंधी विश्वास जैसे एक "मार्ग" और "पथ" है । (भ.स. 119:105) । परमेश्वर की इच्छा स्पष्ठ रूप से चिन्हित है । यह विचारयहां शब्दानुसार है (राजपथ) इसलिए संदर्भ "दायें"और "बायें"मुड़ना शब्दानुसार है । सामान्यत: यह आलकांकिर आत्मिक जीवन के लिए प्रयोग हुआ है । (गिनती 20:17, 22:26 व्य 5:32; 17:11, 20; 28:14, यहोशू 1:7; 23:6;1 राजा 22:2) ।

2:30 "तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उसका चित्त कठोर और उसका मन हठीला कर दिया है" प्रथम क्रिया (बीडीबी 904, केबी 115) हिलफिल पूर्ण) का अर्थ "कठोर होना" एक "हठ" और "हठीलापन" विचार से है :

1. क्वेल अपूर्ण का प्रयोग 1:17; 15:18 में
2. हिलफिल का प्रयोग निर्ग; 7:3;13:15 में परमेश्वर ने फिरौन के हृदय को निर्गमन से पहले कठोर कर दिया उसके संबंध में है ।
3. यहोवा की चेतावनी इस्राइलियों के लिए कि उनके हृदय कठोर या हठी न होने पाए व्य. 10:16 में हिलफिल का प्रयोग हुआ है ।

गिनती 2 इस संदर्भ के सीहोन के हृदय (इच्छा) को अदभुत कठोर करने समानान्तर है ।

द्वितीय क्रिया (बीडीबी 54, केबी 69, पीयल अपूर्ण) का अर्थ ''सामर्थी होना'' है । प्राय: यह सकारात्मक रूप से उपयोग होता है, (व्य. 15:7, II इति. 36:13) ।

फिरौन के साथ जो हुआ यह उसी से मिलता-जुलता है : (क) परमेश्वर ने उसके मन को कठोर किया (निर्ग. 7:3, 9:12:10:1, 20 27; 11:1; 14:4, 8, 17) या (ख) फिरौन ने स्वयं के मन को कठोर किया (निर्ग. 8:15, 32, 9:34) । ये पदें परमेश्वर के प्रभुत्व और मनुष्य को स्वयं इच्छा दिये जाने इन दोनों को दिखाता है । यह संदर्भ अर्थ प्रकट करता है कि फिरौन (निर्गमन में) और सीहोन (व्यवस्था विवरण में) के पास स्वयं इच्छा थी या क्यों मूसा ने आरंभ में उन्हें आरभिंक शांति के समय का प्रस्ताव दिया ? झंझट यह है कि परमेश्वर सभी चीजों में नियंत्रण रखने वाला है । परमेश्वर ने परिस्थितयों को रखा लेकिन उन्होंने इन्कार किया (देखें हाईसेइगिंस ऑफ द बाईबल, पृ.142-143) । इसी विरूद्ध मत को रोमि. 9 और 10 दिखाता है । अध्याय 9 परमेश्वर के प्रभुत्व पर ध्यान केन्द्रित करता है जबकि अध्याय 10 में अनेक विश्व संबंधी प्रस्ताव है (पद 4 ''प्रत्येक'', पद 11,13, ''जो कोई भी'', ''पद'' 112, ''सभी'' (दोबारा)) । देखें विशेष विषय जो नीचे दिया गया है ।

विशेष विषय : प्रभु कठोर हुआ

यह विरूद्ध मत अब सैद्धांतिक युद्ध के बीच सैद्धांतिक प्रकारों में स्पर्धा बन चुका है :

1. परमेश्वर का प्रभुत्व बनाम मानवीय स्वयं इच्छा
2. आर्गस्टीन बनाम पिलेग्युस
3. कल्विन बनाम अर्मिनियस

मेरे अनुसार दोनों बाईबल संबंधी सच्चाई हैं । दोनों सच्चाईयां अवश्य ही सौद्धांतिक क्रम में रखना चाहिए है । ''वाचा'' के सामान्य विचार उनको एक साथ रखता है । परमेश्वर हमेशा पहले कार्यक्रम रखता है और गिरे हुए मानव जाति को बुलाता है । (यहु. 6:44, 65) लेकिन हमारे चुनावों के लिए हम ही उत्तरदायी है (यहु. 1:12, 3:16) मानव जाति का उत्तरदायित्व और इसके आज्ञापत्र परिणाम एक मानव जाति आजादी पर है (प्राण शक्ति) । नैतिक क्रियाऐं वास्तविक चुनावों पर आधारित है । धर्मग्रंथ दोनों सच्चाईयों को स्वीकार करता है (सैद्धांतिक मूल) ।

ध्यान दें कि परमेश्वर का प्रभुत्व ''मैं तेरे वश में कर देने पर हूं'' और मानव जाति की

स्वयं इच्छा "देश को अपने अधिकार में लेना आरंभ कर" !

संभवत: यह निश्चित है कि हमारे लिए सैद्धांतिक कठिनाईयें प्राचीन इब्रानी सैद्धांतिक मुहावरों को हमारी नासमझने की बात पहले से ही कही गई है । इस्रायल का एक ही अनोखे ईश्वर में विश्वास रखना सभी बातों पर यह रक्षा करती है । यहोवा सभी चीजों का मूल था यह एक इब्रानी निश्चितता एक ही ईश्वर में विश्वास रखना था । कुछ भी नही हुआ । सिर्फ एक और सिर्फ एक कारण था – यहोवा। मूल ग्रंथ यह स्वीकृत करता है कि यह आज कल के लोगों में इसका कारण बना है :

1. परमेश्वर के विषय में बुरे गुण
2. परमेश्वर के प्रभुत्व का एक तत्व रूप स्वीकृत करता है ।

विशेष विषय – हृदय

यूनानी शब्द कार्डिया का प्रयोग सेप्ट्युजेन्ट में और नये नियम में हुआ ताकि इब्रानी शब्द लेख को प्रभावित करने पाएँ । इसका प्रयोग कई प्रकार से हुआ है । (बाअयेर, अर्नडट, गिन्गरिच और डान्कर ए ग्रीक-इंग्लिंश लेक्सिकोन पृ. 403-404) :

1. शारीरिक अंग का केन्द्र, एक व्यक्ति के लिए आलंकार (प्रे. का. 14:17, II कुरू. 3:2-3, याकूब 5:5)
2. आत्मिक (नैतिक) जीवन का केन्द्र
   (अ) परमेश्वर हृदय को जानता है (लूका 16:15, रोमि. 8:27, I कुर. 14:25, I थिस्सु. 2:4 प्रका. 2:23)
   (ब) मानव जाति के आत्मिक जीवन का प्रयोग (मती 15:18-19; 18:35, रोमि. 6:17, I तिमु. 1:5,II तिमु. 2:22, I पत. 1:22)
3. विचारशक्ति जीवन का केन्द्र (बुद्धि,मती 13:15; 24:48, प्रे. का. 7:23; 16:14; 28:27, रोमि 1:21;10:6; 16:18 II कुर. 4:6, इफि. 1:18; 4:18;याकूब 1:26; II पत.1:19, पृ.का. 18:7 मन के साथ में हृदय पर्यायवाची है II कुर. 3:4-15 और फिलि. 4:7)
4. इच्छा का केन्द्र (ईच्छा, प्रे.का. 5:9; 11:23; 1 कुर. 4:5; 7:37 II, कुर. 9:7)
5. भावनाओं का केन्द्र (मती 5:28, प्रे. का. 2:26, 37; 7:54; 21:13; रोमि. 1:24; II कुर. 2:4; 7:3; इफि. 6:22;फिलि. 1:7)

6. आत्मा के कार्य के लिए अनोखा स्थान (रोमि. 5:5,II कुर. 1:22, गल. 4:6 (हमारे ह्दय में यीशु मसी,इफि 3:17)) ।

7. ह्दय एक पूरे व्यक्ति को आलकांरिक रूप से प्रकटीकरण करता है (मती 22:37, को व्य. 6:5 से लिया गया है । विचार, लक्ष्य और ह्दय के गुणयुक्त क्रियाएं एक व्यक्ति के प्रकार को जाहिर करती है ।

पुराने नियम के पास कुछ चित्त को आकर्षित करने वाले शब्दों का प्रयोग :

(i) उत. 6:6; 8:21, परमेश्वर अपने ह्दयमें दुखित हुआ (होशे: 11:8-9 को भी देखें)

(ii) व्य. 4:29; 6:5 "पूरे मन और पूरे ह्दय के साथ"

(iii) यहेजे. 18:31-32, "एक नया ह्दय"

(iv) यहेज. 36:26, एक नया ह्दय बनाम "एक पत्थर का ह्दय"

2:31 पद 24 से तीन आज्ञात्मक बातों को दुहराया गया है :

1. "देखा" - बीडीबी 906, केबी 115, क्वेल आज्ञात्मक
2. "आरंभ कर" - बीडीबी 320, केबी 319, हिफिल आज्ञात्मक
3. "अधिकार में लेने" - बीडीबी 439, केबी 441, क्वेल आज्ञात्मक

NASB मूल ग्रंथ 2:32-37

"तब सीहोन अपनी सारी सेना के साथ निकल आया और हमारा सामना करके युद्ध करने को सहस तक चढ़ आया। हमारे परमेश्वर यहोवा ने उसको हमारे द्वारा हरा दिय और हमने उसको पुत्रों और सारी सेना समेत मार डाला । उसी समय हमने उसके सारे नगर ले लिए, और एक-एक बसे हुए नगर का स्त्रीयों और बाल-बच्चों समेत यहां तक सत्यानाश किया कि कोई न छूटा । परन्तु पशुओं को हमने अपना घर कर लिया, और उन नगरों की लूट भभ हमने ले ली जिनको हमने जीत लिया था । अर्नोन के नाले के छोर वाले अरोएट नगर से लेकर, और उस नाले के नगर से लेकर गिलाद तक कोई नगर ऐसा ऊंचा न रहा जो हमारे सामने ठहर सकता था; क्योंकि हमरे परमेश्वर यहोवा ने सब को हमारे वश में कर दिया । परन्तु तुम अम्मोनियों के देश के निकट वरन एब्बोक नदी के उस पार जितना देश है, और पहाड़ी देश के नगर जहां-जहां जाने से हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम को मना किया था, वहाँ तुम नहीं गये ।"

2.32 ''हमारा सामना करने के लिए निकल आया'' सीहोन हार गया क्योंकि उसने उसके किला बने हुए शहरों को छोड़ा और मैदान पर पराजित हुआ । यह एक अच्छा उदाहरण है जहां परमेश्वर उसके उद्देश्य को पूरा करने के लिए मानव घमंड का उपयोग करता है ।

❖ **''यहस''** वास्तविक स्थान का पता नही है, लेकिन यह सीहोन के राज्य में यरदन के पूर्वी किनारे पर स्थित है और संभवत: दक्षिण की राजधानी, हेशबोन, क्योंकि इस्राइली दक्षिण की ओर से आ रहे थे ।

2.33 ''परमेश्वर ने उसको हमारे द्वारा हरा दिया'' जैसे पद 31 में, परमेश्वर का प्रभुत्व (पद 32 अ, ''परमेश्वर ने सौंप दिया'' बीडीबी 678, केबी 733 क्वेल अपूर्ण) और मानव आजादी (पद 32 ब, ''हमने हराया'' बीडीबी 645, केबी 697, हिफिल अपूर्ण) दोनों स्पष्ट रूप से स्वीकृत है ।

2.34 ''हमने किसी को न छोड़ा'' यह पंक्ति पवित्र युद्ध का एक सिद्धांत है (हेरेम, बीडीबी I 355 3:6) सभी लोग मारे गये क्योंकि ये लोग बहुत समय से पाप करते आ रहे थे (व्य. 7:16, 20:14) । उत. 15:16 में लिखा है कि ''अमोरियों का अधर्म अब तक पूरा नहीं हुआ है'' और इसलिए परमेश्वर ने उनके प्रत्युत्तर के लिए एक लंबा समय इंतजार कियाथा । वे पश्चाताप् नहीं किये जाते, तो वे सीनै पर्वत पर दिये गये सिद्धांत और आराधना को नष्ट कर दिये होते । ''पवित्र युद्ध एक न्याय और सुरक्षायुक्त घिराव था !

2.37 ''परन्तु पशुओं को हमने अपना कर दिया और उन नगरों की लूट भी जिनको हमने जीता था'' यहां एक सीमित निषेध का उदाहरण है (3:6-7; यहोशू; 8:2, 27; 11:14) वे कुछ लूट का मा ले सके उसके बाद वे लोगों को नष्ट किये यह । पुराने नियम के पवित्र युद्ध का एक भाग था । युद्ध परमेश्वर का है, और इसलिए, लूट के मालों पर भी (यरीहो, यहोशू7)।

2:36

NASB	**''नगर जो घाटी में है''**
NKJV,	**''शहर जो दर्श में स्थित है''**
NRSV	**''शहर जो कि स्वयं वादी में है''**
TEV	**''शहर जो घाटी के बीच में है''**
NJB	**''शहर जो घाटी के नीचे में है''**

अंग्रेजी अनुवादों में भिन्नताएं संभव को दिखाती है । मेरे अनुसार एक वादी में शहर को नहीं बनाया गया हो, क्योंकि बाढ़ों के आने के कारण से इसलिए घाटी अच्छी प्रतीत होती है ।

❖ **"कोई नगर ऐसा न रहा जो हमारे सामने ठहर सकता था"** परमेश्वर के लोगों के पास रूकावट थी क्योंकि शहरों की अच्दी बड़ी किलों से बना हुआथा, और निवासी भी बहुत लंबे थे । अब यहूदी कह रहे है, ये लोग बड़े बड़े है, लेकिन हम परमेश्वर की सहायता से इसे करेगें (व्य. 1:28)

2.37 विजय प्राप्त करने काक्षेत्र बहुत ही विधिपूर्वक था (अलौकिक आज्ञा से पद 5,9,19)

विवादपूर्ण प्रश्न :

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टीकाक्रम है जिसका मतलब बाईबल के अनुवाद के लिए हम स्सयं ही उत्तरदायी होगें । हममें जो प्रकाश है उसी में प्रत्येक को चलना है । आप बाईबल और पवित्र आत्मा अनुवाद करने में प्रधान है । आपको टीकाक्रम लिखने वाले पर ही नहीं छोड़ देना है ।

ये विवादपूर्ण प्रश्न आपको इस पुस्तक के मुख्य प्रकाशन के भाग को सोचने के लिए सहायता प्रदान करती है । वे विचार उत्तेजक से है न कि अन्तिम है ।

1. मानचित्र पर विजय प्राप्त क्षेत्र का अनुसरण करें ।
2. दानव कैसे थे ?
3. पद 34 के साथ एक व्यक्ति कैसा बर्ताव करता है ?

*****

व्यवस्था विवरण 3

आधुनिक अनुवादों का वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
राजा ओग पराजित हुआ	ऐतिहासिक पुन: दृष्टि (1:1-3:29)	राजा ओग से इसका विजय होता है	ओग के राज्य का युद्ध
3:1-11	3:1-7	3:1-2	3:1-7
		3:3-7	
2:1-7	3:8-17	3:8-10	3:8-11
		3:11	
यरदन के पूर्वी देश का विभाजन हुआ		वह जाति जो यरदन के पूर्व पर स्थित हुई	यरदन पार को अलग-अलग हिस्सों में बांटना
		3:12-13 अ	
		3:13 ब-14	
		3:15-17	मूसा से आगे की शिक्षा
3:18-22	3:18-22	3:18-20	3:18-20
		3:21-22	
मूसा को देश में प्रवेश होने से मनाही		मूसा का कनान में प्रवेश होने से इन्कार	3:23-28
3:23-29	3:23-29	3:23-25	
		3:26-28	
		3:29	3:29

तृतीय अध्ययन चक्र (देखें पृ. vii प्रस्तावना भाग में)

लेखनके वास्तविक विचार का अनुसरण इस वाक्यखण्ड तुल्यता पर

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टीकाक्रम है जिसका मतलब हमारे बाईबल अनुवाद करने पर हम स्वयं ही जिम्मेदार होगें । हममें जो प्रकाश है उसी में प्रत्येक को चलना है । आप बाईबल और पवित्रात्मा अनुवाद करने में प्रधान है । आपको सिर्फ टीकाक्रम लिखने वाले पर ही नहीं छोड़ देना है·

एक स्थान में बैठकर अध्याय को पढ़ो । विषय को पहचानिये (अध्याय चक्र #3, पृ.viii) आपके विषय को विभाजन करते हुए चार आधुनिक अनुवाद जो ऊपर दिये गए है उसके साथ तुलना करो । वाक्यखंड प्रेरणायुक्त नहीं है, लेकिन यह लेखक के वास्तविक विचार को अनुसरण करने की कुंजी है, जो अनुवाद का हृदय है । प्रत्येक वाक्यखंड में सिर्फ एक और एक ही विषय है :

1. प्रथम वाक्यखण्ड
2. द्वितीय वाक्यखण्ड
3. तृतीय वाक्यखण्ड
4. इत्यादि

शब्द और वाक्यखण्ड का अध्ययन

"तब हम मुड़कर बाशान के मार्ग से चले । बाशान का ओग नामक राजा अपनी सारी समेत हमारा सामना करने को निकल आया कि एद्रेई से युद्ध करें । तब यहोवा ने मुझे कहा, उससे मत डर, क्योंकि मैं उसको सारी सेना और देश समेत तेरे हाथ में कर रहा हूं। जैसातुने हेशबोन के निवासी एमोरियों ने राजा सीहोनसे किया है वैसा ही उससे भी करना । इस प्रकार हमारे परमेश्वर यहोवा ने सारी सेना समते बाशान के राजा ओग को भी हमारे यहां तक मारते रहे कि उनमें से कोई भी न बच पया । उसी समय हमने उनके सारे नगरों को ले लिया कोई ऐसा नगर न रह गया जिसे हमने उनसे न ले लिया हो । इस प्रकार अर्गोब का सारा देश जो बाशान में ओग के राज्य में था और उसमें साठ नगर थे, वह हमारे वश में आ गया । ये सब नगर गढ़ वाले थे, और उनकी ऊंची ऊंची शहरपनाह, फाटक और बेड़े थे । इनको छोड़ बिना शहरपनाह के भी बहुत से नगर थे । जैसा हमने हेशबोन के राजा सीहोन के नगरों से किया था, वैसा ही हमने इन नगरों से भी किया, अर्थात सब बसे हुए नगरों को स्त्रियों और बाल बच्चों सहित पूर्णत: नष्ट कर डाला । परन्तु सब घरेलु पशु और नगरों की लूट अपनी कर ली ।

3.1 "ऊपर... मार्ग" यह राजा के मुख्यमार्ग को प्रकट करता है । यह यरदन–पार मार्ग था जो एदोम, मोआब और अम्माने के बीच से होकर सीधा गया था। यह एक व्यापारियों के समूह का मार्ग या जो अकाबा की खाड़ी से दमिश्क तक जाता था ।

❖ **“बाशान”** इस नाम का अर्थ “कोमल” (बीडीबी 143) है ; जो प्रधान खेती संबंधी देश के विचार से है (चट्‌टाने नहीं) । यह एक बहुत ही ऊपजाऊ और जंगल से भरा हुआ देश है जो यार्मोक नदी के उत्तर क्षेत्र यरदन पार उत्तरी में है या संभवत: याबोक नदी से हार्मोन पर्वत के उत्तरी क्षेत्र यरदन पार उत्तरी में है या संभवत: याबोक नदी से हर्मोन पर्वत के दक्षिण के पास, जिसका अर्थ यह कुछ क्षेत्रों के भाग को शामिल करता है जिसे गिलाद के नाम से जानते है ।

❖ **“ओग, बाशान”** का राजा देखें गिनती” 21:33-35; व्य. 1:4

❖ **“एद्रेई पर”** यह शहर यार्मुक नदी के शूल पर स्थित है और यह एक राजकीय ठहरने का स्थान था । राजधानी अस्तेरोत से उत्तर तक था । ओग ने यहाँ पर इस्रायल का सामना किया, संभवत: नदी का प्रयोग एक रक्षक स्थान के रूप में हुआ है ।

3.2 **“यहोवा ने मुझे कहा”** देखें सूची 2:2 पर ।

❖ **“उससे मत डर”** क्रिया (बीडीबी 431, केबी 432, क्वेल अपूर्ण का प्रयोग आज्ञार्थक विचार से हुआहै) का प्रयोग कई बार व्यवस्थाविवरण में हुआ है (1:19; 21,29, 2:4;3:2,22; 4:10) परमेश्वर उनके लिए लड़ाई कर रहा है (पवित्र युद्ध, गिनती : 21:34, यहोशू 10:8, 11:6)

❖

NASB	**“मैंने उसे तरे अधिकार में कर दिया है ।”**
NKJV, NRSV	**“मैंने उसे तेरे हाथ में कर दिया है”**
TEV	**“मैं उसे देने पर हूं ।”**
NJB	**“मैं उसे तुम्हारे वश में रखा है”**

❖ और हम उसको यहां तक मारते रहे जब तक उनमें से कोई भी न बच पाया यह “पवित्र युद्ध” की वास्तविकता और भाषा है । यह इब्रानी विचार हेरेम को या “रूकावट के नीचे” को प्रभावित करत है (पद 6) । निम्नलिखित पुराने नियम के निर्देश इस शब्द के लिए एक पुन: प्रस्तुति नमुना है जो दिखता है कि किस प्रकार से इसे विभिन्न तरह से प्रयोग किया गया है । हेरेम का विचार या “पवित्र युद्ध” “रूकावट” या “प्रतिबंध” :

1. पूर्ण नाश – जितने श्वासं लेने वाले है उन्हें जीवित नहीं छोड़ा गया, कुछ भी वस्तु को नहीं लिया गया (व्य. 20:16–18; I शमु. 15:3, यहोशू 7)

2. सभी लोगों के मार दो, लेकिन पशुओं को छोड़ दो (व्य. 2:34, 35, 3:6, 7

3. सिर्फ पुरूषों को मार डालो (व्य. 20:10–15)

3:4 "अर्गोब का प्रदेश" शब्द प्रदेश (बीडीबी 286) का अर्थ शब्दानुसार "एक डोरी" इसका प्रयोग हुआ :

1. एक डोरी रस्सी

2. एक मापने वाली कतार

3. देश का भाग (प्रदेश, यहोशू: 17:5, या उत्तराधिकार, व्य. 32:9, यहोशू; 17:14)

4. लोगों का एक समूह (भविष्यवक्ताओं की बंधने, 1 शमु. 10:5, 10)

❖ **"अर्गोब"** यह शब्द (बीडीबी 918) एक प्रदेश या देश क्षेत्र का नाम है इसकी भूमि बाशान के देश में है (3:4, 13,14; I राजा 4:13) । संभवतः मूल का संबंध "मिट्टी का ढोंका" (बीडीबी 918) या "देर" से है, लेकिन यह अनिश्चित है ।

3:5 "ये सब नगर गढ़ बोले थे, और उनकी ऊंची ऊंची शहरपनाह, फाटक और बेड़े थे " ये सब नगर ज्वालामुखी पर्वत के टुकड़ों से बनाये गये थे और बहुत ही बड़े–बड़े थे । वे एक डराने वाली दृष्टि को प्रस्तुत करते है । उनकी आकार ने शायद वहां रहने वाले लोगों की आबादी को प्रभावित की है । किन्तु, इस्राइलियों का विश्वास दानवों के भय से बढ़कर मजबूत था । (2:20–24) ।

युनाइटेड बाईबल सोसाइटीस की हेण्डबुक ऑन ड्यूटरोनोमि में यह प्रदर्शित हुआ है कि "फाटक और बेड़े" शायद दो फाटक एक बेड़े की धातु दोनों के घेरे हुए होती है, पृ. 68–69 शायद यही बहुवचन "फाटकों" की व्याख्या करता है :

1. वहाँ एक से अधिक फाटक होंगे या

2. यह शायद फाटक के भीतरी और बाहरी चरित्र होगें । (बन्द स्थान)

3:6

NASB	
NKJV, NRSV	**"पूर्ण रूप से नष्ट"**
TEV	**"नष्ट हुआ"**
NJB	**"नाश का श्राप"**
REB	**"गंभीर रूकावट के नीचे"**
JPSOA	**"दण्ड की आशा दिया गया"**

इस क्रिया (बीडीबी 355, केबी 353) का प्रयोग इस पद में दोहरा है (हिफिल आज्ञात्मक और हिफिल अनिश्चित सत्यता) । इसका मूल अर्थ परमेश्वर को कुछ समर्पित करना है । जिसके द्वारा यह मनुष्य के प्रयोग के लिए अत्यधिक पवत्रि होती है और अवश्य ही नष्ट होनी चाहिए । निरंतर इसका प्रयोग "पवित्र युद्ध" संदर्भ (2:34, 7:2, निग:22:20 यहोशू 6:17, 21) स्वीकृत करने की विजय और इसके द्वारा, नाश होना परमेश्वर का है । इन तुलनात्मक संदर्भों में परमेश्वर का समर्पित होने वाली चीजें कनानी औरउनकी सम्पत्ति है । उनका न्याय हुआ क्योंकि उनके हठी पाप और पश्चाताप करने में अनिच्छुक होने के कारण था (उत. 15:16, लैव्य : 18:24-26; व्य. 9:5) ।

एक "पवित्र युद्ध" की चर्चा के लिए देखें एनसियन्ट इस्रायल, बाय रोलेन्ड डीबॉक्स, बोल. 1 पृ. 258-267 ।

NASB **मूल ग्रन्थ 3:8-11**

"यो हमने उस समय यरदन के उस पार रहने वाले एमोरियों के दोनों राजाओं के हाथ से अर्नोन के नाले से लेकर हेर्मोन पर्वत तक का देश ले लिया । हेर्मोन की सीदोनी लोग सिर्यो6, और एमरोरी लोग सनीर कहते है ।) समथर देश के सब नगर, और सारा गिलाद, और सल्का, और एद्रेई तक जो ओग के राज्य के नगर थे, सारा बाशान हमारे वश में आ गया । जो रपाई रह गए थे उनमें से केलव बाशान का राजा ओग रह गया था, उसकी चारपाई जो लोहे की है वह अम्मोनियों के रब्बा नगर में पड़ी है, साधारण पुरूष के हाथ के हिसाब से उसकी लंबाई नौ हाथ की और चौड़ाई चार हाथ की है ।

3.8 "यो हमने देश..... दोनों राजाओं से लिया" पद 24 में लिखा है यह "परमेश्वर का सामर्थी हाथ था", जो ईश्वर का मनुष्य रूप लेना परमेश्वर के सामर्थ और शक्ति को दिखाता है । दुबारा यहाँ पर परमेश्वर के प्रभुत्व के बीच और मनुष्य के प्रयत्न में पारस्पिरिक क्रिया है ।

❖ “**हेर्मोन पर्वत**” हेर्मोन पर्वत देश की उत्तरी सीमा पर था जिसे परमेश्वर ने इस्राइलियों को दिया था । यह चिन्नेरेथ (गलील) के झील के उत्तरी, लबानोन के पूरे क्षेत्र में स्थापित बहुत बड़ी पर्वत है। इसका नाम हेरेम से (बीडीबी 356)(समर्पित चीज) और कई मंदिरों के स्थानों से संबंधित है (एनसियन्ट इस्रायल, रोलेन्ड डिवॉक्स, बोल 1, प1. 279, 282)। यह विजय प्राप्त देश कीउत्तरी सीमा है । (न्या. 1:1) ।

❖ “सीदोनिया” यह प्राचीन पुनुकियामें प्रधान शहर है, (I राजा 16:31) यह सूर निचली सीमा पर स्थापित थी, जो बाद में एक मुख्य शहर हुई । सूर के बदले इसका प्रदर्शित होना इस मूल ग्रन्थ के प्राचीनतम को दिखाता है ।

❖ “**सिर्योन**” इस शब्द (बीडीबी 972,I इति. 5:23, श्रेष्ठ 4:8, यहे. 27:5) शाल्मनेसर III , एक असिरिया राजा जिसने दमिश्क पर आक्रण किया था उसके विचारों में पाया गया है ।

3.10

NASB, TEV “**समथर**”
NKJV, “**समतल भूमि**”
NRSV, NJB “**समतल स्थान**”

इस शब्द (बीडीबी 449) का अर्थ “एक समतल स्थान” है । यह एक समतल या समतल स्थान को प्रदर्शित कर सकता है । यहाँ पर यह अर्मोन नदी और हेशबोन शहर के बीच की समथर को प्रकट कर रहा है (4:43; यहोशू 13:9, 16, 17, 21; यिर्म. 48:8,21) । य समथर मोआब का भाग या और फिर रूबेन के जातीय पैतृक धन हुआ । (यहोशू : 20:8)

❖ “**गिलाद**” इस शब्द (बीडीबी 166) का अथऋ या प्रारंभिक नहीं मालूम हुआ है । एक प्रचलित परिभाषा (शब्द खेल) उत. 31:48 में दिया गया है, यह इन्हें प्रदर्शित कर सकता है :

1. एक जाति (गिनती 26:29; न्या 5:17)
2. एक देश (उत. 37:25)

यह हमेशा एक क्षेत्र, जो यरदन नदी के पूर्वी किनारे से बाशानदेश के उत्तरी अर्नोन नदी तक है प्रकट करती है ।

❖ **"सल्का"** यह शहर बाशान के दक्षिण पूर्व सीमा का रूप प्रतीत होता है और प्राय: हेर्मोन पर्वत के साथ हुआ, ताकि बाशान के फैलाव को नियुक्त करने पाएँ (यहोशू 12:5; 13:11; I इति 5:11)

3:11 यह एक संप्रदायक संबंधी समालोचन जान पड़ता है, जैसे 2:10–12, 20;8:9 केसमान

❖ "रपाई" इसका अर्थ हो सकता है (1) एक जाति समूह (2) दानव ; या (ग) मृतक के राज्य । यहां परदानवों के विषय में कहा गया है, ऐसा प्रतीत होता है । देखें विशेष विषय 1:28 में ।

❖

NASB, NKJV **"उसकी चारपाई जो लोहेकी थी"**
NRSV, NJB **"उसकी चारपाई, लोहे की चारपाई थी"**
TEV **"उसकी चारपाई, पत्थर की बनी हुई थी"**
REV **"भूरी चट्टान उसकी पत्थर पर बनी हुई कब्र"**

शब्द (बीडीबी 793) का मूल अर्थ "एक लकड़ी की बनायी रचना" है । यह एक लकड़ी की जाली, पलंग, कुर्सी/सिंहासन के लिए प्रयोग हो सकता है। यहाँ यह एक सोने के स्थान को बताता है :

1. बिस्तर (II शमु. 17:28; अय्यू 7:13; भ.स. 6:6; 41:3; आयोस 6:4
2. पलंग (निति. 7:16)
3. बक्स शव रखने का पत्थर पर बनी हुई कब्र, एक व्यक्ति काअंतिम विश्राम स्थान/सोने का)

यह संभव है कि "लोहा" भूरे चट्टान के पत्थर की बनी हुई कब्र के रंग को प्रकट करें (नेट बाईबल, पृ. 350) । नोडोट बोल. 1,प. 741, में लिखता है, कोई भी सलाह के लिए शब्दानुसार सहायक नहीं है कि यह पत्थर से बनी हुई कब्र है ।

❖ **"रब्बा"** यह अम्मोन राज्य की राजधानी थी (यहोशू 13:25) वर्तमान में यह यरदन, अम्मान की राजधानी है ।

❖ **"एक साधारण हिसाब से"** शब्दानुसार यह, एक व्यक्ति हिसाब से है एक "विशेष हिसाब" के मुहावरे के लिये है । देख नीचे दिये विशेष विषय पर ।

विशेष विषय – हाथ की नाप

बाईबल में दो तरह के हाथ के नाम है (बीडीबी 52, केबी 61) । प्रचलित हाथ की नाप, एक मध्यम व्यक्ति की सबसे लंबी अंगुली और उसकी कोहनी के बीच की दूरी है, लगभङ सामान्य तौर में, 18 इंच है (उत. 6.15; निर्ग. 25:10,17, 23; 26:2, 8,13, 16; 27:1, 9, 12,13, 14, 16, 18; गिनती 35:4, 5; व्य. 3:11) । और एक दीर्घकाल हाथ की नाम (राजकीय हाथ की नाप) जो निर्माण कार्य में होती है (सुलेमान का मंदिर) जो मिस्र में प्रचलित था (21 अंगुलियां), पलिश्ति (24 अंगुलियां) और बेबिलोन में (30 अंगुलियां) । लगभग यह 21 इंच की लंबाई थी (यहे. 40:5; 43–13) ।

पुराने समय में नापने के लिए मनुष्य के शरीर के अंगों का प्रयोग होता है । पुराने समय के पूर्वी पास के लोग प्रयोग में लाते थे :

1. लंबाई, कोहनी में मध्य अंगुी तक (हाथ की नाम)
2. चौड़ाई, बाहर तनी हुई अंगुठा से छोटी अगुंली तक (काता, निर्ग. 28:11, 39:9; I शमु. 17:4)
3. बंद मुठ्ठी कीसीभ चार अंगुली के बीच की लंबाई (चौड़ी हाथ, निर्ग. 25:25; 37:12; I राजा 73/6; II इति 4:5)
4. अंगुली की मध्य जोड़ लंबाई (चौड़ी अंगुली यिर्म 52:21)

हाथ की नाप (बीडीबी 52, केबी 61) पूर्ण रपू से प्रमाण के अनुसार नहीं किया गया था, लेकिन दो मूल लंबाईयां थी :

(अ) साधारण पुरूष के कोहुनी से मध्य अंगुली (लगभग 18 इंच, व्यं 3:11)

(ब) राजकीय हाथ का हिसाब एक खण्ड लंबा था (लगभग 20 इंच, II इति, 3:3; यहे. 40:5; 43:13)

NASB मूल ग्रन्थ : 3:12–27

"जो देश हमने उस समय अपने अधिकार में ले लिया वह यहाहै, अर्थात अर्नोन के नाले के किनारे वाले अरोएर नगर से ले सब नगरों समेज गिलाद के पहाड़ी देश का आधा भा जिसे मैंने रूबेनियों औरा मादियों को दे दिया, और गिलाद का बचाहुआ भाग, और सारा बाशान, अर्थात अर्गोन का सारा देश जो ओग के राज्य में था, इन्हें मैंने मन्श्शे के आधे गोत्र को दे दिया। (साराबाशान को रपाईयों का देश कहलाता है । और मनश्शेई याईट ने गशूरियों और माकावासियों की सीमा तक अर्गोब कासारा देश ले लिया और बाशान के नगरों का नाम अपने नाम पर

> हब्बोत्याईट रखा और वही नाम आज तक बना है ।) और मैने गिलाद देश माकीर को दे दिया, और रूबेनियों और गदियों को मैंने गिलाद से ले अर्नोन के नाले तक का देश दे दिया, अर्थात उस नाले का बीच उनकी सीमा ठहराया और यब्बोक नदी तक जो अम्मोनियों की सीमा है । और किन्नेरेत सेले पिसगा की ढलान के नीचे के अराबाके ताल तक, जो खारा ताल भी कहलाता है, आराबा और यरनदन के पूर्व की ओर का सारादेश भी मैं ने उन्हीं को दे दिया ।''

3:12 ''रूबेनियों और गादियों'' ये दो जातियों ने सीहोने के राज्य पर कब्जा किया (यहोशू 18:15-25, 24-28) ।

3:13 ''आधे गोत्र'' युसुफ के पुत्रों ने मनश्शे और एप्रेम को आधे-गोत्र में बनाया (उत. 41:50-2; 48:1-7) । मनश्शे का पैतृक धन अलगाया हुआ था, यरदन के पूर्वी किनारे पर आया और पश्चिमी किनारे पर आया था ।

3.14 ''याईट'' ''पुत्र के'' बजाय इसका अर्थ ''पीढ़ी का'' (गिनती 32:41) है । अनेकों पीढ़िया इस वंश में लुप्त हुआ है । पद 12-13 व्यवहार में सामान्य और पद 14-17 अधिक जानकारी देता है (एनआईसी, ड्यूटरोनोमि, क्रेइजि, पृ. 121) ।

❖ **''वहीं नाम आज तक बना है''** यह वाक्य खंड घटना की बजाय बाद की अवधि को प्रकट करता है (2:22; 3:14; 4:38; 10:8, 15; 29;28; यहोशू 7:26; 8:28, 29; 9:27; 13:13; 14:13; 16:10;22:3; 17; 23; 8; न्या. 1:21, 26; 10:4:18:12, 30; 19:30) । पद 5 एक मिलता-जुलता आघात दिखाई पड़ता है । विचारणीय विषय ''कितना अधिक'' आगामी है । यह ''शीघ्र के बाद'' (यहोशू 625, 23:9) को प्रकट कर सकता है या इसकामतलब आगामी पीढ़िया हो सकती है । किसने मूसा के वचनों को लेख प्रमाणित किया ? किसने पंचग्रन्थ को संयुक्त किया ? कौन अंतिम सम्पादक था ? आधुनिक विद्या इन प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकती है।

❖ **''मनश्शे का पुत्र''** पुत्र का अर्थ यहां सीधे पुत्र की बजाय पीढ़ी है (I इति. 2:22) ।

❖ **''गशूरियों और मकावाशियों''** ये विभिन्न कुल और जाति संघ है बीडीबी 178 और 591 । वे बाशान देश की उत्तरी सीमा निवासी थे (यहोशू 13:13) । इस्राइल ने इन लोगों से युद्ध नहीं किया ।

❖ **"हब्बोत्याईद"** इसका अर्थ शहरों, प्रदेशों या राज्य जो याईट के लिये है ।
(बीडीबी 795 II)

3:15 **"माकरी"** इस व्यक्ति के बारे में निगती 32:39-40 अधिक जानकारी देता है ।

3:17 **"अराबा"** यरदन घाटी के लिए यह एक दूसरा नाम था, जो गलील के झील के ऊपर से बहकर अनन्तर मृत सागर के नीचे से सीनै प्रायद्वीप में अकाबा की खाडी में जाती है । (देखें सूची 1:1) में । एक फटन भूतत्व है जिससे यरदन नही हेर्मोन पर्वत की चोटी से मृत सागर तक बहती है ।

❖ **"चिन्नेरेत"** यह(बीडीबी 490) गलील के शहर के नाम है जो एक बड़ी झील के लिए परिणाम था जो बाईबल में अनेकों नामों के द्वारा जानी जाती है ।

(क) चिन्नेरेत (गिनती 34:11, यहोशू 12:3; 13:27)

(ख) गलीली (मती 4:18, मर. 1:16 यहु. 6:1)

(ग) गन्नेसरेत (लूका 5:1)

(घ) तिबिरियस (यहु. 6:1, 21:1)

❖ **"पिशगाह"** इस पर्वात (बीडीबी 820) को पहचान ने के साथ या नीबो पर्वत के अत्यधिक निकट (बीडीबी 612, I12:49;34:1) संभवत: वे एक रचना की दो चोटियां या पर्वतपृष्ठ का नाम और इसकी ऊंची चोटी हैं ये पर्वत अराबा के ऊपर मोआब के समतल भूमि के नाश का परिणाम है । यह नाम पुराने नियम में नेबों के बजाय अत्यकिध सामान्य है (गिनती 21:20, 23:14; व्य. 3:17, 27; 4:49; 34:1) ।

❖ **"अराबा की ताल"** यह (4:49, यहोशू 3:16; 12:3; समतल की ताल भी कहा गया है II राजा 14:25 में) नमकीन समुद्र का दूसरा नाम है (उत. 14:3; गिनती 34:3, 12; यहोशू 3:16; 15:2,5:18:19) या जैसे वर्तमान में इसे मृत सागर के नाम से पुकारा गया है । इसे पूर्वी समुद्र के नाम से भी पुकारा जाता है (यहे. 47:18 योएल 2:20, यकर्याह: 14:2) या सिर्फ समुद्र (याशा. 16:8; यिर्म 48:32) ।

NASB मूल ग्रन्थ 3:18-22

"उस समय मैंने तुम्हें यह आज्ञा दी, तुम्हारे परमेश्‍वर यहोवा ने तुम्हें यह देशा दिया है कि उसे अपने अधिकार में रखों; तुम सब योद्धा हथियारबंद होकर अपने भाई इस्राइलियों के आगे आगे पार चलो । परन्तु तुम्हारी स्त्रियां और बाल बच्चे और पशु जिन्हें मैं जातना हूं कि बहुत से है, वह सब तुम्हारे नगरों में जो तुम्हें मैने दिए है रह जाएँ । और यहोवा तुम्हारे भाइयों को वैसा विश्राम दे जैसा कि उसने तुम को दिया है, ओर वे उस देश के अधिकारी हो जाएँ जो तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा

उन्हें यरदन पार देता है, तब तुम भी अपने अपने अधिकार की भूमि पर जो मैंने तुम्ही दी है लौटोगे । फिर मैंने उसी समय यहोशू से चिताकर कहा तू ने अपनी आंखों से देखा है कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने इन दोनों राजाओं से क्या-क्या क्किया है, वैसा ही यहोवा उन सब राजाओं से करेगा जिनमें तू पार होकर जायेगा । उन से न डरना क्योंकि जो तुम्हारी ओर से लड़ने वाला है वह तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ।''

3.18 ''तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें यह देश दिया है'' यह अराबा के पूर्वी किनारा (यरदन पार) को प्रकट करता है ।

❖ **''हथियारबंद होकर अपने भाई इस्राइलियों के आगे होकर चलो''**, क्योंकि रूबेन, गाद और मनश्शे का आधा, यरदन के पूर्वी किनारे पर बसे हुए थे । जिन्हें पहले से ही जीता गया था, उन्हें अब युद्ध में पहले जाना था और वहां उनके भाईयों के देश के लिए लड़ना था (पद 19-20) स्वयं बसने के पहले

3:19 ''अत्यधिक पशुओं का समुदाय'' अधिक पशुओं का समुदाय जिन्हें उन्होंने दोनों युद्ध पर नष्ट किया था (क) मिस्र और (ख) यरदान पार राष्ट्र

❖ **''जिसे मैने तुम्हें दिया है''** सभी आशीषों का श्रोत परमेश्वर है (प्राय: उपयोगी क्रिया दिया है (बीडीबी 678, केबी 733, क्वेल पूर्ण) उन्होंने स्वयं के लिए युद्ध नाशों को नही प्राप्त किया था ।

3.20 ''यहोवा तुम्हारे भाइयों को वैसा विश्रमा दे'' इब्रानियों की किताब पचग्रंथ पर नया नियम ही टीकाक्रम बहुत ही अच्छा है । इब्रा. 4 में, शब्द विश्राम तीन प्रकार से प्रयोग हुआ है ।

1. जैसे परमेश्वर ने सृष्टि के बाद विश्राम किया, सातवां दिन विश्राम, सब्त
2. इस्राइलियों ने वायदे के देश को जीतने के बाद इस्राइलियों ने विश्राम किया । (12:10; 25:19; यहोशू 23:1)
3. स्वर्ग, अनंत विश्राम सातवें दिन

यहां विश्राम सुरक्षा को प्रगट करता है #2)

3.21 क्योंकि यहोवा के प्रबंधन जंगल में और यरदन पार में विजयी, होने के कारण, इस्राइलियो को उन पर भरोसा रखना और आगे बढ़ना है ।

3.22. **''जो तुम्हारी आरे से लड़नेवाला है, तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है''** यह मानवीय प्रयत्न, बुद्धि या साधनों नहीं है किन्त परमेश्वर की सामर्थ है (1:30; 20:4; निर्ग. 14:14;15:3)

NASB मूल ग्रन्थ 3:23-29

"उसी समय मैने यहोवा से गिडगिड़ाकर विनती की, हे प्रभु यहोवा, तू अपने दास को अपनी महिमा और बवंत हाथ दिखाने लगा है, स्वर्ग में और पृथ्वी पर ऐसा कौन देखता है जो तेरे से काम और पराक्रम के काम कर सकें ? इसलिये मुझे पार जाने दे कि यरदन पार के उस उत्तम देश को, अर्थात उस उत्तम पहाड़ और लबानोन को भी देखने पाऊँ । परन्तु यहोवा तुम्हारे कारण मुझ से रूष्ठ हो गया और मेरी न सुनी; किन्तु यहोवा ने मुझसे कहा बस कर; इस विषय में फिर कभी मुझसे बातें न करना । पिसगा पहाड़ की चौटी पर चढ़ जा और पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों ओर दृष्टि करके उस देश को देख लो, क्योंकि तु इस यरदन के पार जाने न पाएगा । और यहोशू को आज्ञा दे, और उसे ढाढँस देकर दृढ़ कर, क्योंकि इन लोगों के आगे-आगे वही पार जायेगा और जो देश तु देखेगा उसको वही उनका निज भाग करा देगा । तब हम बेतपोर के सामने की तराई में ठहरे रहें ।"

3:23-29 यह मूसा की तरफ से एक व्यक्तिगत विषय है । बाईबल में सिर्फ यही एक जगह है हमारे पास जहाँ मूसा ने स्वयं के लिए विनती की है । दूसरे जगहों में उसने लोगों के लिए या देश के लिए प्रार्थना किया । यह मूसा के ह्रदय एक व्यक्ति का रूप है ।

3:23-

NASB NKJV
NJB **"विनती किया"**
NRSV **"विनथ किया"**
TEV **"गिड़गिड़ाकर प्रार्थना किया "**

मैनें प्रभू से गिड़गिड़ाकर विनती की (बीडीबी335, केबी334, हितषेल अपूर्ण, I राजा, 8:33, 47, 59, II रति 6:37, अय्यु.8:5, 9:15, भ.स. 30:8, 142:1, होरो.12:4) मूसा वायदे के देश में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देने के कारण दुखित में था ।

3:24 "हे प्रभु यहोवा" "प्रभु" के लिए शब्द यहाँ पर शब्द एडोनाई है (बीडीबी10), जो इब्रानी राज्य, "मालिक", "गुरू", "पति", या "प्रभु" के लिए है । परमेश्वर का शब्द इब्रानी शब्द यहोवा है (बीडीबी217) । वह प्रभु, यहोवा कह रहा है । मूसा की लेखों मे यह नियुक्ति बहुत ही कम प्रयोग किया गया है । यह मूसा के प्रार्थना की भाषा है । देखें विशेष विषय, ईश्वर के नामों 1:3 में ।

❖ ‘‘तु अपने दास को अपनी महिमा और बलवन्त हाथ दिखाने लगा है’’ मूसा विनती कर रहा है कि यहोवा पर, उसके घनिष्ठ ज्ञान, उसके चरित्र (देखें पूरी सूचियाँ 4:31 और 10:17 में) उसके कार्य, यरदन पार जाने के लिए यहोवा दयालु हो जाये, लेकिन यहोवा मनुष्यों की प्रतिष्ठा पाने वाला नहीं है ।

‘‘स्वर्ण में और पृथ्वी पर ऐसा कौन देवता है जो तेरे से काम और पराक्रम के काम कर सके’’ क्या यही विषय है कि अनेक देवताओं से परमेश्वर सर्वोत्तम परमेश्वर है, जिसे हेनोथिस्म कहा गया है (निर्म.15:11 और व्य. 4:7, 5:7, देखें द ज्यूस बाइबल स्टडी, पृ.379–380) ? क्या इसका मतलब मूसा दूसरे देवताओं की मौजुदगी को इन्कार नहीं कर रहा है, लेकिन यह कि परमेश्वर सबसे सामर्थी है ? या क्या एक ही ईश्वरपर विश्वास रखने का सिद्धांत (4:35, 39, 6:4, निर्ग. 20:2–3, याशा, 43:11, 44:6, 8, 24, 45:5, 6–7, 14, 18, 21, 22) एक और सिर्फ एक परमेश्वर ? वास्तविक रूप से हम नही जानते है । मैं यह विश्वास करता हूँ कि मूसा अन्य देवताओं को प्रकट नहीं कर रहा है लेकिन दूसरे आत्मिक सेनाओ को, उदा. कई बार एलोहिम का गया है । (भ.स. 8:5, 82:1, 6, I शमु.28:13) ।

3:25 ‘‘इसलिए मुझे मैं प्रार्थना करता हूँ यरदन पार जाकर देखने पाऊँ’’ इस वाक्य खण्ड में दो क्रियाएँ है :

(क) ‘‘पार होना’’ – बीडीबी 716, केबी, 778, क्वेल कोहेर्हेटिव ।

(ख) ‘‘देखना’’ – बीडीबी 906, केबी, 1157 क्वेल अपूर्ण, लेकिन कोहेर्हेटिव विचार में ।

3:26 ‘‘प्रभु रूष्ठ हो गया था’’ यह एक ईश्वर–मनुष्य–रचना भाषा में एक उदाहरण है ‘‘रूष्ठ’’ बीडीबी टी20, केबी780, देखें विशेष विषय 2:5 में) । किस प्रकार से हम मानव शब्दों का बिना प्रयोग करें परमेश्वर के रूष्ठ होने की व्याख्या कर सकते है ? हम नहीं कर सकते है लेकिन हमें अवश्य याद रखना चाहिए कि परमेश्वर एक मनुष्य नहीं है और कार्य, सोच मनुष्यों जैसे नहीं है, हम मानव शब्दों को परमेश्वर के गुण की व्याख्या करने के लिए और जानने के लिए कि पाप में गिरे हुए मनुष्य परमेश्वर को पूर्ण रूप से व्याख्या नहीं कर सकते है ?

मूसा का मण्डली में पाप (32:51, गिनती 20:10–12, 27:14–14) मण्डली परिणामों को लेकर आया ।

❖ ‘‘तुम्हारे कारण’’ देखें सूची 1:34, 37 में ।

❖ ‘‘बस कर इस विषय में फिर कभी मुझसे बातें न कर’’ मूसा बार बार प्रार्थना कर रहा था (गि. 20:2–13, 27:13, व्य. 1:37, 3:23–27), ‘‘मुझे माफ कर दो, कृपया करके मुझे वायदे के देश में प्रवेश होने दो ।’’ परमेश्वर ने कहा नहीं, अब फिर से मत पूछना (बीडीबी414, केबी 418, हिजिल आज्ञार्थक) ।

3:27 इस पद और पद 28 में मूसा के प्रार्थना का जवाब आज्ञाओं में एक सूची है :

क.	"चढ़ जा"	बीडीबी 748, केबी 828,	क्वेल आज्ञात्मक
ख.	"दृष्टि कुट"	बीडीबी 669, केबी 724,	--,,--
ग.	"देख"	बीडीबी 906, केबी1157,	--,,--
घ.	"आज्ञा दे"	बीडीबी 845, केबी 1010,	--,,--
ड.	"ढाढस दे"	बीडीबी 304, केबी 302,	--,,--
च.	"दृढ़ कर"	बीडीबी 5.4, केबी 65,	--,,--

परमेश्वर ने इस्राइलियों और मूसा के लिए प्रावधान बनाया । (यहोशू को सामर्थी करके पद 28 ब, स)

❖ "पिशमा की चोरी" देखें सूची पद 17 में ।

"पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों आरे दृष्टि करके उस देश को देख लो, यह परमेश्वर के प्रेम और उसके क्रोध का वास्तविक उदाहरण है ।" "मैने तुमसे कहा तुम नहीं जा सकते, लेकिन मैं तुम्हें इसे देखने दूँगा ।"

"क्योंकि तू इस यरदन के पार जाने न पाएगा" परमेश्वर व्यक्तियों का प्रतिष्ठा लेने वाला नही है । मूसा परमेश्वर से अनाज्ञाकारिता किया इसलिए परिणामों को उसने सहा (अरयु 34:11, भ.स. 28.4, 62:12, निति. 24:12, I कुर. 3.8, II कुर. 5:10, गल. 6:7-10, II तिमु 4:14, I पत. 1:17, प्रका. 2:23, 20:12, 22:12) ।

3:29 "बेतपोर" यह शब्दानुसार पोर का घर/मन्दिर था (बीडीबी 112) । पोर एक पर्वत या शहर था जो उत्तरी मोआब में स्थित था । यह इस्रायल के मूर्तिपूजा करने का स्थान था (बाल, ऊपजाऊ देने वाले की आराधना, गिनती 22-23) । यह रूबेन का पैतृक धन बना (यहोशू 13:20) ।

विवादपूर्ण प्रश्नें :-

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टीकाक्रम है जिसका अर्थ बाइबल के अनुसाद करने पर हम स्वयं ही उत्तरदायी होंगे । हममें जो प्रकाश है उसी में प्रत्येक को चलना है । आप, बाइबल और पवित्रात्मा अनुवाद करने में प्रधान है । आपको टीकाक्रम को लिखने वाले पर ही नही छोड़ देना है ।

ये विवादपूर्ण प्रश्ने आपको इस पुस्तक के मुख्य प्रकाशन के भाग को सोचने के लिए सहायता प्रदान करती है । ये सिचार उत्तेजक हेतु से है न कि अन्तिम है ।

(क) परमेश्वर के बारे में कौन सा सैद्धांतिक ज्ञान इस वर्णन से हम सीखते है ?

(ख) किस प्रकार आप पद 3 और पद 6 के परमेश्वर को नये नियम के परमेश्वर से संबंधित करोगे ?

(ग) क्या पद 24 दूसरे देवताओं की उपस्थिति के बारे में बताता है ?

(घ) कैसे परमेश्वर पद 27 में मूसा को दया और अब तक न्याय को दिखाता है ?

व्यवस्था विवरण 4

आधुनिक अनुवादों का वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
आज्ञाकारिता पर मूसा की आज्ञा	प्रथम व्याख्यान की समाप्ति	इस्राइलियों के आज्ञाकारी होने के लिए मूसा निवेदन करता है	बेतपोर पर स्वधर्म त्याग के साथ तुलनात्मक वास्तविक बुद्धि
4:1-8	4:1-4	4:1-4	4:1-8
		4:5-6	
		4:7-10	होरेब पर प्रकाशन, इसकी मांगे
4:9-14	4:9-14		4:9-14
मूर्तिपूजा से बचे रहो		4:11-14	
4:15-24	4:15-20	4:15-24	4:15-20
			दण्ड की आज्ञा आना और बातचीत का विषय
	4:21-24		4:21-24
4:25-31	4:25-31	4:25-31	4:25-28
			4:29-31
			परमेश्वर के चुने जाने पर महिमा का होना
4:82-40	4:32-40	4:32-40	4:32-34
			4:85-38
			4:39-40
यरदन के पूर्वी ओर शरणास्थान की शहरें	एक परिशिष्ठ	यरदन के पूर्वी ओर शरणस्थान की शहरें	शरण स्थान की शहरें
4:1-43	4:41-43	4:41-43	4:41-43
परमेश्वर के व्यवस्था की प्रस्तावना	मूसा का दूसरा व्याख्यान	परमेश्वर के व्यवस्था दिये जाने की प्रास्तावना	मूसा का दूसरा संभाषण
4:44-49	(4:44-26:19-28)		(4:44-11:32)
	4:44-49	4:44-49	4:44-49

तृतीय अध्ययन चक्र (देखें पृ. 7(VII)प्रस्तावना भाग में)

लेखक के वास्तविक विचार का अनुसरण इस वाक्य खण्ड तुल्यता पर

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टीकाक्रम है। जिसका मतलब हमारे बाइबल अनुवाद करने पर हम स्वयं ही जिम्मेदार होंगे। हममें जो प्रकाश है उसी में प्रत्येक को चलना है। आप, बाइबल और पवित्रात्मा अनुवाद करने में प्रधान है। आपको सिर्फ टीक्रम लिखने वाले पर ही नहीं छोड़ देना है।

एक स्थान में बैठकर अध्याय को पढ़िये। विषय को पहचानिये (अध्ययन चक्र 3, पृ.vii) आपके विषय को विभाजन करते हुए चार आधुनिक अनुवाद जो ऊपर दिये गये है उसके साथ तुलना करो। वाक्यखण्ड प्रेरणायुक्त नहीं है, लेकिन यह लेखक के वास्तविक विचार का अनुसरण करने की कुंजी है, जो अनुवाद का ह्दय है। प्रत्येक वाक्यखण्ड में सिर्फ एक और एक ही विषय है :

(क) प्रमि वाक्यखण्ड
(ख) द्वितीय वाक्यखण्ड
(ग) तृतीय वाक्यखण्ड
(घ) इत्यादि

शब्द और वाक्य खण्ड अध्ययन

NASB मूल ग्रन्थ : 4:1-4

"अब, हे इस्रायल, जो जो विधि और नियम मैं तुम्हें सिखाना चाहता हूँ उन्हें सुन लो, और उन पर चलो, जिससे तुम जीवित रहो, और जो देश तुम्हारे पितरों का परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है उसमें जाकर उसके अधिकारी हो जाओ। जो आशा मैं तुमको सुनाता हूँ उसमें न तो कुछ बढ़ाना, और न कुछ घटाना, तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की जो जो आज्ञा मै तुम्हें सुनाता हूँ उन्हें तुम मानना। तुमने तो अपनी आंखों से देखा है कि बालपोर के कारण यहोवा ने क्या क्या किया है अर्थात् जितने मनुष्य बालपोर के पीछे हो लिए थे उन सभी का तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे बीच में से सत्यानाश कर डाला, परन्तु तुम जो अपने परमेश्वर यहोवा के साथ लिपटे रहे हो सब के सब आज तक जीवित हो।"

4:1 सुन लो इस क्रिया (बीडीबी1033, केबी1570, क्वेल आज्ञात्मक) का प्रयेग कई बार व्यवस्था विवरण में हुआ है (1:16, 4:1, 5:1, 6:3, 4:9:1, 20:3, 27:10, 33:7)। इसका मूल अर्थ सुनो इसलिऐ कि वैसा करो है। यह कार्य पर केन्द्रित है न कि सिर्फ सुनने पर ही है (याकूब : 1:22-25) इस अध्याय में अनेक चेतावनियाँ है पद 1,2,6,9,13,14,15,19,23 और 26 (मीका 1:2, 3:1, 6:1)।

❖ विधि और नियम यह परमेश्वर के संग्रहित प्रकाशन को सम्मिलित करता है ये सभी बातें है कि परमेश्वर ने स्वयं को और उसके वाचा की भागों को प्रकट किया है । यह अर्थ में शब्द टोरह से मिलता जुलता है (शब्दानुसार, सिखाना, मूसा के नियम) ।

विशेष विषय : परमेश्वर के प्रकाशन पर शब्दें (व्य. और भ.स. का प्रयोग करके)

1. विधियां, बीडीबी 349, एक शासन व्यवस्था, व्यवस्था, या नियम ।
   क. पुरूष जाति, – व्य. 4:1, 5, 6, 8 ,14, 40, 45, 5:1, 6:1, 24, 25, 7:11, 11:32, 16:12, 17:19, 26:17, 27:10, भ.स. 2:7, 50:16, 8:4, 99:7 105:10, 45, 148:6.
   ख. स्त्री जाति – व्य. 6:2, 8:11, 10:13, 11:1, 28:15,45, 30:10, 16, भ.स. 89:31, 119:5, 8,12,16,23, 26,33,48, 54,64, 68,71,80,83,112,124,935,145,155,171.
2. नियम बीडीबी 435 शिक्षा-

3. गवाहियाँ बीडीबी 730, अलौकिक नियमें

4. उपदेश- एक अधिकारी

5. आज्ञाएँ -बीडीबी 846

6. अभिप्राय/विधियाँ बीडीबी 1048, न्याय करना, न्याय

7. उसके मार्ग बीडीबी यहोवा की मार्गदर्शक उसके लोगों के जीवन कला के लिए व्य. 8:6, 10:12,11:22,28,19:9,26:17, 28:9,30:16:324,भ.स.1193,5:37, 59

8. उसके वचन –

(क) बीडीबी 202 – व्य. 4:10, 13,36,9:10,10:4, भस.119:9,16,17,25,2844,43, 49, 57, 65, 74, 81, 89, 101, 105, 107, 114, 130, 139, 147, 160, 161, 169

(ख) बीडीबी 57

1. शब्द (वचन) व्य. 17,19,18:19, 33:9, भ.स. 119:11, 67, 103, 162, 170, 172
2. वायदा – भ.स. 119:38, 41, 50, 58, 76, 82, 116, 133, 140, 48, 154
3. आज्ञा – भ. स. 119:158

❖ जिसे मैं तुम्हे सिखाता हूँ यहोवा के प्रतिनिधि के रूप में मूसा ने छुटकारे और प्रकाशन देने के लिए सेवा कार्य में लगा था। (भविष्यवक्ता, 3:14, 4:1,–17, 18:15–18,34:10–12)

❖ उन पर चलो अपरिमित (बीडीबी 793, केबी 889, क्वेल अपरिमित निर्माण कार्य) उत्साहना लोगों को परमेश्वर के व्यवस्था को सुनकर औरफिर इसका पालन करने के लिए है (16:12,30:8)।

❖ उसमें जाकर उसके अधिकारी हो जाओ ध्यान दें, परमेश्वर के वाचा का आश्रित स्वभाव (5:33, 8:1, 16:20, 30:16, 19)। ये दानों क्रियाएँ क्वेलपूर्ण है। अन्तिम क्रिया पद 1 में (देना) एक क्वेल कृदन्त है। परमेश्वर का उपहार इस्रायल के क्रियाओं पर निर्भर है।

❖ तुम्हारे पितरों का परमेश्वर यह पूर्वजों को प्रकट करता है (अब्राहम, इसहाक, और याकूब, 1:11,21,4:13, 37,6:3,12:1, 26:7, 27:3) पूर्वजों के साथ की गई सभी वाचा शर्तो में सम्मिलित है (उत.6–9 और 15:12–21 को छोड़कर)।

4:2 उसमें न तो कुछ बढ़ाना... और न घटाना यह शास्त्रियों के प्रमाण सति मूलग्रन्थ की व्यवस्था की व्यवस्था को प्रकट नहीं करता है, किन्तु यह कि तुम व्यवस्था के स्वत्व में कुछ न मिलाओ (12:32, निति 30:5–6, सभो. 3:14, यिर्म 26:2)। ये रूकावटें जोड़ने पर या घटाने पर ये सभी प्राचीन पूर्वी शास्त्रिय समूह के निकट का चरित्र है। निर्ग.20 और व्य.5 में 10 शब्दों की कुछ भिन्नताएँ है।

4:3 बालपोर यह उस जगह को प्रकट करता है जहाँ इस्राइलियों ने यहोवा का अनुसरण करने से मना किया मोआब के ऊपज देने वाले देवताओं की ओर गये। (गि. 25:1–9)।

4:4 तुम जो अपने परमेश्वर यहोवा के साथ लिपटे रहें इब्रानी शब्द लिपटना, चिपकना (बीडीबी 180) का अनुवाद एनएएसबी में क्रिया के रूप में हुआ है। यह पद 3 में पीछे चलने की विरूद्धार्थी है (उदा. बाल)। इस शब्द का क्रिया रूप का प्रयोग हुआ है :

(क) अपनी पत्नी से मिले रहना उत. 2:24 में

(ख) रूत का नोआमी के पीछे चलना रूत, 1:14 में

यह ईमानदारी या सामाजिकता के गुण को प्रकट करता है। इसका प्रयोग समानान्तर में प्रेम के साथ हुआ है उत: 34:3, I राजा 11:2, निति 18:24 में।

(देखें निडोट, Vol.1, पृ. 911)।

यहाँ तक परमेश्वर के चुनाव में, मानव को पूर्णरूप से प्रत्युत्तर देना था। हालांकि परमेश्वर ने इस्रायल को याजकीय देश करके चुना (निर्ग. 19:5–6), प्रत्येक को परमेश्वर को चुनना था। परमेश्वर प्रभुत्व के बीच और मनुष्य की स्वयं इच्छा में यह एक तुल्यता है। और यह देहत्व की तुल्यता (आप बहुवचन) बनाम प्रत्येक (आप में से एक) का प्रत्युत्तर है।

ये पद 4 में क्रिया नहीं है, क्रियाओं का विचार दो विशेषणों के द्वारा हुआ है (बीडीबी 180,311)।

NASB मूल ग्रन्थ : 4:5-8

"सुनो, मैने तो अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार तुम्हें विधि और नियम सिखाए है, कि जिस देश के अधिकारी होने जाते हो उसमें तुम उनके अनुसार चलो। इसलिए तुम उनको धारण करना और मानना, क्योंकि और देश के लोगों के सामने तुम्हारी बुद्धि और समझ इसी से प्रकट होगी, अर्थात् वे इन सब विधियों को सुनकर कहेंगे, कि निश्चय यह बड़ी जाति बुद्धिमान और समझदार है। देखो, कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसका देवता उसके ऐसे समीप रहता है जैसा हमारा परमेश्वर यहोवा, जब कि हम उसको पुकारते है ? फिर कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसके पास ऐसी धर्ममय विधि और नियम हों, जैसी कि यह सारी व्यवस्था जिसे मै आज तुम्हारे सामने रखता हूँ ?"

NASB, NRSV "**सुनो**"
NKJV, "**निश्चित रूप से**"
TEV -
NJB "**देखो**"

यह एक क्वेल आज्ञात्मक है (बीडीबी 906, केबी 1157)। यह एक स्वीकृति के वाक्यखण्ड के अनुसार यह हैकि मूसा ने उसकी जिम्मेदारी को निभाया और अब लोगों को पूर्णरूप से प्रत्युतर देने की आवश्यकता है।

4:6
NASB, "**इसलिए तुम उनको धारण करो और मानना**"
NKJV, "**इसलिए सावधान होकर उन्हें ध्यान देना अवश्य है**"
NRSV "**तुम्हें ईमानदारी से उन्हें ध्यान देना अवश्य है**"
TEV "**विश्वासयोग्य होकर उनकी मानो**"
NJB "**धारण करो उन्हें, और अभ्यासिक में उन्हें लाओ**"

ये इस वाक्यखण्ड में ये दोनों क्रियाएँ है :

(क) धारण करना (बीडीबी) 1036, केबी1581, क्वेल पूर्ण), का अर्थ रखना, ध्यान देना या रक्षा करना है। इसका प्रयोग कई बार पंचग्रन्थ में हुआ है (व्य. 2:4, 6,9,15,23,40 दूसरे स्थानों में भी)

(ख) मानने (बीडीबी 793, केबी889, क्वेल पूर्ण) का अर्थ करना या बनाना है। इस क्रिया का प्रयोग पुराने नियम में कई बार हुआ है।
(व्य. 4:1, 3,6,13,14,16,23,25)।

4:6 "**बुद्धि**" यह शब्द (बीडीबी 315) नीति 2:7 में और 1:6 में विशेषण के रूप में प्रयोग हुआ है। यह बुद्धि परमेश्वर के ज्ञान और उसकी इच्छा है इसी को मनुष्य खोजना है क्योंकि वे परमेश्वर के स्वरूप और समानता में बनाये गये है (उत: 1:26–27) और उसकी संगति के लिये बनाये गये है (पद 7–8)।

❖ "**समझ**" यह शब्द बुद्धि के समानान्तर है। इसका लक्ष्य एक ईश्वर, भक्ति, खुशी-जीवन,एक शिक्षित होना है (व्य. 32:8; नीति 2:1–22; 3:13–18)

❖ "**निश्चय यह बड़ी जाति बुद्धिमान और समझदार है**" क्या परमेश्वर ने इस्रायल को इसलिए चुना क्योंकि वह दूसरों से बढ़कर उनसे प्रेम करता था ? परमेश्वर सभी मनुष्यों को एक समान प्रेम करता है (यहू. 3:16, I तिमु. 2:4, II पत. 39)। परमेश्वर को एक स्थान साधारण रूप से शुरू करने के लिए चाहिये। उसने अब्राहम और उसके वंश को याजकों का राज्य इस संसार के लिये होने को चुना (उत: 1:2:3; निर्ग. 19:4–6; प्रे. का.3.25; गन. 3:8)। चुनाव से बढ़कर उनका एक उद्देश्य के लिए चुनाव था क्योंकि एक विशेष प्रेम का कारण था (देखें विशेष विशेष नीचे में दिया गया है)

विशेष विशेष :– बॉब का इसाई मत धर्म संबंधी प्रोत्साहन देना

मैं तुम्हें अवश्य स्वीकार करता हूं, पढ़कर सूचना देने वाले व्यक्ति, कि मैं इस बात पर पक्षपाती हूं। मेरा क्रमानुसार सिद्धांत केल्विन का सिद्धांत या वितरण किये हुए सिद्धांत नहीं हे, लेकिन यह सुसमाचार प्रचार महाआज्ञा है। मै। विश्वास करता हूं कि परमेश्वर के पास सभी मनुष्यों के उद्धार के लिए अनंत योजना है (उत: 3:15, 12:3, निर्ग 19:5–6; यिर्म 31:31–34, येह. 18; 36:22–39 प्रे. का. 1:26–27)। बचाएँ मसीह में एक है (गल. 3:28–29; कुलु. 3:11)। यीशु मसीह परमेश्वर का रहस्य है, छिपा हुआ था लेकिन अब प्रकट हो गया है (इफि. 2:11–3:13)।

यह पूर्व समझ झंडा धर्मग्रन्थ पर मेरे सभी अर्थ है। (उदा. योना) मैं इसके द्वारा सभी मूल ग्रंथ पड़ता हूं। वास्तविक रूप से यह एक पक्षपात है (सभी व्याख्या करने वाले उनके पास है) लेकिन यह एक धर्मग्रन्थ रूप से सूचित किया हुआ पूर्व भावना या कल्पना है।

4:7 "**कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसका देवता उसके ऐसे समीप रहता है**" यह इस्रायल के साथ परमेश्वर की व्यक्तिगत उपस्थित (अन्वर्ती अवस्था) सेकेना आकाश के रूप में (जंगल में भटकने के समय) और बाद के वाचा के सन्दूल के रूप में व्यक्ति उपस्थित थी (यरदन के उस पार और राजकीय समय में)।

❖ "**जब कभी हम उसके पुकारते है**" यह दिखाता है कि यदूदियों के पास भरोसा था कि परमेश्वर जिसने संसार को बनाया, जब वे प्रार्थना करेगें तब वह उत्तर देगा। वह समर्थी और निजी दोनों है (भ.स. 34:18; 145:18)। परेश्वर जिसका कार्य कनारी देवताओं के कार्य के विरूद्ध है।

4:8 "विधियां और धर्ममय .... नियम" देखें विशेष विषय 4:1 में

❖ "**धर्मी**" यह एक नदी नरकट से एक लक्षणहै । परमेश्वर की धार्मिकता सिद्धांत या राज्य करने वाला है । जिसके द्वाराहम नापे जाते है । व्यवस्था, परमेश्वर के गुण पर निर्भर है । देखें विशेष विषय 1:16 में ।

NASB मूल ग्रंथ : 4:9-14

यह अत्यंत आवश्यक कि तुम अपने विषय में सचेत रहो, और अपने मन की बड़ी चौकसी करों, कहीं ऐसा न हो कि जो जो बातें तुम ने अपनी आखों से देखी उनके भूल जाओ; और वह जीवन भर के लिये तुम्हारे मन से जाती रहे, किन्तु तुम उन्हें अपने बेटों पोतों को सिखाना । विशेष करके उस दिन की बों जिसमें तुम होरेब के पास अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खड़े थे, जब यहोवा ने मुझसे कहा था, उन लोगों को मेरे पास इकट्ठा कर कि मैं उन्हें भोजन वचन सुनाऊं, जिससे वे सीखें, ताकि जितनेदिन वे पृथ्वी पर जीवित रहें उतने दिन मेराभय मानते रहे, और अपने बाल बच्चों को भी यही सिखाएँ । तब तुम समीप जाकर उस पर्व के नीचे खड़े हुए और वह पहाड़ आग से धधक रहा था, औरउसकी लौ आकाश तक पहुचंती थी और उसके चारों ओर अंधियारा, और बादल और घोर अन्धकार छया हुआ था । तब यहोवा ने उस आग के बीच में से तुम से बातें की; बातों का शब्द तो तुमको सुनाई पड़ा परन्तु कोई रूप न दिखा केवल शब्द ही शब्द सुनाई पड़ा । और उसने तुम को अपनी वाचा के दसों वचन बताकर उनके मारने की आज्ञा दी; और उन्हें पत्थर की दो पटियाओं पर लिख दिया । और मुझको यहोवा ने उसी समय तुम्हें विधि और नियम सिखाने की आज्ञा दी, इसलिए कि जिस देश के अधिकारी होने को तुम पर जाने पर हो उसमें तुम उनको माना करो ।

4:9

NASB **"अपने विषय में ध्यान दो और अपने मन की चौकसी करो"**

NKJV, **"सिर्फ तुम अपने विषय में ध्यान दो और अपने मन की बड़ी चौकसी करो"**

NRSV **"अपने विषय में ध्यान दो और बड़ी चौकसी अपने विषय में करो"**

TEV **"अपने आप की सुरक्षा करो ! निश्य हो जाओ .."**

NJB **" किन्तु ध्यान दो, जैसे आप अपने जीवन को महत्व देते हो ।"**

इस वाक्यखंड पर उसी मूल से दो आज्ञात्मक है :

(क) "ध्यान रहे" - बीडीबी 1036, केबी 1581, निफाल आज्ञातम्क 4:15, यहोशू 3:11 यिर्म 17:21.

(ख) "रखना" - बीडीबी 1036, केबी 1581, क्वेल आज्ञात्मक करने के बाद रखना के विचार से (7:12)

आज्ञाकारिता एक जीवन और मरण का प्रकटीकरण है (30:15-20)

❖ “ताकि तुम भूल न जाना... वे जाती न रहें ” देखें व्य. 8:11–20

❖ “मन” इब्रानी आत्मविधा में भावनाएं अंतर्भाग का केन्द्र है । मन, बुद्धि और (विशेष रूप से याददाश्त में) व्यक्ति को केन्द्र है । परमेश्वर कहता है, व्यवस्था को मत भूला । देखें विशेष विषय : मन 2:30 में ।

❖ “जीवन भर के लिए” एक जीवनकला समर्पण की मांग है (पद 10; 6:2, 12:1, 16:33)

❖ “उनके बाल बच्चों को सिखाओं” यह व्यवस्था विवरण में बार–बार होनेवाला विषय है (पद 10; 6:7, 20–25;11:19; 31:13; 32:46; और सूची निर्ग. 10:2; 12:26; 13:8, 14) यदि विश्वासी उनके बाल बच्चों परमेश्वर के बारे मं नहीं सिखाते है तो वे माता–पिता बनने में पराजित है (बाईबल की भाषा में) विश्वास परिवार के द्वारा चलता है (5:10; 7:9) ।

4:10 “उस दिन की बातें जिसमें तुम होरेब के पास अपने परमेश्वर यहोवा के पास खड़े थे” सुनने वाले निर्गमन पीढ़ी के बाल बच्चे थे । यह विशेष तौर पर निर्ग. 19–20 को प्रकट करता है । परमेश्वर के हुदौती कार्य को याद रखना (निर्गमन) एक बार बार होने वाला आवर्तक विषय है (5:15, 17:18, 8:2, 18; 9:7, 27; 11:2;15:15; 16:3, 12; 24:9, 18, 22;25:17; 32(7)

❖ "जिससे वे मेरा भय मानना सीखें" परमेश्वर ने होरेब पर्वत जैसा उसने यहाँ पर कार्य किया ताकि वे उसे सम्मानपूर्वक भय से मानते रहें (निर्ग. 20:20, नीति 17,9:10, सभो 12:15, याशा. 11:2–3, भ.स. 34:11)

❖ "वह पहाड़ आग से धधक रहा था" आग परमेश्वर की उपस्थित को प्रकट करती है (निर्ग.19:18, व्य.5:23,9:15, इब्रा. 12:18) यह शुद्धता को भी प्रकट कर सकती है। देखें नीचे दिये गये विशेष विषय पर।

विशेष विषय : आग

धर्मग्रन्थ में आग के बारे में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों अनुमान है।

अ. सकारात्मक

1. उष्ण (याशा. 44:15, यहु. 18:18)
2. ज्योति (याशा. 50:11, मत्ती 25:1–13)
3. भोजन पकाना (निर्ग. 12:8, याशा:44:15–16, यहु. 21:9)
4. शुद्ध करना (गि. 31:22–23, निति:17:3, याशा, 1:25,6:6.8, यिर्म.6:29 मला.3:2–3)
5. पवित्रता (उत.15:17, निर्ग 3:2,19:18, यहे. 1:27, इब्रा.12:29)
6. परमेश्वर का अगुवापन (निर्ग. 12:21, गि. 14:14, 1 राजा, 18:24)
7. परमेश्वर की सामर्थ्य (प्रे.का. 2:3)

ब. नकारात्मक

1. जलना (फूंकना) (यहोश्र:6:24, 8.8, 11:11, मती 22:7)
2. नष्ट करना (उत. 19:24, लैव्य: 10:1–2)
3. क्रोध (गि. 21:28, याशा, 10:16, जकर्याह: 12:6)
4. दण्ड (उत 38:24, लैव्य. 20:14, 21:9, यहोश्र 7:15)
5. भविष्य में होने वाले गलत चिन्ह (प्रका. 13:13)

स. पाप के विरूद्ध परमेश्वर के क्रोध को आग के अलंकार में बताया गया है.

1. उसका क्रोध भड़कना (होशे: 8.5, सपन्याह : 3:8)
2. वह आगको उड़ेल देता है (नहें 1:6)
3. अनंत अग्नि (यिर्म. 15:14,17:4)
4. भविष्य में होने वाली न्याय (मती 3:10, 13:40, यहु. 15:6, 2थिस्सु. 1:7, 2 पत. 3:7–10, प्रका: 8:7, 13:13, 16:8)

द. इसी प्रकार बाइबल में अनेक लक्षणें (खमीर, सिंह) संदर्भ पर निर्भर होकर आग एक आशीष या एक श्राप भी हो सकता है।

❖ "अन्धियारा, बादल और घोर अंधकार छाया हुआ" दो तरह से यहोवा के शारीरिक रूपमें उपस्थित को समझा जा सकता है ।

1. ज्वालामुखी पर्वत संबंधी तीव्रता – निर्ग. 19:18 भ.स.68:7-8,77:18, 97:2-5,न्या.5:4-5, 2 शमु, 22:8, याशा. 29:6, यिर्म. 10:10

2. आंयी – निर्ग. 19:16,19, भस. 68:8, 77:18, न्या:5:4, याशा:29:6, नहूम: 1:3

इसलिए घोर अंधकार (5:22, 2 शमु. 22:10, 1 राजा, 8:12, 2 इति: 6:1) हो सकता है

1. धुएँ का बादल
2. वर्षा का बादल

यह आवरण इस्रायल की सुरक्षा के लिए था (निर्ग. 19:18) । उन्होंने सोचा कि यदि मनुष्य परमेश्वर की ओर देखें तो वे मर जायेंगे (उत. 16:13, 32:30, निर्ग. 3:6, 20:19, 33:20, न्या. 6:22-23, 13:22) ।

4:12 "परन्तु कोई रूप न दिखा परमेश्वर का शारीरिक रूप नहीं है" (यहु.4:24) उसने मूसा को उसकी पीठ को देखने की अनुमति दी, निर्ग. 33:23 में । यहोवा कोई शारीरिक प्रकटीकरण नही चाहता है क्योंकि पाप में गिरे मनुष्यों का झुकाव मूर्तिपूजा की ओर होने के कारण (पद 15-19)

4:13 "उसने तुम को अपनी वाला को बता दिया" इस क्रिया को (बीडीपी 616, केबी 665, हिलफिल अपूर्ण) जब परमेश्वर को कर्ता के रूप में रखकर प्रयोग किया जाता है, यह एक नये प्रकाशन को प्रकट करता है (2 शमु. 7:11, याशा. 42:9, 45:19, आमोस. 4:13)

अपूर्ण काल प्रकट करता है कि दस शब्द सभी यहोवा का प्रकाशन नहीं है । निर्गमन और व्यवस्था विवरण की कई किताबें, यीशु मसीह के दस आदेश के प्रकटीकरण की व्याख्या है । देखें नीचे दिये गये विशेष विषय में ।

विशेष विषय-वाचा

पुराने नियम का शब्द बेरिथ, वाचा, को परिभाषित करना आसान नहीं है । इब्रानी में मिलती-जुलती क्रिया नही है । शब्द-व्युप्ति विषयक परिभाषा ने अनिर्णयात्मक को साबित किया है, सभी उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते है । किन्तु, विचार के स्पष्ट केन्द्रिकरण ने, विद्धानों को इस शब्द के प्रयोग को जाँचने के द्वारा इसके क्रियान्वित अर्थ को समझने के लिए प्रयत्न करने प्रभावित किया है ।

वाचा का अर्थ, जिसके द्वारा एक सद्या परमेश्वर उसके मनुष्य सृष्टि के साथ बर्ताव करता है । वाचा, नियम पत्र, या समझौता की धारणा बाइबल संबंधी प्रकाशन की समझ में प्रामाणिक है । परमेश्वर के प्रभुत्व और मानव इच्छा के बीच के तनाव को वाचा की धारणा में स्पष्ट रूप से देखा गया है । कुछ वाचाएँ केवल परमेश्वर के चरित्र और क्रियाओं पर आधारित है :

1. स्वयं सृष्टि (उत. 1-2)
2. अब्राहम की बुलाहट (उत.12)
3. अब्राहम के साथ वाचा (उत.15)
4. नूह से वायदा और रक्षा की (उत. 6-9)

किन्तु, वाचा का स्वभाव एक प्रत्युत्तर की मांग करता है ।

1. विश्वास के द्वारा आदम को परमेश्वर की आज्ञा मानकर और अदन की वाटिका के बीच के पेड़ के फल नहीं खाना है ।
2. विश्वास द्वारा अब्राहम को उसके कुटुम्ब को छोड़कर, परमेश्वर के पीछे चलना और विश्वास करना है कि उसके पास भविष्य में पीढ़िया होंगी ।
3. विश्वास के द्वारा नूह को एक बड़ी जहाज, यानी से दूर बनाना और जानवरों को इकट्ठा करना था ।
4. विश्वास के द्वारा मूसा ने इस्राइलियों को मिस्त्र से बाहर निकाला और धार्मिक और सामाजिक जीवन के लिए आशीष और श्राप के वायदों के साथ विशेष मार्गदर्शन को प्राप्त किया । (व्या. 27–29)

इसी प्रकार के तनाव का सम्मलेन परमेश्वर का संबंध मानवजाति के साथ नई वाचा में व्याख्यान किया गया है । इस तनाव को स्पष्ट रूप से येह:18 को यहे. 36:27–37 के साथ तुलना करने पर देखा जा सकता है । क्या वाचा परमेश्वर के अनुग्रहित कार्यो या मानव प्रत्युत्तर आज्ञापत्र पर आधरित है ? यह पुरानी वाला और नई वाचा की जलती प्रकाशन है । दोनों का लक्ष्य एक ही है (1) खोई हुई संगति का जुटाव करना उत. 3 में और (2) धर्मी लोगों को निर्मित करना जो परमेश्वर के चरित्र पर प्रतिबिम्ब डालें ।

यिर्म. 31:81–34 की नई वाचा तनाव की मानवीय कार्यों का अर्थ जैसे स्वीकृत पहुंच की संदेह की दूर करती है । परमेश्वर की व्यवस्था एक बाहरी कार्यो की बजाय एक आंतरिक इच्छा बनती है । एक ईश्वर–भक्ति, धार्मिक लोगों का लक्ष्य वही रहता है, लेकिन ढंग बदल जाती है । पाप में गिरे हुए मानवजाति ने स्वयं को परमेश्वर के स्वरूप में प्रतिबिम्ब होने में अपर्याप्त सिद्ध किया है । वाचा समस्या नहीं थी, लेकिन मानवजाति का पाप और कमजोरी थी (रोमि.7, गल.3)

एक ही प्रकार का तनाव पुराने नियम की बिना अधीन और अधीन वाचा नये नियम में बचा हुआ है । उद्धार, यीशु मसीह का अन्तिम कार्य में निश्चित तौर से मुफ्त है लेकिन यह पश्चाताप और विश्वास (दोनों प्राथमिक और लगातार रूप में) की इच्छा करती है । दोनों यह एक कानूनी अधिकारी की घोषणा और यीशु मसीह की समानता में होने की बुलाहट, एक स्वीकृति और पवित्रता होने के लिए आज्ञासूचक की सूचक कथन है । विश्वासी उनके कार्यो के द्वारा बचाये नहीं गये है, लेकिन विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार हुआ है (इफि. 2:8–10) ईश्वर–भक्ति जीवन ही उद्धार का प्रमाण हुआ, उद्धार का अर्थ नहीं । यह तनाव इब्रानी में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है ।

❖ “दस आज्ञाएँ” शब्दानुसार इसका अर्थ दसों वचन (बीडीबी 797. निर्माण 182) और यूनानी भाषा में आदेश पत्र के नाम से जाना गया है । वे बहुत ही संक्षिप्त, परमेश्वर के प्रकाशन का सारांश है (निर्ग.20, व्य.5) ।

❖ “उसने उन्हें लिख दिया” स्वयं परमेश्वर ने (ईश्वर शरीर रचना, देखें विशेष विषय 2:15 में) दसों वचनों को लिखा (निर्ग. 31:8, 32:15–16) । इस कथन के मूलार्थ पर ध्यान देना, आज्ञाओं के अद्‌भुत स्त्रोत को प्रभावित नहीं करता है ।

❖ "उसने उन्हें लिख दिया" स्वयं परमेश्वर ने (ईश्वर-शरीर-रचना, देखें विशेष विषय 2:15 में) दसों वचनों को लिखा (निर्ग. 31:8, 32:15-16) । इस कथन के मूलार्थ परध्यान देना, आज्ञाओं के अद्‌भुत स्त्रोत को प्रभावित नहीं करता है ।

❖ "पत्थर की दो पटियाओं" नये पुरातत्व संबंधी खोजों से और अधिपति हित्ती मेलों को हम क्या कहते है (2 हजार वर्ष बीसी का), हम जानते है कि व्यवस्थाविवरण उनके बाह्यरूप रेखा और रूप का अनुसरण करती है । मै सोचता हूँ कि दो पटियाएँ जो है इन संधि पत्र नमूनों के द्वारा मांग की गई दस आज्ञाओं की यथार्थ नकलें, दो को प्रकट करती है (और साथ ही प्रधान सामर्थ से संधि पत्र बनाने के पिछला कार्य के लेख, उदा. व्य.1-4) । यह व्यवस्था विवरण के लिए ऐतिहासिक प्रवृत्ति का निर्माण करता है । देखें पुस्तक, 7 की प्रस्तावना ।

4:14 उसमें तुम उसको माना करो परमेश्वर की इच्छा को जानना आप के जीवन के लिए, पर्याप्त नहीं है, लेकिन इसे करना भी है (पद 1,2,5,6, लूका 6:46, याकूब 2:14-20)

NASB मूल ग्रन्थ : 4:15-20

15इसलिए तुम अपने विषय में बहुत सावधान रहना । क्योंकि जब यहोवा ने तुम से होरेब पर्वत पर आग के बीच में बातें की तब तुम को कोई रूप दिखाई पड़ा, 16 कहीं ऐसा न हो कि तुम बिगड़कर चाहे पुरूष, चाहे स्त्री के, 17 चाहे पृथ्वी पर चलने वाले किसी, पशु, चाहे आकाश में उड़ने वाले किसी पक्षी के, 18 चाहे भूमि पर रेंगने वाले किसी जन्तु, चाहे पृथ्वी के जल में रहने वाले किसी मछली की कोई मूर्ति खोदकर बना लो, 19 या जब तुम आकाश की ओर आंखे उठाकर, सूर्य, चन्द्रमा और तारों को, अर्थात् आकाश का सारा तारागण देखों, तब बहकर उन्हें दण्डवत करके उनकी सेवा करने लगो जिनको तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने धरती पर के सब देशवालों के लिए रखा है । 20 और तुम को यहोवा लोहे के भट्टे सरीखे मिस्त्र देश से निकाल ले आया है, इसलिए कि तुम उसका प्रजारूपी निज भाग ठहरो जैसा आज प्रकट है ।

4:15

NASB	**"इसलिए तुम अपने विषय में सावधान रहों"**
NKJV	**"अपने विषय में बहुत सावधान रहो"**
NRSV	**"अपने विषय में सावधान और चौकस रहो"**
TEV	**"अपने स्वयं की भलाई के लिए, तो निश्चित हो जाओ"**
NJB	**"जो तुम करते हो, उसमें बहुत ही सावधान रहो"**

इस क्रिया (बीडीबी 1036, केबी 1581, निफाल पूर्ण) का प्रयोग 4:2, 6,9 (दो बार), 15,23,40में हुआ है । इस्राइल के कार्य, यहोवा की वाचार से शर्त रूप में संयुक्त हुए थे । उन्हें मूर्तिपूजा को उत्साह से छोड़ना था (5:8-10) ।

4:16 "कि तुम बिगड़कर कोई मूर्ति खोदकर बना लो यह सोने की बनी बछड़े का उल्लेख, यहोवा के बिना शरीरत्व से संबंधित है। इस्राइलियों को किसी भी शारीरिक रूप में प्रस्तुत नहीं करना था। (पद 16-18, 23, 25, 5:8, निर्ग. 20:4)।

❖ "चाहे पुरूष, चाहे स्त्री के समान" मानवजाति का अभिप्राय परमेश्वर को पुरूष या स्त्री के रूप में बनाना था। यदि हम परमेश्वर को एक मनुष्य का रूप देते हैं, तो हमने उसे ऐसे रूप में रखा, जिसे हम व्यवस्थित कर सकते है।

4:17 "किसी जानवर के समान" यह प्रकट कर सकता है : (1) दूसरे देशों में उनके देवी-देवताओं के लिए जानवरों के इस्तेमाल के द्वारा प्रकटीकरण या (2) परमेश्वर की व्याख्या करने के लिए जानवरों की विशेषताएं।

4:18 "भूमि पर रेंगनेवाले जन्तु" संभवत: यह मिस्त्र देश का युद्ध झींगुर, जो उनके लिए पवित्र था।

4:19 सूर्य, चन्द्रमा और तारों को, अर्थात् आकाश के सारे तारागण प्राचीनतम एवं आधुनिक (जन्मपत्री) मानते है कि तारें, शक्ति या सामर्थ का वर्णन करते है जो मानव जीवन को नियंत्रित करते है। ऐसा मालूम होता है कि तारों की आराधना बेबिलोन से शुरू हुई है। (इस प्रकार की मूर्तिपूजा की प्रतिक्रिया उत.1 वर्ण करती है, जैसे मिस्त्रियों की मूर्तिपूर्जा की प्रतिक्रिया को निर्ग: 20 वर्णन करती है) इस प्रकार की मूर्तिपूजा का इस्राइल उत्साह से इन्कार करना है।

❖ "जिनको तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने धरती पर के सब देशवालों के लिए रखा है" इस क्रिया का (बीडीबी 323, केबी322, क्वेल पूर्ण) अर्थ बाँटना है, लेकिन सिर्फ अंश या भाग के विचार से है। यह संकेत कर सकता है कि परमेश्वर तारों की आराधना करने के लिए उत्साहित किया, लेकिन इसके बजाय मैं यह सोचता हूँ कि यह दूसरे प्रकार से परमेश्वर का सारी पृथ्वी पर प्रभुत्व को दिखाता है (29:26, 32:8)। मनुष्यों के लिए परमेश्वर की इच्छा या योजना कभी भी मूर्तिपूजा नहीं थी।

4:20 लोहे की भट्टी एक भट्टी जो है कच्ची अनुपयोगी धातु को लेकर, उसे गर्म कर, उपयोगी धातु बनाती है। यह एक समानता है परमेश्वर की जो उसने मिस्त्र में इस्राइलियों के साथ किया था। (1 राजा 8:51, यिर्म. 11:4 और इसी प्रकार का लक्षण याशा: 48:10 में)

❖ "इसलिए कि तुम उसका प्रजारूपी निजभाग ठहरो" यहोवा के वाचा लोगों के लिए यह एक विशेष शीर्षक था (निर्ग: 19:5, व्य. 7:6, 14:2, 26:18, तितु. 2:14, और 1पत.2:9) उनके पास एक अद्‌भुत पैतृक था क्योंकि उन्हें यहोवा ने उन्हें सृष्टि की रचना से पहले (32:8-9, भ.स. 33:6-12, यिर्म. 10:16, 15:19) स्वयं को संसार पर प्रकट करने के लिए चुना था।

NASB **मूल ग्रन्थ : 4:21-24**

21 फिर तुम्हारे कारण यहोवा ने मुझसे क्रोध करके यह शपथ खाई, तू यरदन पार जाने न पाएगा, और जो उत्तम देश इस्राइलियों का परमेश्वर यहोवा उन्हें निज भाग करके देता है उसमें तू प्रवेश करने न पाएगा। 22 किन्तु मुझे ईसा देश में मरना है। मैं यरदन पार नहीं जा सकता, परन्तु तुम पार होकर उस देश के अधिकारी हो जाओगे। 23 इसलिए अपने विषय में तुम सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम उस वाचा को भूलकर, जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा में तुम से बांधी है, किसी और वस्तु की मूर्ति खोदकर बनाओ, जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को मना किया है। 24 क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा भस्म करने वाली आग है, वह जल उठनेवाला ईश्वर है।

4:21 "तुम्हारे कारण यहोवा ने मुझसे क्रोध करके" मूसा लोगों को याद दिलाता है कि उस पर परमेश्वर का दण्ड उसकी अनाज्ञाकारिता के कारण से आयी हुई है (1:37;3:26; गि; 20:713)। यदि वे आज्ञा न मानें, तो वे कभी दंडित होंगे।

4:23 "इसलिए अपने विषय में सावधान रहो इस क्रिया" (बीडीबी 1036, केबी 1581, निफा आज्ञात्मक) को कई बार इस अध्याय में दुहराया गया है। वाचा के लाभ यहां पर है, किन्तु वाचा के परिणाम भी है (4:25; अध्याय 27-29)

❖ "कहीं ऐसा न हो तुम वाचा को भूलकर" इस क्रिया (बीडीबी 1036, केबी 1581, निफाल आज्ञात्मक) को अनेकों बार इस अध्याय में पाया गया है (पद; 9, 23, 31) और 6:12; 8:11, 14, 19 (दोहरा); 9:7; 24:19 (दोहरा); 25:19; और 30:13; 31:21; 32:18। यह एक मुख्य बारम्बार विषय है।

4:24 "जल उठनेवाला" इस पद में यहोवा को दो तरह से वर्णन किया गया है :-

1. "भस्म करने वाली भाग" (बीडीबी और बीडीबी 37, केबी 46; क्वेल क्रिया कृदन्त; निर्ग 24:17; व्य. 4:24; 9:3; इब्रा 12:29) जो प्रकट करता है :

(अ) यहोवा सीनै पर वाचा दने वाला परमेश्वर है।

(ब) यदि वाचा को तोड़ा जाता है तो वह न्याय का परमेश्वर है।

2. "जल उठने वाला परमेश्वर" बीडीबी 88 और 42; निर्ग 20:5; 34:14; व्य. 5:9; 6:15; यहोशू 24:19) जो इस्राइल के लिये उसकी व्यक्तिगत, प्रेमी समर्पण को प्रकट करती है, जो एक विवाह के वाचा की समानता पर है (होश. 1:3)। वाचा को तोड़े जाने का परिणाम अस्वीकार में है (यहोशू 24:19; नहू. 1:2) इस शब्द में एक विस्तृत चौड़ी क्षेत्र है

(अ) उत्तेजना – नीति 6:34; श्रेष्ठ 8:6

(ब) क्रोध – नीति 14:30; 27:4

(स) ईर्ष्या – उत. 26:14; गि. 5:11–12; यहे. 31:9

(द) बराबरी – सभो. 4:4

(इ) भक्ति – गि. 11:29

(नीडोट की सूची, भाग– 3 पृ. 938)

देखें विशेष विषय: परमेश्वर की व्याख्या मानव रूप में (ईश्वर शरीर रचना भाषा) 2:15 में।

NASB मूल ग्रन्थ : 4:25–31

"यदि उस देश में रहते–रहते बहुत दिन बीत जाने पर, औरबेटे पोते उत्पन्न होने पर तुम बिगड़कर किसी वस्तु के रूप में मूर्ति खोदकर बनाओ, और इस प्रकार अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति बुराई करके उसे अप्रसन्न करो। तो मैं आज आकाश और पृथ्वी को तुम्हारे विरूद्ध साक्षी करके कहता हूं कि जिस देश के अधिकारी होने के लिए तुम यरदन पार जाने पर हो उसमें तुम शीघ्र पूर्णत: नष्ट हो जाओगे। उस देश में बहुत दिन रहने न पाओगे, किन्तु पूरी रीति से नष्ट हो जाओगे। यहोवा तुम को देश देश के लोगों में तितर–बित करेगा, और जिन जातियों के बीच यहोवातुम को पहुंचायेगा, उसमें तुम थोड़े ही से रह जाओगे। वहां तुम मनुष्य के बताये हुए लकड़ी और पत्थर के देवताओं की सेवा करोगे, जो न देखते, न सुनते, न खाते और सूंघते है। परन्तु वहां भी यदि अपने परमेश्वर यहोवा को ढूढोंगे, तो वह तुम को मिल जायेगा। शर्त यह है कि तुम अपने पूरे मन से और अपने सारे प्राण से ढूंढो। अंत के दिन जब तुम संकट में पडो और ये सब विपत्तियां तुम पर आ पड़ेगी, तब तुम अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरना और उसकी आज्ञा मानना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा दयालु परमेश्वर है, वह तुम को न तो छोड़ेगा, और न नष्ट करेगा और जो वाचा उसने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बांधी है उसको नहीं भूलेगा।

4:25 "उस देश में रहते–रहते बहुत दिन बीत जाने पर" यह एक व्यक्ति के दीर्घायु के लिये अत्यधिक वायदा नहीं था, किन्तु एक समाज के लिए सहभागी का वायदा, जहाँ माता–पिता परमेश्वर के बारे में बच्चों को सिखाते और बच्चे माता–पिता का आदर करते है। स्थिर समाज से स्थिर योग्य परिवार है (पद, 9,10, 40 और 5:16, 33)।

❖ "दूषित रीति से कार्य करना" इस क्रिया का (बीडीबी 1007, केबी 1469 हिलफिल पूर्ण) का अर्थ "नष्ट करन"ा या "बिगाड़ना" और आलकारिक विस्तृत के द्वारा वाचा को बिगाड़ने के लिए प्रकटीकरण हुआ है। (मूर्तिपूजा, 4:16; 25; 9;12; 31:29)

❖ "ऐसा करके उसे अप्रसन्न करो" यह वाक्यखंड एक हिलफिल अनिश्चित निर्माण है (बीडीबी 494, 32:21; 1 राजा 15:30; 16:13)। फिर से, ईश्वर–शरीर रचना की भाषा मानव पाप के प्रति यहोवा की प्रतिक्रिया का व्याख्या करती है। देखें विशेष विषय 2:15 में।

4:26 ''मैं आज आकाश और पृथ्वी को तुम्हारे विरूद्ध साक्षी करके कहता हूं'' यह अधिपति हित्ती प्रदेशों का भाग था (सामर्थपूर्ण आत्मिक गवाहों के लिए जरूरत) । शारीरिक सृष्टि में दो महत्वपूर्ण स्थाई बातें है । वे प्राय: परमेश्वर के द्वारा गवाहों के रूप में किये गये कार्य में कहा गया है । यह एक न्यायालय के मुकदमें में दो गवाहों की जरूरत जो इस्राइली कानून प्रबंध को भी प्रभावित करती है (निर्ग. 35:30, व्य. 17:6; 19:15) । कई बार वाक्यखण्ड का प्रयोग यहोवा के साथ वाचा के निश्चम में हुआ है । (4:26; 30:19; 31:28) ।

''उस देश में तुम शीघ्र पूर्णत: नष्ट हो जाओगे'' देखें व्य. 27-29, लेकिन अध्यात्मक विधा तुल्यता पद 31 की ओर ध्यान दे । असहाय हुए, पाप में गिरे मनुष्यों के पास वाचा में आज्ञाकारी होने की आशा नहीं है ।

4:27 ''लोगों में तुमको तितर-बितर करेगा'' यह असिरिया (722 बी.सी.) और बेबिलोन (605, 597, 586, 582 बी.सी.) के द्वारा वाचा के लोगों का निर्वासन होने से पहले कही हुई बात जान पड़ती है, जो 28:64 और 29:28 में होने से पहले कही हुई है ।

❖ ''उनमें तुम थोड़े ही रह जाओगें'' यह वाचा को तोड़े जाने में सम्मिति परिणामों की एक भाग है । यह अब्राहम से वाचा की आशीष के लिए वायदा किया हुआ उत: 15:5 से बिल्कुल विरूद्ध है ।

4:28 ''तुम मनुष्य के बनाए हुए देवताओं की सेवा करोगें'' क्रिया, सेवा (बीडीबी 712, केबी 773, क्वेल पूर्ण) का प्रयोग धार्मिक विश्वास संबंधी लक्ष्यों की आराधना या कार्यों के विचार से हुआ है :

(1) यहोवा के लिए स्पष्ट रूप से - निर्ग. 3:12;4:23; व्य. 6:13; I शमु. 7:3
(2) दूसरे देवताओं को अस्वीकार करते हुए - निर्ग. 23:33; व्य. 4:19,28; यहोशू 23:7; न्या. 2:10, 19; 10:6, 10; I शमु 22:10; I राजा 16:1; II राजा 17:12

इब्रानी मूल में यहोवा के सेवक के लिए एक प्रतिष्ठा सूचक नाम बनता है :

1. पूर्वजों - निर्ग. 32:13; व्य. 9:27
2. कालेब - गि. 14:24
3. मूसा - निर्ग. 14:31; गि. 12:7; व्य. 34:5; I राजा 8:53
4. यहोशू - यहोशू 24:29
5. दाऊद - I शमु 23:10; 25:39
6. याशायाह - याशा 20:3
7. मसीहा - याशा 53; जक. 3:8
8. नबूकदनेस्सर - यिर्म. 25:9; 27:6;43:10
9. फूस्रू - याशा 44:28; 45:1
10. इस्राइल देश - याशा. 41:8; 44:1-2; 45:4

पद: 26, 27, 28 के संदर्भों में परमेश्वर की वायदा (उदा.पद 26, यहोवा देश के बाहर उन्हें पहुचांता है ; पद 27, यहोवा उन्हें दूसरे–दूसरे देशों में तितर–बितर करता है; पद 28; वे बनाने वाले से प्राप्त मूर्ति पूजा देखते है) और मूर्तिपूजा की आज्ञानता की शर्तपूर्ण स्वभाव को दिखाता है ।

4:29 "तुम अपने परमेश्वर यहोवा को ढूढोंगे" इस क्रिया (बीडीबी 134, केबी 152, पील पूर्ण) का अर्थ "खोजना" जैसे अनाज्ञाकारिता के द्वारा तोड़े गये, यहोवा के साथ वाचा संबंधी को संग्रहित करना है । पश्चाताप, पूर्ण समर्पणता की मांग करता है (तुम अपने पूरे मन से और अपने पूरे प्राण से 26:16; 30:2,10) ।

परमेश्वर की क्षमा हमेशा सच्चे पश्चाताप पर उपलब्ध होती है (पद: 29–31; 30:1–3,10) । सच्चा पश्चाताप होठों से नहीं, लेकिन पूर्ण विश्वास से है । पश्चाताप एक जीवनकला की बदलाहट है न किएक भाव है । हम पिछले जल के स्थान का उदाहरण देखते है, अल्प आयुवाला पश्चाताप होशे 6:9–3, यिर्म 3:21–25 में ।

यदि वे उसे ढूंढेंगे, वे उसे पायेगें (यिर्म 24:7; 29:13) । यहोवा को पाना कठिन नहीं है । वह सिर्फ यही आशा करता है उसके लोगों से कि वे उसके चरित्र पर प्रतिबिंब डाले । देखें विशेष विषय 30:1 में ।

4:30 मूसा इस्राईलियों के विदोह के बारे में भविष्यवाणी करता है, जैसे यहोशू भविष्यवाणी करता है, (यहोशू 24:19–28) । पाप में गिरने के कारण आत्मिक तौर से मनुष्य के योग्यता को नष्ट कर दिया है वे परमेश्वर की आज्ञा को न मानने पाएं (रोमि 1:3; गल.3)

ध्यन दें कि हालांकि पद : 26 एक तत्काल न्याय को सांकेतिक करता है, पद 27, असिरिया (722 बीसी) और बेबिलोन (605, 597, 586, 582) बहिष्कार को संकेत करता है और पद 30 अंत के दिनों के बारे में बताता है (आने वाले दिनों में) । इस्राइल को यहोवा के साथ वाचापूर्ण रीति से संबंधित होना है । वह इसे वाचा पर आज्ञाकारी होने से कर सकती है (जिसे रोमि 1–3 और ग. 3 में संभव बताता है) या वह इसे यीशु में नयी वाचा के विश्वास/पश्चाताप के द्वारा कर सकती है । सभी विश्वासी यहूदी लोगों के बीच अंतिम दिनों में जागृति होने के लिए प्रार्थना करें (संभवत: जकर्या. 12:10 या रोमि 11)।

4:31 "तेरा परमेश्वर यहोवा दयालु परमेश्वर है" – ईश्वरों के नामों के लिए (एल. यहोवा, एलोहिम) देखें विशेष विषय 1:3 में ।

विशेषण इयालु (बीडीबी 933) का अर्थ कृपालु या दयालु है । यह इस्राएल के परमेश्वर की व्याख्या करने के लिए अनेकों चरित्रों में से एक का प्रयोग हुआ है । देखे नीचे दिये गये विशेष विषय में ।

विशेष विषय : इस्राइल के परमेश्वर की विशेष गुण

1. दयालु (बीडीबी 933) – निर्ग. 34:6, व्य. 4:31; II इति 30:9; भ.स. 86:15; 111:4; नहें, 9:17, 31; योयरा 2:13; योना 4:2

2. अनुग्रह करो (बीडीबी 337)– निर्ग. 34:6; II इति 30:9; भ.स. 86:15; 103:8;111:4; नहे 9:17,31; योयल 2:13, योना 4:2

3. विलंब से क्रोध करने वाला (बीडीबी 74 निर्माण बीडीबी 60)
– निर्ग 34:6; भ.स. 86:15; 103:8; नहे. 9:17; योयल 2:17, योना : 4:2

4. दृढ़ प्रेम में बने रहना (बीडीबी 912 निर्माण I बीडीबी 338)
– निर्ग. 34:6.7; भ.स. 86:15; 103:8; नहे. 9:17; योयल 2:13 योना 4:2

5. विश्वास योग्य (बीडीबी 54) – निर्ग. 34:6; भ.स. 86:15

6. बहुतादत क्षमा(बीडीबी 699) – नहे. 9:17

7. उन्हें नहीं छेड़ा (बीडीबी 736I) नहें. 9:17, 31

8. बुराई के लिए पश्चाताप करना (बीडीबी 636; केबी 688) निफाल कृदन्त + बीडीबी 948)
– योयल 2:13; योना 4:2

9. महान परमेश्वर (बीडीबी 41, 152) – नहे. 1:5; 93:2)

10. महान और भयानक (बीडीबी 152, 431) – नहे. 1:5; 4:14; 9:32

11. वाचा रखता है (बीडीबी 1036, 136 – नहें 1:5; 9:32

12. दृढ़ प्रेम (बीडीबी 338) – नहें. 1:5; 9:32

"वह तुम को न तो छोड़ेगा, न नष्ट करेगा, और जो वाचा उसने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बांधी है उसको नहीं भूलेगा" यहां तीन, अस्तित्व अस्वीकार की हुई क्रियाएँ है :

1. पराजय – बीडीबी 951, केबी 1276, हिलफिल अपूर्ण (शब्दानुसार हाथों को नीचे होने दो) जिसका अर्थ छोड़ना या त्यागना (31:6, 8; यहोशू 1:5; 10:6; I इति. 28:20 इब्रा 13:5) है ।
2. नष्ट करना– बीडीबी 1007, केबी 1469, हिलफिल अपूर्ण जिसका अर्थ सड़ जाना, नष्ट होना और नष्ट करना है । (9:26; 10:10 यिर्म. 30:11)
3. भूलना – बीडीबी 1013, केबी 1489, क्वेल अपूर्ण (लैव्य 20:45; देखें विशेष विषय : पूर्वजों से की गई वाचा की वायदों 9:5 में ।

कठिन अधयात्मविधा प्रकाशन है कि किस प्रकार से इस पद में परमेश्वर के वायदों को, पहिले की वाचा के मागों के संबंध में गभीरंता से लें । वाचा को रखने में इस्रायल की अयोग्यता उनके इतिहास में और पौलूस की लेखों में (रोमि 2–3; ग.3) प्रमाणों का प्रयोग है । एक नई वाचा की आवश्यक मानव कार्यों पर आधारित नहीं, लेकिन ईश्वरीय ईच्छा और कार्य परमेश्वर का उत्तर है (यिर्म 31:31–34, यहे. 36:22–38) । परमेश्वर कभी नहीं बदलता है । लेकिन इस्राएल न तोऐसा करता है । एक धार्मिक व्यक्ति के लिए परमेश्वर की मांग, मानव प्रयत्न या इच्छा से नहीं मिल सकता । हमें एक नये हृदय और एक नये आत्मा की आवश्यकता है ।

आपको अवश्य ही निर्णय करना है । क्या पुराने नियम को नये नियम के दृष्टि के द्वारा या नये नियम की दृष्टि के द्वारा देखा जाना है ? क्या यह इस्रायल पर या संसार पर केन्द्रित करता है ? क्या यह विश्वास या जाति का प्रकाशन है ? यहां परमेश्वर के अनंत योजना जो छुटकारे के लिए है यदि निपेक्ष वचन है तो यह कलिसिया नहीं है (उदा. बांट का सिद्धांत) लेकिन इस्रायल है ।

विशेष विषय :- क्यों पुराने नियम के वाचा की वायदे, नये नियम के वाचा की वायदों से भिन्न दिखाई पड़ते है । कई वर्षों तक इसकेथोलोजी मेरे अध्ययन से मैने लिखा कि अधिकार मसीहीयों के पास एक उन्नति क्रमबद्धित अंतिम दिनों की काल निर्णय विया नहीं है या किसी विशिष्ठ जाति कारणों के लिए, मसीही मत से इन क्षेत्रों पर केन्द्रित भूत या प्रधान होते है । ये मसीही लोग इस बात से पीड़ित होते हुए दिखाई देते है कि किस प्रकार से इन सभी का अंत होगा और किसी प्रकार से सुसमाचार की आवश्यकता को चूक करें । विश्वासी लोग परमेश्वर के इसकेथोलोजी (अंतिम समय) कार्यक्रम से प्रभावित नहीं हो सकते है, लेकिन वे सुसमाचार आदेश में सहभागिता दे सकते है (मती. 28:19-20, लूका. 24:47, प्रे.का. 1:8) । अधिकतर विश्वासी मसीही के दुबारा आगमन और परमेश्वर के वायदों का अंतिम शिखर तक पहुचने पर निश्चित है । अनेक बाईबल संबंधी विरूद्ध मत को किस तहर से इस समय शिखर को समझे इस पर व्याख्याकरने में समस्या उत्पन्न हो रही है ।

(1) पुरानी वाचा की भविष्यवक्ता संबंधी नमूनों और नई वाचा प्रेरित संबंधी नमूनों के बीच में तनाव।

(2) बाईबल की अदैतवाद (सभी लोगों का एक परमेश्वर) और इस्रायल के चुनाव (एक विशेष लोग) के बीच तनाव

(3) बाईबल संबंधी वाचाओं और वायदों के आश्रित रूप ("यदि.. तक") और परमेश्वर की बिना आश्रित विश्वासयोग्यता जो पाप में गिरे मानव के छुटकारे के बीच तनाव

(4) निकट पूर्वी शास्त्रिय शैलियों और आधुनिक पश्चिमी शास्त्रिय नमूनों के बीच तनाव

(5) परमेश्वर का राज्य जैसे वर्तमान, भवष्यि तक के बीच तान

(6) मसीह की शीघ्र वापसी में विश्वास और कुछ घटना प्रथम होने में विश्वास के बीच तनाव

आइये हम इन तनावों के बारे में एक समय में ही बातचीत करें ।

प्रथम तनाव : (पुराने नियम के वंश संबंधी, राष्ट्रीय और भूगोल विषयक समान वर्गो बनाम संसार के सभी विश्वासी)

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने पलिश्चि देश के मध्य भाग यरूशलेम में यहुदी राज्य के इकट्ठा किये जाने की भविष्यवाणी किये, जहां पर पृथ्वी के सभी जाति के लोग दाऊद-

संबंधी राजा की सेवा और स्तुति करेगें, लेकिन यीशु और न ही प्रेरितों ने कई इस कार्यक्रम पर ध्यान केन्द्रित किया । क्या यह पुराने नियम की ईश्वर प्रेरणा नहीं है (मती. 5:17–19) ? क्या नये नियम के लेखकों ने अंतिम समय की महत्वपूर्ण घटनाओं को त्याग दिया है ?

यहां पर विश्व के अंत के बारे में सूचनाओं के अनेक स्त्रोत है:

1. पुराने नियम के भविष्यवक्ताएँ (याशायाह, मीका, मलाकी)
2. पुराने नियम के दर्शन संबंधी लेखक (यहे. 73–39; दानि. 7–12; जकयहि)
3. मृत्यु लेख संबंधी गाड़ना अनियुक्त यहूदी दर्शन संबंधी लेखक (I हनोक के समान, जिसे यहूदा की पत्री में संकेत किया गया है ।)
4. स्वयं यीशु (मती : 24; मर. 13; लूका. 21)
5. पौलूस के लिखित पत्रियों (I कुर. 15; II कुर 5:1; I थिस्स.4–5; II थिस्सुलु.2)
6. यहुन्ना के लिखित पत्रियों (I यहुन्ना और प्रकाशित वाक्य)

क्या इन सभी को स्पष्ट करने के लिए अंतिम दिनों में होने वाली कार्यक्रम को सिखायें (घटनाओं, वंशावली, व्यक्ति) ? यदि नही, तो क्यों ? क्या वे सभी ईश्वर प्रेरणा से नहीं है ? (यहुदी मृत्यु लेख संबंधी गाड़ने को लिखित पत्रों को छोड़कर) ?

आत्मका पुराने नियम के लेखकों पर सच्चाई को शब्दों और समान वर्ग जिससे से समझ सकें, प्रकट कियाहै । किन्तु, प्रगतिशील प्रकाशन के द्वारा आत्मा ने इन पुराने नियम के इसकेथोलोजी विचारों को एक ब्रम्हांड सीमा तक बढ़ाया है (मसीह का रहस्य, इफि. 2:11–3:13, देखें विशेष नियम 10:7 में) यहाँ पर कुछ अनुरूप उदाहरण दिये हुए है :

1. पुराने नियम में यरूशलेम शहर का प्रयोग, परमेश्वर के लोग (सिम्योन) के अलंकार में हुआ है, किन्तुनये नियम में आशय जैसे एक शब्द, परमेश्वर की स्वीकृति, सभी पश्चाताप किये हुये लोगों केलिए, विश्वासी मनुष्य (प्रका: 21–22 की नयी यरूशलेम) मत प्रकट कर रही है । अध्यातमविद्या संबंधी वृद्धि की एक शब्दानुसार, परमेश्वर के नये लोगों के लिये स्कूल शहर (विश्वासी यहूदी और अन्य जातियाँ), परमेश्वर का वायदा उत: 3:15 में पाप में गिरे मानव छुटकारे की परछाई है, हालांकि पहले वहां कोई यहूदी का एक यहूदी मुख्य शहर था । यहां तक अब्राहम की बुलाहट (उत: 12:1–3) भी अन्य जातियों को सम्मिलित करती है (उत. 12:3; निर्ग 19:5) ।

2. पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के शत्रु प्राचीन पूर्वी निकट के देशों के चारों तरफ है, किन्तु नये नियम में उनकी वृद्धि, सभी अविश्वासी लोग, शैतान से प्रेरित लोगों से हुई है । युद्ध एक भूगोल विषयक, प्रादेशिक युद्ध से हटकर एक संसार में व्याप्त जगत संबंधी युद्ध हुआ है (कुलुस्सियों)

3. एक देश का वायदा जो पुराने नियम में अत्यंत संपूर्ण (उत्पत्ति के पूर्वज संबंधी वायदों उत. 12:7; 13:15; 15:7, 15; 17:3) है अब संपूर्ण पृथ्वी हो गया है । नया यरूशलेम फिर से बनी नयी पृथवी है, सिर्फ पूर्वी निकट या अनन्य नहीं है (प्रका.. 21–22) ।

4. पुराने नियम के भविष्य संबंधी विचारों के कुछ दूसरे उदा. की व्याख्या की गई है :
(अ) अब्राहम की संतान अब आत्मिक रूप से खतना किए हुए लोग (रोमि. 2:28-29)
(ब) वाचा के लोगों में अब अन्यजाति भी सम्मिलत होते है (होशे, 1:10:2:23; को रोमि 9:24-26 में दुहराया गया; लैव्य 26:12 निर्ग 29:45 को भी, II कुर. 6:16-18 और 19:5; व्य. 14:2, को तितुस 2:14 में दुहराया गया)
(स) सब मंदिर यीशु है (मती 26:61; 27:40; यहु. 2:19-21) और उसके द्वारा स्थानीय कुलिसिया (1कु. 3:16) या प्रत्येक विश्वासी (1 कुर. 6:9) ।
(द) यहाँ तक इस्रायल और इसके गुण निर्देशक पुराने नियम के वाक्यखंड अब परमेश्वर के संपूर्ण लोगों को प्रकटीकरण करत है (उदा. इस्रायल रोमि. 9:6, गल. 6:16; उदा. याजकों का राज्य 1 पत. 235, 9-10; प्रका:1:6) ।

भविष्य संबंधी नमूने पूर्ण, फैलाव हो चुके है, और अब अत्यकिध संयुक्त किए हुये है । यीशु और प्रेरित संबंधी लेखकों ने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के समान अंतिम दिनों के विषय को प्रस्तुत नहीं किया है (मार्टिन व्यागंरडेन, द फ्यूचर ऑफ द किंगडम इन प्रोफेसी एण्ड फुलफिलमेंट) आधुनिक व्याख्या करने वाले जो पुराने नियम के नमूना शब्दानुसार को या प्रकाशन के प्राकृतिक मुड़ाव को एक यहुदी पुस्तक और प्रबल अर्थ से परमाणुओं में परिणत किया हुआ, यीशु और पौलूस के वाक्यखण्ड़ों को अनिश्चित करने का प्रयास करते है । नये नियम के लेखक पुराने नियम के भवष्यिवक्ताओं के अस्तित्व अस्वीकार नहीं करते है, लेकिन उनके पूर्ण राष्ट्रीय झंझट को दिखाते है । यहां यीयु या पौलूस के इसकेथोलोजी के लिए संगठित्त किया हुआ, तर्कानुसार प्रबंध नहीं है । उनका उद्देश्य मुख्यत: छुटकारे का या चरवाही का है ।

किन्तु, यहाँ तक नये नियम के अंदर भी तनाव है । यहां घटनाओं की स्पष्ट क्रमबद्धता नहीं है˙ प्रकाशित वाक्य चकित करते हुए कई तरह से पुराने नियम के उद्देश्यों की व्याख्या अंतिम समय के लिए उपयोग कर रहा है (मती 24; मर. 13) । यह यहेजेकल यीशु के शिक्षा के बजाय दानियेल और जकर्याह के द्वारा प्रारंभ किया हुआ शास्त्रीय शैली का अनुसरण करती है, किन्तु इसका पुष्टिकरण मृत्यु शेख संबंधी गाड़ने की अवधि के दौरान हुआ (यहुदी, 40 व्यक्तियों द्वारा लिया गया शास्त्र समूह) यह शायद यहुन्ना के द्वारा पुरानी और नई वाचा को जोड़ने का ढंग है । यह मानव विद्रोह के प्राचीन रूप और छुटकारे के लिए परमेश्वर की समर्पणता को दिखाता है । लेकिन यहां पर ध्यान देना आवश्यक है कि हालांकि प्रकाशन पुराने नियम की भाषा, व्यक्तियों और घटनाओं का प्रयोग कर यह रोम के प्रथम शताब्दी (प्रका. 1:7) के प्रकाश में उन्हें पुन: व्याख्या करती है ।

द्वितीय तनाव : (अदैतवाद बनाव एक चुने हुए लोग)

बाईबल एक व्यक्तित्व, आत्मिक, सृष्टिकर्ता छुड़ाने वाले, परमेश्वर पर जोर देता है

(निर्ग. 8:10; याशा 44:24; 45:5-7, 14, 18, 21-22; 46:9;यिर्म: 10:6-7) पुराने नियम का अनोखापन इसके नीजी दिन में इसका अद्धैतवाद था । उनके चारों तरफ के दशों के लोग अनेक देवताओं में विश्वास करने वाले थे । परमेश्वर का अद्धैतभाव, पुराने नियम के प्रकाशन काहृदय है (व्य. 6:4) । संगति के उद्देश्य के लिए सृश्टि परमेश्वर और मनुष्य के बीच में एक घटनास्थल है (उत. 1:26-27) । किन्तु मनुष्य ने विद्रोह और पाप किया, जो परमेश्वर के प्रेम, अनुवापन और उद्देश्य के विरूद्ध था (उत. 3) । परमेश्वर का प्रेम और उद्देश्य अत्यधिक मजबूत और निश्चित था कि उसने पाप में गिरे हुए मानवजाति को छुड़ायेगा (उत. 3:15) ।

तनाव उत्पन्न होता है जब परमेश्वर एक व्यक्ति, एक परिवार, एक देश, को बचे हुए मानव जाति तक पहुचने के लिए, चुनकर प्रयोग में लाता है । अब्राहम और यहुदियों को एक राज्य याजकों (निर्ग. 19:4-6) के रूप में परमेश्वर का चुनाव, सेवा कार्य के बदले घमंड, समावेश के बजाय निषेध का कारण हुआ है । अब्राहम की बुलाहट परमेश्वर के द्वारा सभी मानव जाति पर इच्छापूर्वक आशीष को सम्मिलित करती है (उत. 12:3) अवश्यही यह याद रहना और जोर दिया जाना है कि पुराना नियम की चुनाव सेवा कार्य के लिए था, न कि उद्धार के लिए । इस्राइल कभी भी परमेश्वर के साथ ठीक नही था, उसमें जन्म सिद्ध अधिकार के आधार पर अकेले कभी भी आंतरिक रूप से बचाये नहीं गये (यहु. 8:31-59; मती, 3:9) लेकिन एक व्यक्तिगत विश्वासआर आज्ञाकारिता के द्वारा बचाये गये है (उत: 15:6 को रोमि. 4 में दुहराया गया) इस्रायल ने उसके सेवा कार्य को खो दिया (अब कलिसिया एक राज्य का याजक है, 1:6; II पत. 2:5-9) आदेश पत्र को सौभाग्य में बदल दिया, सेवा कार्य को एक विशेष स्थिरता में । परमेश्वर ने सभी को चुनने के लिए एक को चुना ।

तीसरा तनाव : (शर्तपर्ण वाचाएँ बनाम बिना शर्त की वाचाएँ)

शर्तपूण और बिना शर्त की वाचाओं के बीच में एक अध्यात्म विद्धा संबंधी तनाव या विरूद्ध मत है । यह निश्चित तौर से सही है कि परमेश्वर को छुड़ानेवाला उद्देश्य । योजनाबिना शर्त की है (उत. 15:12-21) किन्तु मानव प्रत्युत्तर आदेश हमेशा एक शर्त पूर्ण है ।

"यदि ... तब" नमूनों का प्रकटीकरण नये नियम और पुराने नियम में होता है परमेश्वर विश्वास योग्य है, मानवजाति अविश्वासयोग्य है । इस तनाव से अधिक गड़बडी का कारण हुआ है । व्याख्या करने वाले सिर्फ एक के ऊपर आसमजंस्य के सिंग पर प्रयतन्न, परमेश्वर का प्रभुत्व या मानव जाति की संवयं ईच्छा पर किया है । दोनों आवश्यक और बाईबल संबंधी है ।

यह इसकेथोलोजी से पुराने नियम में इस्रायल के किये गये परमेश्वर के वायदों के विषय में संबंध बनाती है । यदि परमेश्वर इसका वायदा करता है तो वह इसे व्यवस्तित करता है । परमेश्वर स्वयं के वायदों से बंधा हुआ ; उसकी कीर्ति सम्मिलित है (यहे. 36:22-38) ।

शर्तपूर्ण और बिना शर्त की वाचाएँ इस्रायल में नहीं, लेकिन मसीह में मिलती है । (याशा: 53)। परमेश्वर की विश्वासयोग्यता सभों के छुटकारे पर निर्भर करती है, जो पश्चाताप कर विश्वास करेगा, न कि कौन तुम्हारा पिता/माता था। परमेश्वर के वाचाएँ और वायदों की सभी कुंजी मसीह न कि इस्राइल है । यदि यहां एक अध्यात्म विद्या संबंधी निपेक्ष वाक्य बाईबल में है, तो यह कलिसिया नहीं बल्कि इस्रायल है (प्रे. का. 7 और गत. 3) ।

सुसमाचार की घोषणा जगत तक पहुंचाने के लिए, अब कलिसिया को सौंपा गया है (मती. 28:19-20, लूका; 24:47; प्रे.का. 1:8) । अभी तक यह एक शर्तपूर्ण वाचा है । परमेश्वर ने यहूदियों को पूरी रीति से इंकार किया है यह ऐसा संकेत नहीं करता है । (रोमि. 9-11) विश्वस्त इस्रायल, के लिये शायद एक भाग और उद्देश्य अंतिम दिनों में है । (जकार्या. 2:12)

चौथा तनाव : (निकट पूर्वी शास्त्रीय नमूनें बनाम पश्चिम नमूने)

बाईबल के स्पष्ट रूप से व्याख्या करने में शैली एक गुण दोष विवेचक तत्व है । कलिसिया की पुष्टि पश्चिमी (युनानी) सांस्कृतिक योजना से हुई है । पूर्वी शास्त्र-समूह, आधुनिक पश्चिमी संस्कृति के शास्त्रीय नमूनों के बजाय उनसे अत्यकिध आलकांरिक, लाक्षणिक और साकंतिक है । वह संक्षिप्त निर्दिष्ट कर्तव्य सच्चाईयों से बढ़कर, लोगों पर, मुठभेड़ पर, घटनाओं पर ध्यान केन्द्रित करता है । उनके इतिहास और शास्त्रीय नमूनों को बाईबल की भविष्यवाणियों (पुराना और नया नियम दोनों) में प्रयोग कर, व्याख्या करने पर मसीही अपराधी ठहर रहे है । प्रत्येक पीढ़ी और भूगोल-विषयक अस्तित्व ने प्रकाशितवाक्य की व्याख्या करने के लिये इसकी संस्कृति, इतिहास और मूलार्थक का प्रयोग किया है । उनमें से प्रत्येक लोग गलत हुए है । यह सोचना अहंकारी है कि आधुनिक पश्चिमी संस्कृति बाईबल भविष्यवानी की केन्द्रितभूत है ।

शैली जिसमें मौलिक, ईश्वर प्रेरित लेखक, लिखने के लिए चुनना एक, पढ़कर व्याख्या करने वाले के साथ एक शास्त्रीय मित्रता का वचन है । प्रकाशित वाक्य की पुस्तक ऐतिहासिक कथा नहीं है । यह पत्रों, भविष्यवाणी और अधिकतर दर्शनशास्त्र समूह की संधि है । व्याख्या करनेवालों का अभिमान और स्वमत्ताभिमान भी यहां तक प्रकाशितवाक्य जैसी पुस्तक में अत्यधिक असंगत है ।

प्रकाशित वाक्य पर उचित व्याख्या हुए जाने पर कलिसिया क़भी सहमत नहीं हुआ है । मै पूरी बाईबल में से सुनने और व्यहवार करने की अभिरूचि रखता हूं, न कि कुछ चुने हुए भागों से है । बाइबल, को पूर्व में रहने बाते ध्यान में रखकर, सच्चाई तनावपूर्ण जोड़ा में प्रस्तुत करते हैं । हमारी पश्चिमी झुकाव कर्तव्य, निर्दिष्ठ सच्चाई की ओर नियम विरूद्ध नहीं है, किन्तु अस्थिर है । मैं सोचना हूं कि ध्यान देने के द्वारा प्रकाशित वाक्य की व्याया करने में कठिन अवस्था को कम से कम थोड़ा निकालना संभव हैं, इसको बदलने का उद्देश्य विश्वासियों की क्रमबद्ध पीढ़ियां है । यह अधिकतर व्याख्या करने वालों के लिए स्पष्ट है कि प्रकाशित वाक्य की व्याख्या इसके निजीदिन और सही शैली के ज्ञान में अवश्य होती है । नवीन व्याख्या करने वाले ने कई तरह से पुस्तक के लक्षणासें को खो दिया है । प्रकाशित वाक्य की महत्वपूर्ण मुख्य प्रहार,

सताये हुए विश्वासियों को उत्साहित करना है । वह इतिहास पर परमेश्वर के नियंत्रण को दिखाया है (जैसे पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने किया) यह प्रमाणित करता है कि इतिहास एक नियुक्त की हुई सीमा, न्याय या आशीष की ओर जा रही है (जैसे पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने किया) । प्रथम शताब्दी में यहूदी भविष्य सूचक शब्दों परमेश्वर का प्रेम, उपस्थित, सामर्थ और प्रभुत्व से यह प्रमाणित हुआ है ।

प्रत्येक पीढ़ी के विश्वासियों पर यही अध्यात्मविद्धा कार्य प्रणाली कार्य करती है । यह अच्छाई और बुराई पर जगत संबंधी संघर्ष को शब्दों में वर्णन करती है । प्रथम शताब्दी के विवरण शायद हमसे खो गया होगा, लेकिन सामर्थी है, सात्वना देने वाली सच्चाइयां नहीं खोई है । जब नवीन, पश्चिमी व्याख्या करने वालों ने प्रकाशन के विवरण में गहन प्रयास करके उनके समकालिक (एक काल का) इतिहास पर प्रयाय किया, गलत व्याख्याओं के नमूने लगातासर हो रहे हैं ।

यह स्पष्ट संभव है कि पुस्तक का विवरण; विश्वासियों की अंतिम पीढ़ी जैसे वे विरोधी परमेश्वर अगुवा (II थिस्सु. 2) और संस्कृति के भयकंर घातक आक्रमण का सामना करते है, उनके लिये पुन: विनिश्रता से मूलार्थक बन सकता है (जैसे पुराने नियम में मसीह के जन्म, मृत्यु और जीवन के संबंध में हुआ है ।) कोई भी प्रकाशन के इन मूलार्थक परिपूर्णता को यीशु मसीह के शब्दों के बिना ही समझ सकता है (मती. 24;मर. 13 और लूका 21) और पौलूस (I कु. 15; I थिस्सु. 4-5; और II थिस्सु. 2) भी ऐतिहासिक गवाह बना । अनुमान, कल्पना स्वमत्ताभिमान सभी अनुचित है । दर्शन शास्त्र समूह इस लचीलेपन की अनुमति देता है । चित्रों और चिन्हों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद जो कि ऐतिहासिक संक्षिप्त को बढ़ाता है । परमेश्वर अधिकार में है; वह राज्य करता है; वह आता है ।

अधिकतर नवीन टीकाक्रम ने शैली के केन्द्र को खो देते है ! नवीन पश्चिमी व्याख्या करने वाले, यहूदी दर्शन शास्त्र-समूह की एक फेरवट का, चिन्ह, नाटक शैली के साथ अनुकूल होने के बाजय स्पष्ट अध्यात्मविद्या के तर्कानुसार प्रबंध, को प्राय: ढूंढते है । इस सच्चाई को राल्फ पी. मार्टिन ने उसकी पत्रिका में स्पष्ट किया है, नये नियम टीका पर पहुंचते है तो, इन द बुक न्यू टेस्टमें ट इन्टरप्रीटेशन, 1 हॉवर्ड मार्शल के द्वारा प्रकाशित किया गया है :

''जब तक हम इस लेख के नाटक गुण को नहीं पहचनाते है और पद्धति का खण्डन किस भाषा में एक वाहन के जैसे धार्मिक सच्चाई को स्पष्ट करने में प्रयोग हुआ है, हम दर्शन को अपनी समझ में उद्वेग से अपराधी होंगे, और भूल से इसके दर्शन को व्याख्या करने की कोशिश करना, जैसे इसके द्वारा एक मूलार्थक-गद्य की पुस्तक और स्वीकृत तत्व इतिहास और प्रयोग सिद्ध की घटनाओं को व्याख्या करने का विषय हुआ है । उपर्युक्त अग्रगति को प्राप्त करने को कोशिश के लिए सभी समस्याओं की व्याख्या से होकर गुजरना पड़ता है । यह गंभीर रूप से दर्शन संबंधी की महत्वपूर्ण अर्थ की कुरूपता की ओर ले जाती है और नये नियम के इस महान उच्चतम भाग की चूक करती है मसीह में परमेश्वर के प्रभुत्व की आलंकारिक भाषा में जैसे एक नाटकीय

स्वीकृति और विरूद्ध मत पर उसके अधिकतर जो सामर्थ और प्रेम को मिलाते है (5:5,6, सिंह एक मेमना है) (पृ. 235) ।

डब्ल्यू. रेन्डोल्फ टेट ने उसके किताब बीबलीकल इन्टरप्रीटेशन्स में कहा :

बाइबल की अन्य किसी शैली को उत्सुकता से नहीं पढ़ा गया जैसे दर्शन–संबंधी, विशेष तौर पर दानियेल की किताब और प्रकाशित वाक्य की किताब को इस प्रकार मूल्य कम करते हुए उत्सुकता से पढ़ा गया है । ये शैली एक नष्टकारी इतिहास की गलत व्याख्या करने का कारण इसकी शब्दानुसार रूप, आकार और उद्देश्य की असमझ सिद्धांत से पीढ़ित था । क्योंकि इसके दृढ़तापूर्वक कथन की क्या शीघ्र होने वाला है, दर्शनशास्त्र को एक मार्ग मानचित्र के रूप में और भविष्य की गुप्त छाप के रूप में देखा गया है । शायद घटना ऐतिहासिक हो सकती है, या वे वास्तव में हुई है, या होने वाली है लेकिन लेखक घटनाओं को प्रस्तुत करता है और चित्रों और मूल रूप आदर्शो के द्वारा अर्थ को बताता है । (पृ. 137)

राइकेन, वीलहोस्ट एण्ड लोंगमेन 3 के द्वारा सम्पादित, डिक्सनरी ऑफ बीबलीकल इमेजरी में :

आज के पाठक इस शैली के द्वारा आकस्मिक और हैरान है । आशारहित आकृति और इस संसार से अलग अनुभव, अधिकतर धर्मग्रन्थ के साथ मूर्छा से बाहर और पागल जान प्रतीत होता है । इस शास्त्र–समूह को लेने पर नाममात्र का मूल्य अनेक पाठकों को सोचने के लिए चढ़ान दान पत्र छोड़ देता है क्या होगा जब, इस प्रकार दर्शन संबंधी संदेश के विचार को छोड़ दिया जायेगा (पृ.35)

पाँचवा तनाव (परमेश्वर का राज्य जैसे वर्तमान तथापि भविष्य में)

परमेश्वर का राज्य वर्तमान पर तथापि भविष्य है । इस अध्यात्मविद्या संबंधी विरूद्ध मत की बिन्दु पर केन्द्रियभूत होता है । यदि एक आशा इस्राइलियों के लिए पुराने नियम के सभी भविष्यवाणियाँ एक शास्त्रसमूह में परिपूर्ण होती है तब राज्य अधिकाई रूप से इस्राइल के पुन: गठन से एक भूगोल विषयक स्थान और एक अध्यात्मविद्या संबंधी श्रेष्ठता बनती है । यह विवश करेगा कि कलिसिया गुप्त रीति से अध्याय 5 तक उठा लिया गया और बचे अध्याय इस्राइल से संध रखती है (लेकिन याद रखें प्रका. 22:16) ।

किन्तु, यदि राज्य का उद्‌घाटन पुराने नियम के वयदे किये हुए मसीहा के द्वारा होने पर ध्यान केन्द्रित करता है, तब यह मसीह के आगमन के साथ प्रस्तुत होता है और तब ध्यानकेन्द्रित, अवतार, जीवन, शिक्षा, मृत्यु और मसीह के पुरात्थान में होता है । अध्यात्मविद्या एक वर्तमान उद्धार पर जोर देता है । राज्य आ चुका है, सभी के उद्धार के लिए मसीह की भेंट से पुराना नियम पूरा हो चुका है, न कि उसके हजार वर्ष के राज्य से ।

यह बिल्कुल सत्य है कि बाइबल मसीह के दोनों आगमन के बारे में बताती है, लेकिन कहाँ पर महत्व को रखना है ? मुझे लगता है कि पुराने नियम की भविष्यवाणी प्रथम आगमन, मसीहा राज्य के स्थिरता पर ध्यानकेन्द्रित करती है (दानि, 2) कई प्रकार से यह परेमश्वर के अनंत राज्य के सदृश है (दानि.7) । पुराना नियम परमेश्वर के अनंत राज्य पर केन्द्रिभूत है, तब भी उस राज्य की यंत्र रचना प्रकाशन मसीहा की सेवकाई है (1कुर.15:26-27) । यह प्रश्न नहीं है कि कौन सा सत्य है, दोनों सत्य है, लेकिन महत्व कहाँ है ? यह अवश्य कहा जाना चाहिए कि कुछ व्याख्या करने वाले मसीहा के हजार वर्ष के राज्य में अत्यधिक केन्द्रीभूत हो जाते है (प्रका.20) कि वे पिता के अनंत राज्य को जिसे बाइबल केन्द्रीभॅत हो जाते है (प्रका.20) कि वे पिता के अनंतराज्य को जिसे बाइबल केन्द्रीभूत करती है, चूक जाते है । मसीह का राज्य प्रथम प्रबंध घटना है । जैसे मसीह की दो आगमन पुराने नियम में स्पष्ट नहीं थी, नही मसीहा का राज्य समय-संबंधी है ।

यीशु मसीह की शिक्षा और प्रचार की कुंजी परमेश्वर का राज्य है । यह वर्तमान (उद्धार और सेवा कार्य में) और भविष्य (व्यापक और सामर्थ) दोनों है । प्रकाशित वाक्य, यदि यह मसीहा के हजार वर्ष राज्य पर केन्द्रिभूत करता है (प्रका.20), प्रथम प्रबंध है, न कि अंतिम है (प्रका.21-22) । पुराने नियम में यह स्पष्ट नहीं है कि एक समय संबंधी राज्य आवश्यक है, जैसे एक सत्यता का विषय, कि मसीहा का राज्य दर्शन. 7 में अनंतीय है न कि हजार वर्ष का है ।

छठवाँ तनाव (मसीह का शीघ्र आगमन बनाम देरी से पारूसिया) -

कई विश्वासियों को सिखाया जाता है कि यीशु शीघ्र अचानक, और अकस्मात से आ रहा है (मती, 10:23, 24:27, 34, 44, मर.9:1,13:30, प्रका.1:1,3, 2:16, 3:11, 22:7, 10,22,20) । लेकिन ऐसी आशा किये हुए विश्वासियों की पीढ़ी अब तक गलत है । यीशु का शीघ्र (तुरंत) आगमन प्रत्येक पीढ़ी पर सामर्थी आशा का वायदा है, लेकिन वास्तविकता सिर्फ एक व्यक्ति से है (और वह एक सताये हुए व्यक्ति से है) । विश्वासी को अवश्य जीवित रहना है जैसे यदि वह कल आ रहा है, किन्तु योजना और महाआज्ञा (मती 28:15-20) को पूर्ण करना है, यदि वह देरी करता है ।

सुसमाचार के कुछ पद्यांशों में (मर. 13:10, लूका. 17:2, 18:8) और 1 और 2 थिरसु. दुसरी आगमन एक विलम्ब होने पर निर्भर है । यहाँ कुछ ऐतिहासिक घटना जिसे पहने होना निश्चित है :

1. पूरे संसार में सुसमाचार का प्रचार (मती, 24:14, मर.13:10)
2. मनुष्य के पाप का प्रकाशन (मती. 24:15, 2 थिस्सु: 2,प्रका, 13)
3. महान सतावट (मती 24:21, 24, प्रका.13)

यहाँ एक उद्देश्यपूर्ण सन्देह है (मती: 24:42-51, मर. 13:32-36) प्रत्येक दिन ऐसे जियो जैसे यह आपका अंतिम दिन था और आनेवाली सेवकाई के लिए प्रयास करो ।

NASB **मूल ग्रंथ : 4:32-40**

जब वे परमेश्वर ने मनुष्य को उत्पन्न करके पृथ्वी पर रखा तब से लेकर तू अपने उत्पन्न होने के दिन तक की बातें पूछ और आकशा के एक छोर से दूरे छोर तक की बातें पूछ, क्या ऐसी बड़ी बात कभी हुई या सुनने में आई है ? क्या कोई जाति कभी परमेश्वर की बाणी आग के बीच में से आती हु सुनकर जीवितरही, जैसे कि तूने सुनी है ?

फिर क्या परमेश्वर ने और किसी जाति को दूसरी जाति के बीच से निकलने को कमर बांधकर परीक्षा और चिन्ह और चमत्कार और युद्ध और बली हाथ, और बढ़ाई हुई भुजा से ऐसे बड़े भयानक काम किये, जैसे तुम्हारे परमेश्वर, यहोवा ने मिस्त्र में तुम्हारे देखते किए ? यह सब तुझ को दिखाया गया, इसलिए कि तू जान रखे कि यहोवा ही परमेश्वर है; उसको छोड़ और कोई है ही नहीं । आकाश में से उसने तुझे अपनी वाणी सुनाई कि तुझे शिक्षा दे, पृथ्वी पर उसने तुझे अपनी बड़ी आग दिखाई औरउसके वचन आग के बीच में से आते हुए तुझे सुर्ना पड़े । और उसने जो तेरे पितरों से प्रेम रखा; इस कारण उनके पीछे उनके वंश को चुन लिया, और प्रत्यक्ष होकर अपने बड़े सामर्थ्य के द्वारा मिस्त्र से इसलिए निकाल लाया, कि तुम से बड़ी और सामर्थी जातियां को तेरे आगे से निकालकर तुझे उनके देश में पहुचाएँ और उसे तेरा निज भाग कर दे, जैसा आज के दिन दिखाई पड़ता है; इसलिए आज जान ले और अपने मन में सोच भी रख, कि अपर आकशा में और नीचे पृथ्वी पर यहोवा ही परमेश्वर है, और कोई दूसरा नहीं । 40 और तू उसकी विधियों और आज्ञओं को जो मैं आज तुझे सुनाता हूं मानना, इसलिए कि तेरा और तेरी पीछे तेरे वंश का भी भला हो, और जा देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तेरे दिन बहु वरन् सदा के लिए हों ।

4:32 ''पूछना'' क्रिया बीडीबी 981, केबी 1371, क्वेल आज्ञात्मक) का अर्थ, इस्रायल के अनोखेपन का ईश्वर के संबंध के बारे में परमेश्वर को पूछना है ।

❖ **जब से परमेश्वर ने मनुष्य को उत्पन्न कर पृथ्वी पर रखा यह उत: 1-2 को प्रकट करता है; भ.स. 104 में भी देखें ।**

4:34 और बली हाथ के द्वारा और बढ़ाई हुई भुजा से इन ईश्वर शरीर रचना संबंधी मुहावरों का (देखें विशेष विषय 2:15 में) प्रयोग यहोवा के सामर्थी छुटकारा इस्रायल के लिए, वर्णन किया गया है (5:15; 6:21;7:19; 9:29; 11:2; 26:8) । कुछ मूल ग्रन्थ के वाक्यखंड को छोटा कर सामथर्भ हाथ (3:24; 6:21; 7:8; 9:26; यहोशू 4:24) या बड़ाई हुई भुजा (9:29, निर्ग. 6:6) किया गया है । इस मुहावरायुक्त शब्द विद्या के पास एक मिस्त्र मूलग्रंथ में विशेष समानांतर राजा के लिये है । (नीडोट भाग.3, पृ.92) ।

4:35 इसलिए कि तू जान रखे पद; 34 की चमत्कार का उद्देश्य इस्रायल के विश्वास को दृष्टिकरण करने के लिए था (निर्ग. 7:5, 17, 10:2; 31:13) जानने के लिए (बीडीबी 393, केबी 390, क्वेल अनिश्चित निर्माण) देखें विशेष विषय नीचे पर दिया गया है :

विशेष विषय : "जानना" (अधिकतर व्यवस्थाविरण का प्रयोग जैसे एक रूपदर्शन) इब्रानी शब्द जानना (बीडीबी 393) के लिये क्वेल में अनेक तात्पर्य है (विभिन्न क्षेत्र)

(1) भले औरबुरे की समझ – उत. 3:22, व्य. 1:39;याशा 7:14–15, योना 4:11

(2) समझ के द्वारा जानना – व्य. 9:2; 3, 6; 18:21

(3) अनुभव के द्वारा जानना – व्य. 3:19; 4:35; 8:2, 3, 5; 11:2; 20:20 31:13; यहोशू 23:14

(4) विचारना – व्य. 4:39; 11:2; 29:16

(5) व्यक्तिगत रूप से जानना –

(अ) एक व्यक्ति – उत; 29:5; निर्ग. 1:8; व्य. 22:2, 28:35, 36, 33:9

(ब) देवता – व्य. 11:28; 13:2, 6, 13; 28:64; 29:26; 32:17

यहोवा – व्य. 4:35, 30; 7:9; 29:6 याशा; 1:3; 56:10–11

(स) स्त्री या पुरूष जाति संबंधी – उत. 4:1, 17, 25; 24;16; 38:36

(6) एक विद्वान कौशल और ज्ञान – याशा. 29:11, 12, आमोस 5:16

(7) बुद्धिमान होना – व्य. 29:4; नीति 1:2; 4:1; याशा : 28:24

(8) परमेश्वर का ज्ञान

(अ) मूसा के – व्य 34:10

(ब) इस्रायल के – व्य. 31:21, 27, 29

❖ यहोवा ही परमेश्वर है देखें विशेष विषय: ईश्वरीय नामें 1:3 में ।

❖ उसको छोड़ इौर कोई है ही नही यहोवा के समान कोई दूसरी आत्मा या देवता नहीं है (उदा. पद. 39; 6:4; 32:39) देखें सूची 6:4 में)

4:36 आकाश में से उसने तुझे अपनी वाणी सुनाई यह पद होरेब/सीनै पर्वत पर यहोवा के शारीरिक प्रकाशन में उसकी उपस्थिति की निर्देश दे रही है,निर्ग. 19 में प्रमाणित किया गया है ।

4:37 और उसने जो तेरे पितरों से प्रेम किया, यह परमेश्वर के द्वारा चुने गये अब्राहम, इसहाक और याकूब के लिए प्रमाण देता है (उत. 12–5, 7:7–8; 10:15 के पूर्वज)

❖ उसने चुना लिया पुराने नियम में चुनाव (चुनना बीडीबी 103, केबी 119, क्वेल अपूर्ण) सेवा कार्य के लिए है (उदा. कुस्त्रु, याशा; 44:24–45:7), नये नियम में उद्धार के जैसे नहीं है ।

❖ प्रत्यक्ष होकर उसने तुझे मिस्र से छुड़ाकर लाया शब्द प्रत्यक्ष रूप से (बीडीबी 815) यथा शब्द में सम्मुख होना है, जो परमेश्वर की प्रत्यक्ष उपस्थित को प्रकट करता है (5:4;उत. 32:30, निर्ग. 33:14–15, याशा. 63:9; उसके सम्मुख का दूत) इसके पीछे भी मूल अर्थ आमने–सामने है (निर्ग 33:11; व्य. 34:10 और गि. 12:8 पर उसी विचार से आमने–सामने) ।

यहोवा सचमुच परमेश्वर है जो हमारे साथ है (उदा. इम्मानुयल, याशा: 7:14, 8:8,10) पाप, घनिष्ठ संबंध को तोड़ता है और यहोवा अपना मुंह छिपा लेता है (31:17, लैव्य. 17:10; 20:3, 6; याशा; 59:2 यिर्म. 18:17 यहे. 7:22;39:23, 24,29)

4:38

NASB, NKJV **"बड़ी और सामर्थी जातियाँ"**

NRSV

TEV, REV **"बड़ी और अत्यधिक सामर्थी जातियाँ"**

NJB **"बड़ी और अत्यधिक जनपूर्ण जातियां"**

इन जातियों को इस प्रकार से भी देखा जा सकता है (4:38; 7:1; 11:23; यहोशू 23:9) जैसे :

1. आबादी में गिनती से अधिक 7:7
2. शारीरिक आकार में (दानव) बड़े, निवासी (गि. 13:22, 28, 33; व्य. 1:28)

❖ जैसा आज के दिन है यह आगामी संपादक के कथन का एक चिन्ह जान पड़ता है, लेकिन यह यरदन के पूर्वी तरफ पर, सीहोन और ओज के राज्य की प्रमाण दे सकता है ।

4:39 अद्वैतवाद की यह दूसरी सामर्थ कथन है । देखें सूची 6:4 में ।

4:40 विधियां... आज्ञाएँ देखें विशेष विषय 4:1 में ।

❖ इसलिए कि उस देश में तु बहुत दिन के लिए हो, क्रिया (बीडीबी 678, केबी 733, क्वेल क्रिया कृदन्त) की व्याख्या सदा के लिए की अर्थ में होना चाहिए । देखें विशेष नीचे में दिया गया है ।

विशेष विषय : सर्वदा (युनानी मुहावरा)

एक यूनानी मुहावरेदार वाक्यखण्ड जीवनकाल तक है । (लूका.1:33; रोमि 1:25;11:36; 16:27; गल. 1:5; I तिमु. 1:17), जो इब्रानी होलम को प्रभावित करती है । देखें रॉबर्ट बी. गर्डलेस्टोन, सिनोनीम्स ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट पृ. 319-321 । दूसरे संबंधित वाक्यखण्ड सर्वदा एक (मती. 21:19; (मर.11:14); थिस्सु 1:55; यहु. 6:58; 8:35;12:34; 13:8 14:16, II कुर. 9:9) और युगानुयुग (इफि. 3:21) है । इन सर्वदा की मुहावरों के बीच कोई अलगाव नही दिखाई देता है । शब्द जीवनकाल शायद बहुवचन हो सकता है, जो यहूदी धर्माधिकारी ग्रामर संबंधी निर्माण की आलंकारिक अभिप्राय में प्रतापमय का बहुवचन कहा गया है या यह अनंतकाल के अनेकों विचार को, यहूदी अभिप्राय के निदोषता की पीढ़ी, दृष्टता की पीढ़ी, आने वाली पीढ़ी या धर्मियों की पीढ़ी, प्रमाणित कर सकता है ।

NASB मूल ग्रंथ : 4:41-43

तब मूसा ने यरदन के पार पूर्व की ओर तीन नगर अलग किये, इसलिए कि जो कोई बिना जाने और बिना पहले से बैर रखे अपने किसी भाई को मार डाले, वह उसमें से किसी नगर में भाग जाये, और भागकर जीवित रहे, अर्थात रूबेनियों का बेसर नगर जो जंगल के समथर देश में है, और के मिलाद का रामोत और मनश्शेइयों के बाशान का गोलान ।

4:41 यरदन के पार पूर्व की ओर तीन नगर इन नगरों को शरणस्थान के नगर कहा गया है (गि. 35, व्य. 19; यहोशू 20) । वहां उन लोगों के लिए छः थी, यरदन के प्रत्येक दल के लिए तीन थी । वे सभी लेवियों के नगर थे । (यहोशू 21), जहाँ लेवीयों ने, जिनके पास निवास करने के लिए भूमि नहीं थी, निवास किया ।

वे इस्रायल के धर्मनीति प्रबंध "आंख के बदले आंख" के भाग थे । यदि एक व्यक्ति दुर्घटनापूर्वक वाचा के संगी को मार डालता है तब उसके परिवार को उसे मार डालने का कानूनी अधिकर था (उदा. खून का बदला,गि. 35:12; व्य. 19:6, 12; यहोशू 20:3,5,9) । यदि एक व्यक्ति दुर्घटनापूर्वक किसी को मार डालता है तो इन नगरों में से किसी एक नगर में भाग जाये, वहाँ वृद्ध लोगों के द्वारा मुकदमा चलाया जाता था । यदि वह पूर्वचिन्तित हत्यारा पाया नहीं गया, तो वह नगर में सुरक्षा पूर्वक रह सकता है (महायाजक की मृत्यु तक) । उसके बाद वह उसके घर सुरक्षापूर्वक दुबारा आ सकता है (एक कानूनी अभिप्राय में) ।

ध्यान दें, यहां यरदन के पार प्रतिबंध पूरा किया हुआ है । इसलिए पूर्वी किनारे की ओर प्रमाणित करता है ।

4:42 "बिना जाने" अस्तित्व अस्वीकृत शब्द (बीडीबी 395) एक इस्राइली साथी का दुर्घटनापूर्वक, बिना पूर्वचिन्तत या अविचारपूर्वक निर्णय मृत्यु को प्रमाणित करती है । हम इसे मेंसलाफर कहते है ।

प्रेरक-निमित बुराई की कमी, कुंजी तत्व है । यह अध्यात्म विद्या हुदय का बलिदान प्रबंधन बनता है । सोच समझकर किये गये पाप के लिये कोई बलिदान उपलब्ध नहीं था (निर्ग. 21:12-14; लैव्य 4:2, 22, 27; 5:15-18; 22:14; गि. 15:27, 30 व्य. 17:12-13; यहोशू 20:1-6) । यहां तक प्रायश्चित के दिन पर (लैव्य. 16) महायाजक के द्वारा जातीय बलिदान भी पूर्वचिन्तित पाप को नहीं हटा पाया (भ.स. 51:14-17) । क्या आप खुश नहीं है, मि हम नये नियम में यीशु के बलिदान के नीचे है ।

इस बात में, मैं निडोट, वोल्यु. 2 से लेकर मिलना चाहूंगा, विवाद पूर्ण विषय पर : बिना अभिप्राय के या भूल से (लैव्य 4:2) युद्ध की कुटनीति संबंधी और शंका के योग्य दोनों है (4:13, 22,27, 5:15, 18; 22:14; निर्ग. 15:22; 24-29) । इसे ध्यान में रखकर कुछ विद्वानों ने इस बात पर समापन किया है कि पाप बलि सिर्फ अनिच्छुक पाप को दूर करती है, यह वह पाप है जिसे बिना जाने कि किया गया कि यह विशिष्ट कार्य पाप था (देखें मेलग्रोम, 1991, 228-229) । किन्तु अभिप्राय के शब्द का अर्थ मुख्यत: भ्रम से है (क्रिया का अर्थ एक दोष कर

दूर जाना है) । हालांकि इसका अर्थ यह भी हो सकताहै कि दोष, बिना अभिप्राय के या संदिग्ध था(गि. 35:11, 5, 22–23; यहोशू 20:39), यह आवश्यक रूप में फर्म नहीं है (शमु. 26:21; सभो 5:6) (पृ. 94)

NASB मूल ग्रंथ : 4:44–49

फिर जो व्यवस्था मूसा ने इस्राइलियों को दी वह यह है, येही वे चेतावनियाँ और नियम है जिन्हें मूसा ने इस्राइलियों को उस समय कह सुनाया जब वे मिस्र से निकले थे, अर्थात यरदन के पार बेतपोर के सामने की तराई में, एमोरियों केराजा हेशबोनवासी सीहोन के देश में, जिस राजाको उन्होंने मिस्र से निकलने के बाद मारा । और उन्होंने उसके दशे को और बाशान के राजा ओग के देश को, अपने वश में कर लिया; यरदन के पार सूर्योदयकी ओर रहने वाले एमोरियों के राजाओं के ये देश थे । ये देश अर्नोन के नाले के छोरवाले अरोएट से लेकर सीओन, जो हर्मोन भी कहलाता है, उस पर्वत तक िसारा देश,और पिसगा की ढलान के नीचे के अराबा के ताल तक यरदन पार पूर्व की ओर का सारा अराबा है ।

4:44–45 व्यवस्था .... चेतावनियाँ... विधियाँ.... नियम देखें विशेष विषय 4:1 में ।

4:45 ये ही वे चेतावनियां है, इन्हीं शब्दों को भजनकार ने परमेश्वर की व्यवस्था या टोरह को वर्णन करने के लिए प्रयोग किया है । शब्द टोरह का अर्थ परमेश्वर की शिक्षा है । व्यवस्था कोएक बोझ की तरह मनुष्य को तोड़ने के लिए नहीं दिया गया था ।। मौखिक परंपराए जो व्यवस्था के चारों तरफ बदकर इसे एक भारी बोझ बनाती है । पुराना नियम, मानव तिरस्कार के बावजूद, परमेश्वर के स्वयं प्रकाशन, प्रेम से बढ़कर नहीं है । पुराने नियम की व्यवस्था पाप की गंभीरता, मानव जाति की दोष, और उद्धाकर्ता की जरूरत को दिखालाती है, लेकिन इसे प्रेम से दिया गया है (भ.स. 19:7–9) ।

❖ जिन्हें मूसा ने इस्राइलियों को उस समय कही जब वे मिस्र से निकले थे, मूसा दूसरी बारयहां दस आज्ञाओं से होकर जा रहा है । लेकिन जो लोग इस समय उनसे सुन रहे थे, वे बच्चे थे, पहली बार उन्हें निर्ग. 20 में सीनै पर्वत पर दिया गया था । वह उसे दुबारा कह रहा है । मूसा यहां इस्राएल की संतानों के लिए कर रहा है जो वह पिता से आशा रखता है कि वे स्वयं उनके घर में करें । प्रत्येक पीढ़ी को परमेश्वर की इच्छा उनके जीवन के लिए क्या है इस बारे में नई पीढ़ी को बताना है ।

4:46–49 ये आयते इन दो विजय के इतिहास की सारांश है । परमेश्वर ने यरदन के पार दो विजय को देने का कारण, प्रथम फल के सामान्य विचार के अनुरूप है । यहूदी धर्म में फसल की छोटी टुकड़ी का फसल होने वाली है । यरदन पार दो अमोरी राजाओं को हराना, इस्रायल से कहा मैं तुमसे प्यार करता हूं । मैने तुम्हें देश देने का वायदा किया है । तुम मेरे कहने का अर्थ जानते हो । मुझ पर विश्वास और मेरी आज्ञा मानो और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा । यह इस्राइलियों का मोआब के जंगल में भटकने की अंतिम अवधि पर इस्रायल के अनुभवों की दूसरी संक्षिप्त सांराश का कथन है ।

विवादपूर्ण प्रश्न :

यह एक अध्ययन मार्गदर्शन टीकाक्रम है जिसका अर्थ, बाईबल की व्याख्या स्वयं करने पर आप स्वयं ही जिम्मेवार है । जो पृकाश हममें, उसमें प्रत्येक को चलना है । आप, बाईबल और पवित्रत्मा, व्याख्या करने में प्रधान है । आपको सिर्फ टीकाक्रम लिखने वाले पर ही नहीं छोड़ देना है ।

ये विवादपूर्ण प्रश्न आपको इस पुस्तक के भागों के प्रधान परिणाम के बारे में सोचने में सहायता करती है । वे आपके विचार को उत्तेजक करने के अभिप्राय से है, न कि स्थिर करने से ।

1. क्या पुराने नियम का विश्वास मुख्यत: व्यवस्था को रखना या परमेश्वर के साथ संबंध बनाना था ?
2. क्यों बाइबल माता–पिता को उनके बच्चों को परमेश्वर के बारे में बताने के लिए प्रभाव डालती है ।
3. क्यों परमेश्वर उसकी शारीरिक प्रस्तुतीकरण बनाने के लिए मनुष्य को मना करता है ?
4. कैसे परमेश्वर का विशेष खजान इस्राइल था ? और क्यों ?
5. एक स्वास्थ्य स्थाई समाज की दो पूर्वाकाक्षिंत सूची बनाओ ?
6. वाचा को तोड़ने पर तीन परिणाम की सूची बनाओ ?
7. क्या हय पद्यांश अद्वैतवाद के बारे में सिखाता है ?
8. क्यों परमेश्वर इस्राइल को चुनता है ?
9. आंख के बदले आंख के प्रतिशोध का उद्देश्य क्या था ?
10. क्या मनुष्य के पाप के लिए बलिदान रूपी उपाय पर्याप्त रूप से प्रबंध किया ? क्यों या क्यों नहीं ?
11. कैसे यीशु का बलिदान प्रमुख है ?

*****

व्यवस्था विवरण 5

आधुनिक अनुवादों का वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
दश आशाओं में पुर्न निरीक्षण	सीनै पर व्यवस्था को दिया जाना	दस आशाएँ	दस आशाएँ
5:1-5	5:1-5	5:1-5	5:1-5
			5:2-5
5:6-7	5:6-7	5:6	5:6
		5:7	5:7
5:8-10	5:8-10	5:8-10	5:8-10
5:11	5:11	5:11	5:11
5:12-15	5:12-15	5:12-15	5:12-15
5:13	5:13	5:13	5:13
5:14	5:14	5:14	5:14
5:15	5:15	5:15	5:15
5:16	5:16	5:16	5:16
5:17	5:17	5:17	5:17
5:18-21	5:18	5:18-21	5:18-21
	5:21(ब)		
5:22	5:22-27	5:22	5:22
परमेश्वर की उपस्थिति से लोग भयभीत हुए		लोगों का भय	
			मूसा बिचवौई
		5:23-27	5:23-27
5:23-33		5:28-31	5:28-31
	5:28-33	5:32-33	यहोवा से प्रेम करना व्यवस्था का निष्कर्ष है (5:32-6:13)
			5:32-6:3

तृतीय चक्र अध्ययन (देखें पृ. vii प्रस्तावना भाग में)

वाक्यखण्ड तुल्यता पर लेखक के वास्तविक विचार का अनुसरण

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टीकाक्रम है जिसका अर्थ, बाइबल की व्याख्या स्वयं करने पर आप ही जिम्मेदार होगें। जो प्रकाश हममें है, प्रत्येक को उसमें चलना है। आप, बाइबल और पवित्रात्मा, व्याख्या करने में प्रधान है। आपको सिर्फ टीकाक्रम लिखने वाले ही नहीं छोड़ देना है।

अध्याय को एक स्थान में बैठकर पढ़े। विषय को पहचानिए (अध्ययन चक्र # 3, पृ. viii) आपके विषय विभाजनों को ऊपर दिये गये चार आधुनिक अनुवादों से तुलना करो। वाक्यखण्ड ईश्वर प्रेरित नहीं है, लेकिन यह लेखक के वास्तविक विचार को अनुसरण करने की कुंजी है, जो व्याख्या का हृदय है। प्रत्येक वाक्यखण्ड में एक और सिर्फ एक विषय है।

1. प्रथम वाक्यखण्ड
2. द्वितीय वाक्यखण्ड
3. तृतीय वाक्यखण्ड
4. इत्यादि वाक्यखण्ड

पृष्ठभूमि अध्ययन -

अ. रोलेन्ड डी बॉक्स, ऐन्सियन्ट इस्रायल, वोल.1, पृ. 143-144, पुराने नियम के व्यवस्था पर धर्मसंहिता की सूची बनाता है :

1.	यीशु मसीह के दस आदेश	-	निर्ग. 20:2-17, व्य. 5:6:21
2.	वाचा की धर्मसंहिता	-	निर्ग. 20:22-23-33
3.	व्यवस्था विवरण	-	व्य. 12-26
4.	पवित्रता की व्यवस्था	-	लैव्य. 17-26
5.	याजकीय धर्मसंहिता	-	लैव्य. 1-7, 11-16

इन सभी को टोरह से निरूपण किया गया है। वे कार्यों और गुणों में विशिष्ट अद्‌भुत प्राचीन रीति है।

ब. इस्राइली व्यवस्थाओं के प्रकार

(1) धर्माधर्म-विचारक- यदि.... तब पुस्तक के फर्मा से व्यवस्था का चरित्र-चित्रण किया गया है। यहाँ कार्यो का परिणाम है। ये समाज के लिए सामान्यत: मार्गदर्शक है।

(2) व्यवस्था निर्दिष्ट जैसे सामान्य मनाही साधारण (साधारण तौर से द्वितीय पुरूष बहुवचन कथन - तुम नहीं करोगे...) ये सामान्य तौर से आत्मिक जीवन के लिए मार्गदर्शन है।

स. सांस्कृतिक प्रभाव

1. विषय सूची में – प्रारंभिक व्यवस्था धर्मसंहिता

   अ. लिपिट – इश्तार

   ब. हम्मुराबी की धर्मसंहिता

2. फार्म में – हित्ती प्रदेशों (अधिपति), जो अनेक आदर्श दल में प्रकट होता है, किन्तु व्यवस्था विवरण और यहोश्र 24, 2000 बी.सी. अवधि के आदर्श, जो ऐतिहासिक प्रवृत्ति को दिखाता है उसका अनुसरण करते है (जॉन एच. वाल्टन, एन्सियन्ट इस्रलाइट लिटरेचर इन इट्स कल्चरण कॉन्टेक्स्ट, पृ.95–107, के.ए. किचन, द बारबल इन इट्स वर्ल्ड, पृ.80–95, देखें पुस्तक की प्रस्तावना 7.

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB मूल ग्रन्थ : 5:1–5

मूसा ने सारे इस्राइलियों को बुलवकार कहा, हे इस्राइलियों, जो जो विधि और नियम में आज तुम्हें सुनाता हूँ वे सुनो, इसलिए कि उन्हें सीखकर मानने में चौकसी करो । हमारे परमेश्वर यहोवा ने होरेब पर हम से वाचा बांधी । इस वाचा को यहोवा ने हमारे पितरों से नहीं, हम से ही बाँधा, जो यहाँ आज के दिन जीतिव है यहोवा ने उस पर्वत पर आग के बीच में से तुम लोगों से आमने सामने बातें की, उस आग के डर के मारे तुम पर्वत पर न चढ़े, इसलिए मैं यहोवा के और तुम्हारे बीच उसका वचन तुम्हें बताने को खड़ा रहा । तब उसने कहा,

5.1 सारे इस्राइलियों व्यवस्था प्रत्येक के लिए थी (एक सर्वोत्तम समूह के लिए नहीं), लेकिन मूसा संभवत: वृद्ध लोगों से कहा और उन्होने उसके शब्दों को सभी लोगों को बताया (उदा. जातियों, संप्रदाय) इस्रायल के लिए देखें विशेष विषय 1:1 में ।

❖ ''सुनों'' देखें सूची 4:1 में

❖ ''विधियाँ'' और नियम देखें सूची 4:1 में

❖ ''सीखकर'' मानने में चौकसी करो इस वाक्यखण्ड में तीन क्रिया रूप है :

1. उन्हें सीखो (बीडीबी 540, केबी 531) क्वेल पूर्ण, 4:10, 5:1,14:23, 17:19, 18:9, 31:12,13

2. उन्हें मानो बीडीबी1036, केबी 1581, क्वेल पूर्ण, 4:2,6,9,40,5:10,12,29,32, 6:2,3,17 (दोबारा), 25,7:8,9 (दोबारा), 11,12 (दोबारा), इत्यादि ।

3. चौकसपूर्वक – शब्दानुसार ''करना'' बीडीबी 793, केबी889 (क्वेल अनिश्चित निर्माण)

ये तीन क्रियारूप शेमा के अर्थ को संक्षिप्त करते है (बीडीबी 1033, केबी 1570, उदा. 4:1, 5:1, 23,24,25,26,27 (दोबारा), 28(दोबारा), 6:3,4,9:1,20:3,27:9), जिसका अर्थ ऐसा सुनो कि करो ।

5:2 हमारा परमेश्वर यहोवा देखें विशेष विषय : ईश्वरीय नाम 1:3 में ।

बाँधी शब्दानुसार यह मर्मभेदी कार्य है (बीडीबी 503, केबी500, क्वेल पूर्ण (दोहरा)। यह पुराने नियम की वाचा के दृढ़िकरण की एक रीति है, (उदा. वाचा को काटना, उत, 15:18, 21:27, 21:27, 32, 31:44, निर्ग.34:27, व्य. 5:3, 29:12, 31:16) । अब्राहम ने एक बकरी, कलोर, और दूसरे जानवरों को लेकर, उन्हें दो टुकड़े कर दिया, और टुकड़ों को आमने सामने रखा, और उन टुकड़ो के बीच से चलना जैसे एक वाचा का चिन्ह था । संभवत: जो वाचा को तोड़ते है उन पर ताप आने को संकेत करता है (उत: 15:9-18, यिर्म, 34:18) या यहाँ तक वाचा को एक भोजन वाचा के प्रतिज्ञापत्र पर लगाई गई श्राप है ।

❖ हमारे साथ वाचा, देखें सूची 4:13 में ।

❖ होरेब पर सीने पर्वत के लिए होरेब इब्रानी शब्द है । देखें विशेष विषय व्य. 1:2 में ।

❖ 5:3. हमारे पितरों कुछ विद्धान इस वाक्यखण्ड को पूर्वजों, अब्राहम, इसकाह और याकूब को प्रकटीकरण होते देखते है, किन्तु दूसरे विद्धान देखते है कि यह, माता-पिता, बुरी पीढ़ी जो जंगल में मर चुके थे, उनको प्रकट करती है (गि.26:63-65) अगल वाक्यखण्ड दूसरी राय को निश्चित करता जान पड़ता है ।

❖ हम ही बांधी, जो यहाँ आज के दिन जीवित हैं यह बुरी पीढ़ी के बाल-बच्चों (20 वर्ष की उम्र के नीचे) का प्रमाण देता है । स्पष्ट रूप से यह दिखाता है, कि यहोवा के वचन इस पीढ़ी के लिए और प्रत्येक पीढ़ी, आज के दिन के लिए भी अनुरूप है ।

❖ आमने-सामने यह निर्ग. 19 में होरेब/सीर्ने पर्वत पर व्यक्तिगत सामना (शब्दानुसार नहीं) की प्रमाण देता है । यह एक बार-बार होने वाला आवर्तक मुहावरा है (उत,32:30, निर्ग.33:11, व्य. 5:4,34:10, व्या.6:22, यहे. 20:35) ।

❖ आग के बीच में से यह निर्ग. 19 से दुहराया गया वाक्यखण्ड है (4:12, 15,33, 5:4, 22,24,26,9:10,10:4) ।

5:5 इसलिए मैं यहोवा के और तुम्हारे बीच में खड़ा रहा... क्योंकि तुम डरे हुए थे लोग, यहोवा से भयभीत हथे इसलिए यहोवा के और इस्राइलियों के बीच मूसा मध्यस्थ बना था (निर्ग. 19:16) ।

NASB मूल ग्रन्थ : 5:7

7 "मुझे छोड़ दूसरे को ईश्वर करके न मानना" ।

5:7 मुझे छोड़, दूसरे को ईश्वर करके न मानना । सम्मुख (बीडीबी:7) शब्दानुसार "मेरे सम्मुख"

जो मेरे श्रेणी में कोई दूसरा नहीं । एक मुहावरे में है (निर्ग. 20:3, 23) । यहोवा अकेला, अनोखा, अनंत-विद्यमान है । यह अदैववाद की निश्चित वाक्य है (निर्ग, 8:10, 9:14, व्य. 4:35, 39, 33:26, 1 शमु. 2:2, 2 शमु. 7:22, 22:32, याशा, 46:9) । यह प्रथम निश्चित घोषणा और आज्ञा, इस्रायल विश्वास, जो प्राचीन पूर्वी में पूजा करने वालों में एक अनोखापन है । संक्षिप्त लेख, 6:4 में ।

NASB मूल ग्रन्थ : 5:8-10

8 तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना जो आकाश, में या पृथ्वी पर, मा पृथ्वी के जल में है, 9 तू उनको दण्डवत न करना और न उनकी उपासना करना, क्योंकि मै तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेवाला ईश्वर हूँ, और जो मुझसे बैर रखते है, उनके बेटों, पोतों और परपोतों को पितरों का दण्ड दिया करता हूँ, 10 और जो मुझसे प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते है उन हजारों पर करूणा किया करता हूँ ।

5:8 मूर्ति शब्दानुसार यह नकाशी की हुई मूर्ति है (बीडीबी 820) । यह प्रमाणित कर सकता है : (1) यहोवा की कोई भी शारीरिक प्रतिरूप (4:12, 15-19, 23, 25) । निर्ग 32 की सोने की बछड़ा, यहोवा का एक प्रतिरूप था, या (2) विदेशी मूर्तियाँ (लैव्य. 19:4, 26:1)

5:9 जलन रखनेवाला देखें संक्षिप्त लेख 4:24 में ।

तू उनको दण्डवत न करना और न उनकी उपासना करना ये दो क्रियारूप अस्तित्व अस्वीकृत है :

1. दण्डवत - बीडीबी 1005, केबी 295 हिशतापेल अपूर्ण या हिथपेल अपूर्ण, जिसका अर्थ घुटने टेकना, पाँव पड़ना है (4:19, 8:19, 11:16, निर्ग. 20:5 23:24)
2. उपासना करना - बीडीबी 712, केबी 773, होफाल अपूर्ण, जिसका अर्थ साधना एक दास के समान सेवा करना या आराधना का प्रयोग करना है (13:2, निर्ग 20:5, 23:24)

पाप में गिरे हुए मानव ह्दय के स्वभाव के मूढ़ विश्वास और भक्तिमान को यहोवा जानता था और इसलिए स्वयं के प्रकाशन और उसके उद्देश्य को पूर्वी निकट मूर्तिपूजा के विनाशकारी प्रभाव से बचाने की कोशिश किया ।

क्रिया भेंट करना (बीडीबी 823, केबी 955, क्वेल क्रिया कृदन्त) इसके अनेक अभिप्रया है :

1. आशीष देने के लिए भेंट करना – उत. 21:1, 50:24, 25, निर्ग. 13:19, रूत, 1:6, भ.स. 65:9, 106:4, यिर्म. 27:2, 28:10,32:5.
2. दण्ड देने के लिए भेंट करना – निर्ग. 20:5, 34:7, यिर्म, 11:22, 13:21, 21:14, 24:25, आमोस, 3:2,14, होशे 84, 2:15, 4:14, 12:2.

❖ पितरों के अधर्म शब्द अधर्म (बीडीबी 730) संभवत: मिलता–जुलता मूल ऐंठनेसे संबंधित हो सकता है (उदा. 2 शमु. 19:20, 24:17, 1 राजा 8:47, भ.स. 106:6) ।

इस्रायल को उसकी अनाज्ञाकारिता के कारण दण्ड दिया गया है (उदा. निर्ग. 20:5, 34:7, लैव्य, 18:25, गिन. 14:18, व्य. 19:15, यिर्म. 25:12,36:31, आमोस 3:2)

❖ जो मुझसे बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों और परपोतों को ध्यान दें, दण्ड एक स्वेच्छाकारी या अविवेकी नहीं है, लेकिन जो यहोवा से बैर रखते है, उनको दिखता है । बीडीबी 971, केबी 1338, (क्वेल कृ्या कृदन्त) । यह सूचित करता है कि परिवारों में से अविश्वास फैलता है । माता–पिता का प्रभाव, विश्वास की उन्नति के लिए महत्वपूर्ण है (देखें संक्षिप्त लेख 4:10 में) । प्राचीन निकट पूर्वी के परिवारों की अनेको पीढ़ियाँ एक साथ रहती थी । एक पीढ़ी का अविश्वास और या अनाज्ञाकारिता पूरे परिवार पर प्रभाव डाल । यह इब्रानी अभिप्राय के शरीरत्व (एक व्यक्ति सभी को – आदम, अकान, दाऊद, यीशु, पर प्रभाव डालता है ।)

शरीरत्व के इस अभिप्राय को अकेले व्यक्ति के विश्वास की छवि से अवश्य ही जोड़ा जाना चाहिए (24:16,2 राजा, 14:6, यिर्म. 31:29–30, यहे. 18)

5:10 दर्शाना – यह क्रिया (बीडीबी 793, केबी 889) एक क्वेल क्रिया कृदन्त है, जो आगे के ओर के क्रिया से पद 9 में है उससे मिलती है ।

❖ करूणा – देखें नीचे दिये गये विशेष विषय में ।

विशेष विषय : करूणा (हेसेड)

इस शब्द पर एक चौड़ी मिमेन्टीक क्षेत्र है । बीडीबी इस प्रकार से इसका गुण दोष बतलाता है (338–339) ।

(अ) मानव जाति के मेल में प्रयोग हुआ

1. साथी पुरूषों पर सहानुभूति (1 शमु.20:14; II इति 24:22)

2. गरीब और भिखारियों की ओर सहानुभूति (मीका. 6:8)

3. स्नेह (यिर्म 2:2;होशे; 6:4)

4. दृष्टिगोचर (याशा; 40:6)

(ब) परमेश्वर के मेल में प्रयोग हुआ

1. राजभक्ति वाचा और प्रेम

अ. दुश्मनों और कठिनाईयों से छुटकारे में (यिर्म. 31:3; एज्रा 27:28 9:9)

ब. जीवन की सुरक्षा मृत्यु से (अय्यु. 10:12; भ.स. 86:13)

स. आत्मिक जीवन की उददीपक में (भ.स. 119:41, 76, 88, 124, 149, 150)

द. पाप से छुटकारे में (भ.स. 25:7; 51:3)

ध. वाचाओं को रखने में (II इति 6:14; नहे. 1:15; 9:32)

2. एक अदभुत गुणों का वर्णन करता है (निर्ग. 34:6, ; मीका 7:20)

3. परमेश्वर की सहानुभूति

अ. अत्यधिक (उदा. नहे 9:17; भ.स. 103:8)

ब. बहुतों में (उदा. निर्ग. 20:6; व्य. 5:10; 7:9)

4. सहानुभूति के कार्य (उदा. II इति. 6:42; भ.स. 89:2; याशा; 55:3, 63:7; विला. 3:22)

❖ उन हजारों पर ये दो आयतें, मुझे, यहोवा के स्वभाव को देखने में सहायता करती है । उसका मूल स्वभाव, संयमी प्रेम है किन्तु वह, उन्हे जो स्वेच्छा से उसको तिरस्कृत करते है उन्हें दण्ड देता है (विशेषकर उन्हें जिनके पास उसके प्रकाशन का थोड़ा भी ज्ञान है, उदा., वाचा के योग) इन दो पदों की, गिनती, मेरे लिए विषय बनाती है ।

1. पोतों और परपोतों को दण्ड दिया करता हूँ

2. हजारों पीढ़ी तक अपनी वाला के प्रेम को दर्शाता है (7:9)

जो मुझसे प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं यह व्यवस्था विवरण की एक चरित्र है जो यहोवा के वाचा की आज्ञा पालन को यहोवा के प्रेम से जोड़ने के लिए है (6:5, 7:9, 10:12, 11:1, 1,13,22,13:3, 19:9,30:6,16,20) । यहोवा का प्रेम अस्थिर नहीं है,

किन्तु स्पष्ट रूप से सीमा स्थिर है । वह पक्षपात नहीं करता है । उसके प्रारंभिक वाला की प्रेम को, वाचा के आज्ञापालन के द्वारा स्वीकृत किया गया है ।

रखना (बीडीबी 1036, केबी 1581) इस अध्याय में (5:1, 10,12,29,32 और व्यवस्थाविवरण में अनेक बार) मुख्य विचार है ।

पुराना नियम यहोवा के अनुग्रह और मानवीय आज्ञापालन/कार्य पर आधारित था । मनुष्यों की अयोग्यता की ओर निर्दिष्ट रूप से उत्तर देने में (गल.3), यहोवा दिखाना चाहता था । नया नियम (यिर्म. 31-34, यहे. 36:22-38), परमेश्वर के दयालु दीक्षा संस्कार और मसीह में छुटकारे पर आधारित है । विश्वासियों को अब तक धर्मी होने के लिए निर्देश दिया जाता है (इफि. 1:14, 2:10), लेकिन वे विश्वास के अनुग्रह के द्वारा स्वीकृत और क्षमा किये गये हैं (इफि. 2:8-9) । अब वे, पारिवारिक प्रेम और धन्यवाद के द्विभ्रष्ट प्रयोग करना/आज्ञा माने । (जो मुझसे प्रेम रखते हैं ।

लक्ष्य समान है, धर्मी (मसीह समान) लोग, किन्तु यंत्र-रचना, मानव कार्य से मसीह के कार्य में बदल गई है (मर. 10:45, 2कुरि. 5:21) ।

NASB मूल ग्रन्थ : 5:11

तू अपने परमेश्वर यहोवा का नाम व्यर्थ न लेना, क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उनको निर्दोष न ठहरायेगा ।

5:11 "तू न लेना" इस क्रिया (बीडीबी 669, केबी 724, क्वेल अपूर्ण) का अर्थ उठाना या ले जाना या लेना है । यह बोलने के कार्य की ओर संकेत करता है । इस्राइली लोगों को आराधना में नाम को बोलने के लिए बुलाया गया था (6:13, 10:20), लेकिन दूसरे ईश्वरों के नाम को नहीं ।

यह विशिष्ट उच्चारण उत. 4:25-26 में प्रारंभ होता है, जहाँ शेत के समय से लोग यहोवा के नाम से प्रार्थना करने लगे, अब्राहम ने प्रार्थना किया (उत. 12:8, 21:33), इसहाक ने प्रार्थना किया (उत. 26:25) । इसी अभिप्राय को योएल, 2:28-32 के द्वारा एक अंतिम समय संबंधी निर्धारण में रखा गया है । यह पेन्तिकुस्त के दिन पर प्रेरित पतरस के द्वारा विस्तृत और परिपूर्ण होने के लिए दृढ़तापूर्वक स्वीकृत किया गया (प्रे.का.2:14-21), प्रेरित पौलूस इस वाक्यखण्ड का प्रयोग रोमि. 10:9-13 में विश्व-संबंधी उद्धार के लिए प्रस्ताव करता है ।

नाम, यहोवा के चरित्र और व्यक्तित्व का स्थान पूर्ण करती है । इस्राइलियों को इस संसार के लिए एक याजकों का राज्य होना था (निर्ग, 19:5-6) किन्तु दु:खान्त यह है कि

उनके वाचा की आज्ञाकारिता, जो यहोवा का कारण हुई, उनको दण्ड देने के लिए (व्य,27-29), मतलब है कि संसार के लिए संदेश का रूप इसके द्वारा बिगड़ा हुआ था :

1. इस्रायल पर आशीष के बजाय परमेश्वर का न्याय
2. परमेश्वर के लोग मूर्तिपूजा की ओर मुड़ना
3. परमेश्वर के लोग, गर्व, निषेधता और आत्म-धार्मिकता को पुष्ट कर रहे हैं ।

❖ व्यर्थ में इस शब्द (बीडीबी 996) का अर्थ खाली अस्तित्व-हीनता, व्यर्थ है, (निर्ग. 20:7, भ.स. 139:20) । इसी शब्द का प्रयोग 5:20 में एक झूठी गवाह के लिए हुआ है । संभव है कि यह आज्ञा, यहोवा के नाम में शपथ लेने का प्रकट नहीं करता है (6:13, 10:20), लेकिन उसके नाम को झूठे कानूनी गवाही में प्रयोग करने से है । यहोवा के उद्देश्य और चरित्र के लिए इस्रायल एक झूठा गवाह बना, क्योंकि उनकी बार-बार होनेवाली आवर्तक अनाज्ञाकारिता के कारण से, जो यहोवा के न्याय में सिद्ध हुआ (व्य. 27-29) देखें विशेष विषय 4:46 में ।

❖ क्योंकि यहोवा उनको निर्दोष न ठहरायेगा क्रिया (बीडीबी 667, केबी 720, पीयल अपूर्ण, जिसका अर्थ निर्दोषी ठहराना है) कुछ चीज को शुद्ध करने के लिए एक लक्षण है, उसके द्वारा निर्दोष या अपराध से मुक्त होना है (निर्ग.20:7, 34:7, गि. 14:18, यिर्म, 30:11,46:28, योयल 3:21, नेह. 1:3) । मानव पाप के लिए परिणाम है । यहोवा की मिथ्या वर्णन करना एक अत्यधिक गंभीर पाप है विशेषकर जो उसे जानते हैं (लूका. 12:48, इब्रा. 10:26-31) ।

NASB मूल ग्रन्थ : 5:12-15

12 तू विश्रामदिन को मानकर पवित्र रखना, जैसे तुझे तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी । 13 छः दिन तो परिश्रम करके अपना सारा कामकाज करना । परन्तु सातवें दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए विश्रामदिन है । उसमें न तो किसी भाँति का कामकाज करना, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरा बैल, न तेरा गदहा, न तेरा कोई पशु, न कोई परदेशी भी जो तेरे फाटकों के भीतर हो, जिससे तेरा दास और तेरी दासी भी तेरे समान विश्राम करें । 15 और इस बात को स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू आप दास था, और वहाँ से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया : इस कारण तेरा परमेश्वर यहोवा विश्रामदिन मानने की आज्ञा देता है ।

5:12 ''मानकर'' इस क्रिया (बीडीबी 1036, केबी 1581, क्वेल निश्चित अपूर्ण) का अर्थ रखना और इसका प्रयोग कई कार व्यवस्थाविवरण में हुआ है ।

❖ “पवित्र” नीचे दिये गये विशेष विषय देखें ।

विशेष विषय : पवित्र

1 पुराने नियम में प्रयोग

अ. इस शब्द (कादोश) का शब्दसाधन अनिश्चत है, संभवत: कनानी है । यह संभव है कि मूल (उदा, केडी) भाग का अर्थ खण्ड करना है । यह व्याख्यात परिभाषा का स्त्रोत है परमेश्वर की आवश्यकता के लिए अलग (कनानी संस्कृति से, व्य. 7:6:14:2,21,26:19) होना है ।

ब. यह धार्मिक विधि, स्थानों, समयों, और व्यक्तियों से संबंधित है। इसका प्रयोग उत्पत्ति में नहीं हुआ है, लेकिन निर्ग., लैव्य, और गिनती, में सामान्य हुआ है ।

स. भविष्यवाणी के शास्त्र–समूह (विशेषकर, याशा. और होशे) में निजी तत्व पहले से प्रस्तुत करता है, किन्तु शब्दों आगे आने के लिए जोर नहीं दिया गया है ।

यह परमेश्वर की स्वत्व को सूचित करती पद्धति बनती है (याशा: 6:3) । परमेश्वर पवित्र है । उसका नाम वर्णन कर रहा है कि उसका चरित्र पवित्र है उसके लोग, जिनको उसके चरित्र को जरूरतमंद संसार को प्रकट करना है, वे पवित्र है (यदि वे विश्वास से वाचा की आज्ञा माने) ।

द. वाचा, न्यायी, और प्रधान चरित्र की अध्यात्मविद्या संबंधी विषयों से परमेश्वर की दया और प्रेम पृथक करने योग्य नहीं है । एक अपवित्र, पाप में गिरा हुआ, विद्रोही मानवजाति के लिए इस विषय में परमेश्वर तनाव में है । रॉबर्ट बी. गर्डलेस्टोन, पुराने नियम की पर्यायवाची, पृ. 112–113 में, परमेश्वर जैसे दयालु और परमेश्वर जैसे पवित्र के संबंध के बीच एक बहुत ही रूचिपूर्ण साहित्य लेख है ।

2 नया नियम

अ. नये नियम को लिखने वाले इब्रानी विचार करने वाले है (लूका को छोड़कर), किन्तु कोइने युनानी (उदा. युनानी भाषा में बाइबल के उत्तरार्ध का उल्था) के द्वारा प्रभावित हुए ।

यह पुराने नियम की युनानी अनुवाद है जो उनकी शब्दकोश को नियंत्रित रखती है, न कि उच्च–कोटी के साहित्य की युनानी साहित्य, विचार, या धर्म को नियंत्रित रखती है ।

ब. यीशु मसीह पवित्र है क्योंकि वह परमेश्वर की ओर से आया, और परमेश्वर के समान है और वही परमेश्वर है (लूका:1:35, 4:34 प्रे.का. 3:14, 4:27,30) । वह पवित्र और धर्मी है (प्रो.का. 3:14, 22:14) यीशु पवित्र है क्योंकि वह पापरहित है (यहु. 8:46, 2 कुरि. 5:21, इब्रा.4: 15,7:26, 1 पत. 1:19, 2:22, 1 यहु. 3:5) ।

स. क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, इसलिए उसके बच्चों की भी पवित्र होना है, (लैव्य. 11:44-45, 19:2, 20:7,26, मत्ती 5:48, 1 पत., 1:16) । क्योंकि यीशु पवित्र है, इसलिए उसका अनुसरण करने वाले को भी पवित्र होना है (रोमि. 8:28-29, 2 कुरि. 3:18, गल. 4:19, इफि. 1:4, 1 थिस्सु. 3:13, 4:3, 1 पत. 1:15) । मसीह की समानता के उद्देश्य पूर्ण करने के लिए, मसीही बचाये गये है ।

❖ विश्रामदिन : नीचे दिये गये विशेष विषय देखें ।

इस विषय का (बीडीबी 992) अर्थ विश्राम या कार्यो की ठहराव है । आराधना के दिन का प्रयोग उत. 2:2-3 से प्रारंभ होती है, जहाँ यहोवा उसके विश्राम को एक विधि की तरह जानवरों (निर्ग. 23:12) और मानवजाति (मनुष्यों को एक नियमित काम, विश्राम, और आराधना की नियमावली की जरूरत) के लिए ठहराया । इस्रायल के द्वारा इस दिन का विशिष्ठ प्रयोग, निर्ग. 16:25-26, में मन्ना को इकट्ठे करने से हुआ था । तब यह दस आज्ञाओं का भाग बनता है (निर्ग. 20:8-11, व्य. 5:12-15) । यही एक उदाहरण है जहाँ व्य. 5 की दस आज्ञाओं से, निर्ग. 20 की दस आज्ञाएँ, अल्पमात्र, भिन्न है । व्यवस्था विवरण, इस्रायल को युनानमें बसने, कृषिधर्म जीवन के लिए तैयार कर रही है ।

5:13 परिश्रम करना पद 13-14 के तुल्य व्यवस्था लिखा जाना, मौखिक सांप्रदायिक की वृद्धि हेतु थी, (मती. 5:21-48) क्योंकि एक प्रश्न परिश्रम क्या है ? के कारण महत्वपूर्ण हुई । यहुदी गुरूओं ने परिभाषा का उपाय किया, ताकि व्यवस्था को विश्वासयोग्य यहुदी न तोड़ने पाएँ । लिखी गई व्यवस्था की संदेह, मौखिक कानूनी व्यवस्था की वृद्धि होने का कारण हुई है ।

5:14 सांतवा दिन विश्राम का दिन है सब्त,विश्राम का एक दिन था (बीडीबी 992) । सब्त के लिये यहां दो मूल (1) निर्ग 20:11 में उत; 1-2 को उज्ञवल करताहै जबकि व्यवस्थाविवरण, मिस्र की गुलामी को उज्ञवल करता है । (5:15)

यह यहोवा के लोगों के लिए वाचा का चिन्ह (खतने के समान) हुआ (निर्ग; 31:13, 17; यहे. 20:12, 20) । आज्ञापालन आदेश था (याशा 56:2; 58:13; यिर्म. 17:21-22)

सूर्य और चन्द्रमा की तरह (उत. 1:14) मानव जाति क्रियाओं के लिए, वब्त, समयों की भाग को प्रदान किया हुआ है (सभो.3)

सप्ताह का सातवां दिन विशेष दिनों और वर्षों के लिए चिन्ह ठहरा (निर्ग; 23 और लैव्य 23) विशेषकर, सब्त, शुक्रवार संध्यां से प्रारंभ होकर शनिवार शाम तक रहती है, क्योंकि उत.1 की निश्चित विचार पर इस्राइलियों ने दिन को चिन्हित किया (संध्या और सुबह, उत. 1:5, 8, 13, 19, 23, 31) ।

5:15 तू स्मरण रखना देखें संक्षिप्त लेख 7:18 में ।

❖ कि मिस्र देश में तू आप दास था मूसा इस गुलामी के अनुभव का प्रयोग, उनके समाज के सामान्य अधिकार के लोगों की ओर इस्राइलियों को प्रेरित करने के लिए करता है ?

1. दासों (और जानवरों) को विश्राम दिन की अनुमति देना 5:12-15, 16:12
2. स्वतंत्र छोड़ना और इब्रानी गुलामों को अधिकार देना 5:12-15
3. परदेशी और अनापों के साथ खरा और भला होना - 24:17-18
4. खेत के पुले को छोड़ना और अनाजों की दूसरी बार प्रभाव को गरीबों के लिए छोड़ देना - 24:19-22

इस वाक्यखण्ड को अनेकों बार इस्राइल को चेतावनी देने के लिए किया गया है कि वे यहोवा के अनुग्रह से दिये गये भूमि को दान में अच्छे से कार्य करे (6:10-15) और वाचा की आज्ञा माने (8:1-10) ताकि गंभीर परिणाम न आने पाये (8:11-20) ।

NASB मूल ग्रंथ 5:16

अपने पिता और अपनी माता का आदर करनार, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है, जिससे जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तु बहुत दिन तक रहने पाए, और तेरा भला हो ।

5:16 आदर करना इस क्रिया (बीडीबी 457, केबी 455, पीपल आज्ञात्मक) का वास्तविक अर्थ भारी होना और एक आलंकारिक अर्थ को उचित भार देना या आदर को पुष्ट करने से है । यह आदर समझौते पर आधारित नहीं है लेकिन अधिकार और इज्जत करने पर है । इस नमूने का अभिप्राय परमेश्वर और मानव जाति के बीच संबंध से है । धार्मिक जीवन में अधिकार की ओर एक आज्ञाकारी गुण महत्वपूण है ।

यीशु मसीह ने अनेकों बार इन आज्ञाओं कोऔर साथ ही साथ व्यवस्थाविवरण के दूसरे भागों से भी चर्चा किया :

1. 5:16 - मती 15:4; मर. 17:10
2. 5:16-20 - मती 19:18-19अ; मर. 10:19;लूका 18:20

3. 5:17 – मती 5:21

4. 6:4–5 – मती 22:37; मर. 12:29, 30; लूका 10:27

5. 6:13 – मती 4:10; लूका 4:8

6. 6:16 – मती 4:7; लूका 4:12

7. 19:5 – मती 18:16

8. 19:15– मती 5:38

प्राय: पौलूस ने भी व्यवस्थाविवरण से दुहराता है –

1. 5:16 – इफि; 6:2–3
2. 5:21 – रोमि; 7:7
3. 19:15– II कुरि.; 13:1
4. 21:23– गल; 3:13
5. 25:4 – II कुर. 9:9; I तिमु. 5:18
6. 27:26 – गल. 3:10
7. 30:12–14 – रोमि; 10:6–8
8. 32:21 –रोमि; 11:8
9. 32:35 – रोमि. 12:19–20
10. 32:43 – रोमि; 15:10

(रिचार्ड एन. लोगनेंकर, बीबलीकुल एक्सेजीसीस इन दी अपोस्टलीक पीरियड, पृ.42–43; 92–95) नये नियम के लेखकों ने पुराने नियम को विस्तृत रूप से स्पष्ट किया है ; लेकिन कानूनी रूप से नहीं किया है ।

❖ और अपनी माता यह मातृभाव के प्रति एक ऊंची सम्मान को दिखाता है हालांकि कानूनी रूप से पूर्व देशीय समाज को औरतों को चल संपत्ति या सम्पत्ति की श्रेणी पर रखा गया था। इब्रानी माता का आदरमान उसके स्वयं के घर में था । माता–पिता का अधिकार दृढ़ता से आदरमान था (निर्ग. 21:17; व्य. 27:16) दोनों को आदर मान और उनका आज्ञापालन करना है (नीति 1:8; 6:20; 15:20; 19:26: 20:20; 23:22–25; 30:11, 17) ।

❖ तु बहुत दिन तक जीवित रहे पद 33; 4:40;11:9 दिखाता है कि यह समाज के लिए एक वायदा है, न कि मुख्य रूप से एक व्यक्ति के लिए है । यदि एक समाज का आदरमान घर में और पारिवारिक जीवन के लिए आदरभाव से चरित्र चित्रण किया गया है तो वह समाज स्थिर और अंतिम समय तक रहेगी देखें संक्षिप्त लेख 4:40 में ।

5:17-21 यही व्यवस्थाएं है जो कि सभी पूर्वी समाजों में सामान्य थी । भौतिक शास्त्र संबंधी खोजबीन से हम बेबीलोन व्यवस्था की लिपित इशतार और हम्मुराबी की गुप्त भाषाओं को जानते है जो सौ वर्षों से मूसा की व्यवस्था पर पहले की तारीख को डालता है । हम्मुराबी की गुप्त भाषा, दस आज्ञा से मिलती जुलती है । यह समानता दिखाती है (1) वहां कुछ बातें है जो प्रत्येक स्थिति और समाज में प्राकृतिक रूपसे गत है और (2) यह कि मूसा उसके स्वयं के दिन और सभ्यता पर बद्या था, साथ ही साथ परमेश्वर का भविष्यवक्ता था ।

NASB **मूल ग्रंथ 5:17**
17 तू हत्या न करना ।

5:17 हत्या करना इब्रानी क्रिया हत्या करना (बीडीबी 953, केबी 1283, क्वेल अपूर्ण) का वास्तविक अर्थ प्रबल रूप से नष्ट करना है । जीवन, परमेश्वर का है । इसका मतलब किसी प्रकार से मारने से नहीं है क्योंकि इस्रायल के पास प्रधान दंड (गिनती 35:30) और पवित्र युद्ध (20;13, 16-17 दोनों था । आज्ञा कह रहा है तू स्वयं के कारण या क्रोध के कारण हत्या मत करना या पूर्व विचार गैर कानूनी हत्या कत करों ।

मेरे विचार से इस पद्यांश कोसैनिक कार्यों या मृत्युदंड में बाईबल संबंधी चेतावनी का प्रयोग नहीं कर सकते है ।

विशेष विषय : शांति और युद्ध

(I) प्रस्तावना

(अ) विश्वास और अभ्यास के लिए हमारी स्रोत बाइबल में शांति के विषय पर एक निश्चित पद्यांश नहीं है । वास्तव में, यह इसके प्रस्तुतीकरण ने, यह लेक विरूद्ध है । पुराना नियम, शांति तक पहुंचने के लिए संकेत दे सकता है, जो सैनिक संबंध से है ।

(ब) बाईबल संबंधी विश्वास, साथ ही साथ प्राचीनऔर वर्तमान की विश्व धर्म एक उन्नतपूर्ण शांति वर्ष के लिए दृष्टि और अब तक आशा लगाए हुआ है, जो युद्ध के बिना है ।

(1) याशा;2:2-4; 11:6-9; 32:15-18; 15:3; होशे; 2:18 मीका 4:3

(2) बाइबल संबंधी विश्वास मसीह की व्यक्तिगत कार्यालय की भविष्यवाणी करता है याशा : 9:6, 7

(स) किन्तु, युद्ध के संसार में किस प्रकार हम जीवित रहते है ? यहां मसीही प्रत्युत्तर की तीन आधार है, जिसने प्रेरितों की मृत्यु और मध्य युगों के बीच कालक्रम से पुष्ट किया है ।

(1) यह सिद्धांत की संसार में बिना युद्ध के झगड़ा तय हो सकता है – हालांकि प्राचीन समय में अनूठा रोमि सैनिक के लिए यह प्राचीन कलिसिया का प्रत्युत्तर था।

(2) **उचित युद्ध** – कांस्सटेन्टाइन (313 एडी) के रूपांतरण के बाद असभ्य आक्रमण के जवाब में, कलिसिया ने मसीह राज्य के सैनिक सहायता को प्रमाण सहित सिद्ध करना प्रारंभ किया ।

(3) **धर्मयुद्ध** – यह पुराने नियम के पवित्र युद्ध धारणा के समान है । पवित्र भूमि में मुस्लिम बढ़ती के प्रत्युत्तर में मध्य युग में और प्राचीन मसीही प्रदेश जैसे उत्तरी अफ्रिका, एशिया माइनर, और पूर्वी रोमी साम्राज्य में इसकी वृद्धि हुई । यह राज्य की ओर से नहीं था, किन्तु कलिसिया के लिये और इसके संरक्षण में था ।

(4) इन सभी तीन उद्देश्यों की वृद्धि, एक मसीही संदर्भ में, भिन्न उद्देश्यों के साथ, कि किस प्रकार से एक पाप में गिरे हुए विश्वरूप के साथ मसीहीयों को संबंध रखना चाहिए । बिना युद्ध के झगड़े तय होने वाली सिद्धांत ने स्वयं को संसार से अलग करने का विचार किया है । धार्मिक युद्ध प्रतिवचन ने इस बुरे संसार को नियंत्रण करने के लिए राज्य की सामर्थ का समर्थन किया है (मार्टिन लूथर) धर्मयुद्ध में समर्थन किया है कि कलिसिया को गिर हुए विश्व रूप में आक्रमण करता है ताकि इसे नियंत्रण में रखने पाएँ ।

(द) शांति ही वास्तविक परिभाषा में विवाद हुआ है :

(1) युनानियों के लिए, यह क्रमानुसार और संयोग की एक समजा को प्रकट करता है।

(2) रोमियों के लिए, यह बिना युद्ध के द्वारा राज्य की सामर्थ से लाया गया था ।

(3) इब्रानियों के लिए, यह यहोवाका एक दान था, जो मनुष्य की उचित जवाब पर आधारित था । प्राय: इसे कृषिधर्म शब्दों में रखा गया था (व्य. 27–28) न सिर्फ उन्नति, किन्तु अदभुत सुरक्षाऔर रक्षा भी सम्मिलित है ।

(II) बाइबल संबंधी वस्तु

(अ) पुराना नियम

(1) पुराने नियम का मूल विषय पवित्र युद्ध है । निर्ग. 20:15 और व्य. 5:17 की वाक्यखण्ड हत्या न करना, इब्रानी में यह पहले से विचार कर हत्या करने से है, न कि दुर्घटना या उत्तेजना या युद्ध के द्वारा मृत्यु होने से है (बीडीबी 953) । यहोवा उसके लोगों के लिए एक योद्धा के रूप में दिखाई दिया है (यहोशू न्या. और याशा. 59:17,इफि. 6:14 में संकेत हुआ है ।

(2) यहां तक परमेश्वर भी युद्ध का प्रयोग उसके हठधर्मी लोगों को दण्ड देने के लिए करता है – इस्रायल को देश बहिष्कार असिरिया करता है (722 बी.सी.); यहुदा का देश बहिष्कार नियो बेबीलोन करता है (586 बी.सी.) ।

(ब) नया नियम

(1) सुसमाचारों में बिना निन्दा के सैनिकों की चर्चा की गई है । रोमी सुबेदार की चर्चा प्राय: और हमेशा अधिकतर एक श्रेष्ठ अभिप्राय में हुआ है ।

(2) यहां तक विश्वासी सैनिकों को भी उनके काम को छोड़ने की आज्ञा नहीं दिया गया है, (प्राचीन कलिसिया)

(3) नया नियम की राजनीतिक सिद्धांत या कार्य के शब्दों में सामाजिक बुराई के लिए पूर्ण उत्तर का समर्थन नहीं करता है, लेकिन आत्मिक छुडौतों में करता है । शारीरिक युद्ध पर केन्द्रित भुत नहीं है, किन्तु प्रकाश और अंधकार, अच्छाई और बुराई, प्रेम और घृणा, परमेश्वर और शैतान के बीच की आत्मिक युद्ध से है (इफि. 6:10–17) ।

(4) संसार की समस्याओं के मध्य में शांति एक हृदय का गुण है । यह मसीह के साथ हमारे अकेले संध से है (रोमि. 5:1; यहु. 14:27) न कि राज्य से है । मती 5:9 के शांतिमेल कराने वाला, प्रजासंबंधी नही है, किन्तु सुसमाचार की घोषणा करने वाले है । संगति को न कि कलह (कलिसिया के) गुण–दोष को बतलाना चाहिए ।

NASB **मूल ग्रंथ 5:18**

तू व्यभिचार न करना ।

5:18 व्यभिचार पुराने नियम के व्यभिचार (बीडीबी 610, केबी 658, क्वेल अपूर्ण) सिर्फ विवाह के बाहर की स्त्री यापुरूष जाति संबंधी क्रियाओं को प्रकट करता है । पुराने नियम में भविष्य जीवन के अभिप्राय से यह एक संदिग्ध जुर्म था । उन्होंने विश्वास किया कि एक अमुक बुद्धिमान व्यक्ति उसके संतान के द्वारा जीवित रहता है । जातीय पैतृक संपत्ति पाने और भूमि को प्राप्त करने की महत्वपूर्णता उनके लिए यहोवा के द्वारा बनाये गये एक महत्वपूर्ण विषय व्यभिचार के द्वारा विभक्त किया गयें है ।

ध्यान दें, प्रथम व्यवस्था माता पिता के प्रति विश्वासयोग्य है, दूसरी व्यवस्था आपके भाई के जीवन को न लेने की विश्वासयोग्यता है, तीसरी विचार, घर के भीतर में विश्वासयोग्यता है । यहां तक मंगेतर स्त्री को भी एक शादी शुदा के जैसे व्यवहार किया जाना है (व्य. 22:23) मरियम अविश्वस्त के कारण से निन्दित हुई क्योंकि उसकी मंगनी युसुफ के साथ हुई थी ।

व्यभिचारके इस विचार को प्राय: मूर्तिपूजा के रूप में प्रयोग किया गया है । इस्रायल के पति के रूप में परमेश्वर को होशे और यहेजेकुल प्रस्तुत करते है, इसलिए जब इस्रायल दूसरे देवताओं के पीछे जाने लगी, तो उन्हें, वैश्यागमन की ओर जाने को कहा गया और आत्मिक व्यभिचार और अविश्वसनीय समझा गया ।

NASB **मूल ग्रंथ 5:19**

तू चोरी न करना

5:19 चोरी करना सभवत: यह अपहरण और बिक्री पर एक संदर्भ है (बीडीबी 170, केबी 198, क्वेल अपूर्ण 24:7; निर्ग. 21:16), क्योंकि व्यवस्थाओं के घिराव के संदर्भ के कारण से है । यह एक व्यक्ति का वाचा के भाई से विश्वासयोग्य होने को प्रकट करता है जिसका जीवन परमेश्वर का है । सभी घिराव व्यवस्थाएँ मृत्यु के परिणाम को लायें है । यह छोटी चोरी के लिए भी कठोर जान पड़ता है ।

NASB **मूल ग्रंथ 5:20**

तू किसी के विरूद्ध झूठी साक्षी न देना ।

5:20 झूठी साक्षी देना प्राचीन समाजों में, जब किसी चीज को अपराधी ठहराते है, तोयह अपराधी की जिम्मेदारी है कि वह अपराधी ठहराने वाले को गलत साबित करे, न कि उसके बजाय, हमारे आधुनिक अमेरिकी न्यायालय के समान जहाँ परएक व्यक्ति को निर्दोश तब तक माना जाता है जब तक उसका अपराध साबित न हो जाये । यदि आपने अपने अपराधी ठहराने वाले को गलत साबित कर दिया ता`उस आपके ऊपरलगाए गए अपराध का दण्ड मिलेगा (19:16-21) । जबकि दस आज्ञाओं के उल्लंघन करने पर मृत्यु थी, झूठी गवाही देना भी एक संदिग्ध अपराध था । झूठी गवाह बनना, विश्वास के समाज में, एक अविश्वायोग्यता है । झूठ बोलना एक सम्मान को नष्ट करता है और एक वाचा के भाई या बहन के निर्दोषपूर्ण जीवन को लेता है । परमेश्वर इस झूठ को गंभीर रूप से लेता है (अय्यु. 17:5; भ.स. 101:5; नीति, 11:9; यिर्म. 9:8-9) ।

NASB **मूल ग्रंथ 5:21**

तू न किसी की पत्नी का लालच करना और न किसी के घर का लालच करना, न उसके खेत का न उसके दास का, न उसके दासी का, न उसके बैल या गदहे का, न उसकी किसी और वस्तु का लालच करना ।

5:21 लालच नहीं करना .....नहीं इच्छा रखना, ये दोनों क्रियायें पर्यायवाची है :

1. लालच - बीडीबी 326, केबी 325, क्वेल अपूर्ण, अर्थ, एक दृढ़ इच्छा, भौतिक वस्तु के लिए जो सकारात्मक या नकरातमक हो सकती है । इस संदर्भ में यह कुछ चीज के लिए एक अनियंत्रित स्वेच्छा है, जो एक वाचा के भाई का है ।

2. इच्छा – बीडीबी 16, केबी 20, हिपथापेल अपूर्ण, अर्थ, इच्छा रखना (14:26) या अभिलाषा (एक जाति संबंध में प्राय: 5:21 से है), किसी भी कीमत पर अधिक और अधिक प्राप्त करने से है । (गि. 11:4, भ.स. 106:14; नीति, 13:4; 21:26; 23:3,6; 24:1)

यह एक व्यक्ति के आतंरिक गुणों और विचारों से संबंध रखता है । यह सभी दूसरी आज्ञाओं के लिए सबे बड़ा पत्थर है । सिर्फ यही एक आज्ञा है जो क्यों के साथ, न कि कैसे से, चर्चा करता है । यही एक कहता है, न सिर्फ नहीं करना, किन्तु इसे सोचना मत । यीशु ने शिक्षा दिया कि, हमें सिफ हत्या करना ही नहीं, लेकिन हमें दूसरे से घृणा भी नहीं करना चाहिए, या एक गुण को जो हत्या के परिणाम को दिखाए । यीशु ने इस अंतिम आज्ञा को लिया और बाकी बचे हुए आज्ञाओं को आतंरिक विचारों और गुण को जो बाहर प्रदर्शित होने वाली क्रियाओं पर समाप्त होती है (मती. 5:17–48) । एक व्यक्ति चोरी नहीं करता है क्योंकि यह परमेश्वर को पसंद नहीं है और एक दूसरा व्यक्ति चोरी नहीं करता है क्योंकि उसे पकड़े जाने का भय है, यही संसार में भिन्नताएँ है । एक मसीही सिद्धांत पर कार्य कर रहा है और दूसरा स्वयं के लाभ के लिए कार्य कर रहा है ।

NASB **मूल ग्रंथ 5:22–27**

यही वचन यहोवा ने उस पर्वत पर आग, बादल और घोर अंधकार के बीच में से तुम्हारी सारी मण्डली से पुकारकर कहा था । उसने इससे अधिक और कुछ न कहा । उन्हें उसने पत्थर को दो पट्टियों पर लिखकर मुझे दे दिया । जब पर्वत आग से दहक रहा था, तुमने उस शब्द को अंधिकारे के बीच में से आते सुना, तब तुम और तुम्हारे कुलों के सब मुख्य पुरूष और धर्मयुद्ध मेरे पास आए, और तुम कहने लगे, हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम को अपना तेज और अपनी महिमा दिखाई है, और हमने उसका शब्द आग के बीच में से आते हुए सुना; आज हमने देख लिया कि यद्यपि परमेश्वर मनुष्य से बातें करता है तो भी मनुष्य जीवित रहता है । अब हम क्यों मर जाए ? क्योंकि ऐसी बड़ी आग से हम भस्म हो जायेगें । यहि हम अपने परमेश्वर यहोवा का शब्द फिर सुने, तब तक मर ही जायेगें । क्योंकि सारे प्राणियों में से कौन ऐसा है जो हमारे समान जीवित और अग्नि के बीच में से बोलते हुए परमेश्वर का शब्द सुनकर जीवित बचा रहे ? इसलिए तू समीप जा और कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे उसे सुनेगें और मानेगें ।

5:22 उससे अधिक और कुछ न कहा, इस आज्ञाएँ (डीकालोग) और उनकी व्याख्याएँ यहोवा से है, न कि मूसा से है (तुलना करें, निर्ग. 31:18 और 34:27–28) यह प्रकाशन है (परमेश्वर की ओर से) न कि मानवीय खोज या मुक्तिपूर्वक व्याख्या है । वाक्यखण्ड उससे अधिक और कुछ न कहा यह एक पूर्ण प्रकाशन स्वीकृति की शास्त्रीय पद्धति है (4:2; 12:32)

पद 22–27 होरेब/सीनै पर्वत पर इस्रायल की अनुभव को प्रकट कर रहा है और लेख प्रमाण निर्ग. 19–20 में हुआ है ।

इस प्रकाशन को अवश्य ही आदर–मान और लिखित पत्र में चोरी क्के साथ हेर फेर मत करना (4:2, 12:32; नीति 30:6; सभो. 3:14)

5:23 तुम्हारे कुलों के सब मुख्य पुरूष और धर्मवृद्ध मूसा के पास धमृवृद्ध आये, क्योंकि होरेब/सीनै पर्वत पर, यहोवा की व्यक्तिगत उपस्थित शारीरिक प्रकाशनों के द्वासरा जुड़े होने के कारण, वे भयभीत थे (पद 25–26; निर्ग; 19:16; 18;20:18–20) ।

5:24 उसकी तेज और उसकी महिमा इब्रानी मूल महिमा (बीडीबी 458) पद; 16 के आदर (बीडीबी 457) के समान मूल है । दोनों ही व्यापारिक शब्दों का अर्थ भारी या वजनदार जो आदर को संकेत करने के लिए हुआ है । प्राय: इसका प्रयोग परमेश्वर के नाम (भ.स. 29:2; 66:2; 79:9;96:8) (निर्ग. 24:16–17; 33:18; 40–35, गि. 14:22) । और कार्यों (निर्ग. 16:7, 12) के लिए हुआ है । दूसरा शब्द तेज (बीडीबी 152) प्राय: व्यवस्थाविवरण में परमेश्वर के लिए प्रयोग हुआ है 3:24; 5:24; 9:26; 11:2; 32:3; भ.स. 150:2) देखें संक्षिप्त लेख 4:31 और 10:17 में ।

विशेष विषय : महिमा

महिमा जो बाईबल संबंधी विषय है उसे परिभाषित करना कठिन है । विश्वासियों की महिमा यह है कि वे सुसमाचार को समझे और परमेश्वर में महिमा करें, न कि अपनेआप में (1:29–3; यिर्म. 9:23–24) ।

पुराने नियम में एक अत्यधिक सामान्य इब्रानी शब्द, महिमा (केबीडी) एक व्यापारिक शब्द, तराजू का पलड़ा (भारी होना) से संबंधित है । जो भारी था वह मूल्यवान या वास्तिविक मूल्य था । प्राय: चमकीलेपन के विचार को वचन के साथ जोड़ा गया ताकि परमेश्वर के प्रताप को प्रकट करने पाएँ (निर्ग. 19:16–18; 24:17; याशा 60:1–2) । वही अकेला योग्य और आदरणीय है । वह पाप में गिरे मनुष्यों को संभालने के लिए अत्यकिध देदीप्यमान है (निर्ग; 33:17–33; याशा: 6:5) । मसीह के द्वारा यहोवा को भली भॉंति जाना जा सकता है (यिर्म; 1:14; मती 17:2; इब्रा. 1:3, याकूब 2:1)

शब्द महिमा कुछ संदिग्ध है : (1) यह परमेश्वर की धार्मिकता के समानान्तर हो सकता है (2) यह परमेश्वर की सिद्धता या पवित्रता को संकेत कर सकता है या (3) यह परमेश्वर के स्वरूप, जिसमें मनुष्य को बनाया गया है, प्रकट कर सकता है (उत. 1:26–27; 5:1; 9:6) किन्तु विद्रोह के कारण बाद में खराब हो गया (उत. 3:1–22) निर्ग. 16:7; 10; लैव्य 9:23; और गि. 14:10 में जंगल परिभ्रमण के दौरान यहोवा की उपस्थित उसके लोगों के साथ प्रथम बार हुआ है ।

❖ यद्यपि परमेश्वर मनुष्य से बातें करता है, परमेश्वर स्वयं को प्रकट करता, ताकि मानव जाति उेस समझ सके और उससे संबंध रख सके । परमेश्वर के प्रकाशन और परमेश्वरर के वाला की मांग को समझने का हमारा मूल कारण यही है ।

5:27 इसलिए तू समीप जा और जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे उसे सुन यहां पर दो क्वेल आज्ञात्मक क्रियाएँ है :

(1) "**समीप जा**" – बीडीबी 897, केबी 1132, जिसका अर्थ निकट आओ या पहुंच यहोवा के पास पहुंचना, प्राय: खतरनाक परिणाम था (निर्ग; 16:7; लैव्य; 16:1, गि. 16:16) ।

(2) "**सुन**" – बीडीबी 1033, केबी 1570, प्राय: इस क्रिया शेमा को दुहराया गया है (उदा. हम उसे सुनेगें और मानेगें) ।

NASB मूल ग्रन्थ 5:28–33

28 "जब तुम मुझसे ये बातें कह रहे थे तब यहोवा ने तुम्हारी बातें सुनी । उसने मुझसे कहा, इन लोगों ने जो–जो बातें तुझ से कही है मैने सुनी है, इन्होंने जो कुछ कहा वह ठीक ही कहा । 29 भला होता कि इनका मन सदैव ऐसा ही बना रहे कि वे मेरा भय मानते हुए मेरी सब आज्ञाओं पर चलते रहे, जिससे इनकी और इनके वंश की सदैव भलाई होती रहे । 30 इसलिए तू जाकर इनसे कह, अपने–अपने डेरों को लौट आओ । 31 परन्तु तू यहीं मेरे पास खड़ा रह, और मैं वे सारी आज्ञाएँ, विधियाँ और नियम जिन्हें तुझे उनको सिखाना होगा तुझसे कहूंगा, जिससे वे उन्हें उस देश में जिसका अधिकार मै उन्हें देने पर हूँ माने । 32 इसलिए तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार करने में चैकरी करना । न तो उसस दाहिने मुड़ना और न बाएँ । 33 जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को दी है उस सारे मार्ग पर चलते रहो कि तुम जीवित रहो, और तुम्हारा भला हो, और जिस देश के तुम अधिकारी होंगे उसमें तुम बहुत दिनों के लिए बने रहो ।"

28–33 ध्यान दें, कि परमेश्वर कहता है ताकि तुम्हारा भला हो । ये आज्ञाएँ, लोगों को बोझ नहीं दिया था । परमेश्वर ने उसके लोगों को आजादी देने के लिए उन्हें दिया था । परमेश्वर ने उसके लोगों को आजादी देने के लिए उन्हें दिया था । परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था को हमारे भले–चंगे, स्वास्थ्य और सुखी जीवन के लिए दिया है ।

5:29 भला होता कि इनका मन सदैव ऐसा ही बना रहे....... मेरी आज्ञाओं पर चलते रहें इस प्रस्तावना–संबंधी चिल्लाहट (अरे भला होता कि इनका, बीडीबी566 के साथ बीडीबी 678, 4बी 733,क्वेल अपूर्ण) पुराने नियम में एक सामान्य वाक्यखण्ड है जिसका प्रयोग 25 बार हुआ है और अधिकतर अय्युब की किताब में हुआ है (नीडोट, वोल.3, पृ.209) । यहाँ पर यह एक इच्छा को प्रकट करता है । (2शमु. 18:33, भ.स.55.6) ।

परमेश्वर, मनुष्यों के लिए सुख और शांति की इच्छा रखता है, लेकिन यह जिम्मेदारियों को संलग्न करता है । यदि वे आज्ञा मानेंगे, तो यह उनके लिए, उनके पोतों के लिए, उनके परपोतों और आने वाली पीढ़ी के लिए भला होगा (व्य.27–29) ।

5:30–31 इन दो क्रियाओं पर आज्ञाओं की पंक्ति है :–

1. जाकर – बीडीबी 229, केबी 246, क्वेल अपूर्ण, पद 30
2. कहना – बीडीबी 55, केबी 65, क्वेल अपूर्ण, पद 30
3. लौट आओ – बीडीबी 996, केबी 1427, क्वेल अपूर्ण, पद 30
4. खड़ा रह – बीडीबी 793, केबी 840, क्वेल अपूर्ण, पद 31
5. कहना – बीडीबी 180, केबी 210, क्वेल अपूर्ण, पद 31
6. सिखाना – बीडीबी 540, केबी 531, पीयल अपूर्ण, (संभवत: इस संदर्भ के अर्थ में कोहोर्टेटिव) पद, 31

5:31 सारी विधियाँ, आज्ञाएँ और नियम देखें विशेष विषय 4:1 में ।

❖ जिसे मैंने उन्हें अधिकारी होने के लिए दे रहा हूँ इस वाक्यखण्ड में दो क्रियाएँ है :

1. देना – बीडीबी 678, केबी 733, क्वेल क्रिया कृदन्त
2. अधिकार करना– बीडीबी 429, केबी 441, क्वेल अनिश्चित निर्माण

यह कथन आधारित है :

1. अब्राहम से परमेश्वर का वायदा उत. 12:1–3,15:18–21
2. इसहाक से परमेश्वर का वायदा उ3. 26:3–5
3. याकूब से परमेश्वर का वायदा उत. 28:13–15,35:9–12
4. इस्राायल से परमेश्वर का वायदा, उत. 15:16, निर्ग 6:4,8, व्य. 4:38,40, 19:10,20:16, 21:23, यहोशू 1:2,3,6,11,13,15, 2:9, 24, 18:3, 21:43, 24:13

परमेश्वर ने इस्रायल को एक विशेष देश दिया/वायदा किया, लेकिन इस्रायल को (1) प्राप्त करना, (2) निवास करना और (3) वाचा में विश्वसनीय रहना (4:40, 7:12-13, 8:1-20) ।

5:32 न तो उससे दाएँ और बाएँ मुड़ना, यह परमेश्वर के वचन से संबंधित एक मुहावरा है जैसे एक मार्ग या सड़क को स्पष्ठ रूप से व्याख्या करने के लिए है (भ.स.119:105, नीति. 6:23) परमेश्वर के स्पष्ट मार्ग/सड़क से अलग होना पाप था (9:12,16,17:11,20, 28:14, यहोशू 1:7, 23:6, 31:29, 2 राजा, 22:2, 2 इति. 34:2, नीति 4:27) देखें संक्षिप्त लेख 2:27 में ।

5:33 तुम मार्ग पर चलते रहो, इस संदर्भ में चलने का अर्थ जीवन कला है बीबीडी 229, केबी 246, क्वेल अपूर्ण) । बाइबल संबंधी विश्वास सिर्फ व्यवस्था को रखने से ही नहीं, यह प्रतिदिन की जीवनकला है : एक दिन में 24 घंटे, एक सप्ताह, 7 दिनों में, विश्वास के द्वारा परमेश्वर से संबंध रखना है । यह विश्वास एक भक्तिपूर्ण जीवन में प्रकटीकरण होना अवश्य है । और तुम्हारा भला हो, क्रिया (बीडीबी 373, केबी370, क्वेल पूर्ण) शब्दानुसार सुंदर या अच्छा है । विशेषण का प्राय: प्रयोग वायदे के देश की व्याख्या जीवन की व्याख्या करता है, जो वाचा के आज्ञाकारी होते है उन के लिए परमेश्वर वायदा करता है (15:16, 19:13) ।

विवादपूर्ण प्रश्न –

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टीकाक्रम है जिसका अर्थ है कि बाइबल के अनुवाद जो आप स्वयं करते है उसके उत्तरदायित्व भी आपही होंगे, हममें से प्रत्येक के पास जो ज्योति है उसमें चलना है । आप, बाइबल और पवित्रात्मा व्याख्या करने में मुख्य है । आपको सिर्फ टीकाक्रम लिखने वालों पर ही नहीं निर्भर होना है ।

ये विवादपूर्ण प्रश्न, पुस्तक के इस भाग के मुख्य विचारणीय विषय में से आपको सोचने के लिए सहायता करता है । उनके विचारने का अर्थ उत्तेजक है, न कि अंतिम है ।

1. व्यवस्था और अनुग्रह के बीच क्या संबंध है ? क्या मसीहियों को दस आज्ञा मानना चाहिए ?
2. व्यवस्था का उद्देश्य क्या है ?
3. क्यों दस आज्ञाओं में भिन्नता है जब निर्ग, 20 और व्य. 5 को तुलना करते हैं ?
4. सब्त का उद्देश्य क्या है ? क्यों हम शनिवार को आराधना नहीं करते हैं ?
5. पद 16-21 में हम कौन सी एकरूप विषय देखते है ?

*****

व्यवस्था विवरण 6

आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
महा–आज्ञा	पहली आज्ञा का अर्थ	महान–आज्ञा	व्यवस्था का सार यहोवा को प्रेम करना है (5:32–6:13)
6:1–3	6:1–3	6:1–3	
6:4–5	6:4–9	6:4–9	6:4–9
6:6–9			
अनाज्ञाकारिता के विरूद्ध चौकसी		अनाज्ञाकारित के विरूद्ध चेतावनी	
6:10–5	6:10–15	6:10–15	6:10–13
			ईमानदारी के लिए विनती
			6:14–16
6:16–19	6:16–19	6:16–19	
6:20–25	6:20–25	6:20–25	6:20–25

अध्ययन चक्र तीन (देखें पृ.7 प्रस्तावना संबंधी भाग में)

लेखक के निम्नलिखित वास्तविक विचार इस वाक्यखण्ड तुल्यता पर

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टीकाक्रम है जिसका अर्थ बाइबल की अनुवाद जो आप स्वयं करते हैं उसके जिम्मेदार भी आप ही होंगे । हममें से प्रत्येक को जो प्रकाश हममें है उसपे चलना चाहिए । आप, बाइबल और पवित्रात्मा अनुवाद करने में मुख्य है । आपको सिर्फ टीकाकरण लिखने–वाले पर ही निर्भर नहीं होना है ।

एक स्थान में बैठकर अध्याय को पढ़िये । विषयों को पहचानिये (अध्ययन चक्र–3,पृ8) ऊपर दिये गये चारों आधुनिक अनुवाद के साथ आप अपने विषय विभाजन से तुलना करें । वाक्यखण्ड, ईश्वर–प्रेरित नहीं है, लेकिन यह लेखक के वास्तविक विचार को अनुसरण करने की कुंजी है, जो अनुवाद का ह्दय है । प्रत्येक वाक्यखण्ड में एक और सिर्फ एक विषय है ।

1. प्रथम वाक्यखण्ड
2. द्वितीय वाक्यखण्ड
3. तृतीय वाक्यखण्ड
4. इत्यादि ।

पृष्ठभूमि-

टीकाक्रम लिखने वालों के बीच में यहाँ पर कुछ विवाद हो रहे हैं । जैसे अध्याय 6 दस आज्ञाओं का एक अंतिम रूप लेता है यह विचारों की वृद्धि पर एक भाग की प्रस्तावना दस आज्ञाओं में प्रस्तुत किया गया है । 5:28-33 के कारण मुझे यह स्पष्ट दिखाई देता है कि हम एक नये भाग को प्रारंभ कर रहे है जो आज्ञाकारी होने के महत्व देता है ।

(अ) कई लोगों ने स्वीकृत किया है कि अध्याय 6 प्रथम आज्ञा की विस्तार है जो हमारे जीवन में यहोवा की प्रधानता को स्थापित करता है ।

(ब) इस अध्याय में अब्राहम से किये गये यहोवा के वास्तविक वायदे उत,12:1-3 और उनकी परिपूर्णता होने का (6:1,3,10,18 और 23) स्थाई महत्व है ।

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन-

NASB मूल ग्रन्थ 5:28-33

1 "यह वह आज्ञा, और वे विधियाँ और नियम है जो तुम्हें सिखाने की तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने आज्ञा दी है । तुम उन्हें उस देश में मानों जिसके अधिकारी होने को तुम यरदन नदी आज्ञा के उस पार जाने पर हो । 2 तू और तेरा बेटा और तेरा पोता यहोवा का भय मानते हुए उसकी उन सब विधियों और आज्ञाओं पर जो मै तुझे सुनाता हूँ, अपने जीवन भर चलते रहें, जिससे तू बहुत दिन तक बना रहे । 3हे इस्रायल सुन, और ऐसा ही करने की चौकसी कर, इसलिए कि तेरा भला हो, और तेरे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उस देश में जहाँ दूध और मधु की नदियाँ बहती है, तुम जनसंख्या में बहुत हो जाओ ।

6:1 "आज्ञा, विधियाँ और नियम" देखें विशेष विषय 4:1 में ।

❖ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा देखें विशेष विषय : ईश्वरों के नाम 1:3 में ।

❖ सिखाना... मानें अध्याय 6, के साथ अध्याय 5 की समाप्ति, आज्ञापालन की आवश्यकता होने में एक दृढ़ महत्व को गुण दोष से बतलाया जा सकता है (5:29, 31,32,33,6:1, 2, 3, 4, 17, 24 और 25) । इसी आज्ञापालन की आवश्यकता के महत्व को नये नियम में दुहराया गया है, लूका 6:46, यहू, 14:21, याकूब 2:14-26, 1 यहु. 5:2) । एक तरह से हम उसे दिखा सकते है कि सचमुच हम उससे प्यार करते है तो उसने जो बोला है करने के लिए हमें उसे करना है (मानना है) । इस आज्ञापालन की केन्द्रियभूत प्रथम परमेश्वर की ओर है उसके बाद हमारे वाला के भाई/बहन की तरफ है । परमेश्वर अनुग्रह में हमेशा आरम्भिक लेता है (वाचा की लाभ), तथापि वह हमसे उसके वाचा के भागों को मानने की आशा रखता है ।

❖ उस देश में जिसके अधिकारी होने को जा रहे हो, यह सचमुच, उत. 12:1–3 को प्रकट करता है । पुराने नियम में अब्राहम संबंधी वायदा देश के रूप को दृढ़ किया है जबकि नेय नियम में अब्राहम संबंधी वायदा संतान के रूप को दृढ़ किया है (यहुदा के कुल, यिशै का परिवार, दाऊद की वंशावली)

6.2 तू और तेरा बेटा और तेरा पोता यहोवा का भय मानें, परिवार के आदर और आराधना के विषय को व्यवस्था विवरण में दर्शाया गया है (4:9–10, 5:29, 6:13, 11:19, 32:46) । यह व्य. 5:9 के विपरित अध्यात्मवादी संबंधी है ।

❖ भय मानते हुए... चलते रहें आदर (बीडीबी 431, केबी 432, क्वेल अपूर्ण) को प्रमाणित किया गया है, उसके सभी वाचा की मांगों को मानने (बीडीबी 1036, केबी 1581, क्वेल अनिश्चित निर्माण) से है ।

❖ अपने जीवन भर ध्यान दें कि यह जीवनकला पर महत्व देता है – प्रतिदिन आज्ञापालन, सिर्फ विशेष आराधना अवधि या वार्षिक त्यौहारों में ही नहीं । बाइबल संबंधी विश्वास एक जीवनकला विश्वास और पश्चाताप का अनुसरण करने के द्वारा प्राथमिक विश्वास और पश्चाताप है (मर. 1:15,, प्रे.का. 3:16, 19, 20:21) ।

❖ चलते रहें देखें संक्षिप्त लेख 5:1 में

❖ जिससे तू बहुत दिन तक जीवित रहे इस वाक्यखण्ड का अनुवाद प्राय: व्य, 5:6 के मेल में हुआ है जैसे एक व्यक्ति के दीर्घायु का वायदा, जो उनके माता–पिता का आदर करते हैं ।

किन्तु व्य. 4:40, 5:16, 33, 6:2, 11:9 में इस वाक्यखण्ड का प्रयोग बारम्बार होने के कारण, स्पष्ट रूप से यह एक स्थिर समाज, के लिए एक मुहावरा है न कि एक व्यक्ति के दीर्घायु के लिए परमेश्वर की वाचा की नियुक्ति एक भक्तिपूर्ण, स्थिर, स्वास्थ्य, उत्पादक समाज उंचे पद पर नियुक्त करने के लिए किया गया है । (पद 3, और पूरी संक्षिप्त लेख 4:40 में)

6.3 ध्यान दे कि कैसे क्रियाएँ और विचारों को बारम्बार दुहराया गया है ।

❖ इसलिए कि तेरा भला हो, यह वाक्यखण्ड पद.2 के ताकि तू बहुत दिन तक बना रहे की समान्तर है, ध्यान दे कि यह वाक्यखण्ड 5:33; 15:16; 19:13 में भी पाया गया है ।

❖ उस देश में जहां दूध और मधु की धाराएँ बहती है तुम बहुत हो जो जाओ, इसे निद्धिष्ट होने की आवश्यकता है कि यहोवा की मूल विधि, देशों को अपने पास खींचने का कारण, इस्रायल को अनोखे रूप से आशीष करना था । किन्तु, इस्रायल की अनाज्ञाकारिता, इस कथा को प्रभावशाली कभी होने की अनुमति नहीं दिया । अब्राहम की संतानों के

इतिहास को समझने में व्य. 27-29 की भाग आशीष और श्राम, मुख्य आधार है । विशेष रूप से उन्हें भरपूर होने के लिए कहा गया था, कि उनको बढ़ती होगी यदि वे परमेश्वर का अनुसरण करते हैं और यदि वे अनाज्ञाकारी होते है तो श्राप की बढ़ती होगी । इस्रायल की इतिहास अनाज्ञाकारी में से एक है ।

वाक्यखण्ड, उस देश में जहां दूध और मधु की धाराएँ बहती है; जो अग्रेटिक और मिस्त्री लेख प्रमाण दोनों में पलिश्ति देश को संकेत करने के लिए, शास्त्र संबंधी वाक्यखण्ड है । प्राय: इसका प्रयोग हुआ है (निर्ग. 3:8, 17; 13:5; 33:3; लैव्य; 20:24; गि. 13:27 14:8; 16:13; व्य. 6:3; 11:9; 26:9; 27:3; 31:20)

NASB मूल ग्रन्थ 6:4-9

> "हे इस्रायल सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना । और ये आज्ञाएँ जो मैं आज तुमझको सुनाता हूं वे तेरे मन में बनी रहे, और तू इन्हें अपने बाल बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना । और इन्हें अपने हाथ पर चिन्ह के रूप में बांधना और ये तेरी आंखों के बीच टीके का काम दें । और इन्हें अपने अपने घर के चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना ।"

6:4 "सुन", यह इब्रानी क्रिया शेमा है (बीडीबी 1033, केबी 1570, क्वेल आज्ञात्मक) देखें पूर्ण संक्षिप्त लेख 4:1 में । इसका अर्थ सुनो इसलिए कि करो । यह बाईबल संबंधी वाचा का केन्द्रितभूत है । व्य. में इस क्रिया का प्रयोग संकेत करता है कि इसका प्रयोग पूजन विधि के अनुसार, आराधना की समयों में निर्धारित किया गया है (4:1, 5:1, 9:1; 20:3; 27:9-10)

व्य. 6:4-6 की इस प्रार्थना को, द्वितीय मंदिर की दिनों से लेकर (516 बी.सी.) आज के दिन तक सुबह और शाम और प्रत्येक आराधना के समय में यहुदी लोगों के द्वारा दुहराया जाता है । यह उनके विश्वास का मुख्य अंगीकार है ।

❖

NASB, NRJV	
NET NIV	"एक ही प्रभु है"
NRSV, TEV	"अकेला प्रभु"
NJB	"सिर्फ यहोवा"
LXX	"एक ही प्रभु है"
JPSOA	"अकेला प्रभु"
REB	"हमारा एक यहोवा परमेश्वर है"

यहाँ क्रिया नहीं है । यह अदैतवाद (एक ही परमेश्वर) के प्रति यहुदी निश्चितता का मुख्य आधार है (हालाकि इसे स्वीकृत किया जाना अवश्य है कि इस मुख्य आध्यात्मिक सच्चाई को संदर्भ रूप में बताया नहीं गया है)। इस्रयल उसके पड़ोसियों के जो अनेक देवताओं में विश्वास करते थे विषेशकर कनानियों के महत्व जो वे अनेक स्थानिक बाल देवता पर देते थे, इस्रायली उनसे बहुत दूर थे ।

यह विकसित अदैतवाद तत्व ज्ञान संबंध है (4:35, 39) या अभ्यासिक अदैतवाद है (5:7) इस विषय पर अत्यधिक चर्चा है । यह मालूम होता है, क्योंकि पद:14 में दूसरे देवताओं की चर्चा के कारण, वास्तविक रूप में वह यह प्रकट कर रहा है, इस्रायल के समझ के अनुसार, सिर्फ एक ही परमेश्वर है । विकसित, दार्शनिक, सत्व विधा संबधी अदैतवाद ने पुराने नियम में निश्चित अवस्था के वाक्यशैली को पूर्ण नहीं ढूढ़ता है । जब तक व वीं शताब्दी के भविष्यवक्ताएँ ढूढ लेते है । (याशा. 43:9–11; 45:21–22; यिर्म; 2:11; 5:7, 10) । नया नियम इसी समझ का अनुसरण करता है (रोमि. 3:30; 1 कुरि. 8:4, 6: I तिमि: 2:5; याकू. 2:19) ।

6:5 और तुम अपने परमेश्वर यहोवा से सारे मन, और सारे जीव और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना, यह एक सामर्थी महत्व है जो स्वीकृत करता है कि परमेश्वर को हमारा उत्तर देना, हमारे पूर्ण व्यक्तिगत को संलग्न करता है । यीशु मसीह ने इसी पद को लैव्य 19:18 केमिश्राण के साथ व्यवस्था की पूरी अस्तित्व को निश्चित करने के लिए कहा ।
मती;22:36–38; मर. 12:29–34; लूका 10:27–38) । जीस. पृ. 123–125 ।

6:6 इन वचनों को, ये वचन, यहोवा की वाचा, को प्रकट करता है, जो मूसा के द्वारा दिया गया था ।

❖ वे तेरे मन में बनी रहें, इब्रानी में मन (बीडीबी 523) एक व्यक्ति के जीवन को सीधे केन्द्रितभूत करने की ओर संकेत करता है । पुराने नियम में भी आंतरिक विश्वसनीय होने का अर्थ होता है, जैसे नये नियम में भी यही महत्व देता है व्य. 4:29; 6:5, 10:12; 1:13, 18; 13:; 26:16; 30:2, 6, 10; नये नियम में, सारी बुद्धि के साथ मर; 12:30 लूका 10:27) कई बार हम पुराने नियम की वाचा को एक बाहरी व्यवस्था होना और नये नियम की वाचा को आंतरिक विश्वास है करके इन दोनों के बीच एक दूरी बनाकर गलती करते है । संभवत: हमने इस भ्रम को यिर्म; 31:31–34 में है, से पाते है, जो एक नये मन को महत्व देता है । किन्तु पुराने नियम में भी, प्रत्येक विश्वासी को, उसके प्रभु परमेश्वर की ओर

उसकी पूरी व्यक्तित्व, क्रियाएँ, और विचार को नियंत्रित करना था ।

6:7 तु इन्हें अपने बच्चों को समझकर सिखाया करना, क्रिया (बीडीबी 104; केबी 1606, पीयल पूर्ण) का अर्थ, चतुर करना और पीयल में सिर्फ इसी का प्रयोग हुआ है । अग्रेटिक में शब्द का अर्थ दुहराना है । इस पद में यह मुख्य महत्व दिखाई जान पड़ता है । यहुदी गुरू इस पद का प्रयोग स्वीकृत करने के लिए करते है कि शेमा सुबहर और शाम दुहराया जाना चाहिए । हमें प्रतिदिन की क्रियाओं के पूर्ण अवधि के दौरान हमारे जीवन में परमेश्वर की इच्छा के बारे में बात करना है । यह माता-पिता कि जिम्मेदारी है कि जीवन कला के विश्वास पर लागू करें (व्य. 4:9; 6:20-25; 11:19; 32:46, देखें पूर्ण संक्षिप्त लेख 4:9 में) यह रूचिमय है कि शिक्षा के इन विभिन्न समक्षों की बहाव उसी साहित्य संबंधी नमूना जैसे भ.स. 139:2-6 और नीति; 6:20-22 में ही गिरती है ।

विश्वासियों का प्रेम स्वीकृत है (बीडीबी 12, केबी 17, क्वेल पूर्ण) व्य. की यह एक विशिष्ठ गुण है जो यहोवाकी वाचा में आज्ञापालन को संयुक्त करने केएि जैसे एक व्यक्ति का प्रेम यहोवा के लिए प्रमाण है । (5:10;6:5, 79; 10:12; 11:1, 13; 13:; 19:9; 30:6; 16, 12) । देखें पूर्ण संक्षिप्त लेख 5:10 में ।

शब्द मन और प्राण का प्रयोग एक साथ प्राय: एक पूर्ण व्यक्ति को प्रदर्शित करने के लिए किया गया है (4:29; 10:12; 11:13; 13:3; 26:16; 30:2, 6,10) ।

शब्द प्राण (बीडीबी 659) मनुष्यों और जानवरों के जवीन स्त्रोत (स्वांस) की व्याख्या करता है (उत. 1:20-30; 2:7,19; 7:22; अय्यु 34:14-15; भ.स; 104:29, 30; 146:4; सभो 3:19-21) यहां पर तीव्र इच्छा को प्रकट करता है ।

शक्ति (बीडीबी 547) का अर्थ प्रचुर या सामर्थ है (II राजा 23:25) । ये तीन शब्द मन, प्राण, शक्ति एक पूर्ण व्यक्ति को प्रस्तुत करते है और इसलिए इस वाक्यखण्ड पूरे मन के साथ के समानान्तर में है । ध्यान दें इस संबंध सूचक सारे जो है तीन बार महत्व देने के लिए दुहराया गया है ।

यीशु मसीह के द्वारा इस आज्ञा को यही महा - आज्ञा के रूप में बताया गया है (मती 22:34-40)मर; 12:29-3; लूका; 10:25-37) विभिन्न प्रकार के यदुदी अगुवों के लिए इनमें से प्रत्येक को व्याख्यान किया गया है । किन्तु इसे समझना अवश्य है कि यीशु मसीह और प्रेरितों काजीवन पुराने नियम से नये नियम तक एक अवस्थान अवधि थी । ये दो व्यवस्थाएँ परमेश्वर को प्रेम करना (व्य. 6:5) और अपने भाई को प्रेम करना (लैव्य. 19:18) निश्चित रूप से नई वाचा का सारांश भी है ।

प्रश्न जैसे, कैसे नये नियम के विश्वासियों को प्रत्युत्तर देना चाहिए ? पुराने नियम

के व्यवस्थाओं को देखें :

(1) हाऊ दू रीड द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ, डुगलस स्टूअर्ट, पृ.165–169

(2) क्रेकिंग ओल्ड टेस्टामेंट कोड्स डी. ब्रेन्ट सेण्डि एंड रोनाल्ड एल.

माता–पिता के इस जिम्मेदारी के महत्व को नीति; 22:6 में दुहराया गया है । हम आधुनिक चर्च स्कूल में माता–पिता के प्रशिक्षण के स्थानको नहीं ले सकते है, लेकिन सचमुचमें यह इसका शेष पूर्ति कर सकता है ।

6:8 और इन्हें अपने हाथ पर चिन्ह के रूप में बांधना, और ये तेरी आंखों के बीचटीके का काम दें, सचमुच में यह वाक्यखंड एक लक्षण के रूप में प्रयोग किया हुआ मालूम पड़ता है (LXX) । संदर्भ, परमेश्वर के वचन के लिए जीवन शैली शिक्षा का मौका है । किन्तु, यहुदी गुरूओं ने इस पद को बहुत यथाशब्द लिया और एक छोटे संदूक (टेलीफोन) में लपेटकर, जिसमें टोरह के धर्मग्रंथों में कुछ चुने हुए को रखा गया था, अपने बाँ हाथ के चारों ओर एक चर्मपट् से लपेटना प्रारंभ किया । इसी प्रकार के संदूक कोभी उनके माथे में तस्में से बांधा । इन टीके (बीडीबी 377) या ताबीज को व्य. 11:18 और मती 23:5 में भी प्रदर्शित किया गया है ।

6:9 और उन्हें अपने–अपने घर के चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों परलिखना दुबारायह एक लाक्षणित संकेत की अनुमान है कि परमेश्वर की एक हिस्से को पास में रखना, न सिर्फ हमारे गृहस्थी जीवन में, लेकिन हमारे सामाजिक जीवन में भी (उदा. फाटक, 21:19, 22:15, 24) जैसे कि घर की द्वार (बीडीबी 265) को रोमी और युनानी समाज में प्राय: दुष्टात्मा की जगह के रूप में देखा गया था, यहुदी समाज में यह परमेश्वर की उपस्थिति को प्रस्तुत किया हुआ है (उदा. वह स्थान, जहाँ पर फसह की लहु को लगाया गया था, निर्ग, 12:7, 22, 23) ।

तुम्हारे फाटक (बीडीबी 1044), सामाजिक सभा और न्याय के स्थान को प्रकट कर सकती है (उदा. नगर के फाटकों की समान) । सामान्य तौर में, इन छोटे बक्सों और फाटक में चिन्ह लगाने वाला (मेजुजा), धर्मग्रन्थ के अनेक संग्रहित पद्यांशों को रखती है : व्य, 6:4–9, 11:13–21, निर्ग. 13:1–10, 11–16.

NASB मूल ग्रन्थ 6:10-15

जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में पहुचाएँ, जिसके विषय में उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब नामक तेरे पूर्वजों से तुझे देने की शपथ खाई, और जब वह तुझ को बड़े-बड़ और अच्छे नगर, जो तूने नहीं बनाए, और अच्छे-अच्छे पदार्थो से भरे हुए घर जो तूने नहीं भरे, और खुदे हुए कुएँ, जो तूने नहीं खोदे, और दाख की बारियाँ और जैतून के वृक्ष, जो तूने नहीं लगाए, ये सब वस्तुएँ वह जब दे, और तू खाके तृप्त हो, 12 तब सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू यहोवा को भूल जाए, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्त्र देख से निकाल लाया है । 13अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना, उसी की सेवा करना, और उसी के नाम की शपथ खाना । 14 तुम पराए देवताओं के, अर्थात् अपने चारों ओर के देशों के लोगों के देवताओं के पीछे न हो लेना, 15क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा जो तेरे बीच में है, वह जल उठनेवाला ईश्वर है, कहीं ऐसा न हो कि तेरे परमेश्वर यहोवा का छाप तुझ पर भड़के, और वह तुझ को पृथ्वी पर से नष्ट कर डाले ।

6:10-11 यह दिखाता है कि कनानियों के देश पर इस्रायल अधिकार करने वाला था (उत.15:16) । वह, उनके घरों, खेतों और दाख की बारियों को लेगी । तथापि पद 12, इस बात पर महत्व देता है कि उसे यह कभी नहीं भूलना है कि इन सभी को प्रभु ने उन्हें दिया हु और यह उनका निजी कमाई का नहीं है (4:9, 8:11-20, भ.स.103:2) । यदि वे यहोवा को भूले, तो वापस यहोवा उसे ले लेगा । वे उनके घरों को, खेतों को, और दाख की बारियों को खो देगें (28:27-48) । अद्‌भुत प्रेम ने वाचा के संबंध को प्रारंभ किया, लेकिन मानव के आज्ञापालन ने इसे धारण किया।

6:12 सावधान रहना क्रिया (बीडीबी 1036, केबी 1581, निफाल आज्ञात्मक) का प्रयोग प्राय: व्यवस्थाविवरण में हुआ है, लेकिन सामान्य तौर में क्वेल मूल में हुआ है । निफाल 2:4; 4:9, 15, 23; 6:12, 8:6, 11; 11:16; 12:13, 19, 30; 15:9; 239; 24:8 में पाया गया है और सामान्य तौर में सावधान होने के साथ पाया गया है ।

❖ कहीं ऐसा न हो कि तुम भूल जाये क्रिया (बीडीबी 1013, केबी 1489, क्वेल अपूर्ण) व्यवस्थाविवरण में एक बार बार होने वाली चेतावनी है (4:9, 23, 31, 31; 6:12 8:11, 14, 19 (दुबारा) 9:7; 25:19) ।

❖ जो मुझे दासत्व के घर से अर्थात मिस्र देश से निकाल लाया है, व्यवस्थाविवरण के पुस्तक का यह लगातार महत्व है कि परमेश्वर का प्रेम इस्रायल के ऊपर प्रथम

आया (व्य. 4:10; 5:29; 6:2) । पुराने नियम को व्यवस्था के रूप में और नये नियम को अनुग्रह के रूप में गुण दोष बतलाना, यह दुर्भाग्य है (मार्टिन लुथर) ।

6:13 यह पद अनेक बातों को बताता है कि यहोवा के लिए इस्रायल को बहुत सी चीजों को करना है जब वे विजयी होकर वायदे के देश में प्रवेश करते है :

(1) सिर्फ अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना – बीडीबी 431, केबी 432, क्वेल अपूर्ण

(2) उसकी आराधना करो – बीडीबी 712, सेवा करना केबी 773, क्वेल अपूर्ण

(3) उसके नाम की व्यर्थ न लेना – बीडीबी 989, केबी 1396, निफाल अपूर्ण, देखें पूर्ण संक्षिप्त लेख 5:11 में ।

ये सभी आराधना को संलग्नकरते है और मूसा की लेखों में प्राय: प्रयोग किया गया है ।

6:14 यह पद दूसरे मांग को जोड़ता है पद 13 की सूची में :

(4) दूसरे देवताओं के पीछे न हो लेना – बीडीबी 229, केबी 246, क्वेल अपूर्ण

यहां पर कनानियों के उपजाऊ देने वाले देवताओं की आराधना करना कठोरता से मना किया गया था।

❖ देवताओ.... देवताओं, ने एलोहिम और (बीडीबी 43) एल (बीडीबी 43) के शब्द है । देखें विशेष विषय 1:3 में ।

6:15 क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा जो तेरे बीच में है, यही सृष्टि करने का, उद्देश्य था, परमेश्वर उनके साथ रहना चाहता है जिन्हें उसने अपने स्वरूप और समानता में बनाया है (उत: 1:26–27) । यह मसीह संबंधी विषय, इम्मानुयल, जिसका अर्थ परमेश्वर हमारे साथ है (याशा; 7:14, मती 28:20)

❖ जल उठनेवाला परमेश्वर, इस इब्रानी शब्द का अर्थ ईर्ष्या रखने वाला या जल उठने वाला हो सकता है (बीडीबी 888, व्य. 4:24; 5:9 देखें संक्षिप्त लेख 4:24 में । जल उठना, एक प्रेम शब्द है । हम सिर्फ उनके लिए जल उठते है जिनके लिए हमारे पास एक गहरी, बनी हुई प्रेम है । यह परमेश्वर के प्रेम कीशरीर रचना रूप में मान और पारिवारिक शब्दों में निर्दिष्ट दूसरी निश्चय सहित वचन है । देखें विशेष विषय 2:15 में ।

❖ तेरे परमेश्वर यहोवा का का कोप तुझ पर भड़के और वह तुझ को पृथ्वी पर से नष्ट कर डाले, जैसे खेलेटरी, परमेश्वर की प्रेम मे समान है, वही किताब परमेश्वर के क्रोध को प्रकट करता है । वही किताब जो हमें उसके पफेम के साथ व्याकुल करता है, उसके क्रोध के साथ आरंभ कर देता है (भड़के बीडी 354, केबी 351, क्वेल अपूर्ण 11:16-17; 31:16-1, न्या. 2:14; 6:13; और नष्ट करना या सर्वनाश करना बीडीबी 1029; केबी 1552, हिफिल पूर्ण, 1:27; 2:22; 9:20, यहोशू 9:24) । परमेश्वर के प्रेम और उसके क्रोध के बीच के समझने का एक अच्छा तरीका व्य. 5:9 के साथ 7:9 की जब तुलना करेगें । जैसे परमेश्वर मुख्य पापों की जीवन शैली को, पिता से पुत्र और पुत्र से तीसरी और चौथी पीढ़ीयों तक भेंट कराता है, वह विश्वास की आशीष को हजारों पीढ़ीयों तक भेंट कराता है जो उससे प्रेम करते है । परमेश्वर के प्रेम का तिरस्कार ही परमेश्वर का क्रोध हे । याशायाह परमेश्वर के क्रोध को उसका अनोखा काम कहता है (याशा: 28:21) ।

NASB मूल ग्रन्थ 6:16-19

तुम अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न करना, जैसे कि तुम ने मस्सा में उसकी परीक्षा की थी । अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं चेतावनियों और विधियों को जो उसने तुझको दी है, सावधानी से मान्ना । और जो काम यहोवा की दृष्टि में ठीक और सुहावना है वही क्रिया करना, जिससे कि तेरा भलाहो, और जिस उत्तम देश के विषय में यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाई उसमें तू प्रवेश करके उसका अधिकारी हो जाए, कि तेरे सब शत्रु तेरे सामने से दूर कर दिए जाएँ, जैसे कि यहोवा ने कहा था ।

6:16 तुम अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न करना, जैसे कि तुम ने मस्सा में उसी परीक्षा की थी, उस जगह का नाम परीक्षा मस्सा (बीडीबी 650) रखा गया था । यह एक घटना की संदर्भ है जो निर्ग. 17:1-7 में हुआ (परीक्षा किया था बीडीबी 650, केबी 702, पीपल पूर्ण) यहां पर लोगों ने परमेश्वर के प्रावधान और उपस्थिति के विरूद्ध बड़बड़ाने लगे (व्य. 9:22; 33:8) । उन्होंने विश्वास की कमी को दिखाया (भ.स. 95:8, इब्रा. 3-4) इसे दुबारा मत करना (परीक्षा पीयल अपूर्ण) इस पद का प्रयोग यीशु के द्धारा उसके परीक्षा के अनुभव में शैतान को कहा गया था (मती 4:7; लूका 4:12) ।

6:17 तू अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को सावधानी से मानना देखें पूर्ण संक्षिप्त लेख 6:3 में । आज्ञापालन पर निरन्तर महत्व (देखें 5:1 में) वाचा के संबंध के लिए अति

प्रबल और मचान को स्थापित करती है । परमेश्वर के सभी वाचाएँ मुनष्यों के साथ, उसके द्धारा बिना शर्त के प्रारंभ हुआ है, लेकिन मनुष्य को अवश्य ही शर्त रूप से उत्तर देना चाहिए (5:32, 33; 6:1, 2, 3, 17, 24, 25) ।

❖ आज्ञाएँ... चेतावनियों... और विधियों देखें विशेष विषय 4:1 में ।

6:18 यहां पर तीन शब्द है जो इस्रायल के अनुभवों को नियम के अनुकुल बनाता है :

1. वही करना जो ठीक है – क्रिया बीडीबी 793I, केबी 889 क्वेल पूर्ण, करना

(अ) ठीक :– बीडीबी 449 का अर्थ ठीक या सुहावना है, निर्ग; 15:26; व्य. 6:18;12:25, 28; 13:18; 21:9

(ब) अच्छा :– बीडीबी 373 II ; दुबारा प्रयोग हुआ, सुहावना क्या है, उत. 16:6; व्य. 12:28 (बीडीबी 375III पद 24)

2. जिससे कि तेरा भला हो, – बीडीबी 405, केबी 408, क्वेल अपूर्ण, भला हो, 4:40; 5316, 29, 33 ; 6:3, 18; 12:25; 22:7

ध्यान दें कि ये सभी तीन, 12:25, 28 में पाया गयाहै । यदि इस्रायल वाचा के मांगों को रखना है, यहोवा उन्नत और दीर्घायु उनमें लायेगा ।

6:19 तेरे सब शत्रु तेरे सामने से दूर कर दिये जाएँ, परमेश्वर ने उन्हें वायदे के देश को दिया (दूर करने के द्धारा बीडीबी 213, केबी 239 क्वेल अनिश्चित निर्माण उत: 15:16–21) । उसने उन्हें सैनिक विजय को दिया, लेकिन इस्रायल को तब भी अपने आप को तैयार करना और जाकर लड़ना था । सभवत: यह उत्तर की आवश्यकता को दिखाने के लिए एक अच्छी मिश्रण थी । (यहोशू : 1–12)

NASB मूल ग्रन्थ 6:20–25

फिर आगे को जब तेरा लड़का तुझ से पूछे, ये चेतावनियां और विधि और नियम, जिनमे मानने की आज्ञा हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को दी है, इनका प्रयोजन क्याहै ? तब अपने लड़के सेकहना जब हम मिस्र में फिरौन के दास थे, तब यहोवा बलवंत हाथ से हमको मिस्र में से निकाल ले आया, और यहोवा ने हमारे देखते मिस्र में फिरौन और उसके सारे घराने को दुख देनेवाले बड़े–बड़े चिन्ह और चमत्कार दिखाए, और हम को वह वहां से निकाल लाया, इसलिए कि हमें इस देश में पहुंचाकर, जिसके विषय में उसने हमारे पूर्वजों से शपथ खाई थी, इसको हमें सौंप दें । और यहोवा ने हमें ये सब विधियां पालन करने की आज्ञा दी, इसलिए कि हम अपने परमेश्वर यहोवा का यहोवा का भय मानें, और इस रीति सदैव हमारा भला हो, और वह हमको जीवित रखें, जैसा कि इाज के दिन हैं । और यदि हम अपने परमेश्वर यहोवा की दृषिट में उसकी आज्ञा के अनुसार इन सारे नियमों को माननें में चौकसी करें, तो यह हमारे लिए धर्म ठहरेगा ।

6:20 बच्चों की वाचापूर्ण आत्मिकता की शिक्षा पर यह स्थाई महत्व है (देखें पूर्ण संक्षिप्त लेख 4:10 में) ।

इस संदर्भ की (उदा. पद 20–33) अलौकिक रूप है कि प्रत्यक्ष गवाह मर चुके थे और उनकी संताने कहानी को बता रहे थे । इसलिए, शायद यह एक कर्मकाण्ड संबंधी नियम बन चुका था (उदा. जब आपके बच्चे पूछे ... आप कहना... निर्ग; 12:26, 27; 13:14–15; व्य. 6:20–25स यहोशू 4:6–7, 21–24) यह संभव है कि 6:20–24 कई पद्याशों में से एक है जो यहोवा के साथ इस्रायल विश्वास की यात्रा की चर्चा करता है, जो अब्राहम की बुलाहट से निर्गमन विजयी तक है (25:5–9; यहोशू 24:2–13; भ.स. 77; 78; 105; 136) ।

6:21 बलवंत हाथ से देखें संक्षिप्त लेख 4:34 में ।

6:22 यह मिस्र की दस महामारी की ओर संकेत कर रहा है महामारियों में से प्रत्येक महामारी, मिस्त्रियों की देवताओं में से एक के विरूद्ध एक न्याय था । स्पष्ट रूप से ये महामारियां लगभग 18 महीनों की अवधि पदार्थ की कुछ अंश संलग्न हुए थे । परमेश्वर उन्हें बहुत जल्द छुड़ा सकता था, लेकिन यह मेरा निजी विश्वास है कि वह मिस्र के लोगों के विश्वास को और साथ ही इब्रीयों के विश्वास को पैदा कर रहा था । मिश्रित भीड़ जिसने मिस्र को छोड़ा था, वहां कुछ मिस्र के विश्वासी लोग थे ।

6:24 यह, पद परमेश्वर की आज्ञाओं में आज्ञापालन करने से, इस्रायल के लाभों की प्रकटीकरण करता है (1) हमेशा उनकी भलाई के लिये और (बीडीबी 375 III पद 18) (2) एक सामान्य मनुष्य के जैसे उनके अतिजीवन के लिए बीडीबी 310, केबी 309, पायल अनिश्चित निर्माण) 4:1, 8:1; 30:16, 19) ।

❖

NASB, NKJV

TEV	**"हमेशा"**
NRSV	**"अंत तक"**
NJB	**"हमेशा के लिये"**

शब्दानुसार यह एक निर्माण सम्पूर्ण (बीडीबी 481) और दिवस (बीडीबी 398) का प्रयोग एक स्थिरता के लिए लक्षण के रूप में हुआ है (5:29, 28:33, उत, 6:5, भ.स. 52:1, देखें रोबर्ट बी. गर्डलेस्टोन, सीनोनिम्स ऑफ द ओल्डटेस्टामेंट, पृ. 316) ।

6:25 तो यह हमारे लिए धर्म ठहरेगा जैसे अब्राहम का अकेला विश्वास और आज्ञापालन के अधीन होना यहोवा के द्वारा एक धार्मिकता के रूप में स्वीकृत किया गया था, वैसा ही, इस्रायल के भाग पर वाचा की आज्ञापालन था (24:13) देखें विशेष विषय : धार्मिकता 1:16 में ।

यदि हम उसकी आज्ञा के अनुसार इन सारे नियमों के मानने में चौकसी करें ध्यान दें, इन वायदों के शर्तपूर्ण स्वभाव को दुहराया गया है :

(1) यदि हम चौकस है – बीडीबी 1036, केबी 1518, क्वेल अपूर्ण, 4:6, 9, 40, 5:1, 10, 12, 29, 32:6:2, 3, 17 (दुबारा)

(2) मानना – बीडीबी 793, केबी 889, क्वेल अनिश्चित 4:6, 5:1,15, 17, 27, 32, 6:1, 3, 18, 24, 25, देखें संक्षिप्त लेख 5:1 में ।

विवादपूर्ण प्रश्न –

ये विवादपूर्ण प्रश्न इस पुस्तक के इस भाग के मुख्य परिणाम को समझने की सहायता के रूप में दिया गया है । उनका अर्थ विचार उत्तेजक से है, न कि अन्तिम है ।

(1) कैसे अध्याय 6, दस आज्ञाओं से संबंधित है ?

(2) क्यों यहाँ पर इस प्रकार का महत्व वाचा के आज्ञापालन के लिए है ?

(3) व्य. 6:4–6 की क्या महत्वपूर्णता है और यह किस प्रकार से, अद्वैतवाद, विभिन्न देवताओं की पूज और हीनोथी स्म से संबंधित है ?

(4) एक विश्वासीमाता पिता की जिम्मेदारी उनके बच्चों के प्रति क्या है ?

(5) शब्दसाधन और बाइबल संबंधी शब्द धार्मिकता के प्रयोग की व्याख्या इसके पुराने नियम और नये नियम की केन्द्रितभूत से करो ।

*****

व्यवस्था विवरण 7

आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
चुने हुए लोग	कनान में जीवन	प्रभु के निजी लोग	लोगों से भिन्न इस्रायल
7:1-5	7:1-6	7:1-6	7:16
7:6-11			परमेश्वर का चुनाव और उसकी कृपादृष्टि
	7:7-11	7:7-11	7:7-11
आज्ञापालन की आशीषें		आज्ञापालन की आशीषें	
7:12-16	7:12-16	7:12-16	7:12-15
			7:16
			यहोवा की शक्ति
7:17-26	7:17-26	7:17-26	7:17-20
			7:21-24
			7:25-26

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB मूल ग्रन्थ 6:20-25

1. फिर जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में जिसके अधिकारी होने को तू जाने पर है पहुचाएँ और तेरे सामने से हित्ती, गिगीशी, एमोरी, कुनानी, परिज्ञी, हिब्बी और यबूसी नामक बहुत सी जातियों को अर्थात् तुम से बड़ी और सामर्थी सातों जातियों, को निकाल दें, 2. और तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे द्वारा हरा दे, और तू उन पर जय प्राप्त कर ले, तब उन्हें पूरी रीति से नष्ट कर डालना, उनसे न वाचा बाँधना, और न उन पर दया करना। 3. और न उनसे ब्याह-शादी करना, न तो अपनी बेटे उनके बेटे को ब्याह देना, और न उनकी बेटी को अपने बेटे के लिए ब्याह लेना। 4. क्योंकि वे तेरे बेटे को मेरे पीछे चलने से बहकायेंगी, और दूसरे देवताओं की उपासना करवाऐगी, और इस कारण यहोवा का कोप तुझ पर भड़क उठेगा और वह शीघ्र तेरा सत्यानाश कर डालेगा। 5 उन लोगों से ऐसा बर्ताव करना, कि उनकी वेदियों को ढा देना, उनकी लाठों को तोड़ डालना, उनकी अशेरा नामक मूर्तियों को काट काटकर गिरा देना, और उनकी खुदी हुई मूर्तियों को आग में जला देना।

7:1 हित्ती देखें विशेष विशय : कुनान के पूर्व–इस्रायली निवासी 1:4 में

❖ सातों जातियों बहुत सी जातियों की सूची 10, 7, 5, 3 या 1 में है (उदा, कुनानी और अमोरी) ।

7:1–5 कुनान के निवासी जातिय समूहों को इस्रायल के उत्तर में, अनेक क्रियाओं का प्रयोग आदेश के रूप में हुआ है :

(1) निकाल दें – पद 1, बीडीबी 675, केबी 730, क्वेल पूर्ण, शब्दानुसार इसका अर्थ छोड़ देना, 2 राजा 16:6, यहा, लाक्षणिक रूप से, नष्ट करना, पद:2.

(2) तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे द्वारा हरा दे – पद, 2, बीडीबी 678, केबी 733, क्वेल पूर्ण, पद 23, गिनती, 21:3, और 1 राजा 14:16 में परमेश्वर इस्रायल पर यही कर रहा है, उसके पाप के कारण ।

(3) तू उन पर जय प्राप्त कर ले – पद, 2 बीडीबी 355, केबी 353,हिफिल अनिश्चित सच में 2:34, 3:6 (दुबारा), 7:2 (दुबारा)

(4) पूरी रीति से नष्ट कर डालना – पद 2, बीडीबी 355, केबी 353, हिफिल अनिश्चित सच में 2:34, 3:6 (दुबारा), 7:2 (दुबारा)

(5) वाचा न बाँधना – पद 2, बीडीबी 503, केबी 500, क्वेल अपूर्ण, वाचा न तोड़ना निर्ग: 23:32, 34:12

(6) उन पर दया न कराना – पद, 2, बीडीबी 335, केबी 334, क्वेल अपूर्ण, पद, 16, 13:8.

(7) तुम ब्याह शादी न करना – पद 3, बीडीबी 368, केबी 364, हिथपेल अपूर्ण, शब्दानुसार दामाद मत बनना, उत. 34:9, यहोशू , 23:12

(8) तुम उनके वेदियों कोढ़ा देना – पद 5, बीडीबी 683, केबी 736, क्वेल अपूर्ण, 12:3, निर्ग, 34:13 (23:24), 2 राजा 23:12, 2 इति 31:1

(9) उनकी लाठों को तोड़ डालना – पद 5, बीडीबी 990, केबी 1402, पीयल पूर्ण, 2 राजा, 11:18 लिंग पूजन पत्थर, पुरूष उपज देने वाला देवता, बाल का चिन्ह है 2 इति.31:1.

(10) उनके अशेरा नामक मूर्तियों को काट–काटकर गिरा देना–पद, 5, बीडीबी, 54, केबी 180, पीयल अपूर्ण पद, 25, 12:3 2 इति, 14:3, 31:1, 34:4,7

11. उनकी खुदी हुई मूर्तियों को जला देना – पद 5, बीडीबी 976, केबी 1358, क्वेल अपूर्ण 1 इति. 14:12, मीका में 1:7, मूर्ति पूजा के झूठी विश्वास को जला दिया गया ।

7.2 पूरी रीति से उन्हे नष्ट कर दिया यह शब्द हेरेम है (बीडीबी 355, केबी 353 हिपिल अनिश्चित वास्तव में) इसका अर्थ है कि कुछ चीज विनाश होने के लिए परमेश्वर को समर्पित करना था । इस विषय के लिए नया नियम का शब्द कोर्बेन है । यह परमेश्वर के उपयोग के लिए, पवित्रता के विचार या कुछ चीज को दूर होने से संबंधित था । जबकि कुछ चीज अत्यधिक पवित्र था, इसका प्रयोग मानवप्राणी के द्वारा नहीं हो सकता था, उपयोग न करने की प्रतीती का एक ही तरीका नाश करना था । इसलिए, इस्रायलियों की सीमा के अंदर थे, जब उन्होने नगरों, को जीता पुरूषों और कई बार स्त्रियों, बच्चों और जानवरों को भी मारा था । वर्तमान में यह बहुत ही क्रूर दिखता है, लेकिन उन दिनों में यह एक सामान्य कार्य था । यहोशू 6 में यरीहो या यहोशू 10:28–35 में लकीश इसके लिए, एक अच्छा उदाहरण होंगे । उत. 15:16, गि. 33:55, यहोशू 23:13 कनानियों के पूर्ण विनाश के अध्यात्मवादी संबंधी कारण को निर्धारित करता है ।

❖ उनके साथ वाचा न बाँधना यहोशू:9 हमें एक ऐतिहासिक उदाहरण जो इस आज्ञा को रखने के लिए इस्रायलियों की पराजय को बताता है ।

❖ NASB "**उन पर कृपा मत करना**"
NKJV, "**उनके लिए दया न करना**"
NRSV "**उन पर दया न करना**"
TEV "**कोई दया उन पर मत करना**"
NJB "**उन पर कोई कृपा मत करना**"

अस्तित्व अस्वीकार किया हुआ, क्रिया (बीडीबी 3551, केबी 334, क्वेल अपूर्ण) का अर्थ दया दिखाना या कृपालु होना है । किन्तु इस्रायल के पास यह चुनाव नहीं है (पद 16, 19:13, 21, 25:12) । कृपा को बुराई के साथ भ्रष्ट कर देगा, कृपा क्षमा करेगा, जो यहोवा नहीं करना चाहता है ?

7:3 तू उनसे ब्याह–शादी न करना यहाँ पर थोड़ा भी, कुल संबंधी, गहरा रंग नहीं डाला गया है, यह धार्मिक कारणों के लिए था (निर्ग, 34:12–17) । एज्रा 10 और नहे. 13 में इसके अनुसार मुख्य पद्यांश है । परमेश्वर अपने लोगों से कभी नहीं चाहता था कि वे मूर्तिपूजरा करने वाले उनानियों से शादी करे, और वो मूर्तिपूजा, जो बाद में उनके हृदय को मुझसे दूर करे, और संसार में मेरे प्रकाशन के प्रकट होने को नष्ट करें ।

7.4 क्योंकि वे तेरे पुत्रों को मेरे पीछे चलने से बहकाऐंगी देखें निर्ग, 33:55, यहोशू 23:13. यहाँ, जहाँ पर एक व्यक्ति को शास्त्रोक्त यहुदी उत्पन्न करने के लिए माता को मुख्य होने का विचार आधुनिक यहुदी का है ।

7:5 ढा देना...तोड़ देना, काट-काटकर गिरा देना... जला देना देखें पूर्ण संक्षिप्त लेख 7:1-5.

❖ अशेरा KJV अनुवाद में वृक्षवाटिका है । यथार्थ अर्थ लकड़ी से बनी हुई एक देवी की मूर्ति (बीडीबी 81) । यह एक लकड़ी से बनी हुई खंभा थी जो बाल की उठी हुई पत्थर की खंभों के बाजू में गाढ़ा गया था, बाल उपजाऊ देने वाला देवता । अशेरा पत्नि थी और इस लकड़ी की बनी हुई खंभे के द्वारा प्रस्तुत की हुई थी । यह अनिश्चित है यदि वे जीवित वृक्ष या मूर्ति से बनी हुई लाठें थी ।

NASB मूल ग्रन्थ 6:20-25

6. क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा है, यहोवा ने पृथ्वी भर के सब लोगों में से तुझ को चुन लिया है कि तू उसकी प्रजा और निज धन ठहरे । 7. यहोवा ने जो तुम से स्नेह करके तुम को चुन लिया, इसका कारण यह नहीं था कि तुम गिनती में और सब लोगों से अधिक थे, किन्तु तुम तो सब देशों के लोगों से गिनती में थोड़े थे, 8 यहोवा ने जो तुम को बलवन्त हाथ के द्वारा दासत्व के घर में से और मिस्त्र के राजा फिरौन के हाथ से छुड़ाकर निकाल लिया, इसका यही कारण है कि वह तुम से प्रेम रखता है, और उस शपथ को भी पूरी करने चाहता है जो उसने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी । 9. इसलिए जान रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है, यह विश्वासयोग्य ईश्वर है, जो उससे प्रेम रखते और उसकी आज्ञा मानते हैं उनके साथ वह हजार पीढ़ी तक अपनी वाचा का पालन करता, और उन पर करूणा करता रहता है, 10 और जो उससे बैर रखते है वह उनके देखते उनसे बदला लेकर नष्ट कर डालता है, अपने बैरी के विषय वह विलम्ब न करेगा, उसके देखते उससे बदला लेगा । इसलिए इन आज्ञाओं, विधियों और नियमों को, जो मैं आज तुझे चिताता हूँ मानने में चौकसी करना ।

7.6 पवित्र प्रजा.... परमेश्वर ने तुम को चुन लिया, पुराने नियम का चुनाव (उदा. चुन लिया-बीडीबी 103, केबी 119, क्वेल पूर्ण) सेवा के लिए था, जो उद्धार को संलग्न हमेशा नहीं करती है (याशा 48:28, 45:1 में क्रूसू) । चुने हुए, मतलब पवित्रता के समान, यहोवा से उनके संबंध के लिए होना था जो उनके व्यक्तिगत ईश्वर भक्ति से बढ़कर था, जैसे नये नियम के विश्वासियों के लिए संता का प्रयोग हुआ है । परमेश्वर ने इस्रायल को चुना एक देश को चुनने के लिए और देश को चुना विश्व को चुनने के लिए (निर्ग. 19:5-6) । परमेश्वर

एक पवित्र लोगों को चाहता है (बीडीबी 872) ताकि उसके चरित्र और इच्छा को संसार के लोगों को वह दिखाने पाएँ, और वे जानने पाएँ । किन्तु, यहाँ तक इस देश के अंदर भी, यह हमेशा प्रत्येक व्यक्ति के विश्वास का कार्य था जो एक व्यक्ति को परमेश्वर के साथ सच्चा बनाती है, न कि सिर्फ वाचा के संघ का भाग होने के द्वारा बनाती है (यहेजेकु.18) वाचा का संघ, एक-एक व्यक्ति के द्वारा बनाया गया था, जिन्होने स्वयं को, विश्वास के द्वारा परमेश्वर की व्यवस्था के लिए समर्पित किया था । इसे यहुदियों से अधिक ज्यादा लोगों के द्वारा बनाया गया था, इनके बीच में अजनबी अधिक थे, और विदेशी उनके देश में, और दूसरे देश के गुलामों को अनुग्रह रूप से स्वीकृत और वाचा के चुनाव में भागी होने के लिए अनुमति प्रदान की गई थी । (निर्ग. 12:38) ।

❖

NASB	**"निज धन"**
NKJV, NASB फुटनोट	**"एक विशेष खजाना"**
NRSV, NIV	**"एक विशेष खजाना"**
TEV	-
NJB	**"उसके बहुमूल्य लोग"**
JPSOA, REB	**"विशेष धन"**
NET Bible	**"आदर किया हुआ"**

यथाशब्द यह, निज लोग ठहरना (बीडीबी 766-1 और 688, निर्ग. 19:5) या एक उत्तम खजाना है । इस शब्द का मतलब मूल्य स्थिर किया हुआ धन है जो परमेश्वर के वाचा के लोगों के लिए आलंकारिक रूप में प्रयोग हुआ है (7:6, 14:2, 26:18, भ.स. 135:4, तितुस. 2:14, । पत. 2:9) । शायद आप हम कह सकते हैं कि इस्रायल यहोवा का मुकुट रत्न है (उदा. ज्ञान और प्रकाशन को सभी देशों में फैलाने के लिए) । देखें विशेष विषय : बाँब का एवेजेंलिकल बाइसेस 4:6 में ।

7.7 यहोवा ने जो तुम से स्नेह करके तुम को चुन लिया, इसका कारण यह नहीं था कि तुम गिनती में और सब देश के लोगों से अधिक थे, किन्तु तुम तो सब देखों के लोगों से गिनती में थोड़े थे, महत्वपूर्ण क्रिया (बीडीबी 365-1, केबी 362, क्वेल पूर्ण) का अर्थ एक साथ दबाना या बाँधना 10:15 (प्रेम के लिए विभिन्न शब्द (पद, 8), किन्तु समान सच्चाई 4:37 में) और संभवत: याशा, 38:17 है । इच्छा के लिए उत. 34:8, व्य. 21:11 में क्रिया का प्रयोग हुआ है) ।

यह पद, अविवाहित, दया, अनुग्रह परमेश्वर के प्रेम में अयोग्य होने के दबाव देकर बोलता है !

देखें विशेष विषय – 9:4–6 में इस्रायल पर यहोवा के अनुग्रह के कार्य । वास्तविकता में, इस्रालय प्रेम के योग्य नही था, क्योंकि उसके नंगे हठीलेपन के कारण से अयोग्य था (9:6, 13, 31:27) । परमेश्वर के अनुग्रह को स्पष्ट रूप से इस्रायल के विद्रोह के कारण दिखाया गया है ।

7:8 यही कारण है कि वह तुमसे प्रेम रखता है पुराना नियम कई बार जोर देता है कि परमेश्वर उनके पूर्वजों, अब्राहम, इसहाक, और याकूब से किये गये वायदों को पूरा करेगा (उत. 12, 15, 18, 26, 28) । लेकिन यहाँ परमेश्वर दिखाता है कि उसने पूरा किया क्योंकि वह इस पीढ़ी से भी प्रेम रखता है ।

तुम्हें बाहर निकाला क्रिया (बीडीबी 422, केबी 425, हिलफिल पूर्ण) बहुत ही सामान्य और कई विचारों में प्रयोग हुआ है (व्यवस्थाववरण के कुछ उदाहरण) :

1. मूलार्थ

अ. युद्ध के लिए एक एक सैन्यदल आया 1:44, 2:32, 3:1, 20:1, 10, 24:5, 29:7

ब. जल की सोते का पानी 8:7

स. न भूलना 9:7, 16:3, 6

द. खेत की उपज 14:22, 28:38

छ. बन्धक की वस्तु 24:11

2. लाक्षणिक

अ. छुटकारे के सदृश 1:27, 4:20, 5:6, 15 इत्यादि ।

ब. प्रारंभ करने का स्थान 2:23

स. छुटकारे के सदृश 7:8

द. बदनाम या बुरा नाम 22:14

ध. ब्याह में देना 22:19; 24:2

प. दैनिक जीवन 28:6, 19; 33:18

फ. अनुवाई 31:2

सिर्फ संदर्भ ही उचित अर्थ को समझा सकता है । यही सभी शब्दों की सच्चाई है ।

❖ छुड़ायें हुए इस क्रिया (बीडीबी 804, केबी 911, क्वेल अपूर्ण) का अर्थ एक दाम देकर खरीदना है । इसका प्रयोग खरीदने या दाम देकर लेने के लिए हुआ है
(1) पहिलौठा (निर्ग. 13:1-22; गि. 18:15-17) औरलेवी (गि. 3:44-41) या (2) एक दास (15:15;24:18; उदा. इस्रायल)

विशेष विषय : मुक्ति/धन देकर छुड़ाना

(I) पुराना नियम :

(क) मुख्य रूप से इब्रानी में दो शास्त्रोक्त शब्द है जो इस अभिप्राय को बताते है :

(1) गाल, जिसका मुख्य रूप से अर्थ मुक्त करना मतलब एक दाम को चुकाने के द्वारा है । गोयल शब्द का एक रूप, एक निजी मध्यस्थता करने वाला, सामानय रूप से एक परिवार के सदस्य के अभिप्राय को जोड़ता है (उदा. छुटकारा देने वाला संबंधी पुरूष) । वस्तुओं, जानवरों, खेतों (लैव्य 25, 27) या संबंधियों (रूत 4:15; याशा; 29:22) को पुन: खरीदने के इस सभ्यता रूप के अधिकार को अध्यात्मिक रूप से इस्रायल को मिस्र में से यहोवा के द्वारा छुटकारे में परिवर्तित किया गया है (निर्ग. 6:6; 15:13; भ.स. 74:2; 77:15; यिर्म 31:11) वह छुटकारा देने वाला होता है । (अय्यु. 19:25; भ.स. 19:14; 78:35; नीति 23:1; याशा 41:14; 43:14; 44:6, 24:47:4; 48:17, 49:7, 26;54; 5,8; 59:20; 60:16; 63:16; यिर्म. 50:34) ।

(2) पदाह, मूल रूप में जिसका अर्थ छोड़ना या मुक्त करना है ।
- (अ) पहिलौठे के प्रायश्चित द्वारा पाप से मुक्ति (निर्ग. 13:13-14, गि. 18:15-17
- (ब) शारीरिक मुक्ति को, आत्मिक मुक्ति से भेद दिखलाया गया है । भ.स. 49:7,8,15
- (स) इस्रायल को यहोवा पाप और विद्रोह में से छुड़ायेगा । भ.स. 130:7-8

(ब) अत्यात्मवादी संबंधी विषय, इससे संबंधित तीन रूपों को संलग्न करता है -
- (1) जहां एक जरूरत, बंधु आई, दण्ड कारागार है ।
- (अ) शारीरिक
- (ब) सामाजिक
- (स) आत्मिक (भ.स. 130:8)

(2) छुटकारा, आजादी और संग्रहण के लिए एक दाम चुकाना अवश्य है :
- (अ) इस्रायल, देश के लिए (व्य. 7:8)
- (ब) प्रत्येक व्यक्ति के लिये (अय्यु. 19:25-27; 33:28)

(3) किसी व्यक्ति को, दाता और मध्यस्थ के रूप में कार्य करना है । बाल में मुख्य रूप से यह एक परिवार का सदस्य या निकट संबंधी (उदा. गोयल) है ।

(4) यहोवा स्वयं को प्रय: पारिवारिक शब्दों में व्यक्त करता है :

(अ) पिता

(ब) पति

(स) निकट संगी

यहोवा के निजी कर्म स्थान को सुरक्षित रखा गया है; एक दाम चुकाया गया और मुक्ति को प्राप्त किया गया है ।

(II) नया नियम

(अ) अध्यात्म विद्या संबंधी विषय को यहां पर, विभिन्न शब्दों का प्रयोग बताने के लिए हुआ है।

(1) अंगोराजो (1 कुरि. 6:20; 7:23; II पत 2:1; प्रका. 5:9; 14:34) । यह एक व्यापारिक शब्द है जो कि एक किसी वस्तु के लिए दाम चुकाने की प्रतिबिंब डालती है । हम एक लहू से खरीदे हुए लोगा है जो हमारे स्वयं के जीवन को नियंत्रण नहीं पाते है । हम मसीह के है ।

(2) एक्सागोराजो (गल 3:13; 4:5, इफि 5:16, कुलु. 5:5) । यह भी एक व्यापारिक शब्द है । यह हमारे स्थान पर यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा पूर्ति पर प्रतिबिंब डालती है । व्यवस्था पर आधारित श्राम के कार्य को यीशु ने उठाया, (उदा. मूसा की व्यवस्था), जिसे पापी मानव खत्म नहीं कर सकता था । उसने हम सभी के श्राम को अपने ऊपर लिया (व्य. 21:23) । पूरी क्षमा, स्वीकृति और पहुच में , परमेश्वर का न्याय, प्रेम यीशु मसीह में मिल गया ।

(3) लुओ "मुक्त करना"

(अ) लूट्रोन, एक दाम चुकाया गया (मती 20:28; मर. 10:45) यीशु के मुख से कहे गये ये सामर्थी वचने, उसके आने का उद्देश्य, जो इस संसार का उद्धारकर्ता बनाने के लिए, एक पाप के कर्ज को चुकाने पर भी वह ऋणी नहीं हुआ (यहु. 1:29)

(ब) लहू "छोड़ देना"

(1) इस्रायल को मुक्त करना, लूका. 24:21

(2) स्वयं को मुक्ति और लोगों को शुद्ध करने के लिए देना, तितु. 2:14

(3) एक पापरहित प्रतिनिधि होना 1 पत. 1:18-19

(स) लूट्रोसि, "मुक्ति छुटकारा या आजादी"

(1) जकर्याह की भविष्यवाणी यीशु के विषय में लूका 1:68

(2) यीशु के लिए, परमेश्वर को हन्ना की स्तुति लूका 2:38

(3) यीशु का उत्तम बलिदान एक बार चढ़ाया गया, इब्रा 9:12

(द) अपोलीट्रोसिस

(अ) द्वितीय आगमन पर मुक्ति (प्रे.का. 3:19-21)

(1) लूका : 21:28 (3) इफि. 1:14; 4:30

(2) रोमि: 8:23 (4) इब्रा. 9:15

(ब) यीशु मसीह की मृत्यु से मुक्ति

(1) रोमि 3:24 (3) इफि. 1:27

(2) I कुरि. 1:30 (4) कुलि. 1:14

(5) एण्टिलिट्रोन (I तिमु. 2:6) यह एक प्रामाणिक मूल ग्रंथ है (जैसे तितुस. 2:14 है) जो यीशु की क्रूस पर दूसरे के बदले में हुई मृत्यु पर मुक्ति पाने वाले को जोड़ता है। वह एक और सिर्फ एक ही स्वीकृत किया हुआ बलिदान है; वह अकेला जो सभी के लिये मरता है (यहु. 1:29; 3:16-17; 4:42; I तिमु. 2:4; 4:10; तितु 2:11; II पत, 3:9; यहु. 2:2, 4:14)

(ब) अध्यात्म विधा संबंधी विषय को नये नियम में संकेत करता है -

(1) मानव जाति पाप के दास है (यहु. 8:34; रोमि 3:10-18; 6:23)

(2) पुराने नियम में मूसा की व्यवस्था के द्वारा (गल.3) और यीशु के पहाड़ी के द्वारा मानव जाति पाप का दास है इस बात को प्रकट किया गया है। (मत्ती 5.7) मानव कार्य एक मृत्यु की घोषणा बन चुका है (कुलु. 2:14)।

(3) यीशु, परमेश्वर का पापरहित मेमना, आया और हमारे स्थान में मरा (यहु. 1:29; II कुरि. 5:21) हमें पाप से सोल देकर खरीदा गया है इसलिए हम परमेश्वर की सेवा कर सकें (रोमि 6)

(4) यहोवा और यीशु दोनों लपेट के द्वारा संगी है जिन्होने हमारे स्थान पर कार्य किया। यह निरंतर एक पारिवारिक लक्षण है (उदा. पिता, पति पुत्र, भाई, निकट संगी)।

(5) मुक्ति, शैतान को दाम चुकाकर नहीं था (उदा. मध्यवर्ती सिद्धांत) लेकिन परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के न्याय का समझौता, परमेश्वर के प्रेम और मसीह में पूर्ण प्रयोजन के साथ था। क्रूस पर शांति का संग्रहित किया गया था, मानव जाति के पाप क्षमा किये गये, परमेश्वर का स्वरूप अब पूर्ण रूप से मानव जाति में दुबारा एक घनिष्ठ संगति से कार्यरत हुआ।

(6) अब तक यहां एक मुक्ति का भविष्य रूप है (रोमि 8:23; इफि. 1:14; 4:30) जो हमारे पुनरत्थान शरीरों और त्रिय परमेश्वर से शारीरिक घनिष्टताको संलग्न करता है।

7:9 जान रख, देखें पूर्ण संक्षिप्त लेख 4:35 में।

❖ ध्यान दें, कि इस्रायली लोगों, परमेश्वर के बारे में क्या जानना था (बीडीबी 393, केबी 390, क्वेल पूर्ण) :

(1) प्रभु तुम्हारा परमेश्वर, वह परमेश्वर है – सभी संज्ञाए, 4:35, 39, एलोहिम के सामने यथा के साथ ।

(2) विश्वसनीय परमेश्वर – बीडीबी 52, निफाल कृदन्त, याशा 49:7 । यह एक प्रधान अध्यात्मविधा संबंधी निश्चितता है (का.स. 89) । इसकी व्याख्या अगले दो भागों के द्वारा हुई है ।

(3) जो उसकी वाचा कोरखते है – क्रिया बीडीबी 1036, केबी 1581, क्वेल क्रिया कृदन्त, पद. 12; उत: 28;15, 20;यहोशू : 24:17; भ.स. 146:6

(4) और उसकी करूणा – संज्ञा बीडीबी 338, पद 9, 12; I राजा; 8:23; II इति; 6:14; नहे. 1:5, 9:32; दानि 9:4

इसके प्रकाशन से उन्हें जानना था :

(1) उससे प्रेम करें, पद 9, बीडीबी 12, केबी 17, क्वेल क्रिया कृदन्त (6:5; 7:13; 11:1, 13: 22:13:3) छेखें पूर्ण संक्षिप्त लेख 5:10 में ।

(2) उसकी आज्ञा मानें, पद 9, बीडीबी1036; केबी 1581, क्वेल क्रिया कृदन्त, दें पूर्ण संक्षिप्त लेख 5:1 में ।

ध्यान दें, परमेश्वर की विश्वासयोग्यता में और इस्रायल की विश्वास योग्यता के बीच की तुल्यता पर । यहोवा के साथ, एक प्रेमी, आज्ञाकारी नीजी संबंध ने, हमारों पीढ़ी के लिए आशीष को यहोवा ने बहाया है । बड़ी प्रचुरता के लिए, हजार एक लक्षण है, हमेशा शब्दानुसार नहीं (भ.स. 90:4; पृ का. 20:2, 3, 4, 7) देखें लेख 5:9 में ।

7:10-11 ध्यान दें, जो यहावों को घृणा करते है उसके लिए यहोवा का उत्तर –

बीडीबी 971, केबी 1338, क्वेल क्रिया कृदन्त 5:9,निर्ग. 20:5; गि. 10:5; II इति, 19:2 भ.स. 68:1; 81:15; 139;21:

(1) उन्हें नाश करता है – बीडीबी 1, केबी 2, हिलफिल अनिशिच निर्माण ।

(2) उनके देखते उनसे बदला लेता है – बीडीबी, 1022, केबी 1532,पीयल अपूर्ण, मतलब, बदला, प्रतिकार यिर्म 51:24

7:11 आज्ञाओं, विधियों और नियमों देखें विशेष विषय 4:1 में ।

NASB मूल ग्रन्थ 7:12-16

और तुम जो इन नियमों को सुनकर मानोगें और इन पर चलोगे, तेरा परमेश्वर यहोवा भी उस करूणामय वाला का पालन करेगा, जिसे उसने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बांधी थी, और वह तुझ से प्रेम रखेगा और तुझे आशीष देगा, और गिनती में बढ़ायेगा, और जो देश उसने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर तुझे देने को कहां है उसमें वहतेरी संतान पर और अन्न, नये दाखमधु, और टटके तेल आदि भूमि की उपज पर आशीषदिया करेगा, और तेरी गाय बैल और भेड़ बकरियों की बढ़ती करेगा । तू सब देशों के लोगों से अधिक धन्यहोगा तेरे बीच में न पुरूष न स्त्री निर्वंश होगी, और तेरे पशुओं में भी ऐसा कोई न होगा । और यहोवा तुझ से सब प्रकार के रोग दूर करेगा; और मिस्र की बुरी-बुरी व्याधियां जिन्हें तू जानता है उसमें से किसी को भी तुझे लगने न देगा, ये सब तेरे बैरियों ही को लेगें । और देश-देश के जितने लोगों को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे वश में कर देगा, तू उन सभों का सत्यानाश करना, उन पर तरस की दृष्टि न करना, और उन उनके देवताओं की उपासना करना, नहीं तो तू फंदे में फंस जायेगा ।

7:12 परस्पर संबंध को ध्यान दें (उदा. परस्पर वाचा की जिम्मेदारियां) । ध्यान दें कि उसकी वाचा और उसकी करूणामय दोनों समानांतर है ।

7:13-15 ध्यान में रखें, यहोवा के वाचा की आशीषे :

(1) तुम्हें प्रेम करें (2) तुम्हें आशीष दे (3) तुम्हें बढ़ाये (4) तुम्हारे संतानों को अशीष दें (5) तुम्हारे खेतों में अशीष दें (अ) अनाज (ब) नयी दाखमधु (स) तेल (6) तुम्हारे भेड-बकरियों को आशीष दें (7) बांझपन नहीं होगा (निर्ग; 23:26) (अ) मनुष्य (उत. 11:30; 16:1;25:21; 29:31) (ब) जानवर (28:4;30:9) (8) कोई बीमारी नहीं (कदाचित शब्द का यहां पर सिर्फ प्रयोग हुआ है और 28:10) (9) तुम्हारे शत्रुओं को हटाए

ये प्रचुर आशीषें (निर्ग. 23:25-26) को स्पष्ट रूप में, व्य. 28 में भी किया गया है, लेकिन वे अनाज्ञाकारिता के परिणामों के द्वारा घिरे हुए है (व्य. 27 और 28: 15-58) । मूसा के वाचा की शर्तपूर्ण स्वभाव स्पष्ट है । इस्रायल के इतिहास की बाकि चीजों को व्य. 27-29 के प्रकाश में समझा जा सकता है ।

परमेश्वर के वायदे, और आशीषे, सिर्फ एक विश्वसनीय, भरोसमंद, आज्ञाकारी इस्रायल के लिए मौजूद है । इस्रायल कभी भी इस कार्य की तुल्यता, को सभांलने के योग्य नहीं था, इसी रीति से, एक नयी वाचा की आवश्यकता (यिर्म 31:31-34; यहे. 36:2-28; गल.3) जो यहोवा के कार्यों पर आधारित है ।

यीशु मसीह के पीछे चलने वाले सभी पुराने नियम के प्रेमी, अंतिम समय में जागृति होने की आशा और प्रार्थना करते है (रोमि. 9-11) लेकिन स्पष्ट रूप से यह निर्धारित होना जरूरी है कि बिना यीशु मसीह के वहां पर कोई वाचा की वाचा की आशा नहीं है। (यहु. 14:6; 1:12; 8:16; 20:31)।

7:16 फन्दे में फसना, कनानियों के देवताओं को पूर्ण रीति से हटाना अवश्य है ऐसा न हो कि फन्दे में फंस जाये (बीडीबी 430, निर्ग; 23:33; गि. 33:55; यहो. 23:13; न्या. 2:3; 8:27, भ.स. 106:36, शब्दानुसार रूप से जो चारा देकरएक जानवर को फसांना है।

NASB मूल ग्रन्थ 7:17-26

यदि तू अपने मन से सोचें कि वे जातियां जो मुझसे अधिक है; मैं उनको कैसे देश से निकला सकूंगा ? तो भी उनसे न डरना, जो कुछ तेरे परमेश्वर यहोवा ने फिरौन से और सारे मिस्र से किया उसे भली भांति स्मरण रखना। जो बड़े-बड़े परीक्षा के काम तू ने अपनी आंखों से देखे, और जिन चिन्हों और चमत्कारों औरजिस बलवंत हाथ, और बड़ी हुई भुजा के द्वारा तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको निकाल लाया, उनके अनुसार तेरा परमेश्वर यहोवा उन सब लोगों से भी जिनसे तू डरता है करेगा। इससे अधिक तेरा परमेश्वर उनके बीच भी भेजेगा, यहां तक कि उनमें से बचकर छिपगें वे भी तेरे सामने से नष्ट हो जायेगें। उनसे भय न खाना, क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है और वह महान और भययोग्य ईश्वर है। तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को धीरे-धीरे तेरे सामने से निकाल देगा, तोतू एकदम से उनका अंत करेगा, नहीं तो बनैले पशु बढ़कर तेरी हानि करेगें। तो भी तेरा परमेश्वर यहोवा उनको तुझसे हटायेगा, और जब तक वे नष्ट न हो जाएं तब एक उनको अति व्याकुल करता रहेगा। और वह उनके राजाओं को तेरे हाथ में करेगा और तु उनका भी नाम धरती पर से मिटा डालेगा; उनमें से कोई भी तेरे सामने खड़ा न सकेगा,और अंत में तू उनका सत्यानाश कर डालेगा। उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्तियाँ तुम आग में जलादेना, जो चांदी या सोना उन पर मढ़ा हो उसका लालच करके न लेना, नहीं तो तू उसके कारण फंदे में फसेगा, क्योंकि ऐसी वस्तुएं तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित है। और कोई घृषित वस्तु अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु ठहरेगा,उसे सत्यानाश की वस्तु जानकार उनसे घृणा करना और उसे कदापि न चाहना, क्योंकि वह अशुद्ध वस्तु है।

7:17 यदि तू अपने में सोचे - यह एक इब्रानी मुहावरा है जो, यदि तू अपने में सोचे या संदेह रखे, के लिए है (पद 21;9:23; भ.स. 95:8)। इस वाक्यखण्ड की पूरी केन्द्र इस्रायल को उत्साहित करने के लिए है :

(1) मिस्र के खिलाफ यहोवा के कार्य (उदा. महामारी) पद 18–21

(2) कनान के खिलाफ यहोवा का वायदा किया हुआकार्य (उदा. बर्रे की जाति का एक कीड़ा हड्डा) पद 20–24

7:18 तू भली–भांति स्मरण रखना, यह क्रिया (बीडीबी 269, केबी 269, क्वेल अनिश्चित वास्तिविक और क्वेल अपूर्ण) का प्रयोग विश्वासियों को पीछे देखकर, परमेश्वर के वर्तमानहाथ को देखेन पर महत्व देता है (5:15 (दो बार) 8:18; 9:7, 27; 15:15; 16:3;12 : 24; 9, 18, 22;25:17; 32:7) । जिस प्रकार वह पहेल था, वैसे ही वह होगा (उनके लिए जो उसने प्रेम रखते और उसकी आज्ञा को मानते है) । यहोवा ने इतिहास में उसके लोगों के लिए इच्छा कार्य और कार्यों को भी किया है ।

7:19 मिस्र में यहोवा के छुडौती कार्य की व्याख्या करने के लिए इस वचन को ध्यान दे :

(1) महान क्लेश बीडीबी 152 और 650 II, 4:34;29:3) इसी मूल (III) का प्रयोग इस्रायल के लिए, यहोवा को जंगल परिभ्रमण अवधि के दौरान परखने के लिए हुआ है, (6:16; 9:22) ।

(2) चिन्ह बीडी 16, 4:34, 7:19; 26:8; 20:2;34:11; भ.स. 28:43; 105:27; 135:9

(3) चमत्कार बीडीबी 68, 4:34, 6:22; 7:19; 26:8;34:11; भ.स. 78:43; 105:27; 135:9

(4) बलवन्त हाथ बीडीबी 305, और 388, 4:34; 5:15; 6:21; 7:8, 19; 9:26; 11:2; 26:8; 34:12, देखें पूर्ण लेख 4:34

(5) बढ़ाई हुई भुजा बीडीबी 283 और 639 (क्वेल निष्क्रिय कृदन्त) 4:34; 5:15; 7:19 9:29;11:2;26:8

मैंने सिर्फ व्य. में सामानांतर दिखाया है । वे निर्ग. में भी प्रकट होते है । यहोवा की छुड़ौती कार्य इस्रायल के लिए एक महान आशा है । अब्राहम से किये हुए वायदें का वे पूर्णता है (उत. 15:12–21) वे राष्ट्रीय वाचा की उदघाटन है ।

7:20 परमेश्वर बर्रे भेजेगा, बर्रे के लिए दो अर्थ संभवपूर्ण है (बीडीबी 864) : या तो यह लाक्षणिक है (व्य; 1:44,जोएक सैन्य दल को एक मधुमक्खी के झुण्ड के रूप में दिखाता है) या (2) शब्दानुसार (निर्ग. 23:28; यहोशू 24:12, यहां पर परमेश्वर ने विदेशी सैनिक दालों को हटाने के लिए बर्रे को भेजा । परमेश्वर उसके लोगों को दिखाता है कि वह उनके स्थान पर लड़ रहा है ।

7:21 तू उनसे भय न खाना इस क्रिय (बीडीबी 791, केबी 888, क्रेल अपूर्ण) को अनेकों बार दुहराया गया है 1:29; 7:21; 20:3; 31:6; यहोशू 1:9) ।

❖ **तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, यह एक अदभुत सच है । अति श्रेष्ठ परमेश्वर, पवित्र, उसके लोगों के साथ निवास करता है (निर्ग. 29:45; गि. 5:3;35:34) इसका टी अर्थ इम्मानुयल है (याशा; 7:14; 8:8, 10) ।**

❖ **महान और भययोग्य परमेश्वर, इस पद्यांश की रचना हुई है :**

(1) विशेषण – महान बीडीबी पर

(2) निफापल कृदन्त – भयानक बीडीबी 431, केबी 432

यहोवा की इस व्याया (निफाल रूपों का प्रयोग) को 10:17, नहे. 1:5; 4:14; 9:32;दानि, 9:4 में भी पाया गया है ।

7:22 इस पद में परमेश्वर की शक्ति (उदा. स्पष्ट दूर करना बीडी 675, केबी 730, क्वेल पूर्ण) और मानव स्थिरता के बीच तुल्यता को दिखाता है :

(1) तू एकदम से उनका अंत न कर सकेगा ।

(2) ऐसा न हो कि बनैले पशु बढ़कर तेरी हानि करें ।

7:23 परमेश्वर के कार्यो की व्याख्या इस प्रकार से की गयी है :

(1) तेरा परमेश्वर यहोवा उनके बीच बर्रे भेजेगा, पद 20

(2) तेरा परमेश्वर यहोवा..... उनको अति व्याकुल करता रहेगा पद 23 (संज्ञा और क्रिया है, एक ही मूल से) पद 23, निर्ग 23:27 (यह पवित्र युद्ध की शब्दकोष है)

(3) वह उनके राजाओं को तेरे हाथ में करेगा, पद;24

7:24 उनमं से कोई भी तेरे सामने खड़ा न सकेगा, यह सैनिक दल सम्मुख आगमन के लिए एक इब्रानी मुहावरा है (उदा. दो सैनिक दल, 11:25; यहोशू 1:5; 10:28, 23:9) ।

❖ **तू उनका नाम धरती पर से मिटा डालेगा इस क्रिया (बीडीबी 1, केबी 2,हिलफिल पूर्ण) यहां पर, पूर्णता और पूर्ण विनाश और मृत्यु की मुहावरा में यहां प्रयोग किया हुआ है, इसलिए वहां कोई संतान नहीं है (उदा. पवित्र युद्ध)**

7:25–26 ये आयतें व्याख्या करती है कि किस प्रकार कनानियों के मूर्तियों को इस्रायल को बर्ताव करना था (उदा. खुदी हुई मूर्तियाँ, बीडीबी 820 निर्माण 43; देखें पूर्ण संक्षिप्त लेख 12:3) :

(1) आग से जलाना (बीडीबी 976, केबी 1358, क्वेल अपूर्ण; पद 5, 25, 12:3

(2) सोने औरयांदी का लालच न करना

(अ) अपने घर में न ले आना, पद 25, 26

(ब) नहीं तो तू उसके कारण फंदे में फसेगा (बीडीब 430)

(स) यह घृणित है (बीडीबी 1072, 12:3)

(द) उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु ठहरेगा उदा. घृणित वस्तु बीडीबी214

(इ) तू उसे घृणा करना बीडीबी 1055,क्रिया और संज्ञा दोनों) कदापि न चाहना (बीडीबी 1073)

7:26 समर्पित वस्तुएँ यह हेरेम शब्द से संबंधित है, जिसका अर्थ पूर्ण विनाश के लिये परमेश्वर को समर्पित किया गया है । सामान्यरूप से इसका अनुवाद नष्ट हो जाने में हुआ है । एक वस्तु के नाश होने का किसी लौकिक प्रयोग से इसे अपवित्र करने के लिए है, इसलिए, यह पूर्ण रूप से नष्ट किया हुआ था ।

विवादपूर्ण प्रश्न

1. क्यों परमेश्वर एक जाति के देश को लेकर दूसरे जाति को इसे दे रहा था ?
2. क्या बाईबल कहता है, परस्पर कुल शादियों के लिए नहीं ?
3. इसका मतलब क्या है कि परमेश्वर ने इस्रायल को एक विशेष लोगों के रूप में चुना ?

*****

व्यवस्था विवरण 8

आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
तेरे परमेश्वर यहोवा को स्मरण रख	घमंड और अपनी योग्यता पर विश्वास करने पर परीक्षा	एक अच्छे देश में अधिकार करना है	जंगल में कठोर परीक्षा
8:1-10	8:1-10	8:1-10	8:1-4
			8:5-6
			वायदे कादेश और इसकी परीक्षा
		परमेश्वर को भूलने के विरूद्ध में चेतावनी	8:7-10
8:11-20	8:11-20	8:11-20	8:11-16
			8:17-20

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB मूल ग्रन्थ 8:1-10

जो जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं उन सभों पर चलने की चौकसी करना, इसलिए कि तुम जीवित रहो और बढ़ते रहो,और जिस देश के विषय में यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई उसमें जाकर उसके अधिकारी हो जाओ । और स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से इसलिए ले आया है, कि वह मुझे नम्र बनाए, और परीक्षाकरके यह जानले कि तेरे मन में क्या है, और क्या तू उसकी आज्ञा का पालन करेगा या नहीं । उसने तुझको नम्र बनाया और भूखा भी होने दिया, फिर वह मन्ना, जिसे न तू और न तेरे पुरखा ही जानते थे, वही तुझको खिलाया; इसलिए कि वह तुझको सिखाए कि मनुष्य केवल रौटी ही से नहीं परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुंह से निकलते है, उन्हीं से वह जीवित रहता है । इन चालीस वर्षों में तेरे वस्तु पुराने नहीं हुए और तेरे तन से भी न गिरें,

और न तेरे पांव फूले । फिर अपने मन में यह तो विचार कर, कि जैसा कोई अपने बेरे को ताड़ना देता है वैसाही तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को ताड़ना देता है । इसलिए अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन करते हुए उसके मार्गों पर चलना, और उसका भय मानते रहना । क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को ताड़ना देता है । इसलिए अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन करते हुए उसके हुए उसके मार्गों पर चलना, और उसका भय मानते रहना। क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे एक उत्तम देश में लिये जा रहा है, जो जल की नदियों का और तराइयों और पहाड़ों से निकले हुए गहिरे गहिरे स्रोतों का देश है ।फिर वह गेंहू,जौ दाखलताओं,अर्जीरो और अनारों का देश है; और तेलवाले जैतून और मधु का भी देश है । उस देश में अन्न की महंगी न होगी और न उसमें तुझे किसी पदार्थ की घटी होगी, वहां के पत्थर लोहे के है; और वहां के पहाड़ों में से तू तांबा खोदकर निकाल सकेगा । और तू पेट भर खाएगा, और उस उत्तम देश के कारण जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देगा उसे धन्य मानेगा ।

8:1 जो जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं, ध्यान दें संज्ञा (बीडीबी 836, देखें विशेष विषय 4:1 में) और क्रिया (बीडीबी 845, केबी 1010, पीयत कृदन्त) संबंधी है (एक ही मूल से) ।

❖ उन सभों पर चलने की चौकसी करना, इस क्रिया (बीडीबी 1036,केबी1581, क्वेल देखें 6:12) का प्रयोग कई बार व्य. में हुआ है (क्वेल, 4:2, 6,9,40;5:1,10, 12, 29,32; 6:2,3, 17 (दोबारा) 25, 7:8,9,11,12 (दुबारा); 8:1,2,6,11:10:13, 11:1,8,22 (दुबारा) 32;निफाल 2:4;4:9, 15,23; 6:12, 8:11, 11:16) । यह पद दिखाताहै कि एक प्रेमी वाचा के संबंध और आज्ञापालन, परमेश्वर की रीति है, मानवजाति को आशीष देने के लिए और उसके वायदे को पूरा करने के लिए भी है (पद; 2;6, 16, 18; 4:1) ।

❖ उस देश के अधिकारी हो जाओ, देखें, नीचे दिये गये विशेष विषय में ।

विषेष विषय : देश का अधिकारी होना

इस क्रिया (बीडीबी 349, केबी 441, क्वेल पूर्ण) का प्रयोग बार-बार इनके संबंध में हुआ :

(1) पूर्वजों से यहोवा का वायदा/प्रतिज्ञा (1:8; 10:11)

(2) इस्रायल इन वायदों पर कार्य करता है और देश में आक्रमण कर रहा है (2:24; 8:18-20)

(3) यह निफ भाग की समानान्तर है (3:28)

(4) इस्रायल को वाचा की आज्ञा मानना अवश्य था ताकि उसी प्रकार से देश के अधिकार को निर्धारित करने पाएँ (4:1,5, 14; 6:1; 8:1; 11:8-9, 26-32)

8:2 स्मरण रख क्रिया (बीडीबी 269, केबी 269, क्वेल पूर्ण; 5:15; 7:18 (दुबारा) 8:2, 18; 9:7, 27; 15:15, 16:3, 12;24:9, 18, 22; 25:17; 32:7) स्मरण रख का प्रयोग पुराने नियम में दो प्रकार से हुआ है । परमेश्वर के कार्यों और उसकी व्यवस्थाओं को स्मरण रखने केलिए, मानव जाति से मांग, की यह वाचा है । परमेश्वर को प्रधान रखना यह एक इब्रानी मुहावरा था । मानव जाति की यह निवेदन है कि परमेश्वर हमारे पापों को स्मरण न करें । जंगल के मार्ग में, इस्रायल (उदा. उसके यहूदी गुरूओं) ने पीछे मुड़कर उनके जंगल में भटकने की अवधि को यहोवाऔर इस्रायल की बीच दम्पति का पूर्ण मिलन मास के रूप में देखा। परमेश्वर कभी भी इस परीक्षा के समय से बढ़कर, उनक साथ कभी अधिक निकट नहीं था क्योंकि प्रत्येक चीज के लिए उस पर उन्हें निर्भर रहना था । अब वे प्रचुर और आशीष को वायदे के देश में जाने वाले थे । परमेश्वर उन्हें लगातार उस पर आश्रित रहने के लिए सावधान कर रहा है क्योंकि वह सारी चीजों का स्रोत था और है (पद; 18) ।

❖ चालीस वर्ष, इस संख्या को प्राय: आलकांरिक तरीके से एक लंबे समय की अवधि को एक चन्द्रमा चक्र से बढ़कर (उदा. 28 दिन) होने को सूचित करता है । किन्तु दूसरे समयों में यह शब्दानुसार था । इसे प्राय: जानने के लिए बहुत ही कठिनाई होती है कि किसे अलग ऐतिहासिक या धार्मिक ग्रंथ सूचना को बिना चुने । जंगल में भटकने की अवधि लगभग 38 वर्ष में समाप्त हुई ।

❖ वह तुझे नम्र बनाए, तेरी परीक्षा करके

(अ) संबंध सूचक, उसके अनुसार (बीडीबी 775)

(ब) तीन पीयत अनिश्चित निर्माण

(1) नम्र करना (बीडीबी 776, केबी 853, पद 2, 3,16)

(2) परीक्षालेना (बीडीबी 650, केबी 720, पद 16)

(3) जानना (बीडीबी 393, केबी 390, पद 2 (दुबारा), 3 (तीन बार), 5, 16)

परमेश्वर हमारे विश्वास को मजबूत बनाने के लिए (उत. 22:S;निर्ग; 15:25; 16:4; 20:20, व्य. 8:2, 16; 13:3; न्या. 2:22 II इति. 32:31 और मती 4:1,इब्रा. 12:5-13) परीक्षा लेता है (बीडीबी 650, केबी 702, पीयल अनिश्चित निर्माण पद 16;13:, न्या. 2:22; 3:1,4) । यदि हम परमेश्वर की संतान है तो हमें परीक्षा आयेगी । सामान्य तौर में हम अपने जीवन के क्षेत्रों में परीक्षा लिये जाते है यह हमारे लिए प्रधानता है । परीक्षा का मतलब, हमें मसीह की समानता में अत्यधिक बनाए ।

शब्द नम्र (बीडीबी 776, केबी 853, पीयल अनिश्चित निर्माण) का प्रयोग पद, 2, 3, 16में किया हुआ है । पुराना नियम ही सिर्फ मूसा की नम्रता के बारे में बताता है (गि. 12:3,और कई बार भ.स. में) और नया नियम यीशु की नम्रता के बारें बताता है (मती 11:29) परमेश्वर, अपने लोगों में नम्रता और भरोसा करने की गुण की इच्छा रखता है । (10:3; एज्रा 8:21)

शब्द मन का प्रयोग आलंकारिक रूप से हमारे विचारों के लिए हुआ है (पद, 2, 5, 14 और 17) देखें विशेष 2:30 में ।

8:3 मन्ना यह (बीडीबी 577 I, लोगों ने इसे मन्ना कहा (निर्ग. 16:31), निर्ग. 16:4 की प्रश्न, यह क्या है ? इससे कहा । मूसा ने इसे स्वर्ग की रोटी कहा निर्ग 16:4) जंगल परिभ्रमण के दौरान, भोजन की विशेष प्रयोजन परमेश्वर के द्वारा थी । निर्ग; 16:4, 14-15;31; गि. 11:7-8 में इसकी व्याख्या की गई है, लेकिन इसकी वास्तविक पूर्ति हमारे लिये अंजान है (बीडीबी कहता है यह सीनै में, बेदोनियस के नाम से जाना जाता है और एक निश्चित शाखा से निकाली हुई रस है, लेकिन यह बाईबल की व्याख्या में ठीक नहीं बैठता है) परमेश्वर ने उन्हें, उनके प्रतिदिन की जरूरत को प्रदान किया,न कि एक लंबे समय की अवधि के लिए, ताकि लोग उनके प्रतिदिन की जरूरत के लिए उस पर भरोसा करना सीखने पाएँ । वह नये वाचा के लोगों के लिए भी यह करता है । (मती 6:11) ।

❖ मनुष्य सिर्फ रोटी से ही जीवित नहीं रहता, यीशु मसीह ने इस पद्यांश को उसकी परीक्षा होते समय शैतानको कहा (मती.4:14;लूका 4:4) । मनुष्यों को, और किसी चीज से बढ़कर, सिर्फ परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत, भरोसेमंद संबंध की जरूरत है (भ.स. 42:1-4; 63:1;143:6 ऑगस्टीन ने कहा - प्रत्येक मनुष्य में ईश्वर के आकार का छिद्र है) । विश्वसनीय जीवन के लिये शारीरिक पर्याप्त नहीं है (उदा. जो -जो वचन यहोवा के मुंह से निकलता है)

8:4 तेरे वस्त्र तो तेरे तन से भी नहीं गिर, राशि (मध्य युग का यहूदी टीकाक्रम लिखने वाला) और जस्टीन मार्टिर (प्रारंभिक पादरी) दोनों ने स्वीकृत किया है कि बच्चों के कपड़े बढ़ते है जैसे वे भी बढ़ते है और कभी भी खराब नहीं हुआ है । व्य. 29:5 में जोड़कर बताता है कि नहीं उनके जूते भी हुए; नहें. 9:21) । परमेश्वर का ध्यान, प्रत्येक जरूरत में, क्या ही अद्भुत प्रकटीकरण है ।

❖ न ही तेरे पांव फूले, यह कदाचित इब्रानी क्रिया है (बीडीबी 130, केबी 148; क्वेल पूर्ण नहें. 9:21) जिसका अर्थ फूलना है । यही आधार एक संज्ञा के रूप में रोटी फूलने को बताती है । यह स्वीकृत करती है कि उनके शारीरिक अंग की कठिन यात्रा में लंबे समय तक खड़े होने के लिए मजबूत किये गये थे ।

8:5 जैसा कोई अपने बेटे को ताड़ना देता है वैसा ही परमेश्वर तुझे ताड़ना देता है, यहां पर यहोवा को एक प्रेमी पिता के समानता में रखना विशेष है (निती 3:15) वह हमारे भलाई के लिए ताड़ना देता है (इब्रा. 12:5–13) देखें विशेष विषय 2:15 में, देखें विशेष विषय नीचे दिया गया है –

विशेष विषय : परमेश्वर का पिताधर्म

(I) पुराना नियम :

(अ) एक विचार है कि परमेश्वर सृष्टि का पिता है :

(1) उत. 1:26–27 (2) मला. 2:10 (3) प्रे.का. 17:28

(ब) अनेक विचारों में पिता की समानता से प्रयोग किया गया है :

(1) इस्रायल का पिता (चुनाव से)

(i) पुत्र – निर्ग. :22; व्य. 14:1; 39:5; याशा; 1:2; 63:16; 64:8; यिर्म; 3:18क्ष 31:20; होशे; 1:10; 11:1; मला. 1:6

(ii) पहिलौठा – निर्ग; 4:22; यिर्म; 31:9

(2) इस्रायल के राजा का पिता (मसीहा संबंधी)

(ii) शमु. 7:11–16

(ii) भ.स. 2:7, प्रे.का. 13:33, इब्रा. 1:5; 5:5

(iii) होरो; 11:1; मती 2:15

(3) प्रेमी अभिभावक की समानता

(i) पिता (लक्षण)

(अ) उसके पुत्र को उठाए चलता है – व्य. 1:3)

(ब) ताड़ना – व्य 8:5; नीति 3:12

(स) प्रयोजन (उदा. निर्ग) व्य. 32:1

(द) कभी नही छोड़ेगा – भ.स. 27:10

(ध) प्रेम करता है – भ.स. 103:13

(न) मिस्र/मार्गदर्शक – यिर्म. 3:4

(प) चंगा करने वाला/क्षमा देने वाला – यिर्म. 3:22

(फ) दया करने वाला – यिर्म; 31:20

(ब) प्रशिक्षण देने वाला – होशे 11:1–4

(भ) विशेष पुत्र – मला 3:17

(ii) माता (लक्षण)

(अ) कभी नहीं भूलेगी – भ.स. 27:10

(ब) पालन पोषण करने वाली प्रेमी माता – याशा 49:15; 66: 9–13 और होशे 11:4

(II) नया नियम

(अ) तियकत्व (मूल ग्रंथ जहां पर तीन को निर्धारित किया गया है)

(1) सुसमाचारों में

(i) मती; 3:16–17; 28:19

(ii) यहु. 14:26

(2) पौलूस

(i) रोमि: 1:4–5; 5:1, 5; 8:1–4; 8–10

(ii) I कुरि. 2:8–10; 12:4–6

(iii) II कुरि.1:21; 1314

(iv) गल. 4:4–6

(v) इफि;1:3–14, 17:2;18:3;14–17; 4:4–6

(vi) I थिस्सु; 1:1–5

(vii) II थिस्सु 2:13

(viii) तितुस; 3:4–6

(3) पतरस – I पत;1:2

(4) यहूदा – पद 20, 21

(ब) यीशु

(1) एकलौता पुत्र – यीशु

(2) परमेश्वर का पुत्र – यीशु – मती 4:3; 14:33: 16:16; लूका 1:32, 35; यहु. 1:34;49

(3) प्रिय पुत्र यीशु – मती 3:17; 17:5

(4) अब्बा का प्रयोग परमेश्वर के लिए यीशु ने किया – मर. 14:36

(5) यीशु के द्वारा सर्वनाम का प्रयोगय होना हमें परमेश्वर के साथ हमारे और यीशु के संबंध को दिखाता है ।

(i) मेरा पिता उदा. यहु. 5:18;10:30,33: 19:7; 20:17

(ii) तुम्हारा पिता उदा. मती. 17:24:27

(iii) हमारा पिता उदा. मती. 6:9, 14,26

(स) कई परिवारों में से एक अलंकार परमेश्वर और मानव जाति के घनिष्ठ संबंध की वर्णन करता है :

(1) पिता परमेश्वर

(2) विश्वासी जैसे :

(i) परमेश्वर के पुत्र

(ii) संतान

(iii) परमेश्वर से जन्में

(iv) पुन: जन्में हुए

(v) गोद लिये हुए

(vi) उत्पन्न किये हुए

(vii) परमेश्वर का परिवार

8:6 उसके मार्गो पर चलना जीवन–यापन के लिए यह एक सामान्य बाइबल संबंधी लक्षण है (5:33, 8:6:10:12,11:22, 19:9, 26:17, 28:9, 30:16) परमेश्वर चाहता है कि हम प्रत्येक दिन उसके लिए जीवन बिताएँ। धर्म मत, संस्कार संबंधी कार्य न कि स्मरणीय पाठ, न ही क्रमानुसार अध्यात्मविद्या ये सभी बाइबल संबंधी विश्वास नहीं है, किन्तु दैनिक संबंध परमेश्वर के साथ होने से है।

❖ उससे भय खाना इस क्वले अनिश्चित निर्माण चलते रहने की समानान्तर है यह भय मानने और आदर मान के विचार से है (4:10, 5:29, 6:2, 13, 24 7:179, 8:6, 10:12, 20, 13:4, 14:23, 17:19, 31:12–13)।

8:7–10 वायदे के देश के भूमि की उपजाऊपन और खेती संबंधी समाज के विषय में पानी की जरूरतों पर महत्व यह देता है।

❖ मैसोपोटामिया के प्राचीन लेखो में, पलिश्ति देश को मधु और दूध की धारा बहने के देश के नाम से जाना गया था, (निर्ग, 3:8, 17, 13:5, 33:3, व्य. 6:3, 11:9, 26:9, 27:3, 31:20)। पद, 9 यहाँ पर अत्यधिक खनिज पदार्थ, धरोहर भी पाये जाते थे। इस्रायल के ऊपर परमेश्वर की आशीष का अर्थ एक धन्यवादित उत्तर को उत्पन्न करने के लिए था (पद 10) परमेश्वर हमें उसकी सृष्टि में आनंद से रहते देखना चाहता है लेकिन यह याद हमें रखना है कि उसमे हमें यह दिया हुआ है।

8:10 पद का प्रथम भाग, यहुदी गुरू संबंधी आदेश, जो एक व्यक्ति के खाने के बाद प्रार्थना करने का स्त्रोत है । इस प्रकार के बिना रचना संबंधी मूलार्थ धर्म, यद्यपि धार्मिक, को ग्रन्थकारिता के विचार के साथ कुछ भी लेन–देन नहीं है ।

8:11 सावधान रहना इस क्रिया को (बीडीबी 1036, केबी 1581, निफाल आज्ञात्मक, 5:12, 8:6, 11:8, 16:1) रखने ध्यान देने सावधानी से करने अनुवाद हुआ है, देखें संक्षिप्त लेख 6:12 में 1 आज्ञापालन के लिए यह एक बुलाहट है ।

❖ भूलकर यह क्रिया (बीडीबी 10बी, केबी 1489, क्वेल अपूर्ण, 4:9, 23, 31, 6:12, 8:11, 14, 19 (दोहरा) 9:, 25:19) स्मरण रखने के विपरीत में है (5:15, 7:18, 8:2, 9:7, 27, 15:15, 16:3,12, 24:9, 18,25:17, 32:7) । यह संतुष्टि, गिरा हुआ मनुष्य, यहाँ तक धार्मिक मनुष्य का अभिप्राय है । जब हम परमेश्वर की आशीष को भूलते है हम अपने आप को इस सोच पर धोखा देते है कि हमने अपने साधन से स्वयं के लिए इसे किया है! देनेवाल प्रधान होना है, न कि दान (भ.स. 103:20) ।

❖ अपने परमेश्वर यहोवा ध्यान में रखें, कि उन्हें परमेश्वर को स्मरण रखना है और उचित रीति से करना ही, वह आज्ञापालन है (लूका, 4:46) ईश्वरीय नामों को देखने के लिए, विशेष विषय 1:3 में ।

❖ उसकी आज्ञाओं, विधियों और उसके नियमों देखें विशेष विषय : परमेश्वर के प्रकाशन के शब्द 4:1 में ।

8:13 बढ़ती हो इस क्रिया (बीडीबी 915, केबी 1116, क्वेल अपूर्ण) को तीन बार परमेश्वर के आशीषों को विभिन्न भागों में दिखाने के लिए दुहराया गया है ।

8:15 विषवाले सर्प यह अनिश्चित है यदि (विशेषण, बीडीबी 977–1 और संज्ञा बीडीबी 638) उनके नाम यह है क्योंकि उनके रंग (क्रिया से) या दर्द (विष से) उनके काटने के कारण से (गि. 21) ।

❖ जलरहित सूखे देश में उसने तेरे लिए चकमक की चट्टान से जल निकाला इस घटना में निर्ग: 17:6 से लिया गया है और गि. 20:11 में पुन: दुहराया गया है। पौलूस,1 कुरि. 10:4 में लिखता है कि यह चट्टान परमेश्वर की मसीह संबंधी प्रयोजन का चिन्ह था।

8:16 परमेश्वर आशीष देने के लिए परीक्षा लेता है (उदा. उत. 22 में अब्राहम, निर्ग 20:20 में इस्रायल, निर्ग 16:4 में मन्ना)। परीक्षा (बीडीबी 650 केबी 702) म.स. 62 में यहाँ तक प्रार्थना बनता है, और दूसरे शब्दों में, लेकिन वही विचार, भ.स. 139:1, 23 में।

8:17 यह सम्पत्ति मेरे ही सामर्थ और मेरे ही भुजबल से प्राप्त हुई है अपनी योग्यता पर भरोसा रखना और घमंड के लिए दर्शाया गया है (पद, 18, याकूब, 4:13-14)। देखें विशेष विषय : यहोवा का अनुग्रह इस्रायल के लिए काम करता है 9:4-6 में।

8:18 तू स्मरण रखना देखें लेख 7:18 में।

❖ जो वाचा उसने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बांधी थी, यहोवा को छुडौती योजना की शिखर एक विजय थी, जो पुन: उत. 3:15, 12:1-3, 26:24 28:13-15 की ओर जाती है। यह पद्यांश व्य. में बारम्बार निश्चय सहित वचन बनता है (1:8, 6:10, 8:18, 9:5, 27, 29:13, 30:20, 34:4)।

क्रिया (बीडीबी 989, केबी 1396) एक निफाल अपूर्ण है, जिसमें वाचा के वायदे निष्क्रिय या पूर्व-संबंधी हो सकते है (उत. 12:3)

8:19 अनाज्ञाकारिता के परिणाम, आज्ञाकारिता के परिणाम के समान स्पष्ट है। क्रियाओं को ध्यान दें, पीछे हो लेना (बीडीबी 229, केबी 246, क्वेल पूर्ण) उपासना करना बीडीबी 712, केबी 773 क्वेल पूर्ण) और दण्डवत करना (बीडीबी 1005, केबी 295 हिस्तपाफेल पूर्ण) समानान्तर है।

NASB	**"यदि यहोवा को कभी तुम भूलकर"**
NKJV	**"किसी भी तरह यदि तुम यहोवा को भूलकर"**
NRSV	**"यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर"**
TEV	**"यहोवा को कभी भी न भूलना"**
NJB	**"निश्चित हो जाओ, यदि तुम यहोवा को भूलकर"**

क्रिया भूलकर (बीडीबी 1013, केबी 1485) निर्माण किया हुआ है, बारम्बार इसको दुहराया गया है, एक क्वेल अपूर्ण का अनुसरण करते हुए अनिश्चित वास्तविकता के द्वारा है । इसका प्रकार का रूप नष्ट होने को पद, 19 में देखा गया है ।

8:20 तुम नष्ट हो जाओगे इस बात को ध्यान दें कि पद 19 और 20 की क्रिया नष्ट होने (बीडीबी 1, केबी2) को चार बार प्रयोग किया गया है (पद, 19 में अनिश्चित वास्तविक, पद:19 और 20 में क्वेल अपूर्ण दो बार, और एक हिफिल कृदन्त पद, 20में) व्य. में यह चेतावनी देने के लिए यह एक सामान्य शब्द है । इसका प्रयोग विभिन्न प्रकार से हुआ है :

(1) यदि इस्रायल उसके वाचा की आज्ञा पालन नहीं करता है तो परमेश्वर उसे नष्ट कर देगा – 4:26 (दोहरा), 8:19, 20, 9:3, 11:17, 28:20, 22, 51, 63, 30:18 (दोहरा) ।

(2) कनानियों को नष्ट करने के लिए परमेश्वर इस्राइलियों को आज्ञा देता है – 7:24, 8:20, 12:2, 3.

(3) परमेश्वर उन्हें नष्ट करेगा जो उससे घृणा रखते हैं – 7:10

(4) परमेश्वर ने मिस्त्र की सेना को नष्ट कर दिया 11:4

इस्रायल को पवित्र युद्ध के परिणाम के अधीन में रखा जाएगा यदि वह वाचा का उल्लंघन करती है (व्य. 27-29) परमेश्वर व्यक्तियों की प्रतिष्ठा नहीं लेने वाला है ।

अनाज्ञाकारिता के लिए यहाँ गंभीर परिणाम और साथ ही साथ आज्ञाकारिता के लिए महान लाभ है । सौभाग्य जो है जिम्मेदारियों को लेकर आता है ! जिसे अधिक दिया गया है, उससे अधिक लिया भी जायेगा (लूका 12:48) ।

विवादपूर्ण प्रश्न :

(1) परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण चमत्कार जो उसने जंगल में उसके लोगों के लिए दिखाया, अध्याय 8 में कौन-कौन से बतायी गई है ?

(2) क्या परमेश्वर उसके लोगों की परीक्षा लेता है ? क्यों ?

(3) क्यों इस अध्याय में नम्रता को कई बार जोर देकर कहा गया है ?

*****

व्यवस्था विवरण 9
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
इस्राइल का विद्रोह को दुबारा देखा जाना	आत्म-धार्मिकता के लिए परीक्षा (9:1-10:11)	लोगों की अनाज्ञाकारिता	यहोवा, न कि इस्रायल विजय को प्राप्त करता है
9:1-12	9:1-3	9:1-3	9:1-6
	9:4-5	9:4-6	
	9:6-17		इस्रायल का होरेब पर आचरण, मूसा निवेदन करता है
		9:7-11	9:7-14
	9:8-14		
		9:12	
9:13-24		9:13-14	
	9:15.21	9:15-21	9:15-21
			फिर से इस्रायल पाप करता है। मूसा की प्रार्थना
	9:22-24	9:22-24	9:22-24
9:25-29	9:25-29	9:25-29	9:25-29

9:1 सुन यह इब्रानी शब्द रोमा है (बीडीबी 1033, केबी1570, क्वेल आज्ञात्मक, 4:1, 5:1, 6:3, 4, 9:1, 20:3, 27:9) जिसका अर्थ सुनना इसलिए कि वैसा करें देखें संक्षिप्त ले 4:1 में ।

❖ हे इस्रायल देखें विशेष विषय 1:1 में ।

❖ ऐसी जातियों को जो तुम से बड़ी और सामर्थी है यह दुहराया हुआ विषय है (देखें 1:28 में) । अध्यात्मिक विद्या का केन्द्र (उदा. यहोवा का उच्चतम चुनाव और पूर्वजों से उसके वायदे) 7:6-9 में है । वह भरोसे के योग्य और सत्य है । उसका चरित्र इस्रायल के हठ और जिद्द में सर्वोच्च हुआ है (पद : 6,7,13,24,27, 10:16, 31:27) ।

9.2 अनाकवंशी - अनाकवंशियों शब्दसाधन रूप से इस शब्द का अर्थ - लंबी गर्दन है और इसलिए यह दानवों को सूचित करता है । व्य. 2:10-11 में वे रपीम से संयुक्त किये हुए है और गि. 13: में वे नपीलों से संयुक्त हुए है । देखें विशेष विषय 1:28 में ।

❖ जानना इस क्रिया (बीडीबी 393, केबी 390 क्वेल पूर्ण) का प्रयोग प्राय: और अनेक विचारों से हुआ है । देखें विशेष विषय 4:35 में ।

❖ भस्म करने वाली आग यह बीडीबी77 संधि बीडीबी 37 है । यह लक्षण देश के लोगों पर परमेश्वर के दण्ड का वर्जन कर रहा है (पद 4-5, उत:15:16) देखें लेख 4:25 में । एक अच्छी तरह से आकृति की संक्षिप्त चर्चा, परमेश्वर का वर्णन करने के लिए किया गया है, देखें द डिक्सनरी ऑफ बाइबल इमेजरी पृ. 332-336.

❖ वह उनको सत्यानाश करेगा, और वह उनको तेरे सामने दबा देगा, विजय की ये दो क्रियाएँ समानान्तर है और इस्रायल के वास्ते यहोवा के कार्यो की ओर संकेत करते हैं ।

1. तू उनको उस देश से निकालकर - बीडीबी 439, केबी441, हिलजिल पूर्ण
2. उनका शीघ्र नाश करेगा, बीडीबी, केबी 2, हिलफिल पूर्ण उसके साथ क्रिया विशेषण (बीडीबी 555 II)

इसे भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि यहोवा ने उसके लक्ष्य को पूरा किया, लेकिन इस्रायल ने स्वदेशीय निवासियों को पूर्ण रूप से निकालने के लक्ष्य को पूरा नहीं किया (न्या1-2) । इस्रायल शीघ्र ही इस कार्य को लेना चाहिए था (7:22) लेकिन उसने नहीं किया।

9:4-6 जब तेरा परमेश्‍वर यहोवा उन्हें तेरे सामने से निकाल चुके तब यह न सोचना कि यह मेरे धर्म के कारण है यह 8:11-20 के समान है । फिर से लोगों को परमेश्‍वर दिखा रहा है कि वह कार्य कर रहा है न कि उनके भले होने के कारण, लेकिन (1)देश में लोगों के दुष्टता के कारण (उत. 15:12-21, वैव्य 18:24-25; 20:13-14) और (2) उसका वायदा उनके पूर्वजों से उत. 12:1-3 में प्रारंभ होता है । वह उनसे चाहता है कि वे याद रखें कि वह पूर्ण नियंत्रण में है ।

महत्वपूर्ण क्रिया कहना (बीडीबी 55, केबी 65) एक क्वेल अपूर्ण है, जिसका प्रयोग आज्ञार्थक अभिप्राय से हुआ है । मानव का पाप में गिरा हुआ मन अब तक स्थित है और आत्मिक रूप से खतरे में है ।

द्वितीय क्रिया निकाल चुके (बीडीबी213, केबी 239 क्वेल अशिनिश्चित निर्माण) दिखाता है कि विजय में यहोवा का कार्य संलग्न था ।

विशेष विषय : इस्रायल के लिए यहोवा के अनुग्रह कार्य

स्पष्ट रूप से यह निर्दिष्ट होना चाहिए कि निर्गमन, जंगल में परिभ्रमण और विजय ये सभी यहोवा के अनुग्रह कार्य थे, न कि इस्रायल के कार्यों के लिये उचित ईनाम थी :-

(1) यह पितरों के लिये यहोवा का प्रेम था - व्य. 4:37-38; 7:8; 10:15
(2) यह इस्रायल की संख्या नहीं थी - व्य. 7:7
(3) यह इस्रायल की सामर्थ और शक्ति नहीं थी - व्य. 8:17
(4) यह इस्रायल की धार्मिकता या खराई नहीं थी - व्य. 9:5-6
(5) न्याय के मध्य भी यहां तक इस्रायल को यहोवा प्रेम लगातार करता है - यिर्म, 31:3

9:5 इसका कारण तुम्हारा धर्म या मन की सीधाई नही है, ये दो संज्ञा इस संदर्भ में समानांतर है :-

(1) धर्म - बीडीबी 842, 6:25; 9:4, 5, 6; 24:13; 33:21; देखें विशेष विषय 1:16 में ।
(2) सीधाई - बीडीबी 449, मतलब सचाई या नैतिक जन जीवन I इति 29:17 म.स. 119:7

इस्रायल को कनान देश उसकी ईश्वर भक्ति के कारण नहीं दी जा रही है, किन्तु कनानियां की अभक्ति के कारण दी जा रही है (पद; 4:उत;15:12–21 लैव्य. 18:24–28; देखें 3:6 में) ।

❖ जो वचन उसने तेरे पूर्वज अब्राहम, इसहाक और याकब को शपथ खाकर दिया था, उसकों वह पूरा करना चाहता है, क्रियाओं को ध्यान में रखें :

(1) वचन पूरा करना बीडीबी 877, केबी 1086, हिफिल अशिनिश्चत निर्माण

(2) यहोवा ने शपथ खाकर – बीडीबी 989, केबी 1396, निफाल पूर्ण

विशेष विषय : पूर्वजों से वाचा की प्रतिज्ञाएँ

विशेष वाचा के संबंध की एक महत्वपूर्ण प्रतिज्ञा बनाई गई थी :

(1) अब्राहम, उत, 12:1–3
- (i) देश; उत; 12:7; 13:4–15; 15:18–21
- (ii) वंश; उत; 13:16; 15: 4–5; 17:26; 22:18
- (iii) पृथ्वी की सारी जातियों को आशीष उत; 18:18; 22:18

(2) इसहाक उत; 26:2–4
- (i) देश
- (ii) वंश
- (iii) पृथ्वी की सारी जातियों को आशीष

(3) याकूब, उत;28:2–4, 13; 35:9–12; 48:3–4
- (i) देश
- (ii) वंश

(4) इस्रायल की जाति (एक देश) निर्ग, 3:8, 17; 6:8;13:5;33:1–3; व्य. 1:7–8, 35; 4:31; 9:3; 11:25; 31:7; यहोशू 1:6

❖ धर्म देखे विशेष विषय 1:16 में ।

9:6 तू तो एक हठीली जाति है वास्तविक रूप में यह खेती संबंधी वाक्यखंड है जो अधीन न करने योग्य बैलों को प्रकट करती है । शब्दानुसार इसका अर्थ कठोर गर्दन या हठी है (बीडीबी 904 निर्माण बीडीबी 791, 6, 7, 13, 24, 27; 10:16 31:27; निर्ग; 32:9; 33:3,5; 34:9) ।

NASB मूल ग्रन्थ 9:7-21

इस बात को स्मरण रख और कभी भी न भूलना, कि जंगल में तू ने किस किस रीति से अपने परमेश्वर यहोवा को क्रोधित किया; और जिसदिन से तू मिस्र देश से निकला है जब तक तुम इस स्थान पर न पहुंचे तब तक तुम यहोवा से बलवा ही बलवा करते आए हो । फिर होरेब के पास भी तुम ने यहोवा को क्रोधित किया, और वह क्रोधित होकर तुम्हें नष्ट करना चाहता था। जब मैं उस वाचा के पत्थर की पटियाओं को जो यहोवा ने तुम से बांधी थी लेने के लिये पर्वत के ऊपर चढ़ गया, तब चालीस दिन और चालीस रात पर्वत ही के ऊपर रहा; और मैंने न तो रोटी खाई न पानी पिया। और यहोवा ने मुझे अपने ही हाथ की लिखी हुई पत्थर की दोनों पटियाओं को सौंप दिया, और वे ही वचन जिन्हें यहोवा ने पर्वत के ऊपर आग के मध्य में से सभा के दिन तुम से कहे थे वे सब उन पर लिखे हुए थे । और चालीसदिन और चालीस रात के बीत जाने पर यहोवा ने पत्थर की वे दो वाचा की पटियाएँ मुझे दे दीं । और यहोवा ने मुझ से का,उठ यहां से झटपट नीचे जा, क्योंकि तेरी प्रजा के लोग जिनको तू मिस्र से निकालकर ले आया है वे बिगड़ गए है; जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा मैंने उन्हें दी थी उसको उन्होंने झटपट छोड़ दिया है; अर्थात् उन्होंने तुरंत अपने लिये एक मूर्ति ढालकर बना ली है ।

फिर यहोवा ने मुझ से यह भी का, मैं ने उन लोगों को देख लिया, वे हठीली जाति के लोग है ; इसलिये अब मुझे तू मत रोक, ताकि मैं उन्हें नष्ट कर डालूं, और धरती के ऊपर से उनका नाम या चिन्ह तक मिटा डालू, और मैं उनसे बढ़कर एक बड़ी और सामर्थी जाति तुझी से उत्पन्न करूंगा । तब मैं उलटे पैर पर्वत से नीचे उतर चला, और पर्वत अग्नि से दहक रहा था; और मेरे दोनों हाथों में वाचाकी दोनों पटियाएँ थी । 16 और मैंने देखा कि तुम ने अपने परमेश्वर यहोवा के विरूद्ध महापाप किया; और अपने लिये एक बछड़ा ढाकर बना लिया है, फिर तुरन्त उस मार्ग से जिस पर चलने की आज्ञा यहोवा ने तुम को दी थी उसको तुम ने तज दिया । तब मैं ने उसदोनों पटियाओं को अपने दोनों हाथों से लेकर फेंक दिया,और तुम्हारी आँखों के सामने उनको तोड़ डाला । तब तुम्हारे उस महापाप के कारण जिसे करके तुम ने यहोवा की दृष्टि में बुराई की और उसे रिस दिलाई थी, मैं यहोवा के सामने मुंह के बल गिर पड़ा और पहले के समान, अर्थात चालीस दिन और चालीस रात तक न तो रोटी खाई और न पानी पिया । मैं तो यहोवा के उस कोप और जल जलाहट से डर रहा था, क्योंकि वह तुम से अप्रसन्न होकर तुम्हारा सत्यानाश करने को था । परन्तु यहोवा ने उस बारभी मेरी सुन ली । और यहोवा हारून से इतना कोपित हुआ कि उसका भी सत्यानाश करना चाहा; परन्तु उसी समय मैं ने हारून के लिये प्रार्थना की । और मै ने वह बछड़ा जिसे बनाकर तुम पापी हो गए थे लेकर, आग में डालकर फूंक दिया; और फिर उसे पीस पीसकर ऐसा चूर चूर कर डाला कि वह धूल के समान जीर्ण हो गया;औरउसकी उस राख को उस नदी में फेंक दिया जो पर्वत से निकलकर नीचे बहती थी ।

9:7 इस बात स्मरण रखना और कभी न भूलना, ये दो महत्वपूर्ण क्रियाए, (बीडीबी 269; केबी 269; क्वेल आज्ञात्मक 5:15; 7:18 (दोहरा); 8:2; 9:7; 27;15:15; 16:3, 12; 24:9; 18, 22; 25: 17; 32:7 और बीडीबी 1013, केबी1489, क्वेल अपूर्ण; एक आज्ञार्थक के रूप में कार्य, 4:9, 23; 6:12; 8:11, 14, 19 (दोहरा) 9:7) इस्रायल को इस बात को स्मरण रखने की सहायता के लिए (7:18 में) और यहोवा उसके वायदे सामर्थ पर उनके विश्वास की कमी को दुबारा नहीं दोहराने को, जैसे उन्होंने उसके निर्गमन में जंगल परिभ्रमण के दौरान अनेक समय में दुहराया था ।

मूसा उनके मूर्तिपूजा के कार्य और विद्रोह के बारें में बताता है जो पद; 8 में होरेब पर्वत के पास हुआ था, जहाँ पर हारून ने लोगों के आग्रह से एक सोने के बछड़े को तैयार किया था।

9:7-8 तूने किस किस रीति से यहोवा को क्रोघित किया, देखें निर्ग; 16:32; और गि. 13-14; 16:21, 25 को कुछ उहाहरण के रूप में ।

9:7-22 ये पद इस्रायल के कार्यों को बताती है जब मूसा होरेब/सीनै पर्वत पर व्यवस्था को प्राप्त कर रहा था (निर्ग.32) ।

9:9 उस वाचा के पत्थर की पटियाओं को जो यहोवा ने तुम से बांधी थी, स्पष्ट रूप से वाक्यखण्ड पत्थर की पटियाओं और वाचा की परिटयाओं में समानांतर है । देखें विशेष विषय वाचा 4:13 में । ये मूसा के वचन नहीं किन्तु यहोवा के वचन थे । यह मानवीय राय या खोज नहीं है परन्तु प्रकाशन है ।

9:9,11,18 – चालीस दिन, एक लंबी, समय की निश्चित अवधि, एक चन्द्रमा चक्र (28 दिन) से बढ़कर, लेकिन ऋसतु संबीध बदलाहट से कम होने को प्राय: यह एक चिन्ह है । होरेब/सैनी पर्वत को छोड़ने से कनान में प्रवेश होने का समय अड़तीय (38) वर्ष का था ।

9:9, 18 मैंने न तो रोटी खाई और न पानी पिया, यह 40 दिनों के दो अलग उपवास को बता रही है जिसका अर्थ या तो (1) ए अद्‌भुत सुरक्षा (निर्ग; 24:18 :34:28) या (2) एक सीमित उपवास के लिये अतिश्योक्ति से पूर्ण मुहावरा (भोजन नहीं किन्तु पानी) ।

9:10 पत्थर की दो पटियाएँ, हित्ती अधिपति के लेख, एक संभव ऐतिहासिक संबंधी रूपरेखा के रूप से, यह व्यवस्था की पूर्ण दो प्रतिलेख को प्रकट कर सकती है । देखें पुस्तक VII की प्रस्तावना ।

❖ यहोवा के हाथ की लिखी हुई, दस आज्ञाओं की अद्‌भुत प्रारंभ और उनके व्याख्याओं के लिये यह एक मुहावरा है (निर्ग. 31:18; 32:15–16; व्य; 4:13) देखें विशेष विषय : एक मानव की तरह परमेश्वर का वर्णन (ईश्वर – शरीर रचना भाषा) 2:15

❖ वे ही वचन जिन्हें यहोवा ने पर्वत के ऊपर भाग के मध्य में सभा के दिन तुम से कहे थे, यह एक बारम्बार होने वाला आवर्तक विषय है 4:12, 15, 33, 36; 5:5, 22, 24, 26, 9:10; 10:4) यह वाक्यखण्ड परमेश्वर के कार्यों और होरेक/सीनै पर्वत पर व्यक्तिगत वाचा के प्रकाशन की सूची पर महत्व देते है ।

9:12–14 यहोवा के साथ होरेब/सीनै पर्वत पर जैसे मूसा उसके बातचीत का लेख प्रमाण करता है, यहोवा यहां अनेक आज्ञाओं को प्रयोग करता है :

(1) उठ, पद 12 – बीडीबी 877, केबी 1086, क्वेल आज्ञात्मक
(2) नीचे जा, – पद 14 – बीडीबी 432, केबी 434, क्वेल आज्ञात्मक
(3) मुझे मत रोक – पद 14, बीडीबी 951, केबी 1276, हिलफिल आज्ञात्मक
(4) ताकि मैं उन्हें नष्ट कर डालू – पद 14 – बीडीबी 1029, केबी 1552, हिलिफल अपूर्ण, कोहोर्टेटिव अभिप्राय से प्रयोग हुआ है ।
(5) धरती के ऊपर से उनका नाम या चिन्ह तक मिटा डालू – पद 14; – बीडीबी 562, केबी 567, क्वेल अपूर्ण, कोहोर्टेटिव अभिप्राय से प्रयोग हुआ है ।

❖ क्योंकि तेरी प्रजा के लोग जिनको तू मिस्र से निकालकर ले आया है, इस क्रिया को (बीडीबी 422, केबी 525, हिफिल पूर्ण) का प्रयोग यहोवा के लिए कई बार हुआ है, किन्तु मूसा के लिये सिर्फ यहां पर हुआ है ।

❖ मूर्ति ढालकर, यह मूर्ति पूजा नहीं है, किन्तु यहोवा के शरीरत्व की प्रस्तुतीकरण है । यह दूसरी आज्ञा का उल्लंघन करना था । वे एक ऐसा ईश्वर चाहते थे, जिन्हें वे मिस्र के लोगों के समान और कनान के पास थे वैसे छू सके और देख सके ।

9:14 क्या यह परमेश्वर के क्रोध का उदाहरण या यह मूसा के अनुवापन की परीक्षा है, (पद 25; निर्ग; 32; 30–35) ?

❖ धरती के ऊपर से उनकार नाम मिटाडालू, इस्रायल को पूर्ण रूप से उखाड़ का यह एक इब्रानी मुहावरना है (25:5; भ.स. 41:5) ।

9:15 पर्वत अग्नि से दहक रहा था, दहकती अग्नि या चमकती प्रकाश, यहोवा के उपस्थित होने का चिन्ह है (1:32–33;याशा; 66:15) देखें विशेष विषय–अग्नि 4:11 में ।

9:16 अपने लिए एक बछड़ा ढालकर बना लिया है, इसी प्रकार के क्रिया को (बीडीबी 793I, केबी 889, क्वेल पूर्ण पद 12 और 21 में प्रयोग किया गया है । यहां पर इस मूर्ति को कहा गया है (1) ढालकर बनया गया बछड़ा (बीडीबी 722, निग; 32:4, 8) (2) पद 21 में बछड़ा किन्तु (3) पद 12 में एक ढालकर बनाया गया मूर्ति, (निर्ग; 34:17; लैव्य; 19:4

9:7 तुम्हारी आंखों के सामने उन्हें तोड़ डाला – जिस दिन वाचा को परमेश्वर के द्वारा लियागया, वह उसी दिन तोड़ा गया (मूलार्थ रूप से और आलंकारिक रूप से)

9:19 परन्तु यहोवा ने उस बार भी सुनी देखें निर्ग; 34 । मूसा के भय के मूल कारण को ध्यान दे (बीडीबी, केबी 386, क्वेल पूर्ण 28:60) :

(1) यहोवा का क्रोध – बीडीबी 60, निर्ग. 32:12
(2) यहोवा का जल जलाहट, बीडीबी 404, 29:23
(3) यहोवा का कोप – बीडीबी 893, केबी 1124, क्वेल पूर्ण,
(4) तुम्हें नाश करने के लिए – बीडीबी 1029, केबी 1552, हिफिल अनिश्चित निर्माण 6:15; 9:20

9:20 हारून के लिये, हारून के लिए मूसा की प्रार्थना को निर्ग : 32 में लेख प्रमाण नहीं किया गया है ।

9:21 देखें निर्ग. 32:20 । और ध्यान दें कि मूसा ने कितनी क्रियाओं का प्रयोग सोने के बछड़े, पापी वस्तु के वर्णन के लिए किया है :

(1) आग में डाल के फूंक दिया, बीडीबी 926, केबी 1358, क्वेल अपूर्ण
(2) चूर–चूर कर डाला, बीडीबी 510, केबी 507, क्वेल अपूर्ण; II राजा 18:4, मीका 1:7
(3) पीसकर चूर–चूर कर डाला बीडीबी 377, केबी 374 क्वेल अनिश्चित, निश्चित
(4) वह धूल के समान जीर्ण हो गया, बीडीबी 200, केबी 229 क्वेल पूर्ण
(5) उस राख को उस नदी में फेंक दिया, बीडीबी 1020, केबी 1527, हिलफिल अपूर्ण

NASB मूल ग्रन्थ 9:22-24

फिर तबेरा, और मस्सा, और किब्रोतहत्तावा में भी तुम ने यहोवा को रिस दिलाई थी। फिर जब यहोवा ने तुम को रिस दिलाई थी फिर जब यहोवा ने तुम को कादेशबर्ने से यह कहकर भेजा, जाकर उस देश के जिसे मैं ने तुम्हें दिया है अधिकारी हो जाओ, तब भी तुम ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के विरूद्ध बलवा किया और न तो उसका विश्वास किया, और न सकी बात ही मानी। जिस दिन से मैं तुम्हें जानता हूँ उस दिन से तुम यहोवा से बलवा ही करते आए हो।

9:22 तबेरा इस स्थान का नाम क्रिया जलाना बीडीबी 129 के शब्द खेल से आता है। यह एक भूगौलिक स्थान है जहाँ पर यहोवा ने उनके निरंतर शिकायत को अग्नि के न्याय के साथ उत्तर दिया (गि. 11:1-3, 34-35)। होरेब/सीर्ने पर्वत के उत्तर की तरफ यह लगभग तीन दिन की यात्रा में था।

❖ "मस्सा" यह झगड़ने का दूसरा स्थान था जो यहोवा के और इस्रायल के बीच निर्गमन के दौरान में हुआ (निर्ग 17:7)। सामान्य तौर से इसे मरीबा के साथ जोड़ा गया है (व्य. 33:8) लेकिन हमेशा नहीं (6:16, 9:2)। एक साथ इनका मतलब परीक्षा (बीडीबी 650, 6:16,9:22,38:8, निर्ग, 17:7, भ.स. 95:8) और कलह है।

❖ किब्रोत ... हत्तावा नाम का अर्थ अभिलाषा की समाधि है बीडीबी 869, गि. 11:1-35) गि. 11 में तबेरा और किब्रोत-हत्तावा के बीच कोई चाल नहीं है किन्तु व्य. में दोनों स्थान भिन्न है।

9:23 जाकर उस देश के अधिकारी हो जाओ ये दोनों क्वेल आज्ञात्मक है और मूसा के द्वारा इस्रायल को यहोवा की सीधी वाणी है :

(1) जाकर - बीडीबी 748, केबी 828

(2) अधिकारी होना - बीडीबी 439, केबी 441

ध्यान दें कि इस्रायल के लिए यहोवा की आज्ञा, उसके प्रभुत्व और प्रतिज्ञाओं में इस्रायल को विश्वास पर कार्य करने से था। लेकिन विश्वास के बजाय इस्रायल ने अविश्वास को उत्पन्न किया :

(1) तुमने आज्ञा के विरूद्ध विद्रोह किया - बीडीबी 598, केबी 632, हिफिज अपूर्ण, गि. 20:24, 27:14, व्य. 1:26, 43, 9:23, भ.स. 107:11

(2) तुमने न तो उस पर विश्वास किया बीडीबी 52, केबी 63, क्वेल पूर्ण ।

(3) न ही तुमने उसकी आवाज सुनी, बीडीबी 1033, केबी 1570, क्वेल पूर्ण (ये क्वेल पूर्ण एक स्थापित शर्त को प्रभावित करती है) । यह वास्तविक रूप में वाचा के आज्ञापालन और दायित्व के विरूद्ध है ।

❖ तुमने बलवा किया देखें लेख 1:26 में ।

NASB मूल ग्रन्थ 9:25-29
मैं यहोवा के सामने चालीस दिन और चालीस रात मुँह के बल पड़ा रहा, क्योंकि यहोवा ने कह दिया था, कि वह तुम्हारा सत्यानाश करेगा, और मैं ने यहोवा से यह प्रार्थना की-हे प्रभु यहोवा, अपना प्रजारूपी निज भाग, जिनको तू नेअपने महान प्रताप से छुड़ा लिया है और जिनको तू ने अपने बलवन्त हाथ से मिस्त्र से निकाल लिया है, उन्हें नष्ट न कर । अपने दास अब्राहम, इसहाक, और याकूब को स्मरण कर, और इन लोगों की कठोरता, और दुष्टता, और पाप पर दृष्टि न कर, 28 जिस से ऐसा न हो कि जिस देश से तू हम को निकालकर ले आया है, वहाँ के लोग कहने लगे, कि यहोवा उन्हें उस देश में जिसके देने का वचन उनको दिया था नहीं पहुँचा सका, और उनसे बैर भी रखता था, इसी कारण उसने उन्हें जंगल में निकालकर मार डाला है । ये लोग तेरी प्रजा और निज भाग है, जिनको तू ने अपने बड़े सामर्थ्य और बलवन्त भुजा के द्वारा निकाल ले आया है ।

9:25 मूसा की मध्यस्था की प्रार्थना दो क्रियाओं का प्रयोग करती है :

(1) मै मुँह के बल पड़ा रहा - बीडीबी 656, केबी 709

(अ) हिथपेल अपूर्ण, - पद 25

(ब) हिथपेल पूर्ण, पद 25

(2) मैने प्रार्थना की - पद 26-बीडीबी 813, केबी 933, हिथोल अपूर्ण ।

9:26-29 पद 26-29 में मूसा ने परमेश्वर के प्रश्न के जवाब में तीन कारण को दिया, क्यों मैं इस्रायल को क्षमा करूँ ?

(1) अब्राहम, इसहाक और याकूब से उसके वायदे (निर्ग, 32:13)

(2) कनान यहोवा के चरित्र को गलत समझेगा ।

(3) यहोवा के दण्ड को कनान नहीं समझने पायेगा ।

वाक्यखण्ड तीन प्रार्थना निवेदन की क्रियाओं की सूची बनाता है :

(1) उन्हें नष्ट न कर पद 26-बीडीबी 1007, केबी 1469, हिफिल आज्ञार्थक

(2) स्मरण रख - पद 26-बीडीबी 1007, केबी 269, क्वेल आज्ञात्मक

(3) दृष्टि न कर (उदा. मुड़ना), पद 27-बीडीबी 815, केबी 937, क्वेल आज्ञार्थक

मूसा यहोवा के चरित्र और सभी लोगों की छुड़ौती की योजना के लिए विनती करता है कि स्वयं के वाचा के अनाज्ञाकारी लोगों को नाश न करें । एक जन समुदाय से अत्यधिक लोग जोखिम में है । देखें विशेष विषय : बॉक्स इवेंजलिकल बीयासेस 4:6 में ।

9:26 ध्यान दें कि किस प्रकार मूसा की प्रार्थना यहोवा को उसके वाचा के संबंध को याद दिलाती है :

(1) हे प्रभु, यहोवा, (मूलार्थ एडोन यहोवा, 3:24, देखें विशेष विषय 1:3 में ।

(2) अपना प्रजारूपी – वाचा का नाम, पद 29

(3) अपना निज भाग – वाचा का उपहार, पद 29

(4) जिनको तुने छुड़ाया है – बीडीबी 804, केबी 911, क्वेल पूर्ण, वाचा के अनुग्रह के कार्य (देखें विशेष विषय : छुड़ौती/छुटकारा 7:8 में) । यहोवा ने न्हें गुलामी से छुड़ाकर जाति बनाया (7:8, 9:26, 13:5)

(5) जिनको तूने मिस्त्र से निकाल लाया है बीडीबी 422, केबी 425, हिफिल पूर्ण, वाचा की प्रतिज्ञा अब्राहम से (पद 29, उत: 15:16–21)

परमेश्वर कार्य करता है क्योंकि वह जो है, वह उसके छुड़ोती की योजना का अनुसरण करता है, सभी मानवजाति की महान आशा, यहोवा के न बदलने योग्य, अनुग्रहयुक्त, दयावान, प्रेमी गुण से है (निर्ग: 34:6, मला, 3:6) देखें लेख 4:31 में और 10:17 में ।

❖ बलवंत हाथ से यह वाक्यखण्ड और पद 29 की बढ़ाई हुई भुजा दोनों मिस्त्र के ग्रन्थ में पाये गये है जो मिस्त्र के राजा को प्रकट करती है । मूसा ने वाक्यखण्ड को चुना क्योंकि इस्रायल ने फिरौन के संबंध में पहले यह सुना था । यहोवा उनका वास्तविक राजा था ।

9:27 इस्रायल के चरित्र को ध्यान दें :

(1) इन लोगों की कठोरता – बीडीबी 904, पद 6, 7, बी 24, 27

(2) उनकी दुष्टता – बीडीबी 957, यिर्म, 14:20, हे. 3:19, 38:12

(3) उनके पाप – बीडीबी 308, निर्ग, 32:40, व्य. 9:18, भ.स. 32:5, 51:5, निति, 5:22, 13:6, 14:34, 21:4, 24:9.

9:28 ऐसा न हो कि जिस देश से तू हमको निकालकर ले आया है परमेश्वर आपके कीर्ति और संसार में व्याप्त छुड़ौती की उद्देश्य, इस्रायल को बचाती है । दूसरी वाक्यखण्ड इसी अभिप्राय से परमेश्वर के नाम के कारण का प्रयोग हुआ है (याशा, 48:9–11, यहे. 20:9, 14, 22, 44, 36:21–23, दानि 9:17–19) ।

परमेश्वर आपके कीर्ति और संसार में व्याप्त छुड़ौती की उद्देश्य, इस्रायल को बचाती है । दूसरी वाक्यखण्ड इसी अभिप्राय से परमेश्वर के नाम के कारण का प्रयोग हुआ है (याशा, 48:9–11, यहे. 20:9,14,22,44,36:21–23, दानि 9:17–19) ।

9:29 तुने अपने बड़े सामर्थ और बलवान भुजा देखें पूर्ण लेख 4:34 में ।

विवादपूर्ण प्रश्न

(1) क्यों परमेश्वर ने इस्रायल को चुना ?

(2) क्या, पद, 14 परमेश्वर के स्वभाव का सच्चा प्रतिबिम्ब है ? यदि नहीं, तो यह क्या है?

(3) सूची बनाए और मूसा के तीन कारण जो वह देता है कि क्यों परमेश्वर को इस्रायल को नष्ट नहीं करना चाहिए ? इस पर चर्चा करें ।

व्यवस्था विवरण 10
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
पत्थर की और दो पटियाएँ	आत्म-धर्मी के लिए परीक्षा (9:11-10:11)	मूसा पुन: आज्ञाओं को प्राप्त करता है	वाचा का संदूक, लेवी की पसंद
10:1-5	10:1-5	10:1-5	10:1-5
10:6-11	10:6-9	10:6-9	10:6-9
	10:10-11	10:10-11	10:10-11
व्यवस्था का स्वत्व	प्रभु क्या माँग करता है (10:12-11:32)	परमेश्वर क्या माँग करता है	हृदय का खतना
	10:12-22	10:12-22	10:12-13
			10:14-22

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB मूल ग्रन्थ 10:1-5

उस समय यहोवा ने मुझसे कहा, पहली पटियाओं के समान पत्थर की दो और पटियाएँ गढ़ ले, और उन्हें लेकर मेरे पास र्वत के ऊपर आ जा, और लकड़ी का एक सन्दूक भी बनवा ले । और मैं उन पटियाओं पर थे, जिन्हें तू ने तोड़ डाला, और तू उन्हें उस सन्दूक में रखना । तब मैं ने बबूल की लकड़ी का एक सन्दूक बनवाया, और पहली पटियाओं के समान पत्थर की दो और पटियाएँ गढ़ीं तब उन्हें हाथों में लिये हुए पर्वत पर चढ़ गया । और जो दस वचन यहोवा ने सभा के दिन पर्वत पर अग्नि के मध्य में से तुम से कहे थे, वे ही उसने पहलों के समान उन पटियाओं पर लिखे, और उनको मुझे सौंप दिया । तब मैं पर्वत से नीचे उतर आया, और पटियाओं को अपने बनवाए हुए सन्दूक में धर दिया, और यहोवा की आज्ञा के अनुसार वे वहीं रखी हुई हैं ।

10:1 पर्वत यह होरेब/सीनै पर्वत को प्रकट करता है ।

❖ मूसा को परमेश्वर के साथ उसके दूसरे मुलाकात के लिए साधन बनाना है :

(1) पत्थर की और दो पटियाएँ गढ़ ले–बीडीबी 820, केबी949, क्वेल आज्ञात्मक, निर्ग, 34:1,4

(2) मेरे पास ऊपर आ जा – बीडीबी 793, केबी 828, क्वेल आज्ञात्मक उन्हें लेकर

(3) एक सन्दूक बनाओ – बीडीबी 793, केबी 889, क्वेल पूर्ण, निर्ग 25:10

हित्ती लेख की भी समझौते की दो नकलों की माँग की गई है । एक को छोटे राजा को दिया जाता था कि वह प्रत्येक वर्ष को उसे पढ़े और दूसरा महान राजा के देवता के मन्दिर में रखा गया था ।

❖ लकड़ी का एक सन्दूक भी अपने लिए बनवा ले निर्ग, 37:1 बताता है कि बसलेल ने वाचा का सन्दूक बनाया । राशि कहता है, मूसा को सन्दूक का ब्यौरा तब तक नहीं दिया गया जब तक वह सीनै पर्वत से दूसरी बार नीचे नहीं आया था । इसलिए मूसा को पहले अपक्व सन्दूक बनाना चाहिए था और उसके बाद बसलेल ने बड़े प्रयत्न से दूसरी सन्दूक को बनाया (निर्ग, 25:10–22) । मूसा के द्वारा यह पहला सन्दूक शीघ्र ही बनाया गया, सिर्फ दस आज्ञाओं को वहाँ रखा गया था (1 राजा 8:9) । उसके बाद के संदूक में रखा गया : दस आज्ञाएँ, मन्ना का नमूना, और हारून की निकली हुई छड़ी । एक अच्छे संक्षिप्त चर्चा के लिए देखें रोनाल्ड डे वेक्स, एन्सियन्ट इस्रायल, वोल 2, पृ. 292–303 ।

10:2 मैं लिखूंगा व्यवस्था को यहोवा ने लिखा, पद और निर्ग 34:1 । किन्तु, निर्ग 34:27 मूसा की लिखावट को कहता है ।
कदाचित, परमेश्वर ने दस आज्ञाओं को लिखा, लेकिन मूसा ने निर्देशक और प्रकाशक चीजों को लिखा, जिसे व्याख्या किया गया और धारण किया गया है । यह मूसा की मानसिकता नही थी और न ही उसकी सभ्यता की प्रथा थी, लेकिन परमेश्वर जिसने व्यवस्था का प्रारंभ किया । परमेश्वर सभ्यता के उदाहरण और संस्कार का प्रयोग किया है कि मूसा इसके साथ अच्छे से परिचित होगा । कई प्रकार में व्यवस्था का नमूना, बेबीलोन की व्यवस्था से मिलता–जुलता है, किन्तु विषय सूची भिन्न है ।

❖ सन्दूक में देवता के सामने विशेष लेखों को रखना यह निकट पूर्वी के गुण है । इजिप्सन बुक ऑफ द डैड (थॉट् के पैरों के नीचे एक सन्दूक में) और दो हजार बीसी के हित्ती अधिपति लेखों की तुलना करें ।

10:3 बबूल की लकड़ी यह एक कठोर, कुछ भूरा-नारंगी लकड़ी थी (बीडीबी 1008) जो रेगिस्तान में उगता है। यह एक रेगिस्तान की छोटी सामान्य पेड़ थी (याशा 41:9)। यह पेड़ तम्बू के सभी चल-सामग्री से संबंधित था। निर्गमन की पुस्तक के बाहर सिर्फ यहाँ पर यह प्रकट होता है।

10:4 दस आज्ञाएँ शब्दानुसार यह दस वचन है बीडीबी 796 निर्माण बीडीबी 182)। ये मूल विशिष्ट गुण, स्थापित व्यवस्थाएँ बहुत ही संक्षिप्त और प्रमुख सिद्धांत में निर्दिष्ट है। यहोवा के साथ एक घनिष्ठ, निषेधक संबंध का आदेश उन्होनें दिया है (पद:20)।

जो निषेधक आराधना और आज्ञापालन में प्रतिबिम्बित हुई, जो आदेशों में रूपान्तिरि होकर दूसरे वाचा के सदस्यों के साथ उचित करूणा दिखाने के संबंध में हुई (और जो सदस्य नहीं भी थे 10:17-19)। यहोवा के समधात को, सम्पूर्ण जीवन में और इसकी प्रधानता को जानना।

❖ पर्वत पर अग्नि के मध्य में यह होरेब/सीनै पर्वत पर परमेश्वर की उपस्थिति को प्रकट करता है जो निर्ग, 19:16-20 में प्रदर्शित किया गया है। उसकी उपस्थिति का वर्णन यहोवा का तेज सीनै पर्वत पर के रूप में किया गया है (निर्ग, 24:17)। व्य. में इसका प्रयोग अनेकों बार हुआ है (4:12, 15, 33, 36, 5:4, 24, 26)।

अग्नि (बीडीबी77), यहोवा के महिमामय उपस्थिति की चिन्ह थी :

1. एक पलीता (मशाल), उत, 15:17
2. जलती हुई साड़ी, निर्ग, 3:2
3. होरेब पर्वत पर अग्नि, निर्ग, 19:18, व्य, 4:1,, 12, 15, 33, 36
4. आग की शेकेना खंभा, निर्ग, 13:21, 22, गि 9:15, 16, 14:14, भ.स. 78:14
5. यहोवा के सिंहासन को आसानी से ले जाने योग्य रथ के प्रति यहेजेकल के दर्शन में अगांरा, यहे. 1:13, 10:2

अग्नि के बीच में से बातें करने के प्रति दस आज्ञाओं को बारम्बार कहा गया है (4:12, 15, 33, 5:4, 22, 24, 26, 0:10, 10:4) आज्ञाएँ, व्यक्तिगत, वाचापूर्ण प्रकाशन यहोवा से थी न कि मूसा के बुद्धि से थी।

10:6 याकानियों के कुओं से प्रस्थान करके मोसेरा तक आए प्रथम दो शब्दों का अनुवाद शब्दानुसार याकान के पुत्रों के कुओं में हुआ है (गि. 33:31) मोसेरा का अर्थ सुधार है (बीडीबी64)

मोसेरा (संभवत: एक जिला) जो होर पर्वत (निर्ग, 20:22–29, 33:38) की पर्यायवाची हो सकती है, इसी पर्वत पर हारून की मृत्यु हुई थी । ये दोनों भौतिक संबंधी क्षेत्र को प्रकट करती है जहाँ पर इस्राइली लोग भटक रहे थे ।

❖ वहाँ हारून मर गया गि.20:27–28 बताता है कि यह होर पर्वत पर हुआ । हारून, मूसा के सामन, उसकी अनाज्ञाकारिता के कारण वायदे के देश में नहीं प्रवेश किया (गि.20:8,12)

❖ एलीआजर उसके नाम का अर्थ परमेश्वर ने सहायता किया है (बीडीबी 46) । हारून का वह तीसरा पुत्र था (निग, 6:23) । पहले के दो पुत्र परमेश्वर के आज्ञा को साधारण रूप से लेने के कारण मारे गये (लैव्य, 10:1–7, गि. 3:4) । युहुदी गुरू कहते है कि लैव्य, 10:9 याजकों को शराब पीने से मना करती है, जब वे उनके काम में है और नादाब और अबीकु शराब को पीये होने के कारण मर गये ।

हारून का परिवार के याजक पद के लिए था (निर्ग, 29:9, 40:15, गि, 3:5–10, 25:13) ।

❖ गुहगोदा इस नाम का अर्थ मालूम नहीं है (बीडीबी, 151) । इसे कृत्रिम रूप से निर्ग, 32:33 में होरहाजिदगाद के साथ पहचाना गया है । दोनों वे स्थान है जहाँ इस्रायलियों ने होरेब/सीर्ने पर्वत से कादेश बर्निया की यात्रा में डेरा किया था । जे.पी.एस. ओ. ऐ. में गुदगोद है ।

❖ पोतबाता शब्द का अर्थ रमणीयता है (बीडीबी 406, संभवत: जल की उपस्थिति होने के कारण) । गि. 33:38–34 में यह डेरा गलने का स्थान के रूप में भी प्रदर्शित हुआ है । जे.पी.एस.ओ.ए. में जोतबा है ।

10:8 यहोवा ने लेवी गोत्र को अलग किया, क्रिया अलग करना (बीडीबी95, केबी110, हिफिल पूर्ण, गि, 8:14,16:9,1इति. 23:13) अर्थात् विभाजन करना है । यहाँ पर अलगाव होने का कारण है (1) तम्बू और बाद में बनने वाले मंदिर से संबंधित विशिष्ट धार्मिक विश्वास या उपासना की विधि के लिए, (2) लोगों को आशीर्वाद देने के लिए (10:8, लैव्य.9:22–23, गि. 6:22–27), (3) लोगों के विवादों का न्याय करने के लिए (21:5) और (4) शुद्ध और अशुद्ध के बीच में भेद करने के लिए (लैव्य, 10:10) । यह क्रिया चुनना के सदृश है (बीडीबी 103, केबी119, 18:5, 21:5) ।

दूसरे देशों से इस्रायलियों को अलग होना था (लैव्य. 20:24–26, 1 राजा, 8:53, उदा. एक पवित्र देश निर्ग, 19:6) इसी प्रकार लेवी के गोत्र को, दूसरे गोत्रों से यहोवा के विशिष्ट धार्मिक दासों के रूप में अलग होना था ।

वे इसलिए चुने गये क्योंकि (1) मूसा और हारून के गोत्र में से लेवी था, (2) इब्रानियों के लिए पहिलौठे का स्थान लेवियों ने लिया (निर्ग, 13 गि. 3:12, 8:14–19), या (3) इस्रायल को दण्ड देने के लिए, मूसा की बुलाहट को लेवियों ने विश्वासपूर्वक निभाया (निर्ग, 32:25–29) । उत. 29:34 में, लिया ने उसके प्रथम पुत्र को लेवी नाम दिया क्योंकि उसके पति ने उसको प्यार नहीं किया, लेकिन बच्चे के नाम का अर्थ याकूब तो मुझसे मिल जायेगा (बीडीब 532) ।

याजकीय गोत्र होने के कारण वे :

1. वाचा के संदूक को उठाया करेंगे
2. यहोवा के सम्मुख खड़े होकर उसकी सेवाटहल करेंगे (उदा. तम्बू और यरूशलेम के मंदिर के सभी कार्य, 18:5, गि, 18:1–7)
3. उसके नाम से आशीर्वाद दिया करें (गि. 6:24, 27) ।

व्यवस्थाविवरण में सभी लेवीय एक याजक के रूप में कार्य कर सकता है (तुलनात्मक 31:9 और 25) । देखें रोनाल्ड डीवॉक्स, एन्सियन्ट इस्रायल, वोल 2, पृ. 358–371) ।

10:9 लेवियों का कोई निज अंश या भाग नहीं है हालांकि लेवी के गोत्र को कोई भूमि नहीं दिया गया, अड़तालीस नगरों को उनको दिया गया जो अपने–अपने चारों ओर की चराइयों के साथ ठहरे (गि. 35:1–8, यहोशू, 21) ।

❖ यहोवा ही उनका निज भाग है यह उनके कार्य के विशेष स्थान को संकेत करता है (गि. 18:20, व्य. 10:9, 18:1,2, यहोशू 13:33, यहे. 44:28) लेवी के गोत्र के लिए ऐसी अनोखी प्रतिज्ञा अब प्रत्येक सच्चे विश्वासी के हृदय की पुकार बन चुकी है (भ.स.16:5, 73:23–28, 119:57, 142:5, विलाप, 3:24) ।

NASB मूल ग्रन्थ 10:10–11

मैं तो पहले के समान उस पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात ठहरा रहा, और उस बार भी यहोवा ने मेरी सुनी, और तुझे नष्ट करने की मनसा छोड़ दी । फिर यहोवा ने मुझ से कहा, उठ, और तू इन लोगों की अगुवाई कर, ताकि जिस देश के देने को मैं ने उनके पूर्वजों से शपथ खाकर कहा था उसमें वे जाकर उसको अपने अधिकार में कर लें ।

10:10 पहले के समान चालीस दिन और चालीस रात निर्ग, 34:28, व्य, 9:18.

❖ यहोवा ने तुझे नष्ट करने की मनसा छोड़ दी यह मूसा की मध्यस्थता की सेवकाई है (9:25–29, निर्ग, 32:9–14) ।

10:11 यहोवा ने इस्रायल को आज्ञा दिया कि वे जो उसने पहले से प्रतिज्ञा की थी उसके अनुसार कार्य करें – प्रतिज्ञा के देश का अधिकारी होना :

1. उठ बीडीबी, केबी877, केबी1086, क्वेल आज्ञात्मक एकवचन, 2:13, 24, जो बहुवचन है और इस्रायल के लिए संकेत करता है । यहाँ पर एकवचन मूसा की ओर संकेत करता है ।

2. अगुवाई कर – बीडीबी 229, केबी 246, क्वेल आज्ञात्मक एकवचन, शब्दानुसान इसका अर्थ तम्बू को तोड़कर, यात्रा की अगली श्रेणी को प्रारंभ करना है (निर्ग, 17:1, 40:36, 38:1, गि. 10:2, 12:33:1,2) लोगों को मूसा, आगे की ओर अगुवाई करना था ।

3. उसमें वे जाकर – बीडीबी 97, केबी 112, क्वेल आज्ञात्मक बहुवचन, जो संभवत: एक आज्ञार्थक के रूप में कार्य कर रहा है ।

4. अधिकार में कर ले – बीडीबी 439, केबी 441, क्वेल आज्ञात्मक बहुवचन, जो एक आज्ञार्थक के रूप में कार्य कर रही, हो सकती है ।

पूर्वजों से किये हुए यहोवा के प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए इस्रायल को बुलाया गया था (1:8, यहोशू, 21:43) मनुष्य साधनत्व को परमेश्वर इस्तेमाल करता है (निर्ग, 3:7–12) यह उसकी सामर्थ और योजना है, लेकिन उसके लोगों (वाला के लोग) को विश्वास में कार्य करना और भरोसा रखना है ।

NASB मूल ग्रन्थ 10:12–22

जिस में पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाए और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे । उसे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया–हे पतरस उठ, मार और खा । परन्तु पतरस ने कहा, नहीं प्रभु, कदापि नहीं, क्योंकि मैं ने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है । फिर दूसरी बार उसे शब्द सुनाई दिया, जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह । तीन बार ऐसा ही हुआ, तब तुरन्त वह पात्र आकाश पर उठा लिया गया । जब

पतरस अपने मन में दुविधा में था, कि यह दर्शन जो मैं ने देखा वह क्या हो सकता है, तो देखों, वे मनुष्य जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था, शमौन के घर का पता लगाकर द्वार पर आ खड़े हुए और पुकारकर पूछने लगे, क्या शमौन जो पतरस कहलाता है, यहीं अतिथि है ? पतरस तो उस दर्शन पर सोच ही रहा था, कि आत्मा ने उससे कहा, देख, तीन मनुष्य तेरी खोज में हैं। अत: उठकर नीचे जा, और नि:संकोच उनके साथ हो ले, क्योंकि मैं ही ने उन्हें भेजा है । तब पतरस ने उतरक उन मनुष्यों से कहा, देखो, जिसकी खोज तुम कर रहे हो, वह मैं ही हूँ। तुम्हारे आने का क्या कारण है ? उन्होंने कहा, कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी और परमेश्वर से डरनेवाला और सारी यहूदी जाति में सुनाम मनुष्य है, उसने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह निर्देश पाया है कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ से वचन सुने । तब उसने उन्हें भीतर बुलाकर उनकी पहुनाई की ।

10:13 जिससे तेरा भला हो, आज्ञापालन, आशीष को लेकर आती है, अनाज्ञापालन, दण्ड को लेकर आती है (अध्याय 27–29) ।

10:14 यह पद अद्धैतवाद को संकेत करता है। यह इस ग्रह के धार्मिक वातावरण, ब्रह्मांड (तारों से पूर्ण आच्छादन) और परमेश्वर के सिंहासन (उदा. तीन स्वर्ग) को उल्लेख करता है ।

10:15 ध्यान में रखें, यहोवा के चुनाव को इस्रायल के लिए, एक विशेष लोगों के रूप का वर्णन सदृश पद्धति में हुआ है (उदा. तुम सभी लोगों से उत्तम हो, निर्ग, 19:5.6 व्य. 7:6, 14:2) :

1. उसने स्नेह और प्रेम रखा – बीडीबी 365 1, केबी 362, क्वेल पूर्ण 7:7/4:37 में प्रेम के लिए दूसरे शब्द का प्रयोग हुआ है ।

2. उनके सतानों को उसने चुना– बीडीबी 103, केबी 119, क्वेल 4:37.

3. जैसा कि आज के दिन प्रकट है देखें लेख 3:14 में ।

10:16 यहोवा के चुनाव से इस्रायल को इनके द्वारा उत्तर देना था :

1. अपने हृदय का खतना करो – बीडीबी 775, केबी 555, क्वेल पूर्ण । परमेश्वर के लिए यह प्रकटीकरण की लक्षण है (लैव्य 26:41, व्य. 10:16; 30:6; यिर्म; 4:4; 9:25–26) इसे अनेक रीति से प्रकटीकरण किया गया है :

(अ) अपने शरीर का खतना करो – उत. 17:14 (वाचा का चिन्ह)

(ब) अपने होठों का खतना करो – निर्ग; 6:12, 30

(स) अपने कान का खतना करो – यिर्म; 6:10

(द) एक सच्चे हृदय को प्रकट करता है, न कि सिर्फ शरीर के खतना को – 30:6; यिर्म, 4:4; 9:25-26; यहे. 44:9; रोमि ; 2:28-29

2. अपने गर्दन को अब से कठोर न करो – बीडीबी 904, केबी 1151, हिफिल अपूर्ण; 96, 7, 13 24, 27; 31:27 । देखें पूर्ण सूची 2:30 में ।

10:17 यहोवा का वर्णन करने के लिए, एक विशेष प्रकार के संस्कार का प्रयोग किया गया है:

1. ईश्वरों का परमेश्वर – बीडीबी 43, भ.स. 136:2
2. प्रभुओं का प्रभु – बीडीबी 10, भ.स. 136:3
3. महान परमेश्वर – बीडीबी 152, 3:24; 5:24; 9:26; 11:2; 32:3; नहे. 1:5; 9:32
4. सामर्थी परमेश्वर – बीडीबी 150; नटे. 9:32; भ.स. ; 24:8; याशा 10:21
5. अद्‌भुत परमेश्वर – बीडीबी 431, केबी 432, निफाल कृदन्त, 7:21; नहे. 1:5; 9:32

❖ जो किसी का पक्ष नहीं करता, इब्रानी वाक्यखण्ड का अर्थ, जो मुखों को नहीं उठाता है (बीडीबी 669, केबी 724, क्वेल अपूर्ण प्लस बीडीबी 815) । इसका प्रयोग प्राय: न्यायियों के लिए हुआ है (1:17; 16:19; 24:17; लैव्य 19:15) । यह संकेत करता है कि परमेश्वर एक सच्चे न्याय का परमेश्वर है ।

❖ न घूस लेता है, यहोवा के चरित्र को मानवीय नैतिक शब्दों में वर्णित किया गया है (पद; 18-19) ऊपर के वाक्यखण्ड के साथ इसका प्राय: संलग्न हुआ है ।

10:18-19 ध्यान दीजिए कि किस प्रकार परमेश्वर के नैतिक चरित्रों को पद; 19 में अभ्यासि पर रखा गया है :

(1) वह इनके लिए न्याय चुकाता (बीडीबी 793I, केबी 889, क्वेल कृदन्त) है :

(अ) अनाथ

(ब) विधवा (24:17; 26:12-13; 27:19; भ.स. 68:4-5)

(2) परदेशियों के लिए वह उन्हें देने के द्वारा प्रेम दिखाता है (बीडीबी 12, केबी 17, क्वेल कृदन्त) (बीडीबी 678, केबी 733, क्वेल अनिश्चित निर्माण) :

(अ) भोजन

(ब) वस्त्र

इस्राइलियों को तीन कारणों से इन चीजों को करना था :

1. यह उनके परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिम्बित करता है (पद 17; याशा; 58: 6-7,10
2. वे जानते है कि किस प्रकार अन्याय को उन्होंने सहा है (पद: 19; 24:18, 22; निर्ग;22:21;23:9) ।

निर्ग; 22:22-23 भी प्रदर्शित करता है कि परमेश्वर सामाजिक रूप से इन निर्बलों की प्रार्थना को सुनेगा और उनके लिए कार्य करेगा (भ.स. 146:9;मला;3:5 मसीहा भी ऐसा करेगा; याशा: 11:14)

10:20 परमेश्वर की मांग के रूप में पद; 12-13 में अनेक अनिश्चित निर्माण की द्धारा प्रदर्शित किया गया है; यहां पर वे पुन: क्वेल अपूर्ण क्रियाओं में प्रदर्शित हुआ है :

1. प्रभु का भय रखें - बीडीबी 431, केबी 432, 5:29; 6:13; 13:43
2. उसकी सेवा टहल करो - बीडीबी 712, केबी 773, 13:4
3. उससे लिपटे रहो - बीडीबी 179, केबी 209, 11:22; 13:4
4. उसी के नाम की शपथ खाना - बीडीबी 989, केबी 1396, 5:11; 6:13 देखें पूर्ण लेख 5:11 में ।

ये सभी बातें आराधना के उचित विचार और कार्यो से संबंतिध है ।

10:21 वही तुम्हारी स्तुति के योग्य है, व्य. की भाषा बुद्धि साहित्य से बहुत ही सामान्य है । यह पद्यांश भ.स. 109:1 में बताया गया है । इस वाक्यखण्ड के साथ, कोई क्रिया यहां नहीं है या आगे नहीं है । वे निश्चित है कि निर्गमन के दौरान और जंगल परिभ्रमण की अवधि के दौरान यहोवा के छुडौती का कार्य स्तुति के योग्य है :

1. तुम्हारी स्तुति (बीडीबी 239)
2. तुम्हारा एलोहिम (बीडीबी 43)

❖ जिसने तेरे साथ वे बड़े महत्व के और भयाक काम किये है जिन्हें तू अपनी आंखों से देखा है, यह यहोवा के कार्य और प्रयोजन को प्रकट करता है जो उसने मिस्र की निर्गमन के दौरान, जंगल में भटकने की अवधि में किया (11:2) और वहीं कार्य जो विजय के दौरान दुहराया जायेगा !

10:22 सत्तर ही पुरूष, लोगों के लिए सत्तर की संख्या (ऐसी संख्या जिसमें ईकाई या बड़ी संख्यामें दहाई का विचार नहीं होता है ? का प्रयोग हुआ है । देखें उत; 46:27; निर्ग; 1:5

निर्ग, 1:5 की एक ग्रंथ कुमरान में (उदा. मृत सागर की सूची पत्र) 75 की संख्या है, जो प्रे.का; 7:14-15 से मिलती है । विभिन्न संख्याओं के संक्षिप्त चर्चा के लिए, देखें, हाई सेंइग

ऑफ द बाईबल, पृ. 521 या ग्लेसन्न एल. आर्क, एन्केलेपोडियाऑफ बाईबल डिफिकल्टिस, पृ. 378–379 ।

❖ आकाश के तारों के समान, अब्राहम से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा की यह पूर्णता है । देखें पूर्ण लेख 1:10 में ।

विवादपूर्ण प्रश्न :

1. परमेश्वर की व्यवस्था का क्या उद्देश्य है ? (पुराने नियम के अभिप्राय में)
2. क्या यह अध्याय अद्धैतवाद को प्रतिबिंब करता है ? कहां और कैसे ?
3. किस प्रकार से व्य. परमेश्वर के प्रेम को मानवजाति के लिए प्रकटीकरण करता है ?

*****

व्यवस्था विवरण 11
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
प्रेम और आज्ञापालन के लिए पारितोषिक किया गया	प्रभु ने जो मांग किया है, (10:12-11:32)	प्रभु की महानता	इस्रायल की पिछली अनुभव
11:1-7	11:1-7	11:1-7	11:1-7
		वायदे के देश की आशीषें	प्रतिज्ञाएँ और चेतावनियाँ
11:8-12	11:8-12	11:8-12	11:8-9
			11:10-17
11:13-17	11:13-17	11:13-17	समाप्ति
11:18-21	11:18-21	11:18-21	11:18-21
11:22-25	11:22-25	11:22-25	11:22-25
11:26-32	11:26-28	11:26-32	11:26-32
	11:29-30		
	11:31-32		

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB मूल ग्रन्थ 11:1-7

इसलिये तू अपने परमेश्वर यहोवा से अत्यंत प्रेम रखा, और जो कुछ उसने तुझेसौंपाहै उसका, अर्थात् उसकी विधियों, नियमों, और आज्ञाओं का नित्य पालन करना । और तुम आज यह सोच समझ लो (क्योंकि मैं तो तुम्हारे बाल-बच्चों से नहीं कहता) जिन्होंने न तो कुछ देखाऔर न जाना है कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने क्या क्या ताड़ना की, और कैसी महिमा, और बलवंत हाथ, और बढ़ाई हुई भुजा दिखाई, और मिस्र में वहां के राजा फिरौन को कैसे कैसे चिन्ह दिखाए, और उसके सारे देश में कैसे कैसे चमत्कार के काम किए; और उसके मिस्र की सेना के घोड़ों और रथों से क्या किया, अर्थात् जब वे तुम्हारा पीछा कर रहे

थे तब उसने उनको लाल समुद्र में डुबोकर किस प्रकार नष्ट कर डाला, कि आज तक उनका पता नहीं; और तुम्हारे इस स्थान में पहुंचे तक उसने जंगल में तुम से क्या क्या किया; और उसने रूबेली एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम से क्या क्या किया; अर्थात पृथ्वी ने अपना मुह पसार के उनको घरानों, और डेरों, और सब अनुचरों समेत सब इस्राएलियों के देखते देखते कैसे निगल लिय; परन्तु यहोवा के इन सब बड़े बड़े कामों को तुम ने अपनी आंखों से देखा है ।

11:1 ध्यान दें कि किस प्रकार इस पद की दो क्रियाएँ एक दूसरे से संबंधित है । अध्यात्मिक रूप से वे समानांतर है । एक को दूसरे का परिणाम होना चाहिए !

1. यहोवा से प्रेम रखना – बीडीबी 2, केबी 17, क्वेल पूर्ण; पद; 13, 22 देखें पूर्ण लेख 5:10 में
2. उसकी विधियों को मानना – बीडीबी 1036, केबी 1581, क्वेल पूर्ण

यह 6:2, 4–5; 10:12 की दुहराव है । प्रेम, क्रिया (आज्ञापालन) और एक अनुभव (पूरे हृदय और पूरे आत्मा और पूरे सामर्थ के साथ 13:3) दोनों है ।

❖ उसके विधियों, नियमों और आज्ञाओं, देखें विशेष विषय 4:1 में ।

11:2 और तुम आज यह सोच समझ लो कि मैं तो तुम्हारे बाल बच्चों से नहीं कहता, जिन्होंने न तो कुछ देखा है और न कुछ जाना है, मूसा उन लोगों केलिए विनती कर रहा है जिन्होंने निर्गमन ओर जंगल परिभ्रमण की घटना के (4:34; 7:19) प्रत्यक्ष साथी थे (लेवियों के समान और 20 वर्ष की आयु के नीचे के बच्चें, 1:6, 9,14; 5:25; 11:2,7)।

❖ जानना, देखें पूर्ण लेख 4:35 में ।

❖ यहोवा की तड़ना, पद 3 में परमेश्वर की ताड़ना (बीडीबी 416) सकारात्मक है;और पद 6 में नकारात्मक है । बच्चापें की शिक्षा प्रणाली हमारे परमेश्वर पिताकी गुण चरित्र है (इब्रा. 12:5–13) । बुद्धि शब्द का यह दूसरा प्रयोग है जो नीतिवचन में प्राय: प्रयोग हुआ है ।

❖ उसकी महिमा देखें पूर्ण लेख 10:17 और 4:31 में ।

❖ उसके बलवंत हाथ, और बढ़ाई हुई भुजा, परमेश्वर सामर्थ के लिए इस ईश्वर शरीर रचना वाक्यखण्ड का प्रयोग हुआ है (4:34; 5:15; 16:21; 9:29) । देखें लेखे 4:34 में ।

11:4 लाल समुद्र में डुबोकर उनको नष्ट कर डाल, यहां इब्रानी शब्द रीड समुद्र बीडीबी 410 निर्माण I 693) । शब्दानुसार निमग्न करना उनके मुखों के ऊपर से बहना(बीडीबी 847, केबी 1012, हिफिल पूर्ण, निग; 14:23-31, जो डुबाकर मारने की एक मुहावारा है ।

11:5 जंगल में भटकने के दौरान परमेश्वर के अलौकिक प्रयोजन की यह याद दिलाने वाली पद है । देखें पूर्ण लेख 8:4 में ।

11:6 दातान और अबीराम देखें गि. 16:1-35; 26:9-10; भ.स. 106:16-18 ।

❖ सारे इस्राइलियों के बीच, देखें विशेष विषय 1:1 में ।

NASB मूलग्रंथ; 11:8-12

इस कारण जितनी आज्ञाएँ मैं आज तुम्हें सुनाता हूं उन सभों मो काना करना, इसलिये कि तुम सामर्थी होकर उस देश में जिसके अधिकारी होने के लिये तुम पार जा रहे हो प्रवेश करके उसके अधिकारी हो जाओ, औरउस देश में बहुत दिन रहने पाओ, जिसे तुम्हें और तुम्हारे वंश को देने की शपथ यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी, और उसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती है । देखों, जिस देश के अधिकारी होने को तुम जा रहे हो वह मिस्र देश के समान नहीं है, जहां से निकलकर आए हो, जहां तुम बीज बोते थे और हरे साग के खेत की रीति के अनुसार अपने पांव से नालियां बनाकर सींचते थे; परन्तु जिस देश के अधिकारी होने को तुम पार जाने पर हो वह पहाड़ों और तराइयों का देश है, और आकाश की वर्षा जल से सिंचता है; वह ऐसा देश है जिसकी तेरे परमेश्वर यहोवा को सुधि रहती है; और वर्ष के आदि से लेकर अंत तक तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि उस पर निरंतर लगी रहती है ।

11:8 इस कारण अध्याय 11 के सभी पूर्व के ऐतिहासिक उद्देश्य या संभवत: यहां तक उससे भी पहले की ओर संकेत करता है˙ कई व्यवस्था विवरण के इस बात तक, बारम्बार वर्णित की गई निर्देश है ।

11:9 और उस देश में बहुत दिन रहने पाओ, व्य. 5:16 से पद, 21 की तुलना करें । यह अकेले व्यक्ति के दीर्घायु होने के लिए प्रतिज्ञा नहीं है लेकिन एक समाज के लिए सभ्यता के स्थिरता की प्रतिज्ञा है जो परमेश्वर की व्यवस्था का सम्मान करती है (4:1;8:1) और इसके द्वारा परिवार का सम्मान करती है (4:40; 5:16,33;6:2) । देखें पूर्ण लेख 4:40 में ।

❖ जिसे तुम्हें देने की शपथ यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी । देखें विशेष विषय: पूर्वजों से की गई वाचा की प्रतिज्ञा 9:5 में ।

❖ ऐसा देश जिसमें दूध और मधु की धारा बहती है, यह सिर्फ एक शरीरत्व वर्णन नहीं है किन्तु अग्रेटिक और मिस्र की लेखों में पलिश्ति देशे के लिए एक पारिभाषिक नियुक्ति है । देखें लेख 6:3 में ।

11:10 मिस्र देश के समान नहीं है, फसल की पैदावार मिस्र में बिल्कुल पलिश्ति से भिन्न थी । पलिश्ति में ऋतु से संबंधित वर्षा होती थी (पद 11) किन्तु मिस्र को नील नदी और इसके वार्षिक बाढ़ से सिंचाई के काम के लिए निर्भर रहना पड़ता था ।

❖ अपने पावों से नालियां बनाकर सींचते थे, सभवत: यह प्रकट करता है (1) एक भूमि में पानी भर गया था और सिंचाई के काम की पद्धति के कारण, पानी निकालने के लिए पावों का प्रयोग, खाई में एक छेद करने के लिए किया गया है क्या । (2) सिंचाई के लिए पानी को हटाने के लिए ट्रीडमील का प्रयोग हुआ है ।

11:11 देश.... आकाश की वर्षा से सींचता है, मरूस्थल में रहने वालो लोगों के लिए पर्याप्त, नियमित पानी से बढ़कर कोई आशी नहीं है (8:7-9) वाचा की आज्ञापालन शर्त पर यह अच्छा देश है पद 16, 17; लैव्य; 26:14-20, व्य. 28:12; 23-24; I राजा 8:35; 17:1; II इति; 7:11-14; याशा; 5:6,यिर्म, 14; आमोस; 4:7-8) ।

11:12 यहोवा की दृष्टि पद; 2 के समान यहोवा पर यह एक ईश्वर शरीर रचना का वर्णन है वायदे के देश पर उसके विशेष ध्यान और उपस्थिति को यह प्रकट करता है । देखें विशेष विषय 2:15 में ।

NASB मूलग्रंथ; 11:13-17

और यदि तुम मेरी आज्ञाओं को जो आज मैं तुम्हें सुनाता हूं ध्यान से सुनकर,अपने संपूर्ण मन और सारे प्राण के साथ, अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखों और उसकी सेवा करते रहो, तो मैं तुम्हारे देश में बरसात के आदि और अंत दोनों समयों की वर्षा को अपने अपने समय पर बरसाऊंगा, जिससे तू अपना अन्न,नया दाखमधु, और टअकातेल संच करसकेगा । और मैं तेरे पशुओं के लिये तेरे मैदान में घास उपजाऊँगा, और तू पेट भर खाएगा और संतुष्ट रहोग । इसलिये अपनेविषय में सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन धोखा खाएँ, और तुम बहककर दूसरे देवताओं की पूजाकरने लगो और उनको दण्डवत् करने लगो, 17 और यहोवा का कोप तुम पर भड़के और वह आकाश की वर्षा बन्द कर दे, और भूमि अपने उपज न दे और तुम उस उत्तम देश में से जो यहोवा तुम्हें देता है शीघ्र नष्ट हो जाओ ।

11:13 यहोवा के आशीषों की शर्तपूर्ण (यदि बीडीबी 49, पद 22 और आज्ञापालन बीडीबी 1033, केबी 1570, क्वेल अनिश्चित निश्चत और क्लेल अपूर्ण उसी मूल से, जो महत्व देता

है और अर्थ उसी प्रकार करने के लिए सुनना ।) स्वभाव है :

(1) प्रेम रखना – बीडीीबी 12, केबी 17, क्वेल अनिश्चित निर्माण

(2) सेवा करना – बीडीबी, 712 केबी 773, क्वेल अनिश्चित निर्माण, अरब की भाषा में इस मूल का अर्थ आराधना करना और परमेश्वर की आज्ञा मानना है, निर्ग. 3:12; 4:3; 7:16, 8:1

(3) अपने संपूर्ण मन और सारे प्राण के साथ 4:29; 6:5;और विशेष रूप से 10:12 मूसा इस आदेश को बारम्बार महत्व देने केलिए दोहरा रहा है ।

❖ मन प्राचीन इब्रानी में मन एक व्यक्ति के बुद्धि, विचार, समझ और प्रेरक के लिये बतलाया गया था । देखें विशेष विषय 2:80 में ।

❖ प्राण शब्द का अर्थ परमेश्वर के द्वारा जीवन प्रभाव दिया जाना (बीडीबी 659) । यह उत्पत्ति मुं मानव या जानवर को सूचित कर सकती है ।

11:14 मैं वर्षा को बरसाऊगां, यहोवा के वाचा की आशीषों और श्रापों की व्याख्या वह देगा (बीडीबी 678, केबी 733) है :

1. पद 9 क्वेल अनिश्चित निर्माण (आशीष)
2. पद 14 – क्वेल पूर्ण (आशीष)
3. पद 15 – क्वेल पूर्ण (आशीष)
4. पद 17 – क्वेल अपूर्ण (श्राप)
5. पद 17 – क्वेल पूर्ण (श्राप)
6. पद 21 – क्वेल अनिश्चित निर्माण (आशीष)
7. पद 25 – क्वेल अपूर्ण (आशीष)
8. पद 26 – क्वेल कृदत्त (आशीष/श्राप)
9. पद 29 – क्वेल पूर्ण (आशीष/श्राप)
10. पद 31 – क्वेल कृदन्त (आशीष)
11. पद 32– क्वेल कृदन्त (आशीष/श्राप)

यहोवा आशीष देना चाहता है, लेकिन इस्रायल के वाचा की आज्ञापालन पहले से निर्धारित रकती है कौन सी प्रति वचन (आशीष या श्राप; अध्याय 27–29) को वह प्राप्त करती है ।

परमेश्वर प्रकृति से अलग है तब भी इसको नियंत्रण में रखता है । वह स्वयं को मानव जाति पर प्रकट करने के लिए इसका प्रयोग करता है (व्य. 27–28; भ.स.19:1–6;रोमि. 1:19–25; 2:14–15) ।

❖ आदि, पलिश्ति देश में दो बार बारिश होने का समय है । प्रारंभिक वर्षा (रोपाई के लिये) अक्टूबर–नवंबर में होती है (बीडीबी 435, यिर्म;5:24; होशे; 6:2 योयल 2:23) ।

❖ अन्त की बारिश, अंत की बारिश (उपजे हुए फसल के लिए) मार्च से अप्रैल में होती है (बीडीबी 545, यिर्म 3:3; योयल 2:23) । दूसरेसमयों में भारी ओस र्सिु गिलेपन का स्त्रोत है होशे 6:3 इसे अंतिम समय में आत्मिकता के नवीनीकरण के लक्षण के रूप में प्रयोग करता है ।

❖ तू अपना अन्न, नया दाखमधु, टटकातेल, यह उनके आहार की सामग्री थी (7:13)

11:15 तेरे पशुओं के लिए, शब्द पशु संकेत करता है :

(1) मानव के अलावा सभी दूसरे जीवित प्राणी, उत: 8:1; निर्ग; 9:9, 10,22

(2) पालतू जानवर, उत: 47:17; निर्ग; 20:10; लैव्य 19:18; 26:22; गि. 3:41, 45 व्य. 2:35

❖ तू पेट भर खाएगा और सतुष्ट रहेगा । व्य. में यह क्रियाबार–बार बतायी गई प्रतिज्ञा है (6:11; 8:10;11:15;14:29) । यह दो क्रियाओं से बना हुआ है :

(1) खाना बीडीबी 37, केबी 46, क्वेल पूर्ण

(2) संतुष्ट होना – बीडीबी 959, केबी 1302, क्वेल पूर्ण

11:16–17 यह पद व्यभिचार और इसके परिणामों के बारे में चेतावनी है (सावधानी बीडीबी 1036, केबी 1581, निफाल आज्ञात्मक; 4:915, 23; 6:12 8:1; 11:16; 12:13, 19, 28, 30; 15:9; 24:8 (देखें सूची 6:12 में)

विशेष विषय : मूर्ति पूजा के परिणाम

(अ) मन बहकाए नहीं गये है – बीडीबी 834, केबी 984, क्वेल अपूर्ण, अय्यु 31:27

(1) दूर हो गये है – बीडीबी 693, केबी 747, क्वेल पूर्ण, निर्ग; 32:8; 9:12; 17:11, 17; यिर्म;5:23

(2) दूसरे देवताओं की सेवा करना – बीडीबी 712, केबी 773, क्वेल पूर्ण 7:4, 16; 8:19; 11:16; 13:6, 13;17:3; 28:14, 36, 64; 29:26; 30:17; 31:20; यहोशू 23:16; 24:2, 16; यिर्म 11:10; 13:10; 16:11, 13; 22:9 ; 25:6; 35:15

(3) आराधना करना बीडीबी 1005, केबी 295, हिथपेल (ओन्स, पृ. 805) और हिसतापेल (पदच्छेद मार्गदर्शन, पृ.146)

स्पष्ट रूप से यह इस्रायल के भाग पनर बार–बार होने वाली प्रवृत्ति है ! मूर्तिपूजा के परिणाम कष्टदायक थे ।

(ब) यहोवा का क्रोध तुम पर भड़क उठेया – बीडीबी 354, केबी 351, क्वेल पूर्ण; निर्ग; 4:13स 22:24; 32:10; गि. 11:/110;12:9; 32:10; व्य. 6:15, 7:4; 11:17; 29:27 यहोशू 23:11

(1) वह आकाश को बंद कर देगा ताकि बरसात न होने पाएं । वाचा के आज्ञा न मानने के कारण श्राप का यह एक भाग है, 28:24; II इति; 6:26–28; 7:13

(2) भूमि से उपज उत्पन्न नहीं होगा – वर्षा न होने की परिणाम

(स) तुम अच्छे देश से जल्द ही नष्ट हो जाओगे – बीडीबी 1, केबी 2, क्वेल पूर्ण ; 4:26; 7:4; 8:19, 20; 28:20, 22; 30:18; यहोशू 23:13,16

कोई भी यहां मधय चुनाव नहीं है । परमेश्वर ने अपनी वाचा को पूर्णतया आज्ञाकारी या अपराध में प्रस्तुत करता है । पाप में गिरा हुआ मानव, पूर्ण आज्ञापालन के इस सीमा को प्राप्त नहीं कर सकता है (यहोशू; 24:19) । इसलिए परमेश्वर की कृपा और उसके कार्यों पर आधारित एक नई वाचा की जरूरत यहां थी/है (यिर्म; 31:35:4; यहे 36:22–38; रोमि; 3:9–18, 23; गल.3) !

NASB मूलग्रंथ; 11:18–25

तुम्हारे सामने कोई भी खड़ा न रह सकेगा, क्योंकि जितनी भॅमि पर तुम्हारे पांव पड़ेंगे उस सब पर रहनेवालों के मन में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारे कारण उनमें डर और थरथराहट उत्पन्न कर देगा ।

11:18–20 ये पद अध्याय 6:6–9 की संक्षिप्त सारांश है । उनका मतलब विश्वसनीय परमेश्वर के वचन के प्रकाश में जीवन जीने की मोहर लगाने की जरूरत है ।

❖ इसलिए तुम इन वचनों को लिखना, यह आलंकारिक संबंधी है, बीडीबी 962, केबी 1321, क्वेल पूर्ण, 32:46 । यह वह है जो 6:8 और निर्ग 13:9 16 अर्थ का लक्षण है । परमेश्वर के वचन को हमेशा तुम्हारी आंखों के मध्य में रखों । प्रत्येक कार्य को उनके प्रकाश में फिर से विचार करे ।

11:19 अपने बच्चों को सिखाया करना देखें लेख 4:9 में ।

11:20 लिखना पूर्वकाल में कुछ विद्वानों ने मूसा की योग्यता और प्राचीन इस्रायली के लिखावट के लिए प्रश्न था । पुरातत्वज्ञान संबंधी प्रमाण जैसे वृद्धि हो चुकी है, कोई भी आज इस बात को इन्कार नहीं करेगा । देखें द क्वेश्चन ऑफ लिटरेरी इन एपरोचेस टू द बाईबिल, बोल.2, पृ. 142–53 (बाईबिल संबंधी पुरातत्व समाज से, 1995) ।

11:12

NASB **“जब तक पृथ्वी के ऊपर का आकाश बना रहे”**

NKJV, **“पृथ्वी के ऊपर आकाश दिनों के समान है”**

NRSV **“जब तक पृथ्वी के ऊपर आकाश है”**

TEV, NJB **“जब तक पृथ्वी के ऊपर में आकाश है”**

यह नित्य विधि की समानांतरण कनथ है (निर्ग 12:14; 17, 24, 25; 13:10) यह नित्यता की एक लक्षण है ।

11:12 वाचा के शर्तपूर्ण स्वाभाव और (पद 13) इसकी मांग बार-बार होने वाली आवर्तक है :

(1) शर्त पद 13 के समान है, किन्तु थोड़ी कठिन है :

(अ) और यदि, बीडीबी 49

(स) मानना बीडीबी 1036, केबी 1581, क्वेल अनिश्चित और क्वेल अपूर्ण क्रिया (व्याकरण संबंध निर्माण का प्रयोग महत्व देने के लिया हुआ है)

(2) मांग (क्वेल अनिश्चित निर्माण करने की श्रेणी, पद 13 के समान) :

(अ) करना - बीडीबी 793, केबी 889

(ब) प्रेम रखना - बीडीबी 12, केबी 17

(स) लिपटे रहना - बीडीबी 179, केबी 209; 10:20; 13:4

11:23-25 शर्तपूर्ण वाचा के प्रतिज्ञा की ये परिणाम है (उदा. जैसे तुमसे उसने कहा है पद 25)

(1) यहोवा उन सब जातियों को तुम्हारे आगे से निकाल डोलगा पद;23, बीडीबी 439, केबी 441, हिफिल पूर्ण निर्गस 34:24;गि. 32:21; व्य. 4:37-38; 9:4-5, यहोशू 23:5-13

(2) तुम अपने से बड़ी और सामर्थी जातियों के अधिकारी हो जाओगे पद 23, बीडीबी 439; केबी 441 क्वेल पूर्ण 7:17; 9:3; गि. 33:52

(3) जिस जिस स्थान पर तुम्हारेपांव के तलवे पडे वे सब तुम्हारे ही हो जायेगें, पद 24 बीडीबी 201, केबी 231, क्वेल अपूण; यहोशू 1:3 । उनकी सीमाओं की व्याख्या उत; 15:18; निर्ग. 23:31 व्य. 1:7; 3:12-17; यहोशू 1:1-4; 13:8-12

(4) तुम्हारे सामने कोई भी खड़ा न रह सकेगा पद 25; बीडीबी 426, केबी 427; हिथपेल अपूर्ण; 7:24; यहोशू 1:5; 10:8; 23:9

(5) तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उत्पन्न कर देगा बीडीबी 678, केबी 733 क्वेल अपूर्ण

(अ) डर - बीडीबी 802, 2:25

(ब) थरथराहट - बीडीबी 432, उत; 9:2

इसी तरह की सच्चाई, किन्तु भिन्न शब्द, निर्ग ; 23:27 और यहोशू 2:9 में है ।
11:24 वायदे के देश की सीमाओं की पूर्ण सूची के लिए देखें 1:8 ।

NASB मूलग्रंथ; 11:26-28

सुनो मैं आज के दिन तुम्हारे आगे आशीष और शाप दोनों रख देताहूं । अर्थात यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को इन आज्ञाओं को जो मैं आज तुम्हें सुनाता हूं मानो, तो तुम पर आशीष होगी, और यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को नहीं मानोगे, और जिस मार्ग की आज्ञा मैं सुनाता हूं उसे तजकर दूसरे देवताओं के पीछे हो लोगे जिन्हें तुम नहीं जानते हो, तो तुम पर शाप पड़ेगा ।

11:26-28 यहोवा और उसके लोगों के बीच की शर्तपूर्ण वाचा के परिणामों को ये पद जारी करता है । व्य. 27-29 में वे विस्तृत है । ये पद यहूदियों के अत्यधिक इतिहास की व्याख्या करता है । यह वाक्यखण्ड ध्यान देने की एक सामान्य पुकार के साथ प्रारंभ होती है। सुनो - बीडीबी 096, केबी 1157, क्वेल आज्ञात्मक; 1:8, 21; 2:24; 4:5; 11:26; 30:15; 32:39 । शब्द आज (बीडीबी 398) निश्चित प्रार्थना करने वाला, तुरंत कार्य की पद्धति है । (4:39) ।

(1) आशीष बीडीबी 139

(अ) यदि तुम सुनो - बीडीबी 1033, केबी 1570, क्वेल अपूर्ण, सुनो ताकि वैसा करो आज्ञाएँ दी गई, 4; 1;5:1; 6:3, 4:9:1; 20:3; 27:10; 33:7; शर्तपूर्ण 7:12; 11:13 (दोहरा) 15:5 (दोहरा) 28:1 (दोहरा) 13; 30:10, 17

(2) श्राप - बीडीबी 887

(अ) यदि तुम न सुनो ऊपर के समान क्वेल अपूर्ण

(ब) तजकर बीडीबी 693, केबी 747, क्वेल पूर्ण

(स) दूसरे देवताओं के पीछे चले बीडीबी 229, केबी 246, शब्दानुसार, चलना 6:14; 8:19; 11:28; 13:2;28:14; न्या 2:12 यिर्म, 7:6, 9;11:10; 13:10 निर्देश करने के इस अंतर को प्राय: दो तरीके कलाया गया है (अध्याय 28 और 30:1, 15-20 भ.स. 1; यिर्म; 21:8;मती 7:13-14)

11:28 पीछे हो लेना शब्दानुसार यह जानना है । देखे पूर्ण लेख 4:35 में ।

NASB मूलग्रंथ; 11:29-32

और जब तेरा परमेश्‍वर यहोवा तुझ को उस देश में पहुंचाएं जिसके अधिकारी होने को तू जाने पर है, तब आशीष गरिज्जीम पर्वत पर से और शाप एबाल पर्वत पर सुनाना । क्या वे यरदान के पार सूर्य के अस्त होने की ओर, अराबा के निवासी कनानियों के देश में, गिल्गान के सामने, मोरे के बांज वृक्षों के पास नहीं है ? तुम तो यरदन पार इसीलिये जाने परहो, कि जो देश तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा तुम्हें देता है उसके अधिकारी हो जाओ ; और तुम उसके अधिकारी होकर उस में निवास करोग; 32 इसलिये जितनी विधिया। औरनियम मैं आज तुम को सुनाता हूं उन सभों के मानने में चौकीस करना ।

11:29 आशीष .... शाप, यह पद, शेकेम पर यहोशू के द्वारा वाचा के नवीनीकरण आयोतित किये गये सम्मेलन की व्याख्या करता है (अध्याय 27-28 और यहोशू 8:30-35) प्रकट रूप से लेविय गायकों को दो समूहों ने गरिज्जीम पर्वत से आशीष और एबाल पर्व से शाप का गीत या भजन को गयाया । ये दो पर्वत शेकेम के किराने का मजबूत करती है (उदा. अर्थात् कधें के हथियारों के फल), (बीडीबी 1014)। पुरातत्व ने एबाल पर्वत पर एक बड़े पत्थर की वेदी कोखोजा है जो तालमुद मेंइस वेदी के वर्णन को बराबर करता है । देखें पुस्तक की प्रस्तावना VII ।

यह हित्ती अधिपति लेखों का पीछा करती है, जो राजा और उसके अधीन से संबंधित है (व्य. 27; और यहोशू 24 समान नमूने के लिए) ।

11:30 अराबा मृत सागर के दक्षिण की यह यरदन घाटी है । देखें लेख 1:1 में

❖ गिलगाल, इसका अर्थ, पत्थरों का घिराव है (बीडीबी 166 II) जो इस्रायलियों का नाम था कनान में प्रथम तम्बू का स्थान (यहोशू 4:19) । किन्तु, यह अकेला शायद आगे की ओर रोकेम के उत्तरी निकट हुआ (देखें द IVP बाइबल बेकग्राउंड कॉमेंट्री, ओटी.पृ. 181) ।

❖ मोरे के बाजँ वृक्ष, यह एक पवित्र वृक्ष या वृक्षवाटिका है । हम जानते है कि यह शेकेम के निकट का पवित्र स्थान था क्योंकि उत; 12:6 और 35:4 के कारण से है । मोरे काअर्थ शिक्षक है (बीडीबी 435)

11:31-32 ये संक्षिप्त पद हैं जिन्हें पहले कितनी बार निर्धारित किया गया है यहां विस्तार सहित कह रही है ।

विवादपूर्ण प्रश्न

1. क्यों उसी वाक्यखंड और ऐतिहासिक संबंधी घटनाओं को अत्यधिक व्यवस्थाविवरण दुहराती है?
2. किस प्रकार से वाचा के शर्त संबंधी तत्व को महत्व दिया गया है ?
3. किस प्रकार याहेवा के प्रभुत्व को महत्व दिया गया है ?

*****

व्यवस्था विवरण 12
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
व्यवस्था की गई आराधना का स्थान	आराधना का केन्द्रीकरण	आराधना करने का एक स्थान	धर्म संहिता की व्यवस्था (12:1–26:15)
12:1–28	12:1	12:1–3	12:1
			आराधना का स्थान
झूठे देवताओं से सावधान	12:2–7		12:2–3
		12:4–7	12:4–7
	12:8–12	12:8–14	12:8–12
12:29–32			बलिदान संबंधी व्यवस्था
	12:13–14		12:13–14
	12:15–19	12:15–19	12:15–16
			12:17–19
	12:20–27	12:20–28	12:20–28
	12:28	मूर्तिपूजा के लिए चेतावनी (12:29–13:18)	कनानियों के धार्मिक उपवास के खिलाफ
	12:29–32	12:29–31	12:29–13:1
	मूर्ति पूजा के लिए चेतावनी (12:32–13:18)	12:32	

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB मूलग्रंथ; 12:1-7

जो देश तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें अधिकार में लेने को दिया है, उसमें जब तक तुम भूमि पर जीवित रहो तब तक इन विधियों और नियमों के मानने में चौकसी करना । जिन जातियों तुम अधिकारी होगे उसके लोग ऊँचे ऊँचे पहाड़ों या टीलों पर, या किसी भाँति के हरे वृक्ष के तले, जितने स्थानों में अपने देवताओं की उपासना करते हैं, उन सभों को तुम पूरी रीति से नष्ट डालना; उनकी वेदियों को ढा देना, उनकी लाठों को तोड़ डालना, उनकी अशेरा नामक मूर्तियों को आग में जला देना, और उनके देवतओं की खुदी हुई मूर्तियों को काटकर गिरा देना, कि उस देश में से उनके नाम तक मिट जाएँ । फिर जैसा वे करते हैं, तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये वैसा न करना। किन्तु जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सब गोत्रों में से चुन लेगा, कि वहां अपना नाम बनाए रखे, उसके उसी निवास स्थान के पास जाया करना; और वहीं तुम अपने होमबलि, और मेलबलि, और दशमांश और उठाई हुई भेंट, और मन्नत की वस्तुएँ, और स्वेच्छाबलि, और गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहिलौठे ले जाया करना; और वहीं तुम अपने परमेश्वर यहोवा के सामने भोजन करना, और अपने अपने घराने समेत उन सब कामों पर, जिनमें तुम ने हाथ लगाया हो और जिन पर तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की आशी मिली हो, आनंद करना।

12:1 विधियाँ और निमय देखें विशेष विष 4:1 में ।

❖ तुम मानने में चौकसी करना, यह एक क्रिया, चौकसी करना की संयोग है (बीडीबी 1036, केबी 1581, क्वेल अपूर्ण) और एक क्वेल अनिश्चित निर्माण, (बीडीबी 793, केबी 889) । यह एक बारम्बार होनेवाली आवतक विषय है (उदा; निर्ग; 23: 31,21; 34:11-12; लैव्य; 18:4-5, 26, 30; व्य; 4:6, 9, 15, 23, 40 वयवस्थाविवरण और बुद्धि साहित्य में विशेष तौर से बहुत अत्यधिक ।

❖ तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है, क्रिया पूर्णतया के कार्य को दिखाताहै (बीडीबी 678, केबी 733, क्वेल पूर्ण) तो भी घटनाएँ भविष्यफल है । निश्चम दर्शाने का यह एक इब्रानी रीति है (उदा; भविष्यवाणी संबंधी पूर्ण) । व्य. में यह बारम्बार होने वाली आवर्तक विषय है । (1:8, 20,21,25,35,36,39; 2:29;3:18, 20; 4:1, 21,38,40; 5:16, 31; 6:10, 23; 7:13, 16; 8:10; 9:6, 23; 10:11; 11:9, 17, 21, 31;12:1,9; 15:4; 17:4; 18:9; 19:1, 2,8,14,; 21:23; 24:4; 25:15, 19;26:1, 2, 3, 6, 9, 10, 15; 27: 3;28:8, 11, 52; 31:7; 32:39; 34:4) । यह इस्रायल पर यहोवा के अनुग्रहपूर्ण चुनाव और प्रयोजन को दिखाता है ।

❖ अधिकार में लेने को, क्रिया (बीडीबी 439, केबी 441, क्वेल अनिश्चित निर्माण) एक बारम्बार होने वाली आवर्तक की प्रतिज्ञा है । देखें विशेष विषय : देश पर अधिकार करना 8:1 में ।

❖ भूमि पर, भूमि पर को दूसरे रीति से देश में कहना है (पद;19) । जब तक इस्रायली परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते है, तब तक वे वायदे तक के देश में रहने पायेगें । देखें लेख 4:40 में ।

भूमि के लिए रस पद में दो भिन्न शब्द है :

(1) भूमि पर – बीडीबी 75

(2) पृथ्वी पर – बीडीबी 9

वे दोनों कनान की भूमि को या पूरे देश को उल्लेखित करती है । वे सामान्य तौर में पर्यायवाची है (4:38–40; 11:8–9; 12:1; 26:2,15) ।

❖ उन सभों को पूरी रीति से नष्ट कर डालना, पूरी रीति से नष्ट एक इब्रानी शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ, नष्ट करने का कारण है बीडीबी 1, केबी 2, पीयल अनिश्चित निश्चित और पीयल अपूर्ण; जो तीव्रता को दिखाता है; पद;3; गिनती 33:52 (दोहरा); II राजा 21:3) । परमेश्वर इस्राइलियों को दोष से सावधान करने के लिए दूसरे देवताओं के बेदियों को नष्ट करने के लिए कह रहा था, ताकि तुम भी उनके उपजाऊ देने वाली देवतआ की आराधना करने का हिस्सा न बन जाओं (निर्ग 23:24; 34:13) ।

❖ ऊँचे–ऊँचे पहाड़ों पर टीलों पर या किसी भांति के हरे वृक्ष पर, ये सभी स्थानिक बाल और अशेराके वेदियों का स्थान है, जहाँ पर उपजाऊपन संस्कार की पूजा–पाठ की गई (यिर्म; 2:20; 3:2,6;17:2; याशा; 57:5,7; होशे;4:13)

12:3 लाठों को तोड़ डालना, नीचे दिये गये विशेष विषयों को देखें ।

12:5 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सब गोत्रों में से चुन लेगा, परमेश्वर ने आराधना का स्थान (निर्ग; 20:24) चुना (बीडीबी 103, केबी 119, क्वेल अपूर्ण, पद;11, 14,18, 21, 26;14:25; 15:20; 16:2,6,11,15; 17:8, 10; 18:6; 26:2; 31:11) ।

इस्रायल के साथ निवास स्थान (संदूक) यात्रा किया था –

(1) गिल्गाल, यहोशू; 4:19; 10:6, 15

(2) शेकेम ; यहोशू 8:33

(3) शीलो; यहोशू; 18:1;न्या. 18:31; I शमु; 1:3

(4) बेतेल; (संभवत:) न्या. 20:18, 26–28;21:2

(5) किर्यत्यारीम, सदूंक, I शमु, 6:21; 7:1–2 (नोब पर याजक, I शमु; 22–22)

(6) यरूशलेम

(अ) दाऊद ने यबूसियों को गढ़ को जीत लिया (II शमु; 5:1–10)

(ब) यरूशलेम में दाऊद संदूक को लाता है (II शमु; 6)

(स) दाऊद मंदिर के स्थान को खरीदता है (II शमु; 24:15–25;II इति 3:1)

❖

NASB **" कि वहां अपना नाम बनाए रखे, उसके उसी निवास स्थान"**

NKJV **"उसके निवास स्थान के लिए उसका नाम बनाए रखे"**

NRSV **"अपने निवास के लिए वहाँ अपना नाम बनाए रखे"**

TEV **"उसके उसी निवास स्थान के पास लोग जमा करे"**

NJB **"कि वहा अपना नाम बनाए रखें और एक निवास स्थान में सौंपें"**

पद 11 के द्वारा इस पद का अनुवाद प्रभावित हुआ है । पद 5 उसके निवास स्थान के लिए (बीडीबी 1015) है; जबकि पद; 11 निवास के लिए है (बीडीबी 1014, केबी 1496, पीयल अनिश्चित निर्माण) अर्थ में वे बहुत ही और कोई भी आध्यात्मिक भिन्नताएँ नहीं है ।

विशेष विषय: : यहोवा के नाम

स्वयं यहोवा के प्रतिनिध के रूप में नाम का प्रयोग निर्ग; 23:20–33 का दूत उसमें मेरा नाम रहता है के समानान्तरण है । इसी के समान स्थानापन्नता को उसकी महिमा के प्रयोग में भी देखा जा सकता है (यहु; 1:14; 17:2) । सभी यहोवा के व्यक्तिगत ईश्वर–शरीर–रचना उपस्थिति को कोमल करने का प्रयत्न करते हैं (निर्ग; 3:13–16; 6:3) । यहोवा ने निश्चित तौर से मानवीय शब्द को बोला लेकिन इसे यह भी जाना गया है कि वह आत्मिक तौर से पूरी सृष्टि में उपस्थित था (I राजा; 8:27; भ.स. 139:7–16; यिर्म; 23:24; प्रे.का. 7:49 लिया गया है याशा; 66:1 से) ।

नाम के अनेको उदाहरण यहां है जो यहोवा के अद्‌भुत अस्तित्व और व्यक्तिगत उपस्थिति को प्रस्तुत करता है :

(1) व्य. 12:5; II शमु 7:13; I राजा 9:3; 11:36

(2) व्य 28:28

(3) भ.स.5:11;7:17; 9:10; 33:21; 68:4;91:14; 103:1; 105:3; 145:21

(4) याशा ; 48:9; 56:6

(5) यहे. 20:44; 36:21; 39:7

(6) आमोस 2:7

(7) यहु. 17:6; 11,26

यहोवा के नाम को पुकारने (उदा. आराधना करना) के अभिप्राय को उत्पत्ति में देशा गया है :

(1) 4:26; शेत के वंशज

(2) 12:8 अब्राहम

(3) 13:4, अब्राहम

(4) 16:13, हाजिरा

(5) 21:33 अब्राहम

(6) 26:25, इसहाक

और निर्गमन में :

(1) 5:22-23, तेरे नाम से बातें करना

(2) 9:16, मेरे नाम का प्रचार सारी पृथ्वी पर हो (रोमि. 9:17)

(3) 20:7, अपने परमेश्वर यहोवा का नाम व्यर्थ न लेना (लैव्य 19:12; व्य; 5:11; 6:13; 10:20)

(4) 20:24, कि वहां मेरा नाम का स्मरण कराँऊ (व्य. 12:5; 26:2)

(5) 23:20-21, एक दूत (उसमें मेरा नाम है)

(6) 34:5-7 यहोवा के नाम को मूसा पुकारता (या बुलाता) है यह मूलग्रंथ की मुठीभर में से एक है, जो यहोवा के चरित्र की व्याख्या करता है (नहें; 9:17; भ.स; 103:8; योयल 2:13) ।

किसी के नाम से किसी को जानना घनिष्ठता को दिखाता है (निर्ग, 33:12) मूसा पद 33:17 में यहोवा के नाम को जानता है ओर यहोवा मूसा के नाम को जानता है । इस संदर्भ में मूसा परमेश्वर की महिमा को देखना चाहता है (पद; 18), लेकिन परमेश्वर उसे अपनी भलाई को देखने की अनुमति देता है (पद; 19), जो नाम के समानान्तर है (पद; 197) ।

कानानियों के देवताओं के नाम को इस्राइलियों को नष्ट करना था (व्य. 12:3) और यहोवा ने सभी विशेष स्थानों में उसके नाम को बनाए रखने को कहा और पुकारने को कहा (व्य; 6:13:10:20; 6:2) (निर्ग; 20:24; व्य: 12:5, 11, 23; 14:23, 24:16:2,6,11 26:2) । अपने नाम को संलग्न कर, यहोवा के पास एक सार्वभौमिक योजना है :

(1) उत 12:3

(2)	निर्ग 9:16
(3)	निर्ग; 19:5-6
(4)	व्य; 28:10, 58
(5)	मीका; 4:15

12:6 यह पद बलि कर्म के अनेक प्रकार की सूची बनाता है :

(1) होमबलि इसका मतलब पूरी रीति से होमबलि (बीडीबी 750II) है । परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण, को यह दिखाने की पद्धति थी । यह एक ऐच्छिक बलिदान था (लैव्य; 1) ।

(2) मेलबलि यह एक आंशिक रूप से जला हुआ और आशिंक रूप से जली हुई बलिदान को प्रकट करता है (बीडीबी 257) । ये सभी, पाप बलि, मेलबलि, धन्यवाद की बलि आदि थे । ये किसी भी बलिदान, जिसमें लहू से संयुक्त हुआ होना था (लैव्य; 7)

(3) दशमांश दशमांश, याजकों की सहायता करने का इस्रायल का एक तरीका था, जिन्हें कोई भी भूमि का अधिकार नहीं था । दो प्रकार के दशंमाश मालूम पड़ते है (बीडीबी 798) :

(अ) प्रधान पवित्र स्थान के लिए

(ब) स्थानिक लेवियों के लिए, संभवतया के साथ एक

(स) स्थानिक गरीबों के लिए प्रत्येक तीन वर्ष (लैव्य; 27:30-33; निग.19:21-22)

(4) उठाई हुई भेंट, के लिए यह एक इब्रानी शब्द है बीडीबी 229, केबी लैव्य 7:32) यह एक बलिदान को पृकट करता है जहां पर जानवरों के कुछ भागों को याजक के खाने के लिए छोड़ा जाता है ।

(5) मन्नत की वस्तुएँ, यह (बीडीबी 623) परमेश्वर के पास शर्तपूर्ण मन्नत की एक उदाहरण है, मैं यह करूंगा, यदि तुम उसे कर दोगें । यह यहुदियों के मन्नत मांगने का उनका एक भाग था (लैव्य 7:16-18)

(6) स्वेच्छाबलि यह (बीडीबी 114) एक व्यक्ति जो परमेश्वर की भलाई से व्याकुल था, उसके द्वारा स्तुति या धन्यावाद के बलि को प्रकट करता है (लैव्य 22:18)

(7) पहिलौठे, यह (बीडीबी 114) संदर्भ है उस घातक दूत जो मिस्र में जानवर और मानव जाति के पहिलाठे को जाकर मार रहा था । इस घटनाके प्रकाश से सभी जानवरों और मानवजाति के पहिलौठे, अनोखे रूप से परेश्वर के है (निर्ग; 13; लैव्य 27:26-27) !

12:7 वहीं तुम अपने घराने समेत यहोवा के सामने भोजन करना, एक संगति के भोजन करने यह प्रकट करता है जो फसह के पर्व ओर आनंद करने दोनों के आध्यात्मिक संबंधी अग्रदूत है (पद; 12, 18, 14:26; प्रका. 3:20) । परमेश्वर के लोग उसके साथ सृष्टि के स्थूल और आराधना की घनिष्ठता में आनंद मनाने के लिए सृजे गये थे (बीडीबी 970; केबी 1333 क्वेल पूर्ण) (लैव्य 23:40;गि. 10:10; व्य. 12:7, 12, 18, 14:26; 16:11; 27:7; 28:47)

NASB मूलग्रंथ; 12:8-12

जैसे हम आजकल यहाँ जो काम जिसको भाता है वही करते हैं वैसा तुम न करना जो विश्रामस्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे भाग में देता है वहां तुम अब तक तो नहीं पहुंचे परन्तु जब तुम यरदन पार जाकर उस देश में जिसके भागी तुम्हारा परमेश्वर यहोवातुम्हें करता है बस जाओ,और वह तुम्हारे चारों ओर के सब शत्रुओं से तुम्हें विश्राम दे, और तुम निडर रहने पाओ, तब जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुन ले उसी में तुम अपने होमबलि, और मेलबलि और दशमांश और उठाई हुई भेटें;और मन्नतों की सब उत्तम उत्तम वस्तुएँ जोतुम यहोवा के लिये संकल्प करोग, अर्थात जितनी वस्तुओं की आज्ञा में तुम को सुनाताहू उन सभों को वहीं ले जाया करना । और वहां तुम अपने अपने बेटे बेटियों और दास दासियों सहित अपने परमेश्वर यहोवा के सामने आनंद करना और जो लेवीय तुम्हारे फाटकों में रहे वह भी आनंद करे, क्योंकि उसका तुम्हारे संग कोई निज भाग या अंश न होगा ।

12:8 जैसे आज कुल हम यहां करते है वैसे तुम न करना वायेद के देश में चीजें बहुत ही एक प्रकार की होगी । वायदे के देश में अधिक स्थापित क्रियाओं और विशेष तौर में मंदिर पर बाद में यरूशलेम में निर्धारित की गई क्रियाओं से बढ़कर जंगल में भटकने की अवधि के दौरान धार्मिक क्रियायें आसान थी ।

❖ जो काम जिसको भाता है वही करता है, इस वाक्यखण्ड में स्वाभाविक अनुमान यहां है, किन्त न्यायियों में वाचा के बंधन या तो पापमय चुनाव या वाचा के तिरस्कार के द्वारा से एक व्यक्ति के आजादी के मत कि बेईमान के अनुमान पर लेता है ।

12:9 देखें लेख 12:1 में ।

12:10 वह तुम्हे विश्राम .... आश्रय देता है, यहोवा तुम्हें सब शत्रुओं से विश्राम देता है (बीडीबी 628, केबी 679 हिफिल पूर्ण) । आश्रम (बीडीबी 442, केबी 444 क्वेल पूर्ण) की प्राप्ति इस्रायल के बड़े सैन्यदल के सामर्थ से नहीं हुई लेकिन यहोवा की उपस्थिति से हुई है ।

12:11 जो स्थान तुम्हारे परमेश्वर ने अपने नाम का निवास ठहराने के लिए चुन ले, यह संदर्भ आराधना करने के स्थान का केन्द्रीकरण (उदा. निवासस्थान और संदूकर पद 5,13) जो प्रथम शीलों में था ।

12:12 तुम आनंद करना परमेश्वर के व्यवस्था की यह योजना है (पद 7,8: 14:26:28:47) ।

❖ तुम और ध्यान दें कि किस प्रकार परिवार के प्रत्येक लोग के साथ सेवक और स्थानिक लेवी (पद 19) को भभ शामिल किया गया था । एक विचार से ये सभी फैले हुए परिवार के

सदस्य है । उन्हें जीवन की आवश्यकताओं और अगले जीवन के लिए (उदा. आराधना) भी प्रेम किया गया और प्रावधान किया गया ।

12:12, 19 और जो लेविय तुम्हारे फाटकों में रहे, सभी याजक, लेवी थे, किन्तु सभी लेवी याजक नहीं थे । यहां पर लेवी याजक के स्थान पर न रहने वाले लेवी के परिवार को बताता है, जो एक गरीब और दरिद्रता का चिन्ह है (पद; 18,19; 14:27, 2;16:11, 14; 26:12-13) क्योंकि लेवीयों को कोई भी भाग या अंश नहीं दिया गया था । उन्हें व्यवस्था के स्थानिक शिक्षकों के रूप में आदर मान किया जाता था ।

NASB मूलग्रंथ; 12:13-14

सावधान रहना कि तू अपने होमबलियों को हर एक स्थान पर जो देखने में आए न चढ़ाना; परन्तु जो स्थान तेरे किसी गोत्र में यहोवा चुन ले वहीं अपने होमबलियों को चढ़ाया करना, और जिस जिस काम की आज्ञा मैं तुझ को सुनाता हूं उसको वहीं करना ।

12:13 सावधान रहना कि तुम अपने होमबलियों को हर एक स्थान पर जो देखने में आए न चढ़ाना परमेश्वर तुम्हें बलि कर्म के लिये विशेष स्थानों को दिखायेगा (पद 5,11,14) कई स्थानिक कनानियों के वेदियों को वहां पर है करके प्रयोग मत करना । यहोवा को बलिदान उन वेदियों पर मत चढ़ाओं जो बाल के लिए खड़े किये गये हैं । किन्तु, वहां पर कुछ स्थानिक वेदियां यहोवा के लिए बनाई गई थी (व्य. 16:21; I राजा 3:4) ।

इस पद में तीन क्रियाएँ है :

(1) सावधान रहना, बीडीबी 1036, केबी 1581, निफाल आज्ञात्मक

(2) मत चढ़ाना - बीडीबी 748, केबी 828, हिफाल अपूर्ण

(3) देखा - बीडीबी 906, केबी 1157, क्वेल अपूर्ण

NASB मूलग्रंथ; 12:15-19

परन्तु तू अपने सब फाटकों के भीतर अपने जी की इच्छाऔर अपने परमेश्वर यहोवा की दी गई आशीष के अनुसार पशु मारके खा सकेगा शुद्ध और अशुद्ध मनुष्य दोनों खा सकेंगे, जैसे कि चिकारे हरिण का मांस । परन्तु उसका लहू न खाना; उसे जल के समान भूमि पर उँडेल देना । फिर अपने अन्न या नये दाखमधु या टअके तेल का दशमांश और अपने गाय-बैलों या भेड-बकरियों के पहिलौठे, और अपनी मन्नतों की कोई वस्तु और अपने स्वेच्छाबलि और उठाई हुई भेटें अपने सब फाटकों के भीतर न खाना; उन्हें अपने परमेश्वर यहोवा के सामने उसी स्थान पर जिसको वह चुने अपने बेटे बेटियों और दास दासियों के और जो लेवीय तेरे फाटकों के भीतर रहेगें उनके साथ खाना और तू अपने परमेश्वर यहोवा के सामने अपने सब कामों पर जिनमें हाथ लगाया हो आनंद करना । और सावधान रह कि जब तक तू भूमि पर जीवित रहे तक तक लेवियों को न छोड़ना ।

12:15,20–24 तू मारना, यह व्यवस्था के फैलाव को दिखाता है (लैव्य 17:1) यदि एक जानकारी को बलिदान के लिए नहीं, किन्तु खाने के लिए मारा जाता था, (बीडीबी 256, केबी 261, क्वेल अपूर्ण) तो इसे किसी भी स्थान पर माजा जा सकता था ।

12:15 अशुद्ध और शुद्ध यह अशुद्ध जानवर, का विशेषकर खाने के विषय को प्रकट नहीं करता है (पद 20–22;लैव्य 11) लेकिन बलिदान के विषय में अशुद्ध को प्रकट करता है । मनुष्य एक निर्दोष भेड़ को खा सकता है, जैसे जंगली जानवर हिरण को खा सकता है, किन्तु सुअर को नहीं, इत्यादि ।

12:16 तू लहू न खाता, यह इब्रानी आदरमान का वर्णन करता है जो लहू के लिए, एक जीवन का चिन्ह रूप है । यद्यिपि जब वे जानवर को खाने के लिए या बलिदान के लिये मारते थे,उन्हें लहू को बहाना था (15:23; लैव्य 17:13) और इसे नहीं खाना, क्योंकि जीवन, परमेश्वर का है । लहू, जीवन को प्रस्तुत करता है, और जीवन, परमेश्वर का है (पद 23–25; उत; 9:4, लैव्य 7:11–12; 17:10–11)

12:17–18 यह दूसरी चेतावनी है आराधना के लिए सिर्फ केन्द्रीय पवित्र स्थान के उपयोग किये जाने है (पद; 26)

12:17 दशमांश दशमांस दिये जाने के लिए, यह पद अनेक चीजों की सूची बनाता है (बीडीबी 798, 14:23; 18:4; गि; 18:12) :

(1) अन्न – बीडीबी 186

(2) दाखमधु – बीडीबी 440

(3) तेल – बीडीबी 850

यह एक कृषि संबंधी समाज था ।

12:19 देखे लेख पद 12 में

NASB मूलग्रंथ; 12:20–27

जब तेरा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तेरा देश बढ़ाए और तेरा जी मांस खाना चाहे और तू सोचने लगे कि मैं मांस खाऊँगा तब जो मांस तेरा ची चाहे वही खा सकेगा । जो स्थान तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम बताए रखने के लिये चन ले वह यदि तुझ सेबहुत दूर हो, तो गाय–बैल भेड़–बकरी यहोवा ने तुझे दी हो, उनमें से जोकुछ तेरा जी चाहें, उसे मेरी आज्ञा के अनुसार मारके अपने फाटको के भीतर खा सकेगा । जैसे चिकारे और हिरण का मांस खाया जाता है वैसे ही उनको भी खा सकेगा शुद्ध और अशुद्ध दोनों प्रकार के मनुष्य उनका मांस खा सकेंगे । परन्तु उनका लहू किसी भांति न खाना; क्योंकि लहू जो है वह प्राण ही है और तू मांस

साथ प्राण कभी भी न खाना । उसको न खाना, उसे जल के समान भूँमि पर उँडेल देना । तू उसे न खाना इसलिये कि वह काम करने से जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है तेरा और तेरे बाद तेरे वंश का भी भला हो । परन्तु जब तू कोई वस्तु पवित्र करे, या मन्नत माने, तो ऐसी वस्तुएं लेकर उस स्थान को जाना जिसको यहोवा चुन लेगा और वहां अपने होमबलियों के मांस और लहू दोनों को अपने परमेश्वर यहोवा की वेी पर चढ़ाना और मेलबलियों का लहू उसकी वेदी पर उंडेलकर उनका मांस खाना ।

12:20 मैं मांस खाऊंगा, तीन बार इस क्रिया (बीडीबी 37, केबी 46) को दुहराया गया है :

(1) क्वेल कोहोर्टेटिव

(2) क्वेल अनिश्चित निर्माण

(3) क्वेल अपूर्ण

यदि उनको वायदे के देश में मांस खाने का जी करें, तो वे निश्चित तौर से इसे खाने पाएँ :

(1) शुद्ध प्रकार की मांस (पद 17;22)

(2) अच्छे स्थानों पर मारी गई (पद 15,18,21,27)

(3) अच्छी रीति से मारी गई (पद; 16, 23-25)

12:23 निश्तिच होना इस क्रिया (बीडीबी 304, केबी 302, क्वेल आज्ञात्मक) का अर्थ मजबूत होना (31:6, 7,23) दृढ़ता के अभिप्राय से कुछ चीज से अलग या दूर रहना है (I इति ; 28:7) ।

12:26 पवित्र वस्तु यह पद 17 में प्रदर्शित वस्तुओं का उल्लेख करता है ।

12:28 सावधान रहना, व्यवस्थाविवरण में इस क्रिया को (बीडीबी 1036, केबी 1581, क्वेल आज्ञात्मक) बार-बार यहोवा के वाचा की आज्ञा पालन के उत्साह करने के लिये किया गया है । (4:9, 15, 23; 6:12; 8:11; 11:16; 12:13, 19, 28, 30; 15:9, 24:8)

❖ कि तेरा और तेरे वंश का भी सदा भला होता रहे, इस क्रिया (बीडीबी 405, केबी 408, क्वेल अपूर्ण) का प्रयोग व्य. में (4:40; 5:16, 29,33; 6:3; 18;12:25, 28; 22:7) और यिर्मयाह में कई बार हुआ है (7:23; I38:20; 42:6) और यह यहोवा के लोगों के संपूर्ण जीवन में आशीष खुशी को बताती है । फिर से, वाचा की आज्ञापालन, वायदे के देश में दीर्घायु और आशीष से जुड़ी हुई है । अन्नतपूर्ण पीढ़ीयों के लिए यह पूर्ण आज्ञापालन, दोष से सावधान की हुं है (उदा. सर्वदा) देखें विशेष विषय : सर्वदा (ओलाम) 4:40 में ।

❖ कि वह कम जो तू कटे, वह भला और ठीक हो

(1) भला बीडीबी 373

(अ) परमेश्वर की दृष्टि में 6:18; 13:18; II इति, 14:2

(ब) मनुष्य की दृष्टि में : यहोशू 9:25; न्या. 19:24; यिर्म; 26:14

(2) ठीक बीडीबी 449; ऊपर के ही समान, लेकिन व्य.12:25; 13S8 I राजा, 11:38; 14:8; 15:11; 22:43; II राजा; 12:2 में भी समानांतरण के लिए 1 ब को ऊपर देखें, देखें 12:8)

NASB मूल ग्रन्थ 12:29-31

जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को जिनका अधिकारी होने को तू जा रहा है तेरे आगे से नष्ट करे, और तू उनका अधिकारी होकर उनके देश में बस जाए, तब सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि उनका सत्यानश होने के बाद तू भी उनके समानफँस जाए,अर्थात यह कहकर उनके देवताओं के संबंध में यह पूछपाछ न करना, कि उन जातियों के लोग अपने देवताओं की उपासना किस रीति करते थे ? मैं भी वैसे ही करूंगा । तू अपने परमेश्वर यहोवा से ऐसा व्यवहार न करना; क्योंकि जितने प्रकार के कामों सेयहोवा घृणा करता है और बैर-भाव रखता है, उन सभों को उन्होंने अपने देवताओं के लिये किया है, यहाँ तक कि अपने बेटे बेटियों को भी वे अपने देवताओं के लिये अग्नि में डाल कर जला देते हैं ।

12:29 तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे आगे उन जातियों को नष्ट करेगा, क्रिया (बीडीबी 503, केबी 500 हिफिल अपूर्ण) का अर्थ यहोवा ने लोगों को मारकर उन्हें दूर किया (19:1; यहोशू 23:4; II शमु; 7:9; यिर्म 44:8) । यह इस्रायल के युद्ध पर यहोवा के लड़ने को संकेत करता है ।

12:30 सावधान रहना, देखें लेख पद 28 में ।

❖ ताकि तुम न फंस जाओं, क्रिया (बीडीबी 669, केबी 723, निफाल अपूर्ण) इसके क्रेल मूल में शब्दानुसार अर्थ, अपने किये हुए कामों में फंस जाना, है (भ.स.9:16) । निफाल मूल का प्रयोग सिर्फ यहां पर, एक लाक्षणिक विस्तृत संकेत, एक लक्ष्य पर फसॉन फेंकने के लिए किया गया है ।

❖ उनके देवताओं के संबंध में पूछताछ न करना, क्रिया का (बीडीबी 205, केबी 233, क्वेल अपूर्ण) अर्थ खोजना ।

(1) यहोवा 12:5; 4:29; यिर्म; 10:21, 29:13 में ।

(2) कनानी देवता 12:30; II इति 25:15, 20; यिर्ग 8:2 में ।

12:31 इस्रायल को यहोवा स्पष्ट रूप से कह रहा है कि यदि वे उसी घृणित जनन क्षमता आचार का अभ्यास करते रहे, तो वह उन्हें देश से बाहर निकाल देगा (7:4 लैव्य; 18:24-30) जिस प्रकार उसने कनानियों के साथ किया था (उत: 15:16-21) । यहोवा मूर्तिपूजा से (12:31; 16:22; देखें विशेष विषय मानव के रूप में परमेश्वर का वर्णन हुआ है (ईश्वर शरीर रचना भाषा) 2:15 में घृणा करता है । नीचे दिये गये विशेष विषय को देखें ।

विशेष विषय : मोलेक

मोलेक देवता (बीडीबी 574) की आराधना करने के लिए यहोवा मना करता है, मोलेक, कनानियों का (अम्मोन) अग्नि देव है, जो समाज के प्रत्येक परिवार के पहिलौठे को बलिदान करने के द्वारा उसकी आराधना किया जाता था, ताकि उपज-शक्ति के नाश होने से बचा जा सके । इस देवता के बारे में इस्राइलियों को प्राय: ओर पहिले से ही चेतावनी दी गई थी (लैव्य; 18:21 20:2, 3, 4,5; I राजा; 11:7, II राजा 28:10; यिर्म 32:35; मीका 6:7) । वाक्यखण्ड आग में जलने के द्वारा इस आराधना को प्राय: चित्रण किया गया है (12:31; 18:10; II राजा 16:3; 17:17, 31; 21:6; भ.स. 106:37; यिर्म, 7:31; 19:5)

NASB मूल ग्रन्थ 12:32

जितनी बातों की मैं तुम को आज्ञा देता हूं उनका चौकस होकर मना करना और न तो कुछ उनमें बढ़ाना और न उनमें से कुछ घटाना ।

12:32 न तो कुछ उनमें बढ़ाना और न उनमें से कुछ घटाना परमेश्वर अपने वचन के प्रति आज्ञापालन के विषय में गंभीर है (देखें 4:2) किन्तु व्य. निर्जन समय में व्यवस्था की कुछ सुविधाओं को दिखाता है । हमेंनये युग और सभ्यता में अवश्य ही बाईबल की सच्चाई को नियुक्त करना चाहिए । परमेश्वर ने अपने आपको एक सुनिश्चित समय पर, विशेष सभ्यता के सामने प्रकट किया । इसमें से कुछ सिर्फ उस समय, और लोगों से संबंधित है (उदा; पवित्र युद्ध अनेक स्त्रियों से विवाह करने की प्रथा, गुलामी, स्त्रियों की दमन) किन्तु इससे अधिक यह कुसमय की सच्चाई है जिसे प्रत्येक युग पर लागू किया जाना चाहिए ।

विवादपूर्ण प्रश्न :

1. केन्द्रीय आराधना स्थल पर इतना क्यों वहां अधिक महत्व देता है ?
2. क्यों कुछ व्यवस्थाएं बदल गई है ?
3. इब्रानियों के लिए लहू क्यों अत्यधिक महत्वपूर्ण है ?
4. क्यों पे नियम इतने अधिक वर्णित किये गये है ?

व्यवस्था विवरण 13
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
विधर्मी को दण्ड	मूर्ति पूजा के खिलाफ चेतावनियां (12:32–13:19)	मूर्ति पूजा के खिलाफ चेतावनियां (12:29–13:18)	कनानियों के धार्मिक विश्वास की विधि के खिलाफ (12:29–13:1)
13:1–5	13:1–5	12:32–13:5	मूर्तिपूजा के प्रलोभन के खिलाफ
13:6–11	13:6–11	13:6–11	13:26
13:12–18	13:12–18	13:12–18	13:7–12
			13:13–19

पृष्ठभूमि अध्ययन :

(1) समझने और व्याख्या करने के लिए धर्मग्रन्थ की यह पद्यांश कठिन है । यह एक ऐसा पद्यांश नहीं है कि कोई परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करने के लिए प्रयोग करेगा ।

(2) यह अध्याय धार्मिक के सभी श्रेणी पर, और साथ ही साथ नागरिक जीवन पर मूर्तिपूजा के खिलाफ में शास्त्रार्थ करने वाला है ।

(i) पद 1–5 में झूठे भविश्यवक्ता के बारे में बताता है (18:20)

(ii) पद 6–11 में परिवार के सदस्य, जो दूसरे परिवार को मूर्ति पूजा की ओर लाते है उनके बारे में बताता है ।

(iii) पद 16–18 में पूरे नग या समाज के बारे में बताता है जो मूर्तिपूजा से लिपटे रहते है (29:18)

(3) पुराने नियम में, भविष्यवक्ता और स्वप्ण देखने वाले के सपने के बीच यहां पर एक अलगाव दिखाई पड़ता है । दर्शन को एक व्यक्ति के द्वारा अनुभव किया गया है, जो जागृत और

उसके मानसिक शक्ति के नियंत्रण में है । केबार नदी के द्वारा यहेजेकल, दर्शन का एक उदाहरण है । स्वप्न की व्याख्या करने के लिए दानियेल एक उदाहरण है । दोनों परमेश्वर का प्रकाशन है । वर्तमान में परमेश्वर को लोगों से बातें करने का सरल तरीका, दर्शन और सपने के द्वारा नहीं है, किन्तु उसके पास इन दोनों से करने की सामर्थ है ।

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB मूल ग्रन्थ 13:1–5

यदि तेरे बीच कोई भविष्यवक्ता या स्वप्न देखनेवाला प्रगट होकर तुणे कोई चिन्ह याचमत्कार दिखाए और जिस चिन्ह या चमत्कार को प्रमाण ठहराकर वह तुझ से कहे, आओ हम पराए देवताओं केअनुयायी होकर, जिनसे तुम अब तक अनजान रहे, उनकी पूजा करें, तब तुम उस भविष्यद्वक्ता या स्वप्न देखनेवाले के वचन पर कभी कान न धरना; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी परीक्षा लेगा, जिससे यह जान ले, कि ये मुझ से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम रखते हैं या नहीं ? तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना और उसका भय मानना, और उसकी आज्ञाओं पर चलना, और उसका वचना मानना और उनकी सेवा करना, औरउसी से लिपटे रहना । और ऐसा भवष्यिद्वक्ता या स्वप्न देखनेवाला जो तुम को तुम्हारे उस परमेश्वर यहोवा से फेर के, जिसने तुम को मिस्र देश से निकाला दासत्व के घर से छुड़ाया है, तेरे उसी परमेश्वर यहोवा के मार्ग से बहकान की बता कहनेवाला ठहरेगा, इस कारण वह मार डालता जाए । इस रीति से तू अपने बीच में से ऐसी बुराई को दूर कर देना ।

13:1 ईश्वर की ओर से कहने का दावा करने वाले सभी लोगों पर भरोसा नहीं किया जा सकता है । अवश्य ही हमें उन्हें परखना चाहिए (व्य. 18:20–22, मती 7;24:24; I यहु. 4:1–6, II पत; 3:15–16) ।

विशेष विषय : पुराने नियम की भविष्यवाणी

I. प्रस्तावना

(1) प्रकाशित कथन :

(अ) कैसे भविष्यवाणी की व्याख्या करें, सब बात पर विश्वासी समुदाय सहमत नहीं है । दूसरी सच्चाई पूरी शताब्दियों से एक स्थिति पर कठोरता के साथ निर्माणित हो चुकी है, किन्तु इस बात पर नहीं हुआ है ।

(ब) पुराने नियम के भविष्यवाणी की यहां पर अनेकों परिभाषित स्थितियां है :

(i) राजाओं के पूर्व :

(अ) अकेले को भविष्यवक्ता कहा गया है

(1) अब्राहम – उत; 20:7

(2) मूसा – गि. 12:6–8; व्य. 18:15;34:10

(3) हारून – निर्ग; 17:1 (मूसा की आरे से बोलने वाला मनुष्य)

(4) मरियम – निर्ग; 15:20

(5) एलदाद और मेदाद – गि, 11:24–30

(6) दबोरा – न्या; 4:4

(7) अनजान – न्या; 6:7–10

(8) शमुयल – I शमु, 3:20

(ब) एक समुदाय के रूप में भवष्यिवक्ताओं के लिए संदर्भ – व्य 13:1–5; 18:20–22

(स) भविष्यवक्ता संबंधी समूह या समाज – I शमु; 10:5–13; 19:20; I राजा 20:35–41, 22:6, 10–13; II राजा; 2:3,7:4:138;5:22;6:1 इत्यादि ।

(द) मसीहा को भवष्यिवक्ता कहा गया – व्य; 18:15–18

(ii) ग्रन्थ को न लिखे हुए राजा संबंधी वे राजा को व्याख्या देते है) :

(1) गाद– I शमु; 22:5; II शमु; 24:11; I इति; 29:29

(2) नातान – II शमु, 7:2; 12:25; I राजा 1:22

(3) अहिय्याह – I राजा; 11:29

(4) येहू – I राजा 16:1, 7, 12

(5) अनजान – I राजा 18; 4,13; 20:13, 22

(6) एलिय्याह – I राजा 18 – II राजा ; 2

(7) मीकायाह – I राजा; 22

(8) एलीशा – II राजा; 2:8, 13

(iii) उच्चकोटि के साहित्य लेख के भविष्यवक्ता (वे जातियों को और साथ ही राजाओं की व्याख्या करते है) याशायाह – मलाकी (दानियेल को छोड़कर)

(2) बाईबल संबंधी शब्द

(1) रोहे – भविष्यदर्शी I शमु; 9:9 । यह संदर्भ स्वयं नबी शब्द पर परिवर्तन दिखता है । रोहे सामान्य शब्द `खना से आया हुआ है । यह व्यक्ति परमेश्वर के रीतियों और योजनाओं को समझ गया और एक विषय में परमेश्वर की इच्छा को विचार कर ठीक–ठीक पता लगाया है।

(2) होजे = भविष्यदर्शी II शमु 24:11 । मूलार्थ यह रोहे की पर्यायवाची है । यह अपूर्वता शब्द देखने से आया है । कृदन्त रूप का प्रयोग प्राय: अधिकतर भवष्यिवक्ता को प्रकट करने के लिए हुआ है । (उदा. देखों)

(3) नवी = भविष्यवक्ता, अकादियन क्रिया नपामू क सगोत्री = पुकारना और अराबिक नाबा = घोषणा करना पुराने नियम में एक भविष्य वक्ता को सूचत करने का यह एक सामान्य शब्द है । इसका प्रयोग 300 बार किया गया है । भविष्यवक्ता वह व्यक्ति है जो परमेश्वर की ओर से लोगों को बताता है (ओमास 3:8; यिर्म; 1:7, 17; यहे. 3:4) ।

(4) सभी तीन शब्दों का प्रयोग भविष्यवक्ता के कार्य संबंधी में हुआ है; I इति 29:29; शमु. रोहे; नातान – नबी और गाद – होजे ।

(5) वाक्यखण्ड, ईशा – एलोहिम, परमेश्वर का जन भी परमेश्वर की ओर से बोलनेवाले के लिए एक व्याख्यात नियुक्ति है । भविष्यवक्ता के अभिप्राय से इसका प्रयोग 76 बार पुराने नियम में हुआ है ।

(6) शब्द भविष्यवक्ता प्रारंभ ही यूनानी है । इसे लिया गया : (1) प्रो. = (पहले माँ के लिए और (2) फेमी = बोलना ।

II. <u>भविष्यवाणी की परिभाषा</u>

(1) शब्द भविष्यवाणी अंग्रेजी से बढ़कर इब्रानी में एक चौड़ी सिमेन्टिक स्थान था । यहोशू से लेकर राजाओं (रूत के अलावा) की ऐतिहासिक किताबें यहुदियों के द्वारा प्राचीन भविष्यवक्ताओं के रूप में इस प्रकार के लेख पत्र चिपकाया हुआ है । अब्राहम (उत; 20:7; भ.स. 105:5) और मूसा (व्य; 18:18) दोनों को भविष्यवक्ता के रूप में नियुक्त किया गया है (मरियम को भी; निर्ग 15:20) । इसलिए, अंग्रेंजी भाषा के स्वीकृत से सावधान रहो ।

(2) भविष्य धर्म संबंधी धर्मानुसार परिभाषित किया जा सकता है, जैसे कि ऐतिहासिक समझ जो अद्‌भुत विचार, अदभूत उद्देश्य, अद्‌भूत भागी के शब्द के अर्थ को ही सिर्फ स्वीकृत करता है । इन्टरप्रेटर आफ डिक्सनरी आँ द बाईबल भाग–3: पृ 896 ।

(3) भविष्यवक्ता न तो विद्वान और न ही क्रमानुसार अध्यात्मवादी है, लेकिन एक वाचा का मध्यस्था करने वाला जो परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर का वचन बांटता है ताकि उनके वर्तमान को परिवर्तन कर उनके भविष्य को अच्छा बनाऍं, भविष्यवक्ता और भविष्यवाणी, एन्कोलोपेडिया जुडासिया, भाग 13पृ. 1152

III. <u>भविष्यवाणी का उद्देश्य</u>

(1) परमेश्वर को उसके लोगों से बाते करने के लिए, भविष्यवाणी एक मार्ग या तरीका है, और उनके वर्तमान योजना में मार्गदर्शन देनाऔर परमेश्वर के नियंत्रण की आशा उनके जीवन

में और संसार की वृतान्त में मार्गदर्शन देना है । उनके सदेंश जो है मूलरूप से संयुक्त थे । इसका अर्थ, झिड़कना, उत्साहित करना, विश्वास को उत्पन्न करना और पश्चाताप और परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के बारे में और उसकी योजनाओं के बारे में सूचना देना है । वे परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की वाचा की भक्ति पर रखते है । इस बात पर इसमें अवश्य ही यह बात को जोड़ना जरूरी है कि प्राय: इसका प्रयोग परमेश्वर के चुनाव जो एक प्रतिनिधि के लिए है स्पष्ट रूप से प्रकट करने पाएं (व्य. 13:1-3; 18:20-22) । अंतिम में यह मसीहा को प्रकट होने को ही बतायेगा ।

❖

NASB NKJV

NJB **"स्वप्न देखने वाला"**

NRSV **"जो स्वप्न के द्वारा अनुमान लगाते है"**

TEV **"स्वप्न का अर्थ बतलाने वाला"**

JPSOA **"स्वप्न अनुमान करने वाला व्यक्ति"**

यह शब्द क्रिया (बीडीबी 321, क्वेल क्रिया वाच्य) और बहु संज्ञा (बीडीबी 321) का निर्माण है । निकट पूर्वी के प्राचीन समय में, ईश्वर या ईश्वरों की ईच्छा को प्रभावित करना या पहिले से जानना, समझने की कोशिश करना या भविष्य कथन (18:14-15) एक सामान्य बात थी । यहां पर अनुमान करने के लिए (शकुन कहना) बहुत सी पद्धति है :

(1) स्वप्न/विकृत निद्रा (मानसिक अवस्था)

(2) किसी माल का अलगाया हुआ थोक/टहनी (मनुष्य की बनायी हुई वस्तुएँ)

(3) बादल/आंधी/वर्षा जल शून्य (मौसम)

(4) पक्षियाँ (एक प्रकार की उड़ान)

(5) आकाश की घटनाएँ (नक्षत्रमंडल की गति, पुच्छल तारा, ग्रहण)

(6) भेड़ के ह्रदय की स्थिति (दूसरे बलिदान संबंधी जानवर) ।

13:1,2 चिन्ह मुझे लगता है कि शब्द चिन्ह का प्रयोग बाईबल में तब हुआ है जब किसी चीज के बारे में भविष्यवाणी किया गया और उसके बाद वह चीज पूरा हुआ था । व्य. में इसके प्रयोग विभिन्न अभिप्रायों में हुआ है :

(1) यहोवा ने मिस्र में मूसा के द्वारा चिन्ह/महामारीयों को दिखाया ताकि इस्राइलियों को फिरौन जाने दें, 4:34; 6:22; 7:18-19; 11:3; 26:8; 29:2-3; 34:11

(2) छोटी संदूक जिसमें धर्मग्रंथ के वचनों को रखा गया है 6:8; 11:8

(अ) बाएँ हाथ पर (ब) आखों के बीच पर (स) चौखट पर

(3) यहोवा की निषधक आराधना के इस्रायल को दूर करने के लिए झूठे भविष्यवक्ताओं के चिन्ह और भविष्यवाणी थी; 13::1–2 ।

(4) अनाज्ञाकारी इस्रायल पर यहोवा का न्याय, इस्राइलियों की आने वाली पीढ़ियों के लिए भविष्य की चेतावनी के रूप में कार्यरत होगी (28:46) ।

❖ या चमत्कार, चमत्कार (बीडीबी 65) एक अद्‌भुत कर्म को, गवाहों की उपस्थिति में किया हुआ मालूम पड़ता है । इसका प्रयोग प्राय: चिन्ह के साथ हुआ है ।

13:2 चिन्ह या चमत्कार को प्रमाण ठहराकर परमेश्‍वर की सहायता के बिना चमत्कार नही है (निर्ग 7:11, 22; मती; 24:24; II थिस्सु; 2:9) । यह भी वास्तविक भविष्यवाणी की सच्चाई है । (18:22) ।

यदि व्य. 18:18–19 के भविष्यवक्ता, मसीहा के बारे में पहले से सूचित करते है, तो ये झूठे भविष्यवक्ता की मसीह विरोधी के बारे में पहले से सूचना देते है । (18:20) । झूठापन प्रकट होता है यदि :

(1) वचन प्रमाणित नही होता है ।

(2) यहोवा का वचन नहीं है ।

❖ आओ हम अनुयायी होकर ..... उनकी पूजा करें, लेख की ये दो क्रियाएँ, यहोवा की निषेधक आराधना से अलगाव को प्रसारित करती है :

(1) अनुयायी होकर – बीडीबी 229, केबी 246, क्वेल कोहोर्टेटिव । यह दुहराई हुई चेतावनी है, 6:14, 8:19; 11:28; 13:2,6,13; 28:14; 29:18,26

(2) पूजा करें – बीडीबी 712, केबी 773, होफाल अपूर्ण का प्रयोग कोहोर्टेटिव अभिप्राय से हुआ है । यह भी एक दुहरायी गई चेतावनी है, 5:9; 7:4, 16; 8:19; 11:16; 13:26, 13; 17:11; 28:14, 36, 64; 29: 18, 26 30:17; 81:20 ।

वाक्यखण्ड आओं हम अनुयासी होकर की दुहरायी हुई चेतावनी सिर्फ व्य. में ही नहीं लेकिन यिर्मयाह में भी हुआ है ।

❖ पराए देवताओं (जिनसे तुम अब तक अनजान रहे) विचारणीय विषय, सामर्थ के चिन्ह को दिखाने की योग्यता यहां पर नहीं है, किन्तु यहोवा की निषेधक आराधना है । देखें विशेष विषय : जानना 4:35 में ।

13:3 तुम उस भविष्यवक्ता या स्वप्न देखने वाले के वचन पर कभी कान न धरना, क्रिया (बीडीबी 1033, केबी 1570, क्रेल अपूर्ण) को प्राय: दुहराया गया है जो शेमा, जिसका अर्थ सुनो ताकि उन पर चलों है । देखें सूची 4:1 में ।

❖ क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारी परीक्षा लेगा क्रिया (बीडीबी 650, केबी 702, पीयल कृदन्त) सच्चाई को प्रकट करता है कि परमेश्वर, मानवजाति को परीक्षा या जांचने की स्थिति में रखना है ताकि वह मानवजाति के भरोसे, विश्वास, आज्ञापालन को स्वयं के लिए सामर्थी बनाएं और जानने भी पां (उत, 22:1–12; निर्ग; 15:25; 16:4; 20:20; व्य; 8:2;16 न्या. 2:22; 3:1, 4; II इति; 32:31) । यहां तक, लोगों के बीच में झूठे भविष्यवक्ताओं की उपस्थिति, घेरे के विश्वासियों में से सच्चे विश्वासियों को अलग करने का दिव्य तरीका है । परमेश्वर बुराई का प्रयोग स्वयं के उद्देश्य के लिए करता है (उत;3) ।

❖ अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ, देखें 4:29 के लेख में । यह एक पूर्ण और संपूर्ण धर्मनिष्ठा की एक लक्षण है । इस्रायल को बारम्बार, संपूर्ण धर्मनिष्ठा के साथ यहोवा से प्रेम करने के लिए बुलाया गया है (6:5; 7:9; 10:12; 11:1, 13, 22; 13:3; 19:9; 30:6, 16, 20) ।

13:4 ये पद क्वेल अपूर्णो की क्रमानुसार एक सूची रखना है, जो यहोवा की निषेधक आराधना के लिए मार्गदर्शन के रूप में कार्य करता है :

(1) पीछे चलना बीडीबी 229, केबी 246, 8:6

(2) भय मानना बीडीबी 431, केबी 432

(3) आज्ञा पर चलना बीडीबी 1036, केबी 1581; 5:29;6:2

(4) सुनना बीडीबी 1033, केबी 1510

(5) सेवा करना बीडीबी 712, केबी 773

(6) लिपटै रहना बीडीबी 179, केबी 209

यह पह 6:12 और 10:20 की समानता है ।

13:5 ऐसा भविष्यवक्ता या स्वप्न देखने वाला मार डाला जाए, यहोवा, अपनी मालिन्य आराधना के कारण चितिंत हैं, जो व्य. 12 स्पष्ठ रूप से दिखाता है । यदि यहोवा की आराधना यहां पर मालिन्य हुआ होता, तो नया नियम, वास्तविक नहीं होता । परमेश्वर चिचिंत था कि उसके लोग उसकी आज्ञा के अनुसार सही तरीके से उनकी आराधना नहीं था, जो परिणाम मृत्यु था, जिसमें इस्रायल के भीतर ही झूठे भविष्यवक्ताएँ और कनानी लोग शामिल थे (13:5, 9,15) । समाज के भीतर संभवत अकेले व्यक्तियों के लिए दुष्प्रेरणा था (4:19; 13:5,10)

❖ छुड़ाया है, यह शब्द किसी व्यक्ति को, गुलामी या जेलखाने में से दाम को चुकाकर छुड़ाने के तरीके की प्रकटीकरण है । देखें विशेष विषय 7:8 में ।

NASB मूल ग्रन्थ 13:6-11

यदि तेरा सगा भाई, या बेटा, या बेटी या तेरी अर्द्धांतिगनी, या प्राणप्रिय तेरा कोई मित्र निराले में तुझ को यह कहकर फुसलाने लगे कि आओ हम दूसरे देवताओं की उपासना या पूजा करें, जिन्हें न तो तू न तेरे पुरखा जानते थे, चाहे वे तुम्हारे निकट रहनेवाले आस पास के लोगों के चाहे पृथ्वी के एक छोर से लेके दूसरे छोर तक दूर दूर के रहनेवालों के देवता हो, तो तू उसकी न मानना और न उसकी बात सुनाना, और न उस पर तरस खाना और न कोमलता दिखाना और न उसको छिपा रखना उसको अवश्य घात करना ; उसको घात करने में पहिले तेरा हाथ उठे, पीछे सब लोगों के हाथ उठें । उस पर ऐसा पथराव करना कि वह मर जाए क्योंकि उसने तुझको तेरे उस परमेश्वर यहोवा से जो तुझ को दास्तव के घर अर्थात मिस्र देश से निकाल लाया है, बहकाने का यत्यन किया है । और सब इस्रायली सुनकर भय खाएँगे, और ऐसा बुरा कम फिर तेरे बीच न करेंगे ।

13:6,8 यदि तेरा सगा भाई, या बेटा ... बेटी... अर्द्धांगिनी ... मित्र, यहां तक कि यदि कोई अत्यधिक प्राणप्रिय, संबंधी या मित्र, आपको दूसरे देवताओं की आराधना करने की मोहित करने की कोशिश करता है तो विश्वसनीय इस्रायल को समाज के द्वारा उन्हें पत्थरवाह करना जरूरी था (पद, 9-10) । यह प्रत्येक व्यक्ति के हृदय के वाचा की उत्तरदायित्व है । यह सभ्यता की बनावट के संदर्भ में एक मूल कथन है जहां पर परिवार बहुत ही महत्वपूर्ण है (मत्ती 10:34-39, लूका; 14:25-27) ।

13:6 आओ हम दूसरे देवताओं की उपासना या पूजा करें ये दोनों क्रियाएँ क्वेल कोहोर्टेटिव है

(1) आओ बीडीबी 229, केबी 246

(2) उपासना करें बीडीबी 712, केबी 773

आराधना को सामूहिक लक्षणों के रूप में वे उपासना करते है ।

13:7 चाहे वे तुम्हारे निकट रहने वाले आसपास के लोगों के चाहे पृथ्वी के छोर से लेके दूसरे छोर तक दूर दूर के रहनेवाले देवता हो, इस वचन पर अनेक संभवपूर्ण व्याख्याएँ है । वाक्यखंड प्रकट कर सकता है :

(1) कनानी देवताएँ, चाहे वे कनान के उत्तर या दक्षिण में हो (पृथ्वी-भूमि)

(2) विदेशी देवताएँ, चाहे वे मेसोपोटामिया या पलिश्ति में हो (तुम्हारे निकट या दूर-दूर के)

(3) नक्षत्रमंडल देवताओं की आराधना के विषय में विशेष सावधानी, चाहे वे सूर्य, चन्द्रमा, तारे, ग्रह, नक्षत्रों का समूह, पूच्छल तारा, ग्रहण इत्यादि (वह चीजें जो उगता और अस्त होता है)

13:8 यह पद एक सूची को बनाता है (अस्तित्व अस्वीकार किये हुये की एक क्रमानुसार क्वेल अपूर्ण)कि किस प्रकार से यहोवा के सच्चे भक्त को दूसरे देवता के भक्त को बर्ताव करना चाहिए:

(1) तू उसकी न मानना बीडीबी 2, केबी 3

(2) न उसकी बात सुना बीडीबी/033, केबी 1570

(3) न उस पर तरस खाना बीडीबी 299, केबी 298, 7:2,16

(4) न कोमल दिखाना बीडीबी 328, केबी 328, I शमु;15:3

(5) न उसको छिप रखना बीडीबी 491, केबी 487 (मूलार्थ छिपाना)

13:9 एम.टी. के पास शब्द पत्थर इस पद में नहीं है, हाकि वह निश्चित तौर में मृत्यु की ही ढंग है जो संकेत करने के लिए हुआ है (पद;10) एम.टी.के पास क्वेल अनिश्चित वास्तविक और क्रिया की क्वेल अपूर्ण मारना बीडीबी 246, केबी 255 (उदा. निश्चित रूप से मारना) जो महत्व को संकेत करता है ।

एक व्यक्ति जो दूसरे के विरोध में गवाह देता है वह व्यक्ति होता है सबसे प्रथम पत्थर को फेकरा है (पद; 10;17:7) यदि एक व्यक्ति दोषी के बारे में झूठी साक्षी देता है, तब उसने पहले से विचार कर इस इत्या को किया हुआ है (5:20) ।

13:10 उस पर ऐसा पत्थरवाह करना कि वह मर जाए, एम.टी. में पत्थरवाह करना ताकि मरजाए के लिये यह क्रिया है (बीडीबी 709, केबी 768, क्वेल पूर्ण) और पत्थर के लिए (बीडीबी 6) जिसका मूलार्थ पत्थरों के साथ पत्थरवाह करना होगा । पत्थरवाह करना एक प्रमुख दंड था जो सारे वाचापूर्ण समाज के लोगों के द्वारा किया जाता था (लैव्य; 20:15, 16;गि 25:5, व्य. 13:10 यहे 9:6) ।

समाज के द्वारा लोगों को पत्थरवाह किये जाने का कारण था :

(1) मूर्तिपूजा, लैव्य 20:2-5 (संभवत यह भी 6-8) व्य; 13:1-5, 17:2-7

(2) ईश्वर निन्दा लैव्य 24:10-23; I राजा 11-14, लूका 4:29 प्र.का. 7:58 (दोनों निर्ग; 22:28 को प्रतिबिंब करता है) और यहु. 8:59 10:31 11:8 को भी ध्यान में रखे ।

(3) माता-पिता की अधिकार की उपेक्षा व्य; 21:18-21 (संभवत: लैव्य 20:9)

(4) वैवाहिक अविश्वासयोग्यता; व्य;22:22, 23-27 (सभवत: लैव्य; 20:10-16)

(5) राजविरोध (यहोवा के प्रति अनाज्ञापालक); यहोशू; 7

13:11एक व्यक्ति को दण्ड देने वाली छबि से बढ़कर यहां पर दण्ड में उससे अधिक संबंध है । एक भी व्यक्ति विद्रोह करता है तो उसे परिणाम (पत्थरवाह) की पीढ़ा को सहना होगा; किन्तु यहां पर उन लोगों के लिए जिन्होंने इस दण्ड के बार में सुना या गवाह बने है, उनके लिए भी हतोत्साह की बात होगी (17:12-13; 19:15-21; 21:18-21; रोमि;13:4) ।

NASB मूल ग्रन्थ 13:12-18

यदि तेरे किसी नगर के विषय में, जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे रहने के लिये देता है, ऐसी बात तेरे सुनने में आए, के कितने अधम पुरूषों ने तेरे ही बीच में से निकलकर अपने नगर के निवासियों को यह कहकर बहका दिया है, कि आओ हम अन्य देवताओं की जिनसे अब तक अनजान रहे उपासना करें। तो पूछताछ करना और खोजना, और भली भांति पता लगाना; और यदि यह बात सच हो, और कुछ भी संदेह न रहे कि तेरे बीच ऐसा घिनौना काम किया जाता है। तो अवश्य उस नगर के निवासियों को तलवार से मार डालना, और पशु आदि उस सब समेत जो उसमें हो उसका तलवार से सत्यानाश करना। और उसमें की सारी लूट चौ के बीच इकट्ठी करके उस नगर को लूट समेत अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मानो सर्वांग होम करके जलाना; और वह सदा के लिये डीह रहे वह फिर बसाया न जाए और कोई सत्यानाश की वस्तु तेरे हाथ न लगने पाए; जिससे यहोवा अपने भड़के हुए कोप से शांत होकर जैसा उसने तेरे पूर्वजों हसे शपथ खाई थी वैसा ही तुझ से दया का व्यवहार करे, और दया करके तुझ को गिनती में बढ़ाए। यह तब होगा जब तू अपने परमेश्वर यहोवा की जितनी आज्ञाएँ मैं आज तुझे सुनाता हूं उन सभों को मानेगा और जो तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में ठीक है वही करेगा।

13:13 अधम पुरूषों शब्दानुसार इसका अर्थ, दुष्ट की सन्तान है (बीडीबी 116)। इब्रानी में इसका अर्थ अधम व्यक्ति या अनुपयोगी है (न्या; 19:22; 20:13; I शमु; 10:27; 30:22; I राजा 21:10, 13; निति 6:12)। नये नियम के समय में, दुष्ट की पर्यायवाची शैतान के साथ बन चुकी थी (II कुरि; 6:15)।

❖ बहकाकर, देखें लेख पद 10 में।

13:14 यह पद छानबीन या पूछताछ की क्रियाओं की क्रमानुसार एक सूची बनाता है (सभी क्वेल पूर्ण):

(1) NASB **"खोजना"**
NKJV, NRSV **"पूछताछ करना"**
NJB **"छानबीन करना"**
क्रिया बीडीबी 205, केबी 233 है अर्थ खोजना है (17:4,9; 19:18)

(2) NASB **"पता लगाना"**
NKJV, NRSV **"जांचना"**
क्रिया बीडी 350, केबी 347 है, अर्थ जांचना है भ.स. 139:1,23, नीति 18:17

(3) NASB **"पूरी तरह से पूछना"**
NKJV, NRSV **"ईमानदारी से पूछना"**
NJB **"पूर्ण ध्यान से पूछना"**

यह बीडीबी 981, केबी 1371 की क्वेल पूर्ण; पूछना और बीडीबी 405, केबी 408 हिफाल अनिश्चित वास्तविक, पूर्ण रीति से, की एक मेल या संग्रह है, 17:4; 19:8

13:15 तुम.... सत्यानाश करना वाक्यखंड पूर्णतया से सत्यानाश करने, का (बीडी 355) अर्थ सत्यानाश करने के लिए पूर्णतयासे परमेश्वर को समर्पित करना है। देखें पूर्ण लेख 3:6 में। इसी प्रकार के परिणामों को मूर्तिपूजकों के लिए भी नापा गया है कि वे यहुदियों के द्वारा पीढ़ित होगें, यदि वे दूसरे देवताओं की मूर्तिपूजा करते रहेगें।

13:16 और वह सर्वदा के लिए डीह रहे यह वाक्यखंड इब्रानी श्राम के लिये एक मुहावरा है (यूहोशू 8:28 यिर्म 49:2)। एक अभिप्राय सर्वदा के लिये (देखें विशेष विषय 4:30 में)

13:17-18 विचार की बहाव को ध्यान दें :

(1) मूर्तिपूजा, दण्ड को लेकर आता है (उदा. पवित्र युद्ध; सभी जीव) पद-12-15

(2) सभी नगर को नष्ट करने के लिए यहोवा को होमबलि के रूप में दिया गया था (पवित्र युद्ध में, यहोवा को सभी सभी कीमती योग्य जीचों को दिया गया था) पद 16-17

(3) आज्ञापालन, आशीषों को लेकर आता है, पद 17-18

- (अ) यहोवा अपने कोप से मुड़ता है।
- (ब) वह दया करता है 30:3
- (स) उसके पास दया है (ऊपर के समान बीडीबी 933)
- (द) वह बढ़ती को लेकर आता है
- (घ) वह पूर्वजों से की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है।

(4) आशीष, आज्ञापालन की शर्त पर आधारित है; पद 18

❖ जो तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में ठीक है वही करेगा, यह वाक्यखंड व्य. में अनेकों बार प्रकट हुआ है (6:18; 12:28; 13:18)। यह I राजा; 11:38 14:8; 15:11, 22:43 II राजा 12:3 में भी प्रकट हुआ है। सभी लोगों का न्याय करने के लिए, यहोवा न्यायाधीश और धार्मिकता की सिद्धांत है। देखें विशेष विषय : धार्मिकता 1:16 में।

विवादपूर्ण प्रश्न :

(1) क्यों यह अध्याय स्वयं के आचरण में दूसरों के विश्वास से अत्यधिक कठोर है ?

(2) क्या यह अध्याय हमारे दिनों में दूसरों के विश्वास के साथ हमारे आचरण का आधार हो सकता है ?

(3) किस प्रकार आप एक झूठे भविष्यवक्ता को पहचान सकते हैं ? चमत्कार के बारे में क्या है ?

(4) पुराने नियम के देहत्व के अभिप्राय की व्याख्या करे, जो नये नियम के कई सारी प्रश्नों के उत्तरों को देते है।

व्यवस्था विवरण 14

आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
शोक मनाने की वर्जित विधि	एक पवित्र मनुष्य की जीवन कला	शोक मनाने की वर्जित विधि	मूर्तिपूजन विधि के विरोध में
14:1-2	14:1-2	14:1-2	14:1-2
शुद्ध और अशुद्ध पशु		शुद्ध और अशुद्ध पशु	शुद्ध और अशुद्ध पशु
14:3-8	14:3-8	14:3-8	14:3-8
14:9-10	14:9-10	14:9-10	14:9-10
14:11-20	14:11-20	14:11-18	14:11-20
14:19-20	14:19-20	14:19-20	
14:21	14:21 अ	14:21 अ	14:21 अ
	14:21 ब	14:21 ब	14:21 ब
दशमांश की नियम		दशमांश की नियम	वार्षिक दशमांश
14:22-27	14:22-27	14:22-26	14:22-23
			14:24-27
		14:27-29	तृतीय वर्ष की दशमांश
14:28-29	14:28-29		14:28-29

14:1–16:17 की संदर्भ निरीक्षण

(अ) व्य. 14:1–2 एक प्राथमिक दृढ़ वचन है कि यहोवा के अनोखे लोगों के रूप में इस्रायल (निर्ग; 19:5–6) को इसी तरह से जीवन ज्ञापन करना है ।

(ब) व्य. 14:3–16:17 में परमेश्वर के लोगों से वाचा के कुछ भागों को संक्षिप्त सारांश में निर्गमन गिनती में दिखाया गया है ।

(1) शुद्ध बनाव अशुद्ध भोजन 14:1–21 में जो लैव्य 11:1–23 में वास्तविक रूप में पाया गया है ।

(2) 14:22–29 में दशमांश को वास्तविक रूप से लैव्य 28:8–38 में दिया गया है

(3) 15:12–18 में कर्ज को हटाने का कार्य, वास्तविक रूप में लैव्य 28:8–38 में दिया गया है ।

(4) 15:12–18 में इब्रानी गुलामों को मुक्त करने की, वास्तविक रूप में लैव्य 25:38–55 में दिया गया है ।

(5) 15:19–23 में पहिलौठे की छुड़ौती, वास्तविक रूप में निर्ग; 13:1–16 में दिया गया है ।

(6) यात्रा केतीन वार्षिक पर्वों को वास्तविक रूप में लैव्य 23:4–8, 16:1–17 में और गि. 28:16–29:40 में भी दिया गया है ।
(आऊटलाइन फ्राम ओल्ड टेस्टामेंट थियॉलाजी, पॉल आर हाऊस के द्वारा पृ. 184)

(7) व्य. की सारांश स्वभाव को स्पष्ट रूप से देखा गया है । प्राय: व्यवस्थाएँ नये स्थापन के लिए अल्पमात्र परिवर्तन हुए है ।

अवश्य ही यह पुन: निर्धारित होना चाहिए कि पुराने नियम की पुस्तकों की रचना को, आधुनिक लोग, कैसे, कब या क्यों को नहीं जानते है ।

NASB मूल ग्रन्थ 14:1–2

तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पुत्र हो; इसलिये मरे हुओं के कारण न तो अपना शरीर चीरना और न भौहों के बाल मुँडाना । क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये एक पवित्र समाज है, और यहोवा ने तुझ को पृथ्वी भर के समस्त देशों के लोगों में से अपनी निज सम्पत्ति होने के लिये चुन लिया है ।

14:1 तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पुत्र हो, वाचा के पारिभाषिक शब्दों को पारिवारिक रूपक में प्रयोग किया गया है (1:31, 8:5; 22:5) । देखें विशेष विषय : परमेश्वर की पैतृत्व 8:5 में । पद 1–2 में इस्राइलियों के लिए प्रयोग की गई तीन विशेष नामों या शीर्षकों को ध्यान में रखें ।

❖ अपने शरीर को चीरना क्रिया बीडीबी 151, केबी 177, हिथपोयल (हिथपायल मूल की कुदाचित विपरीत) अपूर्ण है और गहरा घाव करना या चीरना के संदर्भ में पाया गया है। यह मूर्तिपूजन करने वालों के कार्य थे। (चाहे ईश्वरों के ध्यान को आकर्षित करने के लिए या मृतकों के लिए शोक मनाने के अनुभव का कारण होने के लिए; लैव्य; 19:28;21:5; I राजा; 18:28; यिर्म; 16:6; 41:5; 48:37)।

विशेष विषय : शोक मनाने की आचार

इस्रायली लोग एक प्रियजन की मृत्यु के लिए और व्यक्तिगत पश्चाताप, साथ ही संयुक्त जुर्मो के लिए विभिन्न तरीकों में दुख का प्रकटीकरण करत है :

(1) वस्त्र फाड़ना, उत; 37:29, 34; 44:13; न्या. 11:35; II शमु; 1:11 3:31; I राजा; 21:27; अय्यु 1:20

(2) टाट लेपटना, उत, 37:34; II शमु 3:31; राजा 21:27; यिर्म; 48:37

(3) नगे पांव, II शमु. 15:30; याशा; 20:3

(4) सिर पर हाथ रखना, II शमु; 13:9 यिर्म 2:37

(5) सिर पर धूल डालना, यहोशू 7:6; I शमु 4:12; नहे 9:1

(6) भूमि पर बैठकर विलाप 2:10; यहे. 26:16 (भूमि पर लेटना; II शमु; 12:16) याशा; 47:1

(7) छाती पीटना, I शमु 25:1; II शमु. 11:26; नहे. 2:7

(8) शरीर को चीरना, व्य. 14:1; यिर्म; 16:6; 48:37

(9) उपवास रखना; II शमु; 1:16, 22; I राजा, 21:27

(10) विलापगीत गाना; II शमु; 1:17; 3:31; II इति; 35:25

(11) गंजापन (बाल निकाले गये है या उस्तरे से मुंडन किया गया) यिम; 48:37

(12) दाढ़ी को छोटा करना, यिर्म; 48:7

(13) सिर या चेहरे को ढांकना; 15:30; 19:4

❖ भौहों के बाल मुड़ांना, यह (गंजापन करना, बीडीबी 901) भी चारों ओर के देशों के शोक मनाने के आचार को प्रकट करता है (यिर्म; 16:6; 41:5; यहे. 27:31; 44:20)। अंतर में (1) इस्रायली याजकों को मुंडन कराने की अनुमति या आज्ञा नहीं थी (लैव्य 21:5) और (2) इस्रायलियों को अनेक दाढ़ी के बालों को मुंडाने की भी अनुमति नहीं थी (लैव्य 19:27)। इस्रायलियों को कई नियम, कनानियों के द्वारा नियमित कार्यों को किये जाने के विरूद्ध में दिये थे।

❖ मरे हुओं के कारण, शोक मनाने के आचार का वर्णन इनसे संबंधित किया गया है :

(1) पूर्वजो की आराधना

(2) बाल की आराधना (कनानियों के मंदिर के, मृत्यु शीत) और जीवित (बसंत) के प्राकृतिक देवता)

14:2 पवित्र समाज यह अभिप्राय यहोवा और मसीहा को इस्रायल के द्वारा प्रकट किये जाने के लक्ष्य के संबंध को बताता है (निर्ग; 19:6; व्य 7:6) देखें विशेष विषय 4:6 में ।

व्य. वाचा की भाशा को प्रतिरूप में दिखलाता है, जो तू अपने परमेश्वर यहोवा को ईश्वरीय, और उसके पवित्र, चुने हुए विशेष धन, लोगों के रूप में वर्णन करता है (4:20; 7:6; 14:2; 26:18; 28:9; 29:12–13) । यिर्मयाह को भी ध्यान में रखे (7:23; 11:4; 13:11; 24:7; 30:22; 31:1, 33; 32:38) । और वास्तव में कौन हेशे 1–3 को भूल सकता है ।

❖ यहोवा ने तुझ को चुन लिया है, क्रिया (बीडीबी 103, केबी 119, क्वेल पूर्ण) का प्रयोग परमेश्वर के प्रभुत्व के द्वारा चुने जाने के लिए हुआ है :

(1) अब्राहम, उत, 12:1; नहे 9:7

(2) पूर्वजों, व्य. 7:8

(3) पूर्वजों की संतानें व्य; 4:37; 10:15

(4) इस्रायल व्य 7:6 भ.स. 135:4; याशा; 44:1,8; 43:10; यहे, 20:5

(5) यशूरून (इस्रायल या यरूशलेम) व्य; 32:15; 33:5, 26; याशा: 44:2

(6) इस्रायली राजा (यहोवा के राज्य का चिन्ह, जो दाऊद को पहिले से सूचित करता है (I शमु.10:24; 16:8,9,10; II शमु.6:21) जो मसीहा को चित्रित करता है) व्य; 17:14–17

(7) उसके नाम का निवास स्थान (उदा. केन्द्रीय पवित्र स्थान) व्य. 12:5, 11,14,18, 21; 26; 14:24; 15:20; 16:2, 6,7,11,15;17:8, 10; 31:11

परमेश्वर के प्रभुत्व और उद्देश्य को इस्रायल के चुनाव में व्यक्त किया गया है । पुराने नियम में परमेश्वर के चुनाव हमेशा कार्य से संबंधित है न कि नये नियम के समान आवश्यक रूप से उद्धार से है । यहोवा को सारे संसार के इस्रायल को प्रकट करना था, ताकि सारा संसार उद्धार पाने पाएँ (उत; 12:3; तितुस 2:14 और I पत; 2:9 में लिया गया है) देखें विशेष विषय 4:6 में ।

❖ तुझको पृथ्वी भर के समस्त देशों के लोगों में से अपनी निज सम्पत्ति होने के लिए शब्द सम्पत्ति का (बीडीबी 668) अर्थ निज धन है (निर्ग; 19:5; भ.स. 135:4; मला. 3:17) ।

यह वाक्यखण्ड व्यवस्थाविवरण में बार-बार होने वाला आवर्तक है (7:न; 14:2; 26:18)। कृपया विशेष विषय को पढ़िये : बाँब का एवेजेंलिकल बियासेस 4:6 में। इससे एक तरीके को देखेगें जिस तहर मैं धर्मग्रंथ की अनुवाद को देखता हूं। यह मेरे संसार की ओर दृष्टि के मुख्य पूर्णता को दिखाती है। (महा-आज्ञा)।

NASB मूल ग्रन्थ 14:3-8

तू कोई घिनौनी वस्तु न खाना। जो पशु खा सकते हो वे है अर्थात गाय-बैल, भेड़-बकरी, हरिण, चिकारा मृग, बनौली बकरी, सांभर, नीलगाय और बनौली भेड़। अत: पशुओं में से जितने पशु चिरे या फटे खुरवाले है और पागुर करने वाले होते है उनका मांस तुम खा सकते हो। परन्तु पागुर करनेवाले या चिरे खुरवालों में से इन पशुओं को, अर्थात ऊँट, खरहा, और शापान को न खाना, क्योंकि ये पागुर तो करते है परन्तु चिरे खुर के नहीं होते, इस कारण वे तुम्हारे लिये अशुद्ध है। तुम न तो इनका मांस खाना और न इनकी लोथ छूना।

14:3 **तू न खाना**, पद 3-21 जो है वो लैव्य 11:2-19 पर प्रतिबिंब डालता है। लेकिन विभिन्नताओं के साथ डालताहै। व्याख्या करने के लिए जो अत्यधिक कठिन है वही अनेकों मूल कारण की सिद्धांत का कारण हुआ हे, विभिन्ननाएँ इसी प्रकार से है। ध्यान में रखें कि इस अध्याय में 17 बार खाना (बीडीबी 37, केबी 46) का प्रयोग हुआ है। नीचे दिये हुए विशेष विषय को देखें।

विशेष विषय : पुराने नियम में भोजनवस्तु की व्यवस्थाएँ

मेरे विचार के अनुसार, ये भोजन वस्तु, व्यवस्थाओं को मुख्यतौर से स्वास्थ्य या आरोग्य विधा संबंधी कारणों के लिए नहीं दिया गया है (उदा. मैमोनिडेस, गॉइड 3:48; किदुशीन 49बी (ताल-मुदिक ट्रेक्टेट) लेकिन अध्यात्मविद्या संबंधी कारणों के लिए दिया गया है। कनानियों के साथ इस्राइली लोगों का कोई संबंध नहीं होना चाहिए था (याशा; 65:4;66:3,17)। मूसा के द्वारा इस्रायलियों को कनानियों के खाने, सामाजिक कार्य करने और आराधना करने की कार्यो से संबंधित कई नियमों को दिये गये थे (उदा. निर्ग; 8:23)।

इस प्रश्न पर कि नये नियम के विश्वासियों के लिए ये भोजनवस्तु की व्यवस्थाएँ क्या उन्हें बांधती है या उनके लिए सहायक है, तो मैं कहूंगा, नहीं ! नहीं ! मेरे कुछ आशय यहां पर है :

(1) भोजन वस्तु की व्यवस्था से परमेश्वर को प्रसन्न करने और उस तक पहुंचने के पद्धति को यीशु ने अस्वीकार किया, मर 7:14-23

(2) प्रे.का. 15 अध्याय में यही प्रश्न, यरूशलेम महासभा में एक विचारणीय विषय था, जहां पर यह निर्णय लिया गया कि अन्य जातियों को पुराने नियम के धार्मिक नियमों को पालन करने की आवश्यकता नहीं है (पद; 19) । पद 20 में भोजवस्तु की व्यवस्था नहीं है, किन्तु विश्वास करने वाले यहुदियों के लिए संगति की सुविधा प्रदान करना जो उनके अन्य जाति कलिसियाओं में हो सकते है ।

(3) प्रे.का. 10, याफा नगर में पतरस का दर्शन, भोजन वस्तु के बार में नहीं था, लेकिन सभी लोगों की स्वीकृति के बारे में था, किन्तु पविआत्मा ने भोजनवस्तु व्यवस्थाओं की असंबद्धता को चिन्ह के रूप में पतरस को सिखाने के लिए प्रयोग किया ।

(4) कमजोर और सामर्थी विश्वासियों के बारे में पौलूस की बातचीत हमें सावधान करती है कि हमारे निजी व्याख्याओं को, विशेष तौर से पुराने नियम की व्यवस्थाओं को, करने के लिए जोर न डालें (रोमि 14:1–15; 13; I कुरि 8–10) ।

(5) कुलु 2:16–23 में ज्ञान संबंधी झूठे शिक्षकों से संबंधित, कानूनी और न्याय के बारे में पौलूस की चेतावनी प्रत्येक पीढ़ी के सभी विश्वासियों के लिए भी चेतावनी होनी चाहिए

विशेष विषय : अति घृणा

अति घृणा (बीडीबी 1072) अनेक चीजों को प्रकट कर सकता है :

(1) मिस्त्रियों से संबंधित वस्तुएँ
- (अ) वे इब्रियों के साथ भोजन करना घृणित समझते थे, उत: 43:32
- (ब) चरवाहों से वे घृणा करते थे, उत 46:34
- (स) इब्रियों के बलिदानों से वे घृणा करत थे, निर्ग 8:26

(2) इस्रायल के कार्यों की ओर यहोवा के अनुभव से संबंधित वस्तुएँ :
- (अ) अशुद्ध भोजन, व्य 14:2
- (ब) मूर्तियाँ, व्य 7:5; 18:9, 12; 27:15
- (स) मूर्तिपूजक के घिनौने काम, व्य; 18:9, 12
- (द) मोलेक देवता के लिए बच्चों को जलाना; लैव्य; 18:21–2; 20:2–5; व्य; 12:1; 18:9, 12; II राजा; 16:3; 17:17–18; 21:6; यिर्म 32:35
- (घ) कनानी मूर्तिपूजा व्य; 13:14; 17:4; 20:17–18;32:16; याशा; 44:19 यिर्म 16:18; यहे. 5:11; 6:9; 11:18, 21; 14:6; 16:50; 18:12

(न) निन्दापर्ण जानवरों का बलिदान करना; व्य: 17:1 (15:19–21; मलाकि 1:12–13

(प) मूर्तियों के लिए बलिदान करना यिर्म; 44:4–5

(फ) जिस स्त्री कोतुमने पहले तलाक दिया था उससे पुर्नविवाह करना; व्य: 24:2

(ब) पुरूष के पहिराव (वस्त्र) को स्त्री का पहिनना (संभवत: कनान की आराधना) व्य 22:–

(भ) वेश्यावृत्ति से रूपये (कनानी उपासना) व्य; 23:18

(म) समलैगिंकता (संभवत कनानी आराधना) व्य: 14:3

(र) झूठी शक्ति का प्रयोग व्य; 25:16; नीति 11:1, 20:23

(ल) भोजन वस्तु व्यवस्था का उल्लघंन किया गया (संभवत : कनानी आराधना) व्य; 14:3

(3) बुद्धि साहित्य में उदाहरण

(अ) नीतिवचन 3:22; 6:16–19; 11:1, 20;12:22;15:8,9 26;16:5; 17:15; 20:10; 23; 21:27; 28:9

(ब) भ.स. 88:8

(स) अय्युब 30:10

(द) यहां एक बारम्बार होने वाली भविष्य संबंधी वाक्यखंड है उजाड़नेवाली घृणित वस्तुएँ, जिसक प्रयोग दानियेन (9:27; 11;31; 12:11) में हुआ है । यह विभन्न तीन अवसरों को प्रकट करता मालूम पड़ता है (अपवत्य भवष्यिवाणी की पूर्णता) :

(अ) इन्टरबिबलिकल मक्कायिन अवधि का एण्टीयोकस IV एपीकानेस (I मक्का 1:54, 59; II मक्का 6:1–2)

(ब) रोमी प्रधान (बाद का सम्राट) तितुस (टाइटस), जिसमें यूरूशलेम को लूटा और मंदिर को एडी 70 में नष्ट कर दिया (मती 24:15; मर 13:14; लूका; 21:20)

(स) विश्व अगुवा अंतिम समय में, पाप का पुरूष अर्थात विनाश का पुत्र (II थिस्सुलु 2:3–4) या मसीह विरोधी (I यहु. 2:18; 4:3; प्रका. 13) कहलाया जाएगा ।

❖ घृणित वस्तुए, यह वाक्यखंड (बीडीबी 481, निर्माण 1072) व्य; 14:3 में भी प्रयोग किया गया है ।

14:5 हरिण, चिकारा, मृग ये जंइली जानवर बलिदान के लिए अशुद्ध किन्तु भोजन के लिये अशुद्ध नहीं थे । व्य; 11 में इन्हें प्रदर्शित नहीं किया गया है क्योंकि कि मिस्र में ये अनजान थे विशेष रूप से पहिचानने के लिए, आधुनिक के लिए, अनेक सारे कठिन है ।

14:6 पशुओं में से जितने पशु चिरे या फटे खुरवाले और पागुर करने वाले है, लैव्य 11:4 में दिये गये बलिदान संबंधी शुद्ध जानवर के लिए यह एक मूल मार्गदर्शन है ।

वाक्यखण्ड, चिरे या फटे खुरवाले, एक बढ़ाया हुआ रूप है, (क्रिया बीडीबी 828, केबी 969, हिफिल पूर्ण निर्माण, जो संज्ञा बीडीबी 828 के साथ है) जिस प्रकार पद 8 में है । इस वर्णन के लिए एक दूसरी बढ़ायी हुई रूप संयोग हुई है । (क्रिया बीडीबी 1042, केबी 1608, संज्ञा (बीडीबी 1043) के साथ क्वेल क्रिया कृदन्त निर्माण) यह वर्णन बहुत ही विशेष और स्पष्ट है ।

❖ कुछ जानवर जो सिर्फ आशिंक रूप से दो भागों को पूरा करते है (चिरे या फटे खुरवाले और पागुर करने वाले) जो पद 7 में दिये गये है ।

14:7

NASB	**"शापान"**
NKJV,	**"शापान"**
NRSV, TEV	**"रीछ के सदृश एक चौपाया"**
LXX, NJB	
NJB, NJV	**"खरहा"**
JPSOA	**"खरहा"**

यह जानवर (बीडीबी 1050I) प्रकट रूप से लैव्य; 11:6 में जैसे खरहा या खरगोश के रूप में प्रदर्शित हुआ है । यह आश्चर्य की बात है कि लैव्य. कहता है कि (जिस प्रकार यहां मालूम किया गया है) खरगोश पागुर करता है । यह एक अच्छी स्थान है कि अध्ययन करने वालों को स्मरण करायें कि इस्रायलियों ने प्रकृति पर उनके ज्ञान को ध्यान केन्द्रित गुणों पर निर्भर किया है । (दृष्टिविषयक भाषा) । खरगोश, सत्यता में पागुर नहीं करते है, किन्तु इनके नाक की तीव्र चाल ऐसा दिखता है यदि वे करत है । बाइबल में यह एक गलती नहीं है, किन्तु प्राचीनों ने ध्यान को इनके ज्ञान के आधार पर पहिचाना न कि आधुनिक वैज्ञानिक नियमानुसार से किया है ।

14:18 **सुअर**, कनानियों के द्वारा सुअर को धार्मिक बलिदान के लिए और खाने के लिए प्रयोग होता था (याशा; 65:4; 66:3, 17) । इसे अशुद्ध इसलिए जाना गया क्योंकि इसके खाने की व्यवहार (कुत्तो के लिए भी यह उचित है) और इसके निवास करने की जगह से (कीचड़ का स्थान) इसे अशुद्ध कहा गया है । हित्ती, यूनानी, और रोमि सभ्यता में प्रतिदिन सुअर का बलिदान किया जाता था । मेडिटेरिनियन सभ्यताओं में इन्हें इन्हें खाया भी जाता था (कुछ समूहों के द्वारा) प्राचीन निकट पूर्वी के भोजन और बलिदानों की अधिक जानकारी के लिए देखें एबीडी, भाग 6, जुलोजी पृ. 1109-1167, सुअर के लिए, देखें पृ. 1130-1135.

NASB मूल ग्रन्थ 14:9-10

फिर जितने जलजन्तु है उनमें से तुम इन्हें खा सकते हो, अर्थात जितनों के पंख और छिलके होते हैं। परन्तु जितने बिना पंख और छिलके के होते है उन्हें तुम न खाना; क्योंकि वे तुम्हारे लिये अशुद्ध है।

14:9 जितनों के पंख और छिलके होते है, लैव्य 11:9-12 की यह एक मूल मार्गदर्शन है। पुराने नियम में कहीं भी फिर से मनाही के यथार्थ कारण को नहीं बताया गया है। देखें लेख 14:3 में।

NASB मूल ग्रन्थ 14:11-20

सब शुद्ध पक्षियों का मांस तो तुम खा सकते हो। परन्तु इनका मांस न खाना, अर्थात उकाब, हड़फोड, कुरर; गरूड चील और भांति भांति के शाही, और भांति भांति के सब काग; शुतुर्मुर्ग, तहमास, जलकुक्कुट, और भांति भांति के बाज छोटा और बड़ा दोनों जाति का उल्लू और घुग्घू; धनेश, गिद्ध हाड़गील; सारस, भांति भांति के बगुले, हुदहुद और चमगादड़ और जितने रेंगने वाले जंतु है वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध है; वे खाए न जाएँ। परन्तु सब शुद्ध पंखवालों का मांस तुम खा सकते हो।

14:11 यह लैव्य 11:13-19 की सदृश है। अशुद्धता का कारण निर्दिष्ट नहीं है, किन्तु यह स्पष्ट मालूम होता है कि जितने पक्षियों को यहां बताया गया है इन्होंने सड़ा हुआ गंदा मांस खाया है।

14:18 हुदहुद, इस प्रफ्क्रार की पक्षी (बीडीबी 189) सभी प्रकार की कीड़ों को और खाद की कीड़ों को भी खाते है। इसे इसके अशुद्ध स्थानों में खाने के कारण और एक खाद से भरी हुई घोसले में रहने के कारण से पहिचाना गया है, इसलिए यह एक अशुद्ध भ्रुमणकारी पक्षी बना हुआ है।

14:19 यह वाक्यखण्ड (बीडीबी 481, निर्माण 1056 और 733, उत. 7:14, 21) उड़ने वाली कीड़ो को प्रकट करती है। यह लैव्य 11:20-23 में समानान्तर हुआ है, जहां पर कुछ कीडों को खाने के लिए शुद्ध बताया गया है (उदा. टिड्डी मत्ती 3:4 मर; 1:16) दिये गये अशुद्ध पक्षियों में से बहुतों के लिए ये सभी कीडे भोजन थे।

NASB मूल ग्रन्थ 14:21

जो अपनी मृत्यु से मर जाए उसे तुम न खाना; उसे अपने फाटकों के भीतर किसी परदेशी को खाने के लिये दे सकते हो, या किसी पराए के हाथ बेच सकते हो; परन्तु तू तो अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र समाज है। बकरी का बच्चा उसकी माता के दूध में पकाना।

14:21 जो अपनी मृत्यु से मर जाए उसे तुम न खाना, यह निर्ग. 23:31 को प्रतिबिम्बित कर सकता है। एक कारण था क्योंकि खून इसमें ही था (12:16, 23–25; उत; 9:4) इस व्यवस्था को वायदे के देश में प्रत्येक व्यक्ति के लिए नियुक्त नहीं किया गया (उदा; विदेशी और अजनबी वर्जित थे, किन्तु लैव्य; 17:15 को ध्यान दें) ये सभी भोजन वस्तु व्यवस्थाओं का अर्थ, इस्राइलियों को कनानियों से और उनकी उपासना की विधियों से अलग या दूर रखना था।

❖ बकरी का बच्चा उसकी माता के दूध में न पकाना, रास सामरा (देखें साइरस एच. गोर्जेन, अग्रेटिक हेण्डबुक पृ.174) मूलग्रंथ दिखाता है कि यह दूसरे सभ्यता में ऊपजाऊपन के चिन्ह रूप में किया जाता था। यहूदी धर्म ने इस पद के आधार पर पथ्य (भोजन) के नियम कोकठोरता से पुष्ठ किया है (अलग बर्तन मटन पकाने के लिए और दुग्धशाला उपज के लिए) किन्तु, प्रहार जो है कनानियों के बलिदान रूपी उपासना से संबंधित करता मालूम पड़ता है (निर्ग; 23:19; 84:26)। इसका बीमारी या स्वास्थ्य के सिद्धांत के साथ थोड़ा या कुछ भी लेन देन नहीं है।

NASB मूल ग्रन्थ 14:22–27

बीज की सारी उपज में से जो प्रतिवर्ष खेत में उपजे उसका दशमांश अवश्य अलग करके रखना। और जिस स्थान को तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुने उसमें अपने अन्न, और नये दाखमधु, और टटके तेल का दशमांश, और अपने बाय बैलों और भेड़ बकरियों के पहिलौठे अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खाया करना; जिस से तुम उसका भय नित्य मानना सीखोगे। परन्तु यदि वह स्थान जिसको तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम बनाए रखने के लिये चुन लेगा बहुत दूर हो, और इस कारण वहां की यात्रा तेरे लिये इतनी लंबी हो कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आशीष से मिली हुई वस्तुएँ वहां न ले जा सके, तो उसे बेचके, रूपये को बाँध, हाथ में लिये हुये उस स्थान पर जानाजो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा और वहां गाय–बैल या भेड़ बकरी, या दाखमुध, या मदिरा या किसी भांति की वस्तु क्यों न हो, जो तेरा जी चाहे, उसे उसी रूपये से मोल लेकर अपने घराने समेत अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खाकर आनन्द करना। और अपने फाटकों के भीतर के लेवीय को न छोड़ना, क्योंकि तेरे साथ उसका कोई भाग या अंश न होगा।

14:22 दशमांश, गिनती 18, केन्द्रिय पवित्र स्थान में याजकों और स्थानीय लेवियों के लिये दशंमाश के बारे में बताता है। किन्तु, यह पद्यांश, अध्याय 12 को समानान्तर करता है और अधिकतर, स्थानिय खेती संबंधी दशमांश देने के प्रकाशन के साथ लेन–देन करता है। देखें लेख अध्याय 12 में।

14:26 जो तेरा जी चाहे उसे उसी रूपये से मोल लेना, यह विभिन्न वस्तुओं को पवित्र स्थान में दशमांश देने के लिए बताता है । यह 12:20 के साथ समानान्तर है । यह वाक्यखंड धर्म–व्यवस्था उन्मत में अवश्य ही समाप्त होता है । यहोवा हमारी खुखी की इच्छा रखता है । वह सिर्फ हमारे साथ इसमें शामिल होना चाहता है (12:7, 18;16:14; 27:7; I इति; 29:22; भ.स. 104:15; सभो; 2:24; 3:12, 13, 22; 5:18; 8:15; 9:7–9; याशा; 12:13) । इस विचार (विषय) को नया नियम बड़ी स्पष्ठता से निर्धारित करता है कि पदार्थ विज्ञान संबंधी सृष्टि स्वयं में अशुद्ध नहीं है (उदा; प्रे.का. 10:15; रोमि; 14:2, 14,20; I कुरि; 63S2; 10:23–26; I तिमुथियुस; 14:4) । इसका मतलब मनुष्य को पाप करने के लिए अधिकार नहीं है, किन्तु कानूनी और न्याय से मसीही आजादी के लिए प्रोत्साहित करने से है (कुलु. 2:16–23) । किन्तु एक परिपक्व विश्वासी को इस पाप में गिरे संसार में सावधान रहना है ताकि वह एक निर्बल को जिसके लिए यीशु मसीह मरा उसे बचा सकें । (रोमि 14:1–15:13) ।

❖ मदिरा यह (बीडीबी 1016) दाख थी जिसमें दूसरे प्राकृतिक फेन उत्पन्न करने वालीरसों का मिश्रण किया जाता था ताकि मदिरा की मात्रा का और अधिक बढ़ाया जा सकें । (उदा. अत्यधिक नशापन) । देखें विशेष विषय जो नीचे प्रदर्शित किये गये है ।

विशेष विषय : मदिरा (इफान) और अधिक मदिरा पीने से उत्पन्न रोग (बुरी आदत)

I. बाइबल संबंधी शब्द

(अ) पुराना नियम :

1. **यायिन** – दाख के लिए यह एक साधारण शब्द है (बीडीबी 406), जिसका प्रयोग 141 बार हुआहै । शब्द साधन अनिश्चित है क्योंकि यह इब्रानी मूल से नहीं है । इसका अर्थ हमेशा से फेन उत्पन्न करने वाली फल कारस समान्य तौर में अंगूर से है । कुछ आदर्श रूप पद्याशों के लिए देखें, व्य. 12:17; 18:4, याशा; 62:8–9; होशे 4:11 ।

2. **टीरोश** – यह नमी दाख है (बीडीबी 440), निकट पूर्वी की जलवायु की स्थिति के कारण, रस गिलने (खीचने) के 6 घंटे बाद इबाल उबाल आना शुरू हो जाता है । यह शब्द उबाल होने की क्रियामें दाख को प्रकट करती है । कुछ आदर्शभूत पद्याशों के लिए देखें, व्य; 12:17; 18:4; याशा 62:8–9; होशे 4:11.

3. **आशीश** – स्पष्ट रूप से यह मद्यसार संबंधी मदिरा है (मीठी दाख बीडीबी 779, उदा: योयल;1:5 याशा 49:26) ।

4. **सेकर** – यह शब्द उत्तेजक मदिरा है (बीडीबी 1016) शब्द पी चुका या शराबी में इब्रानी मूल का प्रयोग हुआ है। अत्यधिक नशा उत्पन्न करने के लिए इसमें कुछ चीरों को मिलाया जाता था। यह यायिन की सामान्तर है (निति; 20:1;31:6 याशा; 28:7)

(ब) नया नियम :

1. मोइनोस – यानिन का युनानी अनुरूप
2. नीयोस मोइनोस (नयी दाख – टीरोश का युनानी अनुरूप (मरकस 2:22)
3. ग्लेयुकोस विनोस (मीठी दाखमधु असीश) – इबाल की प्रथम श्रेणी में दाख (प्रे.का. 2:13)।

(II) बाईबल संबंधी प्रयोग :

(अ) पुराना नियम :

1. परमेश्वर कादान दाख है (उ; 27:28;भ.स. 104:14-15; सभों 9:7; होशे 2:8- 9; योयल 2:19, 24; आमोस 9:13; जक; 10:7)
2. दाखनधु, बलिदान रूपी भेंट का एक भाग है (निर्ग; 29 40; लैव्य 23:13; गि. 15:7,10; 28:14; व्य; 14:26, न्या 9:13)।
3. दाखमधु का प्रयोग दवाइयों के रूप में किया गया है (II शमु. 16:2 निति; 31:6-7)
4. दाखमधु एक वास्तविक समस्या हो सकती है (नूह उत 9:21, लूत; उत; (9:33,35 सामसन न्या 16:19, नाबाल, I शमु 25:26; इरिम्याह II शमु;11:13, अम्मोन II शमु; 13:28; एलाह – I राजा, 16:9; बेनहदद-I राजा; 20:12; न्यायियों 6:6 और स्त्रियां -आमोस 4)।
5. दाखमुध से अनुचित व्यवहार हो सकता है (निति; 20:1, 23:29-35;31:4-4; याशा; 5:11, 22; 19:14; 28:7-8; होशे; 4:11)
6. दाखमधु को कुछ समूह के लिए मना किया गया था। (कार्य पर याजक को; लैव्य 10:9; यहे. 44:21; नाजीरों को गि. 6 और राजाओ को, निति; 31:4-5; याशा; 56:11-12; होशे 7:5)।
7. दाखमुध का प्रयोग एक भविष्य संबंधी में हुआ है (आमोस 9:13;योयल 3:10 जक 9:17)।

(ब) इन्टरबिबलिकल

1. संयम में दाखमधु बहुत ही सायक है (सभो;31:27-30)
2. रब्बी (यहूदी गुरू) कहते है, सभी दवाइयों से बढ़कर दाखमधु है, जहां दाखमधु की कमी होती है, तब ड्रग्स की आवश्यकता होती है (बीडी 586)।

(स) नया नियम :

1. यीशु ने बड़ी मात्रा में पानी को दाखरस में परिवर्तित किया (यहु. 2:1-11)
2. यीशु ने दाखरस को पीया (मती;11:18-19; लूका 7:33-34; 21: 17)
3. पेन्तिकुस्त पर पतरस ने नयी दाखमधु के लिये होने का विरोध किया (प्रे.का. 2:13)
4. दाखरस का प्रयोग दवाई के रूप में किया जा सकता है (मर. 15:23; लूका 10:34; I तिमु. 5:23) ।
5. अगुवों को झगडालू नहीं होना चाहिए । इसका मतलब पूर्णतया शराब न पीनेवाला नहीं है (I तिमु;3:3, 8: तितुस 1:7; 2:3; I पत; 4:3) ।
6. दाखमुध का प्रयोग भवष्यि संबंधी में हुआ है (मती; 22:1; प्रका. 19:9) ।
7. मतवालापन को मना किया गया है, मती 24:49, लूका 11:45;21:34 I कुरि 5:11-13; 6:10; गल;5:21; I पत 4:3; रोमि 13:13-14) ।

❖ अपने परमेश्‍वर यहोवा के समाने खाकर आंनद करना यह मेलबलि को प्रकट करता है जहां पर परमेश्‍वर और बलि देने वाला और उसके परिवार लाक्षणिक रूप से एक साथ भोजन किये है । प्राचीन पूर्व में, एक साथ भोजन करने का अर्थ, वाचा का चिन्ह था ।

NASB मूल ग्रन्थ 14:28-29

तीन तीन वर्ष के बीतने पर तीसरे वर्ष की उपज का सारा दशमांश निकालकर अपने फाटकों के भीतर इकट्‌ठा कर रखना; तब लेवीय जिसका तेरे संग कोई निज भाग या अंश न होगा वह और जो परदेशी, और अनाथ और विधवाएँ तेरे फाटकों के भीतर हों, वे भी आकर पेट भर खाएँ, जिससे तेरा परमेश्‍वर यहोवा तेरे सब कामों में तुझे आशीष दें ।

14:29 परदेशी अनाथ तथा विधवाएँ, व्यवस्थाविवरण, वायदे के देश में निवास करने वाले सभों को ध्यान देने में प्रबल करता है (10:18; 26:12-15) इस तृतीय वर्ष का दशमांश लेवी और स्थानिक गरीबो के लिए था ।

विवादपूर्ण प्रश्‍न :

1. कौन सा सिद्धांत निर्णय लेने के लिए प्रयोग किया गया कि क्या शुद्ध और क्या शुद्ध नहीं था ?
2. क्या व्यवस्थाएँ परमेश्‍वर से है? यदि ऐसा है तो, क्यों हम आज इन्हें ध्यान नहीं देते है?
3. दशमांश का उद्देश्य क्या था ?

*****

व्यवस्था विवरण 14
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
प्रत्येक वर्ष बीतने पर ऋण फाम किया गया	पवित्र लोगों की जीवनकला	सातवां वर्ष	विश्राम वर्ष
15:1-6	15:1-6	15:1-3	15:1-6
गरीबों पर उदारता		15:4-6	
15:7-11	15:7-11	15:7-11	15:7-11
बन्धुआ मजदूरों के संबंध में नियम		दासों से बर्ताव	दास (गुलामों)
15:12-18	15:12-17 अ	15:12-15	15:12-15
		15:16-18	15:16-17
	15:17 ब		
	0.6375		0.6375
पहिलौठे के संबंध में नियम		पशु और भेड़ के पहिलौठे	पहिलौठा
15:19-23	15:19-23	15:19-23	15:19-23

<u>अध्याय 15 पर संदर्भ निरीक्षण :</u>

(अ) अध्याय 15, विशिष्ठ नियमों का एक क्रम है जो कृषि संबंधी आवश्यकताओं के अनोखेपन और लाक्षणिक सच्चाइयों के संबंध रखने वाला के साथ लेन-देन करता है जो कि यहोवा, अपने लोगों में बनाना चाहता था ।

(ब) यह अध्याय तीन अलग भागों में भली-भांति विभाजन होता है :

(1) पद 1-11, सातवें वर्ष के विश्राम की वृद्धि के साथ व्यवहारकरता है जो निर्ग 23:10-13 और लेव्य;25:1-7 पर कर्जदारों औरस्थानिक गरीबों के साथ है । II इतिहास36:21 में कहता है कि इस नियम को न मानने के कारण यहुदियों का परिणाम देश-बहिष्कार था ।

(2) पद 12–18 भाई–बंध अर्थात इब्रानी (पुरूष या स्त्री) जिसको किसी और व्यक्ति के कर्ज को चुकाने के लिए काम करना पडताथा इसके विषय में बताती है ।

(3) पद 19–23 भेड़–बकरियों के पहिलौठे या जानवरों के पहिलौठों के बलि के विषय में बताती है ।

<u>शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन :</u>

NASB मूल ग्रन्थ 15:1–6

15:1 सात–सात वर्ष बीतने पर दो बातें हुई : (1) भूमि को बंजर पडे रहने देना जो भूमि पर परमेश्वर के प्रभुत्व और गरीबों पर उसके ध्यान को प्रदर्शित करती है (निर्ग 23:10–13; लैव्य; 25:1–7) । (2)यहां पर इस्रायली भाई–बंधु को कर्ज से या ऋण से छुटकारा दिया गया (पद 2;31:10) । एक सिद्ध सख्यां के रूप में सात को देखा गया है क्योंकि सृष्टि के निर्माण में छः दिन हुए थे एवं सातवें दिन में विश्राम का दिन हुआ, उत 1:1–1:2:3 ।

15:2 ऋण चुकाना, इस शब्द का अर्थ (बीडीबी 1030) लुप्त होने दो । निर्ग; 23:10–11 में क्रिया का प्रयोग सात सात वर्ष पर भूमि को बजंर ही पडे रहने के लिए हुए है । पुराने नियम में सिर्फ दो बार, संज्ञा का प्रयोग यहां और 31:10 में हुआ है । यहां पर इसका प्रयोग ऋण को माफ करने में आलंकारिक रूप से हुआ है, जबकि फसल काटने वाले ने इस वर्ष में जिस वर्ष में भूमि पर उपज करना मना था और उस पर किराये को मजदूर के लिए भी काम नही था, अपने ऋण को चुका नहीं सका । दूसरे प्रकार से, परदेशी को इस भूमि पर कार्य करके इसके ऋण को चुकाना था ।

15:3 विदेशी मुनष्य, यह गैर इस्रायली को जो पिलिश्ति में हमेशा के लिए निवास कियाहुआ है उसे प्रकट करता है बीडी 648, 14:21; 15:3; 17:15;23:20; 29:22) जिसे मूसा की कानून निर्माण केद्वाराकानूनी सुरक्षाऔर सीमित नागरिक अधिकार प्रदान किये गये थे ।

दूसरा शब्द परदेशी (बीडीबी 158) का प्रयोग आगन्तुक या प्रवासी के लिए प्रयोग हुआ है, जिन्हें भी सीमित अधिकार और सुरक्षा को प्रदान किया गया था (1:16; 5:14; 10:18, 19 (दोहरा); 14:21, 29; 16:11, 14; 23:7; 24:14, 17, 19, 20, 21; 26:11–13; 27:19)।

गैर इस्राइलियो के लिए इस प्रकार के ध्यान को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया है :

(1) यहोवा की चरित्र

(2) संभव होने योग्य समावेश

(3) मिस्र देश में इस्रायलियो ंकी पिछली अनुभव

15:4 तेरे बीच कोई दरिद्र न रहेगा, पद 4–6 आदर्श स्थिति को प्रकट करता है (विश्राम के वर्ष और महोत्सव के वर्ष के मार्गों में चिन्हित है) आदर्श कदाचित ऐतिहासिक है । कई इस्रायलियों ने उनके परिवार के भूमि को खो दिया था । यहूदियों के बीच में सदैव गरीबी थी (मती 26:11) ।

15:5 वाचा के प्रति अज्ञाकारिता के विषय में यह बार–बार होने वाली आवर्तक की चेतावनी है ।

(1) यदि तू चित्त लगाकर बातों को सुनें ।

(2) इन सारी आज्ञाओं को मानने में चौकसी करें ।

निरंतर आज्ञाकारिता के जबाब में यहोवा के वाचा की प्रतिज्ञाएँ शर्त पूर्ण है ।

15:6 यहोवा के कहे हुए/प्रतिज्ञा की हुई (बीडीबी 180, केबी 210, पीयल पूर्ण) आशीषों का वर्णन किया गया है :

(1) परमेश्वर यहोवा तुझे आशीष देगा, यह 4 (दोहरा) 1:11, 2:7; 7:13 (दोहरा)।

(2) तू बहुत जातियों को उधार देगा, परंतु तुझे उधार लेना न पडेगा ।

(3) तू बहुत जातियों पर प्रभुता करेगा, परन्तु वे तेरे ऊपर प्रभुता न करने पाएंगी ।

इन प्रतिज्ञाओं में अंतरराष्ट्रीय और भविष्य संबंधी लपेट है (याशा; 9:6–7; 11:1–10 मीका 5:1–5 अ) ।

NASB मूल ग्रन्थ 15:7–11

15:7 यदि कोई तेरे पास दरिद्र हो वास्तविक निर्दिष्ट पद 11 में है । आदर और सम्मान के अभाव के रूप में दरिद्रता को परिभाषित किया जा सकता है । यहां पर अभाव, परिवार की भूमि बर्बाद हो जाने का कारण है जो समानांतर के रूप में रूपये के उधार लेने के द्वारा हुआ है ।

❖ तेरे जाति भाइयों में से कोई एक, यहोवा के विशेष ध्यान को और दया को मूसा की व्यवस्था दिखाती है ।

1. दूसरे गरीब वाचा के भाइयों/बहनों
2. विधवाएँ
3. अनाथों
4. परदेश निवासी
5. परदेशी

❖ तेरे देश के शहरों में से कोई भी, ध्यान में रखें कि यह न सिर्फ स्थानिक दरिद्र है, परंतु किस प्रकार से समाज दरिद्र व्यक्ति से बर्ताव करता है । जिस प्रकार से यहोवा अपने लोगों की ओर कार्य करता है। वह चाहता है कि इसी प्रकार से उसके लोग जरूरतमंद से बर्ताव करें ।

❖ अपने इस दरिद्र भाई के लिए ने अपना ह्रदय कठोर करना और न अपनी मुटठी कडी करना कारणभूत और कार्य दोनों सम्मिलित है (II कुरि 9:7)

1. अपना ह्रदय कठोर न करना, इति II 36:13

2. न अपनी मुट्ठी कडी करना ।

15:8 अनिश्चित निश्चयों को ध्यान में रखें जो महत्व देने के लिए उनके अनुरूप अपूर्णो से मिलता जुलता है :

1. इसके लिए अपना हाथ ढीला करना – यह लक्षण पद 7 के सदृश्य है ।

   (अ) अपना ह्रदय खोल दें (कठोर ह्रदय वाला मत बनों)

   (ब) अपना हाथ खोल दें (मुट्ठी बंद किया हुआ मत बनों) पद 11, 13

2. उदारता से इसे उधार दो ।

❖ इसका जितना प्रयोजन हो उतना उसे उधार देना, यह बीडीबी 191, जो 341 के साथ निर्माणित है जो भाई के आवश्यकता को पर्याप्त के अनुसार पूरी होने को बताता है, कि सिर्फ क्षणिक लक्षण में है (याकूब 2:15–26; I यहु. 3:16–17)

15:9 सचेत रहो, यह एक निफाल आज्ञात्मक है बीडी 1036, के 1581) जो एक पुनरागमन विषय है । आज्ञापालन और अनाज्ञाकारिता के लिए वाचा के परिणाम है ।

❖ अधम चिंता, शब्द अधम बिलयात के समान इसी मूल से है । यह नीच अयोग्य, बुरे मनुष्य कोबताता है (निति 6:12) देखें लेख 13:14 में ।

15:9 और वह तेरे विरूद्ध यहोवा की दोहाई दे तो यह तेरे लिए पाप ठहरेगा, एक गरीब व्यक्ति की प्रार्थना, पाप को उत्पन्न नहीं करती है (उदा. अनैतिक) परंतु यह यहोवा के सामने, स्वार्थी कपट प्रबंध करने वाले व्यक्ति के ह्रदय को सुलासा करता है 24:18; निर्ग; 22:23) । वाचा की उचित कारणभूत और कार्यों पर यहोवा की आशीषें शर्तपूर्ण है । इसके लोगों को इसके चरित्र का नमूना होना है ।

15:10 यह संदर्भ की सराशं है जो पद 7 से है ।

❖ देते समय तेरे मन को बुरा न लगे,संदर्भ निरीक्षण को देखें c, l, e

15:11 हाथ ढीला करके अवश्य देना संदर्भ निरीक्षण को देखें c, l, e

NASB मूल ग्रन्थ 15:12–17

15:12 यथाशब्द यह भाई (बीडीबी 26) है परंतु बंधु या वाचा के साथी के जातीय विचार में प्रयोग हुआ है । लैव्य. 19:17; 25:25, 35, 36, 39 47; व्य; 15:12; 17:15) यह एक गोत्र या परिवार पृथकत्व के बनाम एक जातीय एकता को वर्णित किया है । शब्द सिद्धांत और आध्यात्मिक गल; 6:10 के सदृश हैं ।

❖ इब्रीयय इब्रिन शब्द इबी पुराने नियम का एक विरल शब्द है । यह इसे प्रदर्शित करता होगा । (1) शेम का पोता, एबेर की पीढ़ियों की कुल संबीध (इत; 10:21) (2) शब्द जो प्राचीन पूर्वी में सोमइट्स (हाबीरू) के बड़े समूह का वर्णन करती है, जिन्होंने दो हजार वर्ष बी.सी. में मेसोपोटामिया समान नोमादस को पार कर दूसरे स्थान में गये हुए थे या (3) गरीब श्रमिकों का बंधन मुक्त विदेशी समूह (अब्राहम, याकूब और युसुफ के परिवार का वर्णन करने के लिए विदेशियों के द्वारा प्रयोग किया हुआ शब्द) ।

❖ पुरूष या स्त्री –यह कानूनी समानता को दिखाता है (पद 17; और इत 1:26–27 को भी ध्यान में रखें) प्रारंभिक धर्मसंहित ने इन्हें अलग किया था (उदा. पुरूषों – निर्ग 21:2–6, स्त्रियों निर्ग, 21:7–11) । यह हम्मूराबी, धर्मसंहित, बेबीलोन की कानूनी लेख जो मूसा और कनान देश की सभ्यता रूप की पहिले से तारीख डालती है उससे निकाला हुआ तत्वरूप था । परमेश्वर के लोग भिन्न थे ।

❖ तेरे हाथ बिके, क्रिया (बीडीबी 569, केबी 581, निफला अपूण) किसी व्यक्ति को प्रकट करता है जो स्वयं से एकरारनामा (दो दलों के बीच की गई प्रतिज्ञा) में दासत्व पर बिक्री करता है (लैव्य 25:39, 47, 48, 50; सगीं इब्री के विषय में, पद 39–46 निर्ग 21:2–6 में बताया गया है ।

❖ छ: वर्ष तक वह तेरी सेवा करे, पद 1–11 में प्रदर्शित किया गया विश्राम पर्व से वशावली रूप में यह असबंधित मालूम पड़ता है, परंतु यदि ऐसा है तब पद 9 का अर्थ अनिश्चित है ।

❖ तुम इसे स्वतंत्र करके जाने देना, यह क्रिया बहुत ही महत्वपूर्ण होने के कारण तीन बार पद 12–13 में दुहराया गया है ।

15:14 छ: वर्ष तक सेवा करने के बाद जब एक दास को स्वतंत्र किया जाता था तो इसे हर चीज जो उसके परिवार को बसाने की आवश्यकता होती है दिया जाना चाहिए था ।

(1) तुम उसको बहुतायत से देना, यह एक इब्रानी मुहावरा है, यथा शब्द, तुम इसके लिए एक गले का हार बनाना ।

(2) दिये जाने वाले चीजों (प्रकारों) का ध्यान दें :

(अ) भेड़–बकरियों में से

(ब) खलिहान से

(स) दाखमधु के कुण्ड

(द) जुड़े गये मार्गदर्शन, निर्ग 21:3–4; लैव्य 15:41 में दिया हुआ है ।

15:15 इस बात को स्मरण रखना की तू भी मिस्र देश में दास था, दस के स्वामी की उदारता का मूल कारण था कि उसका परिवार भी मिस्त्र में एक समय गुलान (दासत्व) था और परमेश्वर उसके प्रति उदारता था । देखें 5:15 में ।

❖ तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे छुड़ा लिया, इस क्रिया को कई बार व्य. में प्रयोग किया गया है, जो सदैव यहोवा के अनुग्रहपूर्ण छुटकारा जो मिस्त्रियों के दासत्व से इस्राइलियों को मिला हुआ था । देखें विशे विषय 7:8 में । मानव जाति ने परमेश्वर को नही ढूढा,किन्तु परमेश्वन ने ही दृष्टि किया और उन्हें छुटकारा प्रदान किया । उसका महत्वपूर्ण कार्य और न बदलने वाला चरित्र ही हमारी महान आशा है । इस्राइल पर यहोवा के सभी कार्य, मसीह के कार्यों की प्रतिछाया थी ।

15:16 यह पद निर्ग, 21:5 के सदृश है । यह एक समर्पित भोगी के संबंध की उदाहरण प्रस्तुत करता है जो यहोवा और इस्रायल के बीच विश्वास/प्रेम/आज्ञापालन के वाचा के संबंध को दिखाता है । वाचा का लक्ष्य, इस पृथ्वी पर प्रेमी, आशीषित जीवन को एक आत्मिक भागों में एक अत्यधिक घनिष्ठ संबंध के सविधान के द्वारा है । आशीष सदैव, संबंध का अप्रधान रचना है, यह एक लक्ष्य कभी नहीं है ।

15:17 सुतारी लेकर इसका कान किवाड़ पर छेदना इसमें दो लक्षण है : (1) आज्ञापालन का लक्षण (चिन्ह) कान था और (2) किवाड़, घर के लिए प्रेम का लक्षण था । इस रीति को घर पर किया जाता था, न कि पवित्र स्थल में या नगर फाटक पर, किन्तु निर्ग. 21:6 के अनुसार एलोहिम पर निर्भर होना है । यह इसे एक स्थायी दास बना देता है ।

❖ सदा इब्रानी शब्द ओलाम है (बीडीबी 761) यह प्रकरण दिखाता है कि इब्रानी शब्द को इसके संदर्भ के द्वारा परिभाषित किया जाना चाहिए । इसका अर्थ सदा या निर्धारित घिराव मे लंबे समय के लिए हो सकता है । यहूदी गुरू कहते है कि इसका अर्थ महोत्सव के वर्ष तक है, परन्तु इस संदर्भ में इसकाअर्थ दास के अंतिम समय तक है । देखें विशेष विषय 4:4 में

NASB मूल ग्रन्थ 15:12-18

15:18 उसे छोड देना तुझे कठिन न जान पडे, इसका अर्थ है कि छ: साल के सेवा करने के बाद जब एक दास को स्वतंत्र किया जाये तो कोई शिकायत न करने पायें ।

❖ दो मजदूरों के बराबर तेरी सेवा की है, यहां पर सही अनुवाद के विषय में कुछ शंकाए है (यथाशब्द आधे मूल्य के लिए, बीडीबी 1041 निर्माण 969I) यहां पर तीन संभावनाएं है :

1. एक दास रात और दिन काम करने वाला नौकर था ।
2. दास मुक्त में काम करता था, जबकि एक नौकर को रूपया दिया जाता था ।

3. किराये पर लिया गया व्यक्ति के लिए काम की अवधि याशा; 16:14 में तीन वर्ष की थी (जैसे हम्मुराबी धर्म संहिता करता है) इसलिए एक दास दोहरा काम करता था ।

❖ तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे सब कामों में अशीष देगा, वाचा की आशीष वाचा के आज्ञापालन में अनुसरण करती है, विशेषकर जब उचित प्रेम क्षमा, सहायक गुण उपस्थित है ।

NASB मूल ग्रन्थ 15:19–23

15:10–23 इन पदों में पहिलाठों के उचित उपयोग और अनुपयोग को बताया गया है । यह निर्ग. 13:2 की ओर जाता है, जो मिस्र और मोशेन में जिसके घर खून के साथ चिन्हित नहीं किये हुए थे वहां पर मृत्यु की महामारी, जो मानव जाति और पशुओं के पहिलौठों के संदर्भ में है । यह परमेश्वर की प्रभुता हर एक पर प्रदर्शित करने का एक प्रतिरूप रीति है । निर्ग; 13:2; लैव्य 2:14–16) ।

15:19 तेरी गायों और भेड़ बकरियों के पहिलौठे नर को पवित्र रखना, निर्ग 13 हमें बाईबल संबंधी प्रारंभिक को देता है और गि. 18:15–16 को भी ध्यान में रखें । यह लेवियों की न्यूनता पूर्ति करने के लिए आमदनी काएक तरीका है ।

15:20 यह 12:17–19; 14:23 की ओर जाती है ।

15:21 यदि इसमें किसी प्रकार दोष है तो उसे परमेश्वर यहोवा के लिए बलि न करना एक पशु जिसमें किसी प्रकार का दोष (विषमता) है, उदा; अन्धा, मलिनीकरण, बीमारी, लगड़ापन, कुरूपता इत्यादि को बलि नहीं किया जा सकता है, परन्तु एक स्थानीय बैठक में मित्रों और परिवार के साथ खाया जा सक्ता है । (12:15–16) ।

15:22 इब्रानी में यह प्रदर्शित कर सकता है :

(1) जो इसे खाते है । (2) वह जिसे खाया जाता है ।

चुनाव #1 उत्तम मालूम होता है (LXX)

15:23 परन्तु सिर्फ तू उसका लहू न खाना, लहू, जीवन का प्रतिरूप था और जीवन परमेश्वर का है (उत; 9:4–6; लैव्य; 1:17; 7:26–27; 17:10–10; 19:26, व्य; 12:16, 23–25; शमु, ; 14:32–34) । आगे के पदों में प्रतिरूप जो है वो सभी सृष्टि के ऊपर परमेश्वर को प्रभुत्व को दिखाता है, विशेषकर जो जीवित है ।

विवादपूर्ण प्रश्न :

1. क्या विश्राम वर्ष के लिए कहीं ऐतिहासिक घटना है, जिसे कभी भी ध्यान में रखा गया है ?
2. अध्याय 15 में इन व्यवस्थाओं का मूल उद्देश्य क्या है ?
3. इब्री. शब्द का संभवपूर्ण प्रारंभिक क्या–क्या है ?

*****

व्यवस्था विवरण 16
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
फसह के वर्ष का पुननिरीक्षण	उत्सव संबंधी पंचाग	फसह का पर्व	त्यौहार फसह का और अखमीरी रोटी का
16:1-8	16:1-8	16:1-4	16:1-8
		16:5-8	
सप्ताहों के पर्व का पुर्ननिरीक्षण		अनाज काटने (लपन) का पर्व	दूसरे वर्ष
16:912	16:9-12	16:9-12	16:9-12
झोपडियों के पर्व का पुर्ननिरीक्षण		झोपडियों का पर्व	
16:13-17	16:13-15	16:13-15	16:13-15
	16:16-17	16:16-17	16:16-17
न्यायी को प्रबंध बने वाला होना चाहिए	न्यायी और धर्म के साथ नियमों का बर्ताव	न्यायी का नियुक्ति	न्यायियों
(16:18-17:13)	(16:18-17:20)	(16:18-17:13)	16:18-20
			(16:21-17:7)
16:18-20	16:18-20	16:18-20	आराधना में अनुचित व्यवहार करना
16:21-17:1	16:21-17:1	16:21-17:1	16:21-17:1

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB **मूल ग्रन्थ 16:1-8**

16:1 स्मरण करना व्य. में यह शब्द सचमुच में एक बारम्बार होने वाला आर्वतक है 73 बार । अध्याय 5 की दस आज्ञाओं के समान हेबराइफ की तरह इस अध्याय को लिखा गया है ।

❖ महिना, दूज के चन्द्रमा के समान यह इसी मूल में है (बीडीबी 294I) । देखें विशेष विषय : प्राचीन निकट पूर्वी पचांग 1:3 में ।

❖ अबीब इस शब्द का अर्थ नवा अनाज (बीडीबी1), जो पकी हुई प्रथम जौ की गट्ठा को सूचित करी है । यह कनानियों की चिन्ह के अनुसार मार्च–अप्रैल की समय अवधि के लिए था। तत्पश्चात इससमय अवधि के लिए शब्द निशान का प्रयोग बेबीलोन की लिखावट में हुआ है। सामान्य तौर में यहां प्रदर्शित दिनांक को विशिष्ठ रूप से निर्ग; 21:1,6 देता है ।

16:1 उत्सव मनाना, यह साधारण क्रिया, करना, मनाना, (बीडीबी 793, केबी 1581) का प्रयोग अध्याय 16 में अनेकों बार हुआ है और विभिन्न तौर से अनुवाद भी हुआ है :

1. उत्सव मनाना पद, 1, 10, 13
2. हो पद 8
3. पालन करने में चौकसी करना पद 12
4. स्थापन न करना पद 21

विशेष विषय : फसल का पर्प

(1) प्रारंभिक कथन

1. मिस्त्रियों के ऊपर उदभूत न्याय और इस्रायलियों के छुटकारे का कार्य एक राष्ट्र के रूप में इस्रायल की स्थापना जो यहोवा के प्रेम के लिए कसौटी है । (विशेष रूप से भविष्यवक्ताओं के लिए)

2. उत्त 15:12–21 में अब्राहम से की गई यहोवा की प्रतिज्ञा की विशिष्ठ पूर्णता निर्गमन है । फसह का पर्व, निर्गमन में, स्मरणार्थ का उत्सव मनाता है ।

3. यह अंतिम और अत्यकिध बिगाड़नेवाली (भूगौलिक रूप से, उदा. मिस्र और गोशेन) और नाश करनेवाली (मानवजाति और पशुओं के पहिलौठे के माराजाना) दस महामारियाँ जिसे मूसा के द्वारा यहोवा ने मिस्र में भेजा था ।

(II) शब्द स्वयं में (बीडीबी 820, केबी 947)

(1) संज्ञा का अर्थ अनिश्चित है

(i) महामारी से संबंधित उपाय से विपत्ति डालना है (उदा. निर्ग 11:1); यहोवा का दूत मानवजाति और पशुओं के पहिलाठों को मारता है ।

(2) क्रिया का अर्थ :

(i) लगड़ाकर चलना (II शमु. 4:4) का प्रयोग चिन्हित घरों को छोड़ जाना, अभिप्राय से हुआ है । (निर्ग, 12:13, 23, 27 बीडीबी 619 एक प्रचलित शब्दसाधन)

(ii) नृत्य करना (I राजा 18:21)

(iii) अकादियन – सान्तवना देना

(iv) मिस्त्रि लाग – मारना

(v) याशा; 31:5 में सदृश क्रियाएँ, रक्षा करने के लिए रहना (निर्ग; 12:13)

(III) घटनाएँ

1. निर्ग 11:12 में घटना स्वयं ही प्रदर्शित है ।

2. वार्षिक पर्व का वर्णन निर्ग ; 12 में हुआ है जो अखमीरी रोटी के पर्व के साथ आठ दिन के पर्व पर संलग्न है ।

(i) वास्तविक रूप में यह स्थानिक घटना है निर्ग; 12:21–23; व्य 16:5 (गि. 9)

(अ) कोई याचक नहीं

(ब) कोई विशेष वेदी नहीं

(स) लहू का विशेषज्ञ रूप से इस्तेमाल किया जाना ।

(ii) यह केन्द्रीय पवित्र स्थान पर की घटना बनी

(iii) केन्द्रीय पवित्र स्थान पर इस स्थानीय बलिदान (उदा. स्मरनार्थ उत्सव मनाने के लिए मेमने के लहू कोदेख घातक स्वर्गदूत के गुजरने से है) और कटनी के पर्व की समाप्ति सभवत: अबीबी और निशान 14 और 15–21 की तारीख पर हुई थी ।

(3) मानवजाति और पशुओं के सभी पहिलौठों पर अनुरूप अधिकार और उनके छुडौती का वर्णन निर्ग;13 में हुआ है ।

(IV) ऐतिहासिक लेख पर इसकी विधान

1. मिस्त्र में प्रथम फसह का पर्व मानाया गया, निर्ग 12

2. होरेब/सीनै पर्वत पर गि; 9

3. कनान (गिलगाल) में प्रथम फसह का पर्व मनाया गया; यहोशू 5:10–12

4. सुलेमान के द्वारा मंदिर के समर्पण के समय में I राजा; 9:25 और I इति; 8:12 (संभवत: किन्तु विशिष्ठ रूप में निर्दिष्ट नहीं है)

5. हिजक्रियाह के राज्य के दौरान II इति : 30

6. योशिय्याह के संसोधन के दौराना II राजा 23:21–23; II इति; 35:1–18

7. II राजा 23:22 और II इति 35:18 को ध्यान में रखें जहां इस वाष्कि पर्व को मनाने में इस्रायल का इन्कार प्रदर्शित है ।

(V) महत्व

1. यह वर्ष के तीन पर्व के दिनों में से एक है (निर्ग. 23:14–17; 34:22–24; व्य 16:16)

(i) फसह का पर्व/अखमरी रोटी का पर्व

(ii) सप्ताहों का पर्व

(iii) मण्डप पर्व

(2) मूसा पहिले से इस दिन को सूचित करता है कि व्यवस्थाविवरण में इस दिन में केन्द्रिय पवित्र स्थान पर उत्सव मनाया जाएगा (जिस प्रकार और दो पर्व को मनाया जाता था)

(3) यीशु मसीह ने इस वार्षिक फसह के पूर्व के भोजन के (या एक दिन पहले) मौके के प्रयोग में लाया ताकि नयी वाचा को, रोटी और दाखरस के चिन्ह के प्रकट करें, किन्तु मेमने का प्रयोग उसने नहीं किया :

(i) सर्वसाधारण भोजन (ii) छुटकारा देने वाला बलिदान

(iii) आने वाली पीढ़ियों के लिए बढ़ता महत्व

❖ रात को, जब रात को घातक दूत गुजरा (बीडीबी 538) फिरौन ने कहा अब जाओ (निर्ग; 12:33) तुरंत इस्राएली लोग निकल गये ।

16:2 भेड बकरियों और गाय बैल में से निर्ग; 12:5 के साथ II इति, 30:24;35:7 की तुलना करें, जो एक भैड याएक बकरी का बलिदान, सभी पालतु जानवरों की पंक्ति का खुलासा करती है ।

❖ जो स्थान यहोवा अपने नाम का निवास करने के लिए चुन लेगा, मिस्र में यह एक पारिवारिक कार्य था; व्य. में यह केन्द्रीय पवित्र स्थान में आराधना के लिए रखा गया है ।

16:3 अखमीरी रोटी, रोटी की अधिकता के लिए इस्रायली सुबह तक इंतजार नहीं कर सकते थे । निर्गमन रात की यह ब्यौरा निर्गमन की फसह की पर्व, एक कृषि संबंधी पर्व के साथ संलग्न होने की उत्पत्ति को दिया है (निर्ग. 12:15-20; 23:14-17; 34:18)

खमीर, जिसे प्राय: बलिदान संबंधी रूपों में प्रयोग किया जाता था (लैव्य 17:13:23; 17) वह पाप और विद्रोह का अनुरूप चिन्ह ठहरा था । इस लाक्षणिक पर्व में इबाल को देखा गया जैसे इस्रायल को मौका मिला है कि प्रत्येक आधार पर अपने जीवन को पावें कि क्या इनमें किसी भी प्रकार की विद्रोह या अनाज्ञाकारिता यहोवा से किया हुआ है । प्रायश्चित का दिन (लैव्य; 16) एक राष्ट्रीय स्तर पूर्ण किया, अखमीरी रोटी का पर्व एक व्यक्ति पर या पारिवारिक स्तर पूर्ण किया है ।

यह वार्षिक पर्व; फसह के पर्व के साथ संलग्न हुआ है, जो यहोवा के अनुग्रह पूर्ण छुटकारे से रखा गया है । जिस प्रकार प्रतिज्ञा और अनुग्रह ने मिस्र से छुटकारा प्रदान किया, इसलिए इस्रायल को जीवन पर तक बचने के लिए इन न बदलनेवाली अलौलिक चरित्र गुण पर निर्भर होना है । (4:9)

❖ दुख की रोटी, देखें निर्ग. 12:8

❖ (क्योंकि तू मिस्र से उतावली होकर निकला था) फिरौनल की निवेदन पर यहुदियों ने उतावली में निकला था (निर्ग; 12:33)

ताकि मिस्र को तुम स्मरण रखना, फसह के पूर्वमें ऐतिहासिक और अध्यात्मविधा संबंधीमहत्व है । मिस्र में फसह के पर्व का अनुभव उज्ञवल परिवार से था, व्य. में यह आनेवाली प्रधान पवित्र स्थान के कार्यों के पहिले से सूचना देती है; यीशु मसीह के दिन में यह दोनों का मिश्रण हुई थी । (मंदिर में और घर में या यरूशलेम में ठहरे हुए यात्री जहाँ पर रह रहे थे बटवारा (अंश) या यरूशलेम में ठहरे हुए यात्री यहां पर रह रहे थे)

16:4 स्मरण रखें, मूसा प्राय: निर्गमन की पीढ़ी को सूचित कर रहा है । यह पद सूचित करता है कि प्रत्येक पीढ़ी को इस प्रथम पीढ़ी के स्थान पर स्वयं को रखना है जिन्होंने परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ का अनुभव किया था, तथापि विद्रोह किया और जंगल में मर गये थे । प्रत्लेक वार्षिक पर्व इस्राायल को यहोवा की उपस्थिति और प्रयोजन पर अत्यधिक भरोसा रखने में सहायता करती थी । वह इनके साथ, और इनके लिए था, जिस प्रकार वह उनके पूर्वजों के साथ रहता था ।

16:5 अपने किसी शहर में शब्दानुसार यह फाटक है (बीडीबी 1044, 12:15, 17, 21) जिसके द्वारा आनेवाले समय को प्रकट कर रहा है जब कनान को इस्रायल जीत चुका होगा (पद;18)

16:6 सूराज डूबने पर संध्याकाल को, इस्राइलियों के लिये यह नये दिन की शुरूआत थी (उत;1, निर्ग 12:6)

16:7 तुम उसे पकाना और खाना, इब्रानी में अर्थ उबालना या पकाना हो सकता है (बीडीबी 143, केबी 164, पीयल पूर्ण) किन्तु निर्ग, 12:8-9 के कारण, इसका अर्थ पकाना होगा ।

16:8 परमेश्वर यहोवा के लिए महासभा हो, पर्व की समाप्ति एक संयुक्त आराधना योजना से हुआ (निर्ग; 12:16; एक पवित्र सभा) । प्रधान पवित्र स्थान को संयुक्त समाज और परिचय के विचार को उन्नत करना ही एक उद्देश्य था ।

NASB मूल ग्रन्थ 16:9-12

16:10 सप्ताहों नाम पर्व, यह इस नाम से भी पुकारा जाता है (1) कटनी का पर्व निर्ग, 23:16 और (2) प्रथम उपज का पर्व गि; 28:26 में । बाद में यह पेन्कुिस्त हुआ (यहूदी धर्माधिकारी के रूप में, सीनै पर्वत परव्यवस्था के दिये जाने से जोडा गयाथा) जिसका अर्थ पचासवां दिन है । यह मई-जून का कटनी पर्व या गेंहू के कटनी का समय था । बाल देवता नहीं किन्तु यहोवा उपज देने वाला था ।

❖ स्वेच्छाबलि, यह लोगों को जितना अधिक परमेश्वर ने इनमें से प्रत्येक व्यक्ति को आशीष दिया हुआ है उसके अनुसार भेंट लाने की अनुमति देता है (पद 17) यह एक अतराष्ट्रीय देने का सिद्धांत है । (II कुरि. 8-9)

16:11 यहोवा चाहता है कि प्रत्येक लोग पिछले समय इस्रायल पर उसके किये गये कार्य एवं जरूरतमदों के लिए इसकी विशेष ध्यान को जानने पाएं (पद; 14:12:12, 18,19; 14:27, 29 26:11-13)

16:12 और तू स्मरण रखना, सप्ताहों के पूर्व के लिए अध्यात्मविधा संबंधी कारण, मिस्र की गुलामी में इस्रायल का अनुभव था ।

NASB मूल ग्रन्थ 16:13-15

16:13 झोपड़ियों नाम पर्व, झोपडियों का पर्व पतझड के काल में आया और बटोरने के समय के दौरान था (निर्ग;23:16; 34:22) । इस पर्व के लिए अध्यात्म विधा संबंधी कारण को लैव्य 23;33-43 में देखें ।

झोपडियों के लिए पृष्ठभूमि इस्राइलियों के अनुभव को प्रतिबिंबित करने के लिए कहा गया है ह्न

(1) मिस्र में कृषि संबंधी जीवन, यहां पर झोपडियों को कटनी के समय पर खेतों में बनाया गया था ।

(2) निर्गमन और जंगल परिभ्रमण अवधि के दौरान (उदा. तबूओं) थोडे काल के लिए घरों में रहना ।

(3) प्रधान पवित्र स्थान पर यात्रियों के निवास के लिए थोडे समय के लिए आश्रय की जरूरत थी । (थोडी संभावना है)

16:15 यहोवा, अपने लोगों को आशीष देना चाहता है ताकि वे एक परिवार के रूप में और परमेश्वर के रूप में हर एक व्यक्ति आनंद मनाने पाएँ ।

16:16 वर्ष में तीन बार तुम्हारे सब पुरूष प्रकट हो, पद 16 और 17 सारांश पदें है जो सभी तीन पर्वां में प्रकटीकरण करता है (निर्ग; 23:14, 17) । स्मरण रखें कि भोजन, पारिवारिक संगति और मित्रताकी विशेष समयों में था । ये पर्व इस्रायल को स्वीकृत दिया था ।

1. कि एक राष्ट्रीय समाज के अभिप्राय को उन्नतपूर्ण करे ।
2. नयी पीढी को परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण कार्यों की शिक्षा दें ।
3. गरीबों और दरिद्रों की मदद करें ।
4. इस्रायल के परमेश्वर की भलाइयों और इसके वाचा की प्रतिज्ञाओं की परिपूर्णता में आनंद करें ।

❖ पर्व इब्रानी शब्द, क्रिया और संज्ञा दोनों, प्रधान पवित्र स्थान पर वर्ष तीनों में से एक आराधना के दिन को प्रकट करता है । इसका अनुवाद तीर्थ-पर्व हो सकता है ।

16:17 अपनी अपनी पूंजी के अनुसार दिया करना, यह अंतरराष्ट्रीय देने के सिद्धांत प्रत्येक को अपनी योग्यता के अनुसार देने को प्रकट करता है (पद; 10; II कुरि 8-9) ।

NASB मूल ग्रन्थ 16:18-20

16:18-20 यह एक अलग भाग है जो अध्याय 18 के साथ जाना चाहिए । यह जनसंबंधी अगुवेपन (जाति संबंधी न्यायी, लेवी-संबंधी, न्यायी, राजाओं, याजकों और भविष्यवक्ताओं) के लिए मार्गदर्शन से बर्ताव करता है ।

16:18 तू अपने फाटक के भीतर न्यायी और सरदार अपने लिए नियुक्त कर लेना ये फाटकों के स्थानीय प्राचीनों के समान ही है (उदा. 21:19;22:15; आमोस 5:10, 12,15) मूसा प्रधान न्यायी था, किन्तु इसने सहायकों को नियुक्त किया था (व्य. 1:9-18; निर्ग 18:13-27) ।

16:19 तू न करना, यह पद न्यायियों के लिए (मूसा के सहायकों) तीन मार्गदर्शन की सूची बनाती है :

1. तुम न्याय न बिगाडना ।
2. तुम न तो पक्षपात करना,(बीडीबी 647, केबी 699; हिफिल अपूर्ण, इब्रानी यथार्थ है तू चेहरे पर ध्यान न देना)
3. तू घूस न लेना, बीडीबी 542, केबी 534, क्रेल अपर्णू; व्य 27:25)

❖ घूस, दो चीजें घूस करता है :

1. बुद्धिमान की आखों को अंधा कर देता है- बीडीबी 734, केबी 802 पीयल अपूर्णस निर्ग 23:8; यह रूपये या धन की सामर्थ के लिए अलंकार रूप से है ।
2. धर्मियों की बातें पलट देती है - बीडीबी 701, केबी 758 पीयल अपूर्ण; निर्ग 23:8

16:20 नितांत ठीक पद 20 में नितांत ठीक और पद 18 में धर्म से करना दोनों इसी इब्रानी मूल से है (बीडीबी 841) जो एक सिद्धांत को बताता है । एक न्यायी नियम के अनुसार शासन करता है जिससे परमेश्वर की इच्छा प्रकट होती है (नितांत ठीक) अगुवों को (स्थानिक और याजकीय न्यायिों) दया का नमूना होना था, तथापि यहोवा की न्याययुक्त को प्रकट करना था । (निर्ग. 23:6-8)

❖ तू पीछा पकड़े रहना यह क्रिया व्य 11:14; 19:6 में शब्दानुसार प्रयोग हुआ है, किंतु यहां पर आलकांरिक रूप से इस्रायल के यहूदी संबंधी रीतिरिवाज से है । दूसरे आलंकारिक रूप में प्रयोग हुए पाये जाते है भ.स. 34:14 नीति 21:21;याशा: 15:5 और होशे 6:3 में ।

❖ जिससे देश पर और यहोवा की आशीषों/प्रतिज्ञाओं पर इस्रायल का अधिकार शर्तपूर्ण था ।

NASB मूल ग्रन्थ 16:21-22

16:21 व्य. 16:21, 22 और 17:1 एक ही वाक्यखंड है । वाक्यखंड बलिदानों के उचित रीति का बखान करती है ।

❖ तू किसी प्रकार की लकडी की बनी हुई अशेरा की स्थापन न करना इस वृक्षावाटिका या अशेरा, या तो वृक्षों की वृक्षवाटिका कोया कनानियों की उचीं उठी हुई समतल भूमि में छेदों को जाहं पर सजाई हुई लाठों या जीवित वृक्ष जो उपजाऊ देने वाले देवता की पत्नि को प्रस्तुत या प्रदर्शित करता है, रखा गया था । यह उपज की प्राप्ति की आराधना को चिन्हित करती है। देखें 12:3

❖ 16:22 न तो कोई लाठ स्थापित करना, देखें लेख 12:3 में ।

❖ परमेश्वर घृणा करता है देखें लेख 12:31 में

विवादपूर्ण प्रश्न :

1. क्यों यहोवा परमेश्वर वर्ष में तीन बार सभाओं को रखना चाहता था ?
2. क्या तीनों पर्व कृषि से संबंधित थे ? क्या यह प्रकट करता है कि मूसा ने पहले से होने वाले वर्षों को लिया और उनके उद्देश्यों को बदल दिया था ?
3. इन वर्षो की व्याख्या और सूची को बनाओं ।
4. न्यायियों के लिए तीन नियमों की सूची तैयार करे ।
5. 16:21-22 किस प्रकार से 17:1 से संबंधित है ।

*****

व्यवस्था विवरण 17
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
न्याय, शासन पूर्ण होना चाहिए (16:18-17:13)	न्याय और धर्म के साथ व्यवस्था का लेन-देन (16:18-17:20)	न्याय का शासन (16:18-17:13)	आराधना में अनुचित व्यवहार (16:21-17:7)
16:21-17:1	16:21-17:1	16:21-17-1	16:21-17:1
17:2-7	17:2-7	17:2-7	17:2-7
			लेवी-संबंधी न्यायियों
17:8-13	17:8-13	17:8-13	17:8-13
शासन करने वाले राजाओं के सिद्धांत		एक राजा के विषय में शिक्षाएं	राजओं
			17:14-15
17:14-20	17:14-20	17:14-20	17:16-20
17:18-20			

<u>शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन</u>

NASB मूल ग्रन्थ 17:1

17:1 दोष या किस प्रकार का खोट, यह पद संदर्भ रूप में 16:21-22 से संबंधित है, जो उचित स्थानों और बलिदनों के प्रकारों के साथ भी लेन-देन करता है। पुराने नियम में दोष किसी भी प्रकार की शारीरिक क्षति को प्रकट करता है। (15:21; लैव्य 22:20-25)। मलाकि1:6-8 में इस्रायल का उदाहरण, परमेश्वर को अच्छे से बढ़कर छोटा या कम देने का लेख प्रमाण करता है।

❖ अपने परमेश्वर यहोवा, यहोवा और एलोहिम के लिए प्रयोग की गई वाचा की सामान्य वाक्यखंड यह है। देखें विशेष विषय : ईश्वरीयनाम 1:3 में।

NASB मूल ग्रन्थ 17:2-7

17:2-13 यह पद शासन करने वाला न्यायी के बारे में बातचीत करता है। पद 2-7, मूर्तिपूजा और नैतिक (कानूनी) गवाहों के बारें में बातचीत करता है। पद 8-13, न्यायालय की अभ्यासिक खडापन के बारे में बातचीत करता है।

17:2

NASB	**"जो बुरा करता है"**
NKJV,	**"जो दुष्ट है"**
NRSV	**"जिसने बुरा काम किया है"**
TEV	**"पाप किया है"**
NJB	**"जिसने गलत काम किया है"**

यह वाक्यखंड एक क्वेल अपूर्ण क्रिया है (बीडीबी 793 I, केबी 889) और एक डाइरेक्टर ऑब्जेक्ट है (बीडीबी 948) यहां पर इस संदर्भ को इस प्रकार परिभाषित करते हैं (1) उसकी वाचा को तोड दिया है, पद 2 और (2) दूर जाकर और दूसरे देवताओं की उपासना की है और आराधना भी इनकी की है पद 3

17:3 सूर्य या चन्द्रमा या आकाश की किसी भी गण की, आकाश के गणों को देवताओं और देवियों के रूप में प्रस्तुत करने के लिए प्राचीन बेबिलोन के लोग देखने के लिए प्रमि थे न कि अंतिम थे (4:19; II राजा17:16, 21:3,5, 23:4–5, II इति 33:3, 5; यिर्म; 8:2; 19:13) । वे महसूस करते थे कि आकाश के प्रकाश, मानवजाति की भाग्य को नियत्रिंत की हुई है (शारीरिक और आत्मिक रूप से) ।

17:4 यह पद 13:14 के सदृश है । क्रिया तू भली भांति पूछताछ करना (बीडीबी 205, केबी 233, क्वेल पूर्ण खोजबीन को बताता है (13:14; 17:4, 9; 19:18; लैव्य 10:16, न्या. 6:29) । अभियोग और कल्पित ज्ञान अपराधी ठहराने के लिए पर्याप्त नहीं था । इस्रायल की यहुदी रीति कठोर थी (पत्थरवाह करके मार डालना पद;5) किन्तु एक ओर से दूसरी ओर तक ।

❖ इस्रायल देखें विशेष विषय 1:1 में ।

17:5 अपने फाटकों पर, इस वाक्यखंड का अर्थ, अपने स्थानिक न्यायालय से है । वहां पर जहां स्थानिक प्रालीन बैठ करते थे ।

❖ पत्थरवाह करना कि मर जाए, यह एक संयुक्त दण्ड का रूप था (पद7) समाज के प्रत्येक उम्र के लोग स्वयं को बुराई से बचाने के लिए यह किया करते थे (देखें पूं संक्षिप्त लेख 13:10 में)

❖ पद 5–7 में मृत्यु को प्रकट करने वाली इब्रानी ग्रंथ में क्रियाओं की क्रम है :

1. पत्थरवाह करना की मर जाए – बीडीबी 709, केबी 768, क्रेल पूर्ण पद 5
2. मृत्यु – बीडीबी 559, केबी 562

   (अ) पद. 5 क्वेल पूर्ण

(ब) पद 6. होफाल अपूर्ण

(स) पद 6. क्वेल कृदन्त

(द) पद 6. होफाल अपूर्ण

(घ) पद 7. हिफिल अनिश्चित निर्माण

वाचा का उल्लघंन करना एक भयानक परिणामों की ओर ले जाता था (व्य. 27-29) समाज के भीतर की बुराई के हटाना अवश्य था ।

17:6 दो या तीन मनुष्य की साक्षिों, यह मूसा संबंधी मांग है (गि. 35:30; और व्य;19:15; और लेख करें मती, 18:16; यहु. 8:7; II कुरि. 13:1; और I तिमु 5:19) ।

❖ जो प्राणदंड के योग्यठहरे वह एक साक्षी से न मारा जाए, देखें 19:15-21 और गि. 35:30 ।

17:7 इसके मार डालने के लिए सबसे पहले साक्षी के हाथ, प्रमि गवाह या साक्षी को दोषी व्यक्ति के ऊपर प्रथम पत्थर फेकना था (13:9, लैव्य; 24:14) । क्योंकि इसी प्रकार यादि साक्षी लोग झूठे है, तो परमेश्वर उन्हें निर्दोष का लहु बहाने उदा. हत्या के कारण दंड देगा।

NASB मूल ग्रन्थ 17:8-13

17:8 बहुत ही कठिन मुकदमों (बीडीबी 810, केबी 973, निफाल अपूर्ण) को प्रधान पवित्र स्थान में याजकों के पास प्रकट करना था (12:5, 11,13) ।

इस प्रकार के यहुदी धर्म संबंधी कठिनाइयां है :

(1) खून के बदले खून (बीडीबी 196) अर्थ मनुष्य की हत्या
(2) न्याय के बदले न्याय (बीडीबी 192)
(3) आघात के बदले आघात (बीडीबी 619) अर्थ किसी प्रकार का धावा करना (21:5) या चढ़ाई करना

यहुदी अध्ययन बाइबल, पृ. 405, स्थापित करती है कि कठिन मुकदमा, गवाह की कमी को सम्मिति करती है । प्रधान पवित्र स्थान में याजकों को इन्हें प्रकट करने के द्वारा मूसा मालूम कर रहा है कि सम्मिलित पक्षों की निदोषता या अपराध को अलौकिक परिज्ञान निश्चय करेगा ।

❖ इस स्थान को जो तेरा परमेश्वर चुन लेगा, इस क्रिया का प्रयोग व्य में कई बातों के लिए हुआ है :

(1) इस्रायल के पितरों में यहोवा का चुनाव 4:37
(2) यहोवा का चुनाव, इस्रायल के लिए 7:6, 7; 10:15; 14:2

(3) यहोवा का चुनाव स्थान को प्रधान पवित्र स्थान के लिए ।

(4) यहोवा का चुनाव एक राजा के लिए 17:15

(5) हारून वंश (लेवीय) याजक होने के लिए, यहोवा का चुनाव 18:5;21:5

17:9 लेवीय याजक, मेसोरेटिक लेख (इब्रानी) सेप्ट्यजेन्ट (यूनानी) और पेसिटा (अरामिक) में याजक बहुवचन है । यह याजकों की मंडली या कुण्ड को सकेंतिक करती है (19:17) सेनहेड्रिन (एज्रा के द्वारा खड़ापन) के लिए यह यहुदी धर्म गुरू संबंधी प्रमाणिक ग्रंथ (लेख) था।

❖ न्यायी, मेसोरेटिक लेख में यह एकवचन है । (इस ऐतिहासिक संबंधी उदाहरण के लिए II इति 19:11) न्यायियों के सूमह के एक अगुवे या न्यायी को प्रकट करता है ।

17:9-12 यहुदी धर्म संबंधी चर्चाओं प्रति इस्रायल को आज्ञाकारी और सम्मानपूर्वक होना है क्योंकि वे यहोवा के अधिकार को प्रतिबिंब डालते है । क्रियाओं के हुए प्रयोग को ध्यान दे :-

(1) बताएं या घोषणा करें - बीडीबी 616, केबी 665

(अ) पद 9, हिफिल पूर्ण

(ब) पद 10 हिफिल अपूर्ण

(स) पद 11, हिफिल अपूर्ण

(2) करना बीडीबी 793, केबी 889

(अ) पद 10 क्वेल पूर्ण

(ब) पद 10 क्वेल पूर्ण अनिश्चित निर्माण

(स) पद 11 क्वेल अपूर्ण

(द) पद 12, क्वेल अपूर्ण

(3) सिखायें

(अ) पद 10 हिफिल अपूर्ण

(ब) पद 11 हिफिल अपूर्ण

(4) न सुने, बीडी 1033, क्वेल अनिश्चित निर्माण

17:11 उन बातों सू तू न तो दाएँ और बाएं मुडना, लेवीय न्यायियों के द्वारा न्याय और सौपें गये दंड से न बदलने या हटने के लिए यह एक इब्रानी मुहावरा है । एक मिलता-जुलता लक्षण, यहोवा के वचन 4:2; 12:32 में हुआ है । यहोवा की इच्छा को एक बार जानकार दाएं और बाएं मुडने का अर्थ अनाज्ञाकारिताहै (5:32; 17:20; 28:14, यहोशू 17;23:6; II राजा;22:2; नीति 4:27) ।

17:12 जायक जो वहां परमेश्वर की सेवा टहल करने के लिए उपस्थित रहेगा, लेवीय याजक के लिए यह एक लक्षण है ।

❖ अभिमान करके इस शब्द का प्रयोग जानबूझकर की गई अनाज्ञाकारिता के लिए हुआ है (1:43; 17:12, 13; 18:20,22) । न्यायी और याजक, यहोवा के अधकिार के प्रतिनिधिी थे । इसलिए, उनकी बातों को तिरस्कार करना, यहोवा को तिरस्कार करने से था । 18:20-2 में जो यहोवा अपने अधिकार और अपने नाम में बातें कर रहा है, लेकिन इसे नबी नहीं जानते है ।

NASB **मूल ग्रन्थ 17:14-17**

17:14-20 पुराने नियम में कुछ अत्यधिक विवाद संबंधी पदें है, विशेष तौर से पंच पुस्तक में है । ये पदें आनेवाले राजा के बारे में बताते है। हमारे दिनों के कई विद्वान कहते है कि व्यवस्थाविवरण की किताब को योशिय्याह के पिरविर्तन के दौरान, सौ वर्षों के बाद राजाओं के समय में पाया गया था, और इसे इसे यरूशलेम को आराधना का केन्द्र बनाने के लिए याजक के द्वारा लिखा गया था (II राजा 22:8; II इति; 84:14-15) वे दृढ़तापूर्वक कहते है कि यह प्रमाण है कि यह मूसा के द्वारा नहीं लिखा गया है क्यांकि पंच पुस्तक (पेन्टाटुक) में इसके सिवाय कहीं भी राजा को प्रदर्शित नहीं किया गया है । यह एक काल-गणना का भ्रम है जो सुलेमान को बता रहा है, इसलिए स्पष्ट रूप से यह अवश्य ही बाद में लिखा गया है । मैं इनमें से किस पर विश्वास नहीं करता हूं । कुछ पदें दिखाती है कि पंच पुस्तक में पद; 14-12 अनोखा नहीं है और उत; 17:6; 35:11, 36:31; गि. 24:7; न्या. 8:22-23; 9:6 है । नीचे दिये गये विशेष विषय को देखें ।

परिणाम :

प्राचीन इतिहास या परम्परागत कथा और पुरातत्व प्रामणिक प्रमाण देते है कि उत. व्य. का सम्पादक/लेखक, मूसा था । मूसा ने मौखिक और लिखा हुआ स्त्रोत को शायद लिया भी होगा, और बाइबल संबंधी शास्त्र समूह को सपन्न करने के लिए शास्त्रियों को भी लिया होगा । यह स्पष्ठ है कि बाद के शास्त्री और नबियों ने अपनी पीढियों के लिए ग्रंथ के फिर से व्यवस्थित किया ।

17:14 और तू कहना, चारों आरे की सब जातियों की तरह मैं भी अपने ऊपर राजा ठहराऊगां क्रिया एक क्वेल कोहोर्टेटिप है (बीडीबी 962, केबी 1321) यह पद 14 और 15 में दुहराया हुआ है । दूसरा (क्वेल अनिश्चित निश्चिय) और तीसरा (क्वेल अपूर्ण) का प्रयोग एक साथ भावनायुक्त तरह ही जाते है :

NASB, NKJV **"तुम निश्चिम रूप से ठहराओगे"**
NRSV **"तुम निश्चय ही ठहराओगे"**
TEV **"निश्चय हो"**

समस्या एक राजा नही था, परंतु एक राजा, जो चारों ओर के सभी जातियों के समान है । राजा को यहोवा का प्रतिनिधि होना था (पद; 8) न कि प्राचीन मूर्तिपूजक राजग्रह का प्रतिनिधि होना था । यह पुष्टिकरण I शमु. 8 में एक राजा की मांग जब इस्राइलियों ने की उसके साथ बर्ताव करती है ।

17:15 जिसको तेरा परमेश्‍वर यहोवा चुनले, परमेश्‍वर, प्रभुता करने वालाहै, वह (न कि इस्रायल, पद 14) मनुष्यों को चुनता है, किन्तु इस्रायल परमेश्‍वर के चुनाव को अपने दृढ़ निश्‍चय के द्वारा निश्‍चित करता है (न्या. 11:11; होशे; 1:11) ।

17:16 वह बहुत घोडे न रखें, घोड़ों को शासकों के द्वारा, न कि स्थानिक लोगों के द्वारा अपनाया जाता था । युद्ध के लिए घोडाएक युद्ध का औजार (हथियार) था । दूसरे शब्दों में तू अपनी सैनिक सामर्थ पर भरोसामत रखों । मैं परमेश्‍वर तेरी रक्षा करता हूं ।

❖ तुम इस मार्ग से फिर कभी न लौटना सभवत: यह धन कमाने के लिए घोडों की इब्रानी व्यपपार जो बाद की व्यवसाय को प्रकट करता है । विशाल समुदाय एक ऐतिहासिक उदाहरण है । किन्तु संदर्भ में दुबारा यह दृढ़तापूर्वक स्थापित करता है कि होनेवाले राजा को पूर्णतया से अकेले यहोवा में भरोसा रखना है ।

17:17 बहुत सारी स्त्रियों से भी विवाह न करें, यह प्रकट करता है (1) सामर्थ या अधिक की संभावना के लिए प्रयोग की अभिलाषा (2) राजनीतिक और धार्मिक संगठनों । यह प्राचीन निकट पूर्वीयों का शांति एकरारनामा का गठन करने का तरीका था ।

❖ और वह सोना चांदी अधिक बढ़ाए, परमेश्‍वर ने राजा को अपने अधीन चरवाहा के रूप में रखा है । चरवाहा के अधीन रहने वाला कभी भी व्यक्तिगत धन या सामर्थ के लिए प्रयत्न नहीं करना चाहिए ।

NASB मूल ग्रन्थ 17:18-20

17:18-20 ये सभी पद परमेश्‍वर की प्रकट की हुई इच्छा (उदा व्यवस्था) से राजा के संबंध का सारांश है ।

17:18 वह अपने लिए व्यवस्था की एक नकल कर ले, संभवत: यह किसी व्यक्ति को (उदा. लेवीय याजक) अपने लिए एक नकल बनाने को प्रकट करता है (II राजा 11:12)यही पद है जिससे सप्टयुजेन्ट ने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक (उदा. दूसरी नकल को प्रकट करती है, न कि व्यवस्था की पुन: दुहराई गई अनुवाद (उत्था) को प्रकट करती है ।

17:19 इस पद में क्वेल अनिश्‍चित निर्माण का एक क्रम है, यहोवा की इच्छा को इससे प्रकाशन मूसा के (उदा पंच पुस्तक) द्वारा जो राजा के अध्ययन करने (बीडीबी 894, केबी 1128, क्वेल पूर्ण) और सीखने बीडीबी 540,केबी 531,क्वेल अपूर्ण) से जो परिणाम होता है

(1) भय मानना (बीडीबी 431, केबी 432)

(2) रखना (बडीबी 1036, केबी 158)

(3) करना (बीडीबी 793, केबी 889)

(4) मन में अहंकार न आने पाएं (बीडीबी 962, केबी 1202, 8:14)

(5) आज्ञाओं से इधर-उधर न मुडे, (बीडीबी 693, केबी 747)

परमेश्वर की व्यवस्था की यह नकल राजा के साथ रहनी थी (यह पद; 19 में प्रमि क्रिया को प्रकट करती है) यह हित्ती प्रदेशों की (जहां पर वाचा की दो नकलें बनाई गई थी) समानान्तर को प्रतिबिंब करती है । एक को वाचा की सहभागी ईश्वर के मंदिर में (यहां यहोवा के तंबू) रखा गया था और दूसरा राजा के पात्र के साथ था । निरंतर पढ़े ताकि आज्ञनुकलता में रहने पाएं)

❖ इस व्यवस्था और न विधियों देखें विशेष विषय, 4:1 में ।

17:20 दाहिने और बाएं, आज्ञापालन की यह एक इब्रानी मुहावरा है । परमेश्वर की इच्छा को एक मार्ग या सामान्य पथ के रूप में वर्णन किया गया था । स्पष्ट रूप से यह चिन्हित (व्यवस्था के द्वारा) किया गया था । इस्रायलियों को मार्ग पर बने रहनाथा (भ.स. 119:105) जो जीवनशैली को प्रकट की हुई है । (उदा. नीति 6:23) ।

❖ जिससे कि वह और वंश के लोग इस्राइलियों के मध्य बहुत दिन तक जीवित रहे, प्रधान याजक के समान, राजाधिराज में भी पैतृक उतार होना था (परंपरागत द्वारा प्राप्त) यहूदा के गोत्र में राजा की उपाधि (उदा. मसीह के विषय विचार) की भवष्यिवएयी की गई थी (उत 49:10स II शमु. 7)

विवादपूर्ण प्रश्न :

1. किस प्रकार 17:1 का संबंध 16:21-22 में है ?
2. किस प्रकार न्यायी को नियुक्त किया जाना था ?
3. पद 14-20 क्यों इतना अधिक विवाद संबंधी है ?
4. व्यवस्था के प्रति इस्रायल के राजा का क्या संबंध था ?

*****

व्यवस्था विवरण 18
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
लेवीय और याजकों का भाग	परमेश्वर की उचित आराधना	याजकों का भाग	लेवीय याजक
18:1-2	18:1-2	18:1-2	18:1-2
	18:3-5	18:3-5	18:3-5
18:6-8	18:6-8	18:6-8	18:6-8
दुष्टता की रीति रिवाज को त्याग दें		मूर्ति पूजा के कार्यों के विरूद्ध चेतावनी	नबी
18:9-14	18:9-14	18:9-13	18:9-12
		एक नबी को भेजने की प्रतिज्ञा	18:13-20
मूसा की तरह एक नया नबी		18:14-15	
18:15-22	18:15-22	18:16-20	
		18:21-22	18:21-22

<u>संदर्भ संबंध निरीक्षण -</u> 16:18-18:22 में इस्रायल के अगुवा के विषय में बताता है

(अ) न्यायियों - 16:18-20, 17;8-13

(ब) राजा - 17:14-20

(स) लेवी/याजक - 18:1-8

(द) नबी - 18:9-22

 (i) झूठे - अध्याय 9-13

 (ii) सत्य - अध्याय 14-22

  (1) वर्तमान (मूसा)

  (2) भविष्य (पूर्व के और बाद के निर्वासित)

  (3) अंतिम संबंधी (मसीहा)

<u>शब्द और वाक्यखंड अध्ययन</u>

NASB मूल ग्रन्थ 18:1-12

18:1 लेवीय याजकों का, वरन सारे लेवीय गोत्रों का, रोनाल्ड डी बॉक्स इनसियन्ट इस्रायल, बोल 2, पृ. 358 के अनुसार, लेवी नाम में तीन संभवपूर्ण शब्द साधन स्त्रोत है :

(1) चारों आरे चक्कर लगाने के लिए, एक धार्मिक नृत्य या काम करने की रीति मालूम होती है (I राजा; 18:26 में बाल देवता के याजकों के नृत्य के समान हैं)

(2) किसी के साथ जाने के लिए या किसी से बने रहने के लिए, संभवत: उत; 29:34, और गि. 18:2, 4 में प्रख्यात शब्द साधन दिया गया है ।

(3) उधार देना, गिरवी के रूप में देना, यहोवा को पहिलौठै दिये जाने (गि. 13:12; 8:16) या I शमु. 1:28 में शमुयल को दिये जाने की समानान्तर को या संभव से प्रकट करता है ।

यहां पर विभिन्न बुद्धि करने वाली श्रेणियों को सम्मिलित किया गया है :

(1) निर्गमित में, प्रत्येक परिवार के पहिलाठे में से यहोवा को दिये जाने से था, ताकि वह उसकी सेवा करें (निर्ग.13) ।

(2) यह एक निश्चित गोत्र (उदा. लेवी) में बदल गया था (मूसा की वाचा) जिन्होंने यहोवा के विशिष्ठ सेवक के रूप में कार्य किया (गि. 3:12; 8:16)

(3) इस्रायल के इतिहास में इसे नया रूप दिया गया :

(i) कुछ लेवीय परिवार, प्रधान पवित्र स्थान में सेवा किये ।

(ii) दूसरे स्थानीय रूप से सेवा किये

(iii) बाद में लेवीय शिक्षकों के स्थानिक विचारों को यहुदी धर्म गुरू संबंधी ने स्थानीय यहुदी गुरू या शास्त्रियों में बदल दिया, परन्तु लेवी के गोत्र से ही आवश्यक नहीं था।

(iv) एक अच्छे वार्तालाप के लिए देखें दूसरे सिद्धांत में (1) द लेंग्वेज एंड इमेजरी ऑफ द बाईबल, बाद जी.बी.कायर्ड, पृ. 70 और (2) एनसियन्ट इस्रायल दी बॉक्स भाग 2, पृ. 360-371

❖ कोई भाग या अंश नहीं होग, लेवी का अंश स्वयं परमेश्वर था (10:9; 12:12, 14:27, 29; भ.स. 16:5, 73:23-26; विलाप 3:24; यहे; 28) यहोशू; 20-21 में लेवी को 48 नगरों और चारों तरफ की भूमि को धन संपत्ति के रूप में दिया गया था । इन 48 नगरों के बीच में वहां पर और भी 6 शरणस्थान के नगर थे, यरदन के प्रत्येक किनारे पर तीन, जहां पर वह भागकर खून के क्रोध से बचने के लिए यहां छिप सकता था (19:1-13; गि. 35:9-15) ।

❖ उनका भोजन यहोवा का दिया भाग हो, इस्रायल के बलिदानों के एक भाग में सभी लेवी सम्मिलित होते थे (पद 6-8) । बाद में वेदी से भोजन के और लेवीय नगरों की गुप्त भूमि

की छोटे अंशो से याजकों को प्रदान कर सहायता किया गया । लेवियों को तृतीय वर्ष का स्थानीक दशमांश देकर भी सहायता किया जाता था (14:27; गि; 18:25–29; नहे. 10:37, 38) ।

किस प्रकार लेवी के पूरे गोत्र को सहायता प्रदान किया जाता था, इसक विषय में कुछ भेद या अंतर है । ये सभी विरोध नहीं है, परन्तु प्रधान पवित्र स्थान से संबंधित सुधार या बुद्धि है ।

NASB मूल ग्रन्थ 18:3–5

18:3 लैव्य 7:28–36; गि 18:8–19 को ध्यान दें, जहां पर याजकों को बलिदानों के विभिन्न भागें या अंशों को दिये जाते थे ।

❖ दोनों गाल यह (बीडीबी 534) दोनों दाढ़ को बताता है (दाढ़ की हड्डी और इसमें गहन नीचे लटका हुआ, गालों का रूप बना हुआ है)

❖ पेट मूल रूप से इस शब्द का अर्थ पोला स्थान या खोह[a] और इस संदर्भ में एक पेट, संभवत: जानवरों या पशुओं की चौथाई से पागुर करते है ।

18:4 अपनी भेड़ों का वह ऊन जो पहली बार करतरा गया हो, इस मांग को सिर्फ यहीं पर प्रदर्शित किया गया है ।

❖ अपनी उपज का ठटका तेल, जैतून वृक्ष के पके हुए प्रथम फल को दबाना यहोवा के लिए लोगें काएक उपहार था और यहोवासे लेवी/याजकों के लिए (गि.18:12 व्य;12:17; 14:23; 18:4) ।

18:3–5 यहोवा की वेदी पर जितने सेवा करते थे यहोवा के अंश को प्राप्त करते थे । आधुनिक जरूरत को स्मरण कराती है कि यह :

(1) सब्त का दिन

(2) प्रथम उपज

(3) पहिलौठा

(4) दशमांश

सभी यहोवा के स्वामित्व को स्थापित करने की पद्धति है । इसका अर्थ यह नहीं है कि मानव छ: दिन को प्राप्त करत है, सभी बची हुई उपज को और उनकी कमाई का नौवा अंश । मानव कुछ चीज का स्वामी नहीं है और प्रत्येक चीज का मंडारी है । ग्रह और जीवन का उपहार सभी इसके कर्ता और संभालने वाले का है ।

❖ परमेश्वर ने चुनलिया है 10:8 में इसी कार्य को अलग करना कहा गया है (नीडोहट, भाग 1, पृ. 604) ।

NASB मूल ग्रन्थ 18:6-8

उन्हें निर्ग: 13 की पहिलाठे का स्थान लेना था । यह परमेश्वर का चुनाव पर आधिारित था । न कि मानवीय श्रेष्ठता पर जो लेवी, मूसा हारून के पास से स्पष्ट है ।

18:6-7 लेवीयों/याजकों को यरूशलेम से बाहर निवास करने को और प्रत्येक नगर में सिखाने और न्याय करने के लिए उपस्थित होने के लिए यह अनुमति दिया है । परन्तु उनको प्रधान पवित्र स्थान पर पहुंचने और कार्य करने का भी अधिकार था ।

18:8 इस पद को विभिन्न अनुवाद से चुनाव को हम देखेते है । यह पारिवारिक धन सम्पत्ति को बेचने के लिए बताती है (न कि भूमि को)

NASB **मूल ग्रन्थ 18:9-14**

18:10 जो अपने बेटे या बेटी को आग में होम करके चढ़ाने वाला हो, उपज देने वाला देवता, मोलेक की आराधना के लिए यह एक उल्लेख है । इस्रायल में पहिलौठे को (निर्ग 13) यहोवा की सेवा करने के एिल सौंपा जाता था । कनान में, उपज को बचाने के लिए, पहिलौइे के आग में होम करके चढाया जाता था (व्य;12:31; लैव्य 18:21) II राजा, 21:6 में एक लेख है जहां पर परमेश्वर के लोगों ने इस झूठे देवता की आराधना की थी । सभवत: यह किसी तरह से, भवष्यिको जानने से संबंधित भी हो सकता है (II राजा,3:26, 27) । देखें विशेष विषय मोलेक; 12:31 में ।

❖ भावी कहनेवाला, यह शब्द (बीडीबी 778II, केबी 857) बादल से संबंधित है (बीडीबी 77) अनेक भाषाओं को जानने वाले सोचते है कि शब्द आवाज से संबंधित है :

1. कीडों की भनभनाहट
2. वृक्षों में हवा की आवाज
3. अज्ञात भूतत्व (यदि बादल, तब दृष्टि विषय से संबंधित है

मूसा के लेख में समानांतर पद्यांश जो इन मूर्तिपूजा के कार्यों को करने से मना करती है, लैव्य 19:26-20:8 (विशेष रूप से देखें 19:26) में है । इसी के समान शब्द को न्या; 9:37; II राजा 21:6, II इति 33:6 याशा; 2:6; 57:3; यिर्म; 27:9; मीका 5:12 में भी पाया गया है ।

❖ शुभ-अशुभ मुहुर्तो को माननेवाला इस शब्द का अर्थ संदिग्ध है । सीरिया में इसका अर्थ अन्धकारपूर्ण मंत्र से बडबडाना (केबी 690) है । मूल में कई सारे प्रयोग है :

1. सर्प-बीडीबी 6381
2. सिर्फ पीयल में क्रिया (बीडीबी 638 II) अर्थ :

    (i) भविष्य कथन का अभ्यास (ii) चिन्हों/मंत्रों में ध्यान लगाना

(3) तांबा–कास्य – बीडीबी 638 III

(4) अज्ञात – बीडीबी 638 IV

❖ टोन्हा, मूल रूप से इन शब्द (बीडीबी 50न, केबी 503) का अर्थ टुकडे–टुकडे करना है–

(1) एक जादू की औषधि के लिये अंगों को टुकडे टुकडे करने के समान या

(2) ईश्वर के ध्यान को केन्द्रित करने के लिए स्वयं को टुकडा करता है (उदा: सीरिया के प्रयोग, I राजा 18:28) इस शब्द का प्रयोग निर्ग: 7:11 में फिरौन के बुद्धिमान मनुष्यों और नबुकदनेस्सर के बुद्धिमान मनुष्यों औदर दानि–2 को वर्णन करने के लिए किया गया है ।

18:11 तांत्रिक मूलार्थ रूप से गांठ बांधना, जुडे रहना, या एक दूसरे के साथ मिल रहना है । भ.स. 58:5 और सभो: 10:11 में सर्प को मंत्रमुग्ध करने को यह प्रकट करता है । आंशिक रूप से भिन्न, शब्दों में परिणत करने का कार्य, याशा; 47:8–11 में बेबिलोन के झूठे बुद्धिमान मनुष्यों का वर्णन करती है ।

❖ भूतों का जगाने वाला, यह वाक्यखंड दो क्वेल कृदन्तों (बीडीबी 205, केबी 233, पूछना और बीडी 559, केबी 562, मृत पुरुष) को मिश्रण है । संदर्भ में यह भूत साधने वाले और ओझों से पूछने वाले को प्रकट करता है । भविष्य के बारे में जानने और इस पर प्रभाव डालने के लिए लोगों को मृतकों से संपर्क करने के लिए अनुमान करते हुए इन सार को भेंट प्रदान किया गया था ।

सभी प्राचीन सभ्यताएं एक भविष्य जीवन में विश्वास करते थे । प्राचीन निकट पूर्वी में अनेकों के लिए यह दो संभावनाओं में थी :

(1) पूर्व आराधना जहां परिवार के सदस्यों की आत्माएँ वर्तमान और भविष्य पर प्रभाव डाल सकती थी ।

(2) पदार्थ विज्ञान की साामर्थ (तारें, प्रकृति के स्त्रोत) या आतिम्क (दुष्टआत्माएं, देवता) को जानने और व्यक्तिगत भाग्य में प्रभाव डालने के लिए किया जा सकता था ।

18:12 घृणित, इस शब्द का प्रयोग अधिकतर व्य. नीति और यहेजेकल में हुआ है । देखें विशेष विषय 14:3 में ।

❖ यहोवा परमेश्वर उनको तेरे सामने से निकालने पर है, यह पवित्र युद्ध का एक रूप है । उत; 15:16 में एक वायदे के रूप में अब्राहम को यह बताया गया था और लैव्य; 18:24–28 में उनके पापों का वर्णन किया गया है ।

18:13 निर्दोष यह एक शुद्ध जानवर जो बिना दो के सिद्ध है और इसलिए बलिदान के लिए ग्रहण योग्य है, उसके लिए यह एक बलिदान संबंधी शब्द है । यह एक अलंकार बनता है यह एक अलंकार बनता है इनके लिए जो वाचा के प्रतिज्ञाओं के लिए समानता पर आधारित होकर परमेश्वर के द्वारा ग्रहणयोग्य हैं ।

NASB मूल ग्रन्थ 18:15-22

18:15-22 व्य. स्वयं के जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा को अनुचित रीति से खोजने को दिखाता है । परमेश्वर के बारे में निश्चित ज्ञान और उसके उद्देश्य को उचित रीति से जानना पद 15-22 में वर्णन करता है ।

18:15 मेरे समान एक नबी, यह मसीहा के लिए एक शीर्षक हुआ (यहु. 1:21, 25, 45; 5:46; 6:14; 7:40, प्रे.का.3:22; 7:37) । यीशु ने नये मूसा के समान कार्य किया था :

(1) नये वाचा की व्यवस्था को दिया (मती 5-7)

(2) लोगों को इनके आशा के अनुसार भोजन खिलाया (यहु. 6)

(3) पर्वत पर परमेश्वर से मिला (मती; 17)

(4) वाचा के लोगों के लिए प्रार्थना किया (मध्यस्थता) (यहु:17)

18:16 सीनै पर्वत में यहोवा के साथ इस्रायल के मुठभेड़ को यह प्रतिबिम्बित करता है (निर्ग; 19-20) । परमेश्वर से सीधा प्रकाशन, एक अदभुत बात है (निर्ग, 20:18-21) लोग एक मध्यस्ता करने वाले को चाहते थे ।

अत्यधिक मात्रा में भविष्यवाणी को पूर्ण होने के कवचार में यह संदर्भ है । इस्रायल के राष्ट्रीय जीवन में भविष्यवक्ता के बार-बार होने वाली सेवकाई का स्पष्ट रूप से यह प्रकट करता है । राजा और याजक एक ही परिवार से थे, परन्तु परमेश्वर के द्वारा भविष्यवक्ता अलग-अलग बुलाये गये थे, ताकि उसके वाचा को प्रत्येक पीढ़ी के लिए मध्यस्था करें । किन्तु यह यहोवा की तरफ से बोलने वाले विशेष व्यक्ति का भी संकेत करता है ।

18:17 यही मुहावरा वे ठीक कहते है, 5:28 में भी मिलता है, किन्तु निर्ग 19-20 में नही है । इसलिए यह लेख प्रमाण प्रकाशन नहीं है । हमें यह स्मरण रखना है कि बाईबल, परमेश्वर के वचन का भाग है । विश्वास से, सभी विश्वासी स्थापित करते है कि जीवन के लिए और इसमें सम्मिति सिद्धांत सभी आवश्य है, परन्तु यह थकानेवाला नहीं है इस अभिप्राय से, यह यीशु के वचन के सदृश है (यहु 20:23; 21:25) ।

18:18 एक नबी को उत्पन्न करूंगा, क्रिया का प्रयोग प्राय: इतिहास में परमेश्वर के उद्देश्यपूर्ण वाचा के कार्यो के लिए हुआ है । बाइबल ही पवित्र पुस्त है जो भविष्यवाणी रखती है।

❖ अपना वचन उसके मुह में डालूगा, उसके लिए, यह यहोवा के संदेश बोलने वाले को प्रकट करता है । वह सिफ वही कहेगा, जो यहोवा कहने को कहेगा (जो यीशु ने निश्च किया, यहु. 3:34; 12:49; 14:10; 17:8)

18:19 एक बार परमेश्वर की इच्छा जानने के बाद उसको करने के लिए हम जिम्मेदार होते है । वास्तविक प्रश्न है कि कैसे हम परमेश्वर की ओर से सच बोलने वाले को जान सकते है (पद 21)? पद 20-2 एक अपूर्ण जवाब या उत्तर है । यहां पर दूसरी सिद्धांत है (व्य; 13:1-2; 18:20-22; मती 7 I यहु. 4:1-6) इस पद को प्रे.का. 3:22-23 में दुहराया गया है ।

18:20-22 परमेशवर की ओर से बोलने वाले को पहचाना जा सकता है :

(1) यहोवा के नाम से कहना, न कि दूसरे देवताओं के नाम से (पद 20)

(2) उसके कथन की सत्यता (पद 22) (3) व्य. 13:1-2 भी अवश्य ही लेख में लिया जाना चाहिए क्योंकि इस्रायल के साथ लेन-देन या बर्ताव उनके आत्मिक प्रतिउत्तर के आधार पर था ।

जितने दावा करते है कि वे परमेश्वर की ओर से बोलते है इन्हें पहचानना आसान नहीं है । जांचना आसान नहीं है । यहां कुछ सिद्धांत है :

(1) संदेश की सूची

(2) संदेश देने वाले का दैनिक जीवन

(3) संदेश का परस्पर संबंध, दूसरे बाइबल पद्याशों के साथ

झूठे शिक्षक, झूठे नबी प्राय: बहुत ही विद्धान, तार्किक, अद्‌भुत और लोगों को जीतने वाले होते है । वर्तमान में एक झूठे वक्ता को संकेत इस प्रकार से किया जा सकता है ।

(1) धन संपत्ति पर महत्व

(2) स्त्री या पुरूष जाति संबंधी अधिकार पत्र

(3) परमेश्वर के पास निषेधक पहुंच का दावा करना

(नोर्मोन जेइसलेर और विलियम नीक्स के द्वारा लिखित अ जनरल इन्टरोडक्सन टू द बाइबल पृ. 241-242)

बुरी आत्मा संबंधी बातों की वास्तविकता पर सहायकपूर्ण पुस्तके

(1) क्रिश्चियन काउन्सेलिंग 2005 द अ ओ कल्ट वाय कर्ट कुच

(2) डिमन्स इन द ल्ड टुडे बाय मेरिल एफ अन्गर ।

*****

व्यवस्था विवरण 19
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
शरणस्थान के लिए तीन नगर	न्यायी का शासन	शरणस्थान की नगरें	मनुष्य घातक और शरण स्थान का नगर
19:1-3	19:1-3	19:1-7	19:1-4अ
19:4-10	19:4-7		19:4ब -6
			19:7-10
	19:8-10	19:8-10	
19:11-13	19:11-13	19:11-13	19:11-13
अधिकार में सीमाएं		प्राचीन अधिकारी में पंक्तियां	सीमाएं
19:14	19:14	19:14	19:14
गवाहों से संबंधित नियम		गवाहों से संबंधित	गवाह
19:15-21	19:15-21	19:15-21	19:15
			19:16-21

शब्द और वाक्यखंड अध्ययन

NASB मूल ग्रन्थ 19:1-3

19:1 नष्ट करेकं इस क्रिया (बीडीबी 503, केबी 500 हिफिल अपूर्ण) का प्रयोग विभिन्न अभिप्राय में हुआ है :

(1) वाचा बनाना (तोडना)

(2) मिटाना, नष्ट करना

(3) काटना (मूलार्थ; उदा;एक पेड)

- जिनका देश वह तुझे देता है देखें लेख 1:8 में
- इनके नगरों में रहने लगे, यरदन नदी के पूर्वी किनारे पर इस लक्ष्य को पूरा करने में परमेश्वर के कार्यों का वर्णन व्य 4:41-43 में देखा गया है ।

19:2,7 तीन नगर, ये लेवीय शरणनगर था, जो गि. 35; यहोशू 20 में तर्क द्वारा परीक्षण किया गया है, जहां पर हत्या के आरोप वाला व्यक्ति (उदा; मानव घातक) मृतक व्यक्ति के संबंधियों से स्वयं को बचाने के लिए भाग सकता था। इन नगरों के अगुवों को मुकदमों की सच्चाईयों को समझने के लिए एक परीक्षा रखना होता था। (पद 11–13)।

19:3 मार्गो को तैयार करना, क्रिया (बीडीबी 645, केबी 464, हिफिल अपूर्ण) का अर्थ यहां मार्ग तैयार करना है। यहां पर तीन संभवपूर्ण अर्थ है :

1. पृथक बराबर दूरी रखना
2. आसान पहुंच
3. मार्ग को संकेत करने के लिए मार्ग चिन्हों को प्रदान करना (राशि कोटींग अ मकाबीयन डॉक्यूमेंट)

NASB मूल ग्रन्थ 19:4–7

19:4 खूनी का मुकदमा निर्ग; 21:12–14 की यह विस्तार है, जो प्रधान पवित्र स्थान से संबंधित होती है। छ: लेवीय शरणनगर से प्रधान पवित्र स्थान की सुरक्षा के यह विस्तृत किया है।

❖ जो वहां भागकर अपने जान बचाएं यदि किसी व्यक्ति को कोई मार डाला है तो वह भागकर इनमें से किसी एक नियुक्त नगर में जायें, और यदि आगे की परीक्षा में पाया गया कि इसमें पूर्व विचार नहीं था तो वह वमान महायाजक की मृत्यु तक सुरक्षा के नगर में वह रहें (यहोशू 20:6)

❖ बिना जाने बुझे, लेख 4:42 को देखें। यह पूर्व विचार से किये कार्य का विरूद्धार्थी है।

19:6 खून का पलटा लेने वाला वाक्यखंड एक निर्माण करता है। (बीडीबी 145I, केबी 169, क्वेल कृदन्त और बीडीबी 196, गि. 35:9–28)। इस व्यक्ति को संगी का छुड़ानेवाला, के रूप में भी जाना जाता है। यह पद 21 के सीमित बदले या प्रतिद्रोह का एक उदाहरण है।

19:7 मूसा ने यहोवा के वचन को पद 1–3 में इन्हें दिया; पद 4–न में उसने उनके लिए व्याख्या किया और तक उसने पद; 7 में परमेश्वर की आज्ञा को पुन: स्थापित करता है।

NASB मूल ग्रन्थ 19:8–10

19:8 यदि कल्पित परिणाम (बीडीबी 49) इस्रायल के साथ यहोवा की वाचा को शर्तपूर्ण स्वभाव में व्यक्त करती है (पद;9) उसने उन्हें यरदन पार क्षेत्र को दिया था और अब यदि उन्होंने बलवा किया तो वह उन्हें कनान को देगा।

19:9 चौकसी करें, अनेकों अनिश्चित निर्माण का अनुसरण करते हुए यहां पर एक दिया चौकसी करना है (लेख 6:12 को देखें)

(1) करना

(2) प्रेम रखना

(3) चलना

इन सब आज्ञा, यहोवा के सभी वाचा को वर्णन करने के लिए इस एकवचन शब्द (बीडीबी 846, देखें विशेष विषय4:1 में) का प्रयोग किया गया है ।

❖ और भी तीन नगर तू अलग कर देना, ये तीन और पद 2 के तीन बताता है कि यहोशू 20 में छ: शरणनगर प्रदर्शित किये हुए है । ये प्रकट करते है (1) रयदन के पश्चिम ओर की भविष्य तीन नगर को, न कि जीते हुए या (2) यहोशू के जीत के बाद ग्रन्थ को इस्रायल के द्वारा बाद में विस्तृत (संपादन संबंधी पुन: लिखना)

19:10 यहोवा लोगों की मृत्यु के बारे में चिन्तित है जो मृत्यु के योग्य नहीं है (उदा; निर्दोष का लहू II राजा 21:16, यिर्म 22:17) पुराने नियम में नीतिशास्त्र संबंधी और धार्मिक शुद्धता के बीच में कोई अलगाव नहीं है । जीवन बहुमूल्य है । परिणाम इसके समाप्त हो चुके है (अपराधी का लहू, गि. 35:33-34) इस प्रकार के परिणाम और दूसरे धार्मिक अशुद्धाओं को इनके साथ लेन-देन किया जाये (1) प्रायश्यित के दिन, प्रत्येक वर्ष में लैव्य; 16 में वर्णन किया गया है और (2) बछड़ा के बलिदान के द्वारा स्थानिक रूप से (21:1-9) । शरणनगर के रूप में एक व्यक्ति के साथ चित्त स्थिर किया, व्य; 21:1-9 समाजों के धार्मिक अपराधों के साथ बर्ताव करता है ।

NASB मूल ग्रन्थ 19:11-13

19:11 पूर्व-विचार से की गई हत्या को वर्णन करती क्रियाओं की क्रम को ध्यान में रखें

1. बैर रखकर
2. घात मे लगे
3. लपककर
4. मोर

19:12 नगर के पुरनियें, यह अपराध के निकटतम नगर को या व्यक्ति केनिवास के नगर को प्रकट करता है ।

19:13 इस पर तरस न खाना, व्य. में यह बारम्बार होने वाली आवर्तक विषय है । यहोवा की व्यवस्थाओं को मानवीय दया या राष्ट्रीय विचार नहीं बदल सकती है । इस्रायल को पवित्र होना अवश्य है । भविष्य में इस्रायल की उन्नति (और यद्यपि प्रतिज्ञा के देश में उसके ठहरने के समय में भी) उसके आज्ञापालन पर शर्तपूर्ण है ।

❖ निर्दोष के खून का दोष इस्रायल से दूर करना, क्रिया का अर्थ जलाना है, जो

जो अलकांरिक रूप में यहां पर पूर्ण नष्ट करने के विषय में प्रयोग हुआ है ।

प्रत्येक व्यक्ति (उत;4) और समाज के संबंध को और यहोवा की आशीष को भी हत्या छल करती है । पाप और नाष्टकारक को वे स्पर्श करते है ।

NASB **मूल ग्रन्थ 19:14**

19:14 तू किसी की सीमा को न हटाना, प्राचीन विश्व के गावें में भूमि या खेत को एक साथ जोतते थे (उदा. जोतना, बोना, काटना) वहां से गुजरने वाले व्यक्ति के ध्यान में यह एक बड़ी खेत या मैदान के समान दिखाई पडता था । किन्तु प्रत्येक परिवार के पास उनकी स्वयं की खेत थी, जो सफेद पत्थरों के द्वारा चिन्हित की गई थी ।

वह परिवार यद्यपि पूरे खेत में काम करता है, तो भी उनकी भूमि या खेत के अनाज को गांव से प्राप्त करता था । यदि कोई व्यक्ति पत्थर को हटा देता था, उसके द्वारा अधिक खेत को उन लोगों को स्वयं देता था (उदा. अनाज) यह यहोवा और पूरे समाज में एक अपराध था, क्योंकि उसने प्रत्येक गोत्र और परिवार को एक वारिस के रूप में खेत को दिया था (27:17; नीति; 22:8 23:10, होशे;5:10)

❖ जिसे प्राचीन लोगों ने ठहराया हो, यह ऐसा कथन है जिसने कई विद्वानों को मूसा के लखेकथन को इनकार करने का कारण ठहरा है । यह भूमि को आपस में बांटने के द्वारा बटवारा को प्रकट करता मालूम होता है जो यहोशू के विजय के बाद घटित हुई थी (यहोशू 13-19) मिस्र के शास्त्रियों ने उनके ग्रंथो को दुबारा लेख किया, जबकि मेसोपेटामीया के शास्त्रियों ने नहीं किया था । इस्रायल के शास्त्री, मिस्र में प्रशिक्षित हुए थे ।

NASB **मूल ग्रन्थ 19:15-21**

19:15 यह पद दिखाता है कि किस प्रकार वे सावधानपूर्वक उनके यहुदी धर्म संबंधी कार्यकलाप में थे (17:6; गि. 35:30) । क्रिया खड़ा हो, (बीडीबी 877, केबी 1086, क्वेल अपूर्ण) का प्रयोग तीन बार पद 15 और 16 में प्रयोग हुआ है ।

19:16 झूठी साक्षी देने वाला, मूलार्थ रूप से द्रोही का अर्थ उपद्रवी है, परंतु यहां पर यह उद्देश्यपूर्ण झूठी साक्षी देने वालाको संकेत करता है । वे यहोवाके नाम में बोलते है (कानूनी शपथ) किंतु जानबूझकर सच्चाई को अशुद्ध दर्शाते है । झूठे साक्षी के परिणाम को पद; 19 दिखाता है (व्य; 5:20; और अध्याय1)

19:17 याजकों और न्यासियों, यह प्रकटीकरण करता है :

1. स्थानिक न्यायियों को 16:18-20; 17:8-3
2. प्रधान पवित्र स्थान के लेवीय याजकों को 18:1-8

19:18 तब न्यायी भली-भांति पूछताछ करें, देखें लेख 13:15 में यही शब्द बीडीबी 405, केबी 408, हिफिल अनिश्चित निश्य) को 17:4 में भी प्रयोग हुआ है ।

19:19 तो अपने भाई को जैसी भी हानि करवाने की युक्ति उसने की हो, वैसे ही तुम भी उसकी करना, जैसा हम बोते है वैसा काटते है । याआंख के बदले आंख के न्याय का यह उहाहरण है (लैव्य; 24:19)

19:20 तब दूसरे लोग सुनकर डरेगें, समाज के द्वारा एक व्यक्ति को दण्डित करने पर यहां एक सामाजिक हतोत्साह करने वाला है । (13:11; 17:13)

19:21 पद: 13 के लेख को देखें । इस्रायल का न्याय (आंख के बदले आंख, जो अत्यधिक कडापन मालूम होता है (उदा. लेक्स टेलियोमिस, जो हम्मूराबी की धर्मसंहिता का चरित्र गुण भी है, देखें ओल्ड टेस्टामेंट, टाइम्स, बाय आर.के. हारिसोन, पृ. 57-59) वो वास्तव में प्रतिशोध के युद्ध को परिवारों और गोत्रों के बीच को रोकने का अर्थ है और परमेश्वर के वाचा के लोगों की पवित्रताको प्रबंध करना भी है ।

<u>विवादपूर्ण प्रश्न :</u>

1. क्यों परमेश्वर ने शरणनगर को स्थपित किया था ?
2. लहू के प्रतिशोध के अभिप्राय को व्याख्या कीजिए ?
3. किस प्रकार इब्रानी झूठी साक्षी को नियंत्रित करते थे ?
4. आंख के बदले आंख, न्याय का क्या उद्देश्य था ?

*****

व्यवस्था विवरण 19
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
युद्ध पर जाने के नियम	साहस के लिए पवित्र युद्ध के नियम	युद्ध के विषय में	युद्ध और योद्धाओं
20:1-9	20:1-9	20:1-4	20:1-4
		20:5-7	20:5
			20:6
			20:7
		20:8-9	20:8
			20:9
			अधीन नग
20:10-18	20:10-18	20:10-15	20:10-14
			20:15-18
		20:16-19	
20:19-20	20:19-20	20:19-20	20:19-20

<u>रूपरेखा अध्ययन</u>

अध्याय 20 वर्णन करता है कि किस प्रकार, पवित्र युद्ध में जो परमेश्वर के नाम से, उसकी आज्ञा के द्वारा, इसके द्वारा नियत्रित नियमों, उसकी महिमा के लिए युद्ध लड़ा गया, इस्रायल को व्यवहार करना था ।

<u>शब्द और वाक्यखंड अध्ययन</u>

20:1 घोड़ों और रथों, कनानियों के पास अनेक घोड़े और रथ थे (सैनिक दल का संपूर्ण हथियार, उस समय और स्थान में) । इस्रायलियों के पाए एक भी नहीं था । इसायलियों को यहोवा पर भरोसा रखना है कि वह हमें विजय दिलायेगा, न कि अच्छे हथियार विजय दिलायेगें (याशा 30:15-17;31:1-9) ।

❖ **उनसे न डरना,** यह क्रिया (बीडीबी 431, केबी 4383, क्रेल अपूर्ण) पवित्र युद्ध संदर्भ में बारम्बार होने वाला आवर्तक विषय है । कनानी दुशमन की संख्याओं या सामर्थ से उनको भय नहीं रखना है, परन्तु उन्हें यहोवासे भय रखना है । क्योंकि वह अदभुत परमेश्वर है ।

❖ तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझे मिस्र देश से निकाल ले आया है, परमेश्वर ने अपने लोगों को फिरौन के वश से छुडाया, निर्ग;14:26-28 को देखें। इस्रायल काभरोसा आधारित था :

1. पूर्वजों से की गई पिछली प्रकाशन
2. अदभूत रीत से मिस्रियों के वश से छुटकारा
3. जंगल परिभ्रमण में अद्‌भुत रीति से प्रयोजन
4. यरदन के पूर्वी किनारे पर विजय

20:2 तब याजक सेना के पास आकर कहें, यहुदी गुरू इस व्यक्ति को युद्ध का अभिषिक्त याजक कहते है। युद्ध से पहले, याजक उन्हें साहसी होने के लिए निर्देश दिया करता था, क्योंकि परमेश्वर इनके साथ था। युद्ध में यदि कोई मर जाये तब भी परमेश्वर उनकी और उनके परिवारों का ध्यान रखेगा संभालेगा।

20:3-4 पद 3 में जायक के निर्देश की पंक्ति (सुनों बीडीबी 1033, केबी 1750, क्रेल आज्ञात्मक) को स्मरण करें :

(1) तुम्हारा मन कच्चा न हो ।
(2) तुम मत डरो।
(3) मत थरथराओ।
(4) न इनके सामने भय खाओं।

भरोसा रखने का कारण पद; 4 में निर्दिष्ट किया गया है –

(1) तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साथ चलता है, बीडीबी 229, केबी 246, क्रेल क्रिया कृदन्त
(2) तुम्हारे लिए युद्ध करने को बीडीबी 535, केबी 526 निफिल निश्चित निर्माण
(3) तुम्हे बचाने के लिए बीडीबी 446, केबी 448, हिफिल अनिश्चित निर्माण

20:5-8 सेनापती यह एक वरिष्ठ इब्रानी शब्द (बीडीबी 1009) जिसका प्रयोग कुछ समय सैनिक अगुवों या स्थानिक न्यायियों के साथ परस्पर संबंध सूचक में हुआ है। इसका अर्थ प्रत्येक गोत्र से प्रतिपुरूष है 1:15; 29:10; 31:28) सेनपती ने किसी भी छुटकारे पर न्याय को बनाया था।

यहां पर छुटकारे की सूची है जो एक इस्रायली मनुष्य को युद्ध में न जाने की अनुमति को देती है :

(1) जिसने नया घर बनाया हो और इसका समर्पण न किया हो, पद 5 (स्पष्ट रूप से एक भविष्य वृतान्त है, पुराने में कहीं भी इस बढ़ने वाला के उद्देश्य या स्वभाव का लेख प्रमाण नहीं है, परन्तु शब्द इसी प्रकार से है जिस प्रकार मंदिर के समर्पण के लिए किया गया था, बीडीबी 335 II)

(2) जिसने दाख की बारी लगाई हो परंतु इसके फल न खाये, पद 6 (स्पष्ट रूप से एक भवष्यि वृतांत है, दाख की बारी में फल लगने में तीन वर्ष का समय लेता था, लैव्य: 19:23-25)

(3) जिसकी मंगनी हो चुकी है परन्तु उसकी ब्याह न हुई हो पद 7; 24:5

(4) वह जो डरपोक और कच्चा मन का हो; पद 8; क्योंकि यह दूसरे को भय में लागने का कारण हो सकता है,न्या. 7:3;I मक्का 3:56

गिनती 1, 2 और 3 पैतृक धन संतति से संबंधित है । परन्तु इन्हें व्य. 28:30 के प्रकाश में भी देखा जा सकता है । वाचा के अनाज्ञाकारिता के परिणाम को होने के रूप में इन बातों को प्रदर्शित किया गया है ।

❖ वह भी अपने घर को लौट जायें यह वाक्यखंड क्रियाओं से बना हुआ है :

1. जायें (अलग होना) बीडीबी 229, केबी 246, क्रेल अपूर्ण का प्रयोग आज्ञार्थक में हुआ है ।

2. लौटना - बीडीबी 996, केबी 1147, क्वेल आज्ञार्थक

इसे प्रत्येक संभवपूर्ण छुटकारे की सूची के साथ दुहराया गया है (पद 5,6,7,8) । यह इस्रायल के सैनिकों का आकार नहीं था, परंतु इस्रायल के परमेश्वर की सामर्थ ने जो भिन्नताको बनाया था । सैनिकों को छोटा और कम में तैयार करना, यह अत्यधिक परमेश्वर की विजय को लेरक आयी (न्या. 7) ।

NASB मूल ग्रन्थ 20:10-18

20:10-15 वायदे का देश, जिसे परमेश्वर ने दियाथा, ये सभी उससे दूर के नगरों, परिधि की नगरों या सीमा के बाहर विषय में आत्मसर्मपण चेनावनियों है ।

20:11 वे सब अधीन होकर तेरे लिए बेगार काम करेने वाले ठहरे, यह प्राचीन निकटतम पूर्वी युद्ध की साधारण मूल को प्रतिबिंबित करती है ।

20:13 तलवार की धार यर्थाथ इब्रानी, तलवार के मुह से है । संकेत है कि निश्चित उम्र के सभी मनुष्यों को मार दिया गया था ।

20:14 प्राचीन काल में सैनिकों को वेतन नहीं दिया जाता था, परन्तु उनका प्रतिफल, जीत की लूट का मला था । इस्रायल में, विशेष रूप से, पवित्र युद्ध, में लूट का माल यहोवा का था ताकि वह दिखाने पाए। कि विजय, उसका विजय था और देश भी इसका देश था । ये सभी पद अपवार है क्योंकि ये सभी नगर, वायदे के दशे से बाहर थी ।

❖ स्त्रियां यहां तक बदीं दासियों के पास कुछ अधिकार थे (21:10-14)

20:16–18 ये सभी पद, वायदे के देश के भीतर के नगरों को प्रकट करता है । ये नगर पूर्णतया से नाशवान श्राप के नीचे है । पद 16–17) ।

20:16 उनमें से किसी प्राणी को न छोड़ना, इसका मतलब छोटे बच्चें गर्भावस्था स्त्री, बुढ़े लोग, जानवर... कोई भी प्राणी (यहोशू 10:40; 11:11, 14)

20:17 पूर्ण रूप से नष्ट करना, यहां पर शब्द हेरेम, जो पूर्ण और संपूर्ण नाश का विचार है क्यों इसे परमेश्वर को समर्पित किया गया है (2:34; 7:1–5) ।

❖ हित्तियों, एमोरियों, कनानियों और परिज्ज़ियों, हिव्वियों और यबूसियों, देखें विशेष विषय : इस्रायलियों से पूर्व बसे हुए पलिश्तियों 1:4 में ।

20:18 एक प्रेमी परमेश्वर से यह कैसे हो सकता है ? पद 18 में अध्यातम्मविद्या संबंधी कारण में एक उत्तर पाया गया है । यदि तुम इन्हें पूर्णतया नष्ट नहीं करते हो, तो वे सिद्धांत के अनुसार तुम्हें घिनौने बनायेगें । ट; 9:4 में दूसरा उत्तर और उत;15:12–21 में तीसरा उत्तर पाया गया है । मानव की पापों के परिणाम है ।

NASB मूल ग्रन्थ 8:1–10

20:19–20 दिवार से घिरी हुई प्राचीन निकट पूर्वी नगरों को लकडियों से बनी अवरोध साधन के द्वारा आक्रमण किया गया था । लकडी को फल न देने वाली वृक्षों से जाना था, संभवत: इस्राइलियों को इन हराये हुए नगरों के द्वारा बाद में इन वृक्षों के फल जरूरतमंद होगें ।

20:19 क्या मैदान के वृक्ष भी मनुष्य है, इब्रानी मूलग्रंथ यहां कठिन है । इसका अर्थ मालूम पडता है कि वृक्ष, दुशमन नहीं है वे सभी यहोवा के द्वारा अपने लोगों के लिए भविष्य भोजन और तुरंत प्रदान करने की पद्धति है ।

विवादपूर्ण प्रश्न :

1.किस प्रकार इस्रायलियों के भय को अधिक संख्याओं से शिल्पकला विज्ञान के साथ बर्ताव किया गया ?

2. सैनिक कार्य से छुटकारे की चार सूची तैयार करो :

3. क्या गुलामी की वकालत परमेश्वर करता है ?

4. किस प्रकार एक व्यक्ति पद 16, 17 के झगड़े को हमारे परमेश्वर की दृष्टि की साथ मिटा सकता है ।

5. इस अध्याय के सभी मनुष्य जाति से प्रेम करने वाली भाव (छवि) की सूची बनाओ ।

*****

व्यवस्था विवरण 21
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
अज्ञात हत्या के विषय में नियम	मिश्रित ढंग की नियमें (21:1-23:14)	अज्ञात हत्या के विषय में	अज्ञाात हत्यारा
21:1-9	21:1-9	21:1-9	21:1-9
युद्ध की बंदी स्त्रियां		युद्ध की बन्दी स्त्रियों के विषय में	युद्ध में से स्त्रियों को लाया गया
20:10-14	20:10-14	20:10-14	20:10-14
पहिलौठे का पैतृक धन में अधिकार		पहिले पुत्र के पैतृक धन के विषय में	जन्म अधिकार
20:15-17	20:15-17	20:15-17	20:15-17
विद्राही पुत्र		आज्ञा न मानने वाले पुत्र के विषय में	विद्रोही पुत्र
21:18-21	21:18-21	21:18-21	21:18-21
अनेक जातियों की नियम 21:22-22:12)		अनेकों नियम (21:22-22:12)	अनेकों शासन (21:22-22:12)
21:22-23	21:22-23	21:22-22:3	21:22-22:2

<u>शब्द और वाक्यखंड अध्ययन</u>

NASB मूल ग्रन्थ 21:1-9

21:1-9 किस प्रकार एक देश को युद्ध शुद्ध रखना है जब एक हत्यारे व्यक्ति को खुले मैदान में, शहर से दूर पाया जाता है इसके बारे में यह एक संदर्भ है। यहोवा के देश को हत्या घृणित करता है/घिनौना करता है (उदा; 7:13; 11:9, 21; 28:11;30:20) और अवश्य ही ढंग से बर्ताव किया जाना चाहिए (उदा; बलिदान)

21:2 धर्मयुद्ध और न्यायी, वहां पर नियुक्त किये हुए स्थानीय अगुवें जो नगर के फाटक के पास बैठते थे और समाज के मुकदमों को अन्वेषण किया करते थे । सिर्फ यदि उनके पास कुछ समस्या होती थी तो वे इस मुकदमें को ऊंचे पद के अधिकारी के पास ले जाया करते थे (उदा; लेवीय याजक) पद;5) वेइस शव के चारों ओर के एक-एक नगर को नापते थे । जो सबसे निकट का नगर होता था उसे इन धार्मिक नियमों को करना पड़ता था (पद3-8) । यह इनके अपराध के विचार को निकटता को प्रकट करता है । सबसे निकटतम नगर खून-अपराध का जिम्मेदार था, जो पूरे देश में यहोवा की आशीष पर प्रभाव डाल सकता था (19:13) ।

21:3 बछिया...... जिससे कुछ काम न लिया गया हो, और जिस पर कभी जुआ न रखा गया हो, इसका अर्थ एक बछिया जिसको कभी भी कृषि संबंधी कार्य में प्रयोग नहीं किया गया है ।

21:4 एक बारहमासी नदी की ऐसी तराई में जो न बोई और न जोती हो, तराई भी, मनुष्य के कार्यों का सामान्य जीवन रीति के द्वारा मलिन न किया हुआ होना था । दोष को दूर ले जाने की विशिष्ट संकेत को नदी प्रकट करता है (लैव्य: 16 की मेमने की समानता) ।

❖ उस बछिया का गला तोड़ दें, बाद में यहुदी गुरूओं ने कहा, कुल्हाडी से सिर को काट डालो, क्योंकि गले को तोड़ना एक कठिन काम था (निर्ग; 13:13; 34:20) । किन्तु लहू क्रिया-पद्धति शास्त्र विधि में सम्मिलित होता मालूम नहीं पड़ता है, परन्तु स्थान पूर्ति की अभिप्राय मालूम होती है । निर्दोष बछिया एक अज्ञात हत्यारा का स्थान विधिपूर्वक रूप से लेता है । देश को निर्देष के हत्या के दोष से मुक्त करने का उद्देश्य था (गि. 35:33-34) ।

21:5 याजक, बाद में वे स्थानिक लेवियों को अपील कर सकते हैं ।

❖ यहोवा के नाम से आर्शीवाद दिया करें, लेवियों/याजकों के कार्यों में से एक कार्य आर्शीवाद देना था (10:8; I इति; 23:13) । गि. 6:22-26 में याजक के आर्शीवाद देने के एक उदाहरण को लेख प्रमाण किया गया है । यह आशीष इस्रायल की वाचा को मानने या रखने से संबंधित है । (गि. 6:27; व्य. 28:3-6)

यहोवा के प्रकाशन (उदा; वाचा) को प्रत्येक इस्राइलियों के आज्ञापालन या जानबूझकर अनाज्ञापालन से यहोवा की उपस्थिति (उदा; नाम) को आदरमान या तिरस्कार होना था । यहोवा आर्शीवाद देना चाहताथा (निर्ग; 20:24,IIइति; 30:27) ।

21:6 अपने-अपने हाथ उस बछियें के ऊपर धोयें, शव की समीप के संबंध के अपराध के शुद्ध होने का यह लक्षण है (भ.;. 26:6; 73:13) पुराने में, पूर्ण समाज को प्रदर्शित करते है जिस प्रकार वे गांव और से सहभागी रूप से दोष को धोकर दूर करते है ।

22:7 यह खून हमने नहीं किया, और न यह हमारी आंखों के सामने हुआ काम है,यहुदी गुरू

इसे विधवा, अनाथ, गरीब, परदेशी की सहायता करने के लिए वर्णन करते है । हालांकि गांव वालों ने परदेशी की जरूरत को सहायता करने के लिए नहीं देख पायचा इसलिए वे उनकी जरूरत को पूरा करने से मुक्त थे । संभवत: यह बदले की भावना से समीप के गांव के निदोष व्यक्ति की हत्या से पीढ़ित के परिवार (उदा. खून का बदला या प्रतिशोध) को रोकने काएक तीरका होगा ।

21:8 हुडाई हुई यह क्रिया (बीडीबी 804, केबी 911, क्रेल अपूर्ण, पंरतु अर्थ में आज्ञार्थक), क्षमा करना (उदा. ढापनां) के सदृश है । देखें विशेष विषय 7:8 में ।

21:9 विधि संबंधि (पद, 1-8) को पूरे समाज से (लैव्य; 16 में, प्रायश्चित के दिन की विधि के रूप में देखा गया था । पाप, यहां तक अविचारपूर्ण संयुक्त पाप, यहोवा की आशीष को प्रभाव डालता है और संग्रहित क्रोध को भी लेकर आता है (उदा. श्राम; व्य. 27-29) ।

NASB मूल ग्रन्थ 20:10-14

20:10-14 में ये पदें सूचित करती है कि किस प्रकार युद्ध की बंदी स्त्रियों (उदा. कनानी नही; परंतु दूसरे 20:10-15) को उचित रीति से बर्ताव करना है, यहां तक यहोवा के देश में उनके अधिकार थे । प्राचीन काल के व्यवस्था धर्म संहिता में गरीबों और असहारा के लिए यह ध्यान अनोखा है ।

20:11 स्त्री, यह कनानी स्त्री नहीं थी, एक परदेशी, संभवत: परन्तु कनानी नहीं थी ।

❖ क्रियापूर्ण बढ़ोत्तर को स्मरण रखें :

1. देखे- बीडीबी 906, केबी 1157, क्रेल पूर्ण
2. मोहित होना - बीडीबी 365 I केबी 362, क्रेल पूर्ण, का प्रयोग 7:7; 10:15 में इस्रायल के लिए यहोवा के प्रेम में हुआ है ।
3. लेना-बीडीबी 542, केबी 534, क्वेल पूर्ण । यहां पर एक सेक्युअल (स्त्रीया पुरूष जाति संबंधी) एकता को संकेत नहीं करता है, परन्तु किसी के घर पर ले जाने को बताया है (पद 12)

उत; 36 में इसी श्रेणी को पाया गया है ।

21:12 वह अपना सिर मुंडाए, नाखून कटाया, यह था एक (1) अंतिम (गि 6:9,18-19) (2) शुद्धि (लैव्य 13:133;14:8-9) या (3) विलाप (14:1; लैव्य 21:5; यिर्म; 41:5; यहे; 44:20) विधि-संबंधी । यहां पर यह एक नया दिन, नया जीवन, एक नया परविार का लक्षण है । पति का विश्वास, परिवार का विश्वास था ।

21:13 अपने माता-पिता के लिए विलाप करती रहे, हालांकि मूलग्रंथ विशिष्ठ रूप से निर्दिष्ट नहीं करता है इस स्त्री को शादी-शुदा होना चाहिए, यह अर्थ प्रकट किया हुआ है । पति के खो जाने और बच्चों के खो जाने पर यहां विलाप के लिए नहीं बताया गया है ।

❖ उसके बाद तू उसके पास जाना, मैथुन के लिए यह इब्रानी मुहावरा है (उदा; जो शादी को पूर्ण किया है) । स्वमरण रखें कि सेक्सुअल संबंधी की इच्छा, यहां तक गैर इस्राइलियों के साथ भी निंदापूर्ण नहीं है, परन्तु इसका भी एक उचित समय है । विलाप का यह महिना इब्री मनुष्य को उसकी संभावित पत्नि को जानने का समय देता है । यदि बातें अच्छी नहीं है, तो तलाक के अलावा भी बाहर निकलने का एक तरीका है ।

वास्तिविक विवाह उत्सव की प्रत्यक्ष या स्पष्ट अनुपस्थिति को लेख प्रमाण भी करें (उत; 24:67)

21:14 उसे जाने देना, तलाक के लिए यह एक पारिभाषिक शब्द है । उसे एक दासी के समान नहीं बेचाजा सकता है, किन्तु उसे तलाक दिया जा सकता है । देखें लेख 24:1–4 में।

NASB मूल ग्रन्थ 20:15–17

20:15 अनेक पत्नियों से विवाह करने की प्रथा को यह वाक्यखंड पहचानता है । पुराने नियम में प्रथउम्र उदाहरण लेमेक हैं (उत. 4:23) । प्रारंभिक में सबसे महत्वपूर्ण बहुपत्निवान् उत 29 में याकूब था । सामान्य तौर पर साधारण लोागें के बीच नहीं (हालांकि पद 10–14 द्विपत्निकरण को प्रकट कर सकता है), किन्तु धनवानों और बलवान लोगों के बीच में अनेक पत्नियों से विवाहन करने की प्रथा थी ।

ऐसी प्रथा या कार्य के लिए वास्तविक विचार अनिश्चित है :

(1) स्त्री या पुरूष जाति संबंधी (सेक्सुअल)

(2) उत्पन्न करने की शक्तिवाल (एक उत्तराधिकार)

(3) अल्पव्यय संबंधी

(i) गरीब परिवार की सहायता

(ii) धन और प्रभाव प्राप्त करने का तरीका

(iii) युद्ध के लूट की माल को नियंत्रित करने का तरीका

(4) पड़ोसी देशों से शांति बनाये रखने के लिए राजीनतिक एकताओं से सहायता (उदा. दाऊद, सुलैमान)

❖ अप्रिय, शब्दानुसार यह घृणित किया हुआ है बीडी 971, पद 15 (दोहरा), 16, 17) परन्तु यहां पर यह तुलनात्मक – अप्रिय बनाम प्रिय के इब्रानी मुहावरा पर कार्य कर रहा है (उत; 29:30–31; मला. 1:2–3; रोमि; 9:13) मलाकि 1:2–3 में से लिया गया) लूका; 14:26

❖ पहिलौठा पुत्र, पहिलौठे का अधिकार निर्धारित किया गया था यद्यपि वह अप्रिय का बेटा था (पद 17; निर्ग; 13:14–15; लैव्य 3:12–13)।

21:17 दो भाग, इब्रानी मुहावरा (बीडीबी, 804, मुंह और बीडीबी 1040, दुगुना) का प्रयोग II राजा; 2:9 में एल्यिाह से संबंधित एलीशा की इच्छा के लिए भी हुआ है। पुराने निमय में इसी जगह में विशिष्ठ रूप से दोग भाग को प्रदर्शित किया गया है। यदि दो पुत्र है तो बड़ा पुत्र तीन का दो भाग और छोटा पुत्र तीन का एक भाग प्राप्त करेगा, यदि तीन पुत्र है, तो 50%, 25%, 25% इत्यादि।

NASB मूल ग्रन्थ 21:18-21

21:18-21 विद्रोही पुत्रों और उनके साथ माता-पिता को किस प्रकार व्यवहार करना है यह भाग बताता है (निर्ग; 21:15, 17; लैव; 20:9) बच्चे के ऊपर मृत्यु और जीवन का अधिकार माता-पिता के पास नहीं था, परंतु न्यायालय के पास था। इसी अभिरूचि (1) 5:16 की उल्लंघन (2) परिवार में ही पैतृक धन; और (3) सामाजिक रूचियों की घनिष्ठता

21:18 इस प्रकार की असामाजिक जवान को चित्रित किया गया है इस प्रकार से :

(1) हठी,

(2) विद्रोही

(3) इन दोनों चीजों का प्रयोग, भ.. 78:8 और यिर्म 5:23 में एक साथ हुआ है। इस पद में 5 कृदन्त निरंतर कार्यों को दिखाता है। बाकी के बचे हुए पद इनके कार्यों का वर्णन करते है :

(1) जो माता-पिता की बात न मानें, पद 18,20

(2) ताड़ना देने पर भी उनकी न सुने, पद 18

(3) ऊडाऊ, पद 20- बीडी 272 II

(4) पियक्कड़, पद 20-बीडीबी 684

देखें हार्ड सेइंग्स ऑफद बाईबल, पृ. 174-175

2:19 उसके माता-पिता इसे पकड़कर, इसका अर्थ या तो (1) दोनों आपस में प्रतिबंध करना या (2) दो गवाहों की आवश्यकता (17:6; 19:15;गि. 35:10)।

❖ फाटक के निकट, न्याय का स्थानिक स्थान, नगर फाटक था, यहां पर धर्मवृद्ध बैठते थे (उदा; 19:12; 22:15; 25:7)

21:21नगर के सब पुरूष पत्थरवाह करके मार डाले, मनुष्य जाति से प्रेम करने वाला भाव या रूप को स्मरण रखें कि माता-पिता को उनके स्वयं के बेटे पर पत्थरवाह नहीं करना था। समाज ने (लैव्य; 20:2, 27; 24:14-23; गि. 15:35) स्वेच्छा से अडियल सदस्यों से स्वयं बुराई को नष्ट करने के लिए कार्य को किया।

NASB	**"तु हटाना"**
NKJV	**"तु दूर करना"**
NRSV	**"तु पाप हटाना"**
TEV	**"तु नष्ट करना"**
NJB	**"तु निकाल देना"**

इब्रानी क्रिया का अर्थ जलाने का अर्थ पूर्णतया से मिटाने की अभिप्राय से है (13:5; 17:7, 12; 19:13, 19:21; 9,21; 22:21, 22, 24; 24:7 ।

❖ तब सारे इस्रायली सुनकर भय खायेंगें समाज संबंधी दंड, एक रूकावट के रूप में कार्य करता है । देखें लेख 13:11 में ।

NASB **मूल ग्रन्थ 21:22-23**

21:22 तू उसे वृक्ष पर लटका दे, नीचे दिये हुए विशेष विषय को देखें ।

विशेष विषय : लटकाना (फाँसी देना)

क्रिया, लटकाना, (बीडीबी 1067, केबी 1738) से दो अभिप्राय है :

(अ) शब्दानुसार, एक रस्सी से लटकाना

1. अरब देश संबंधी, रस्सी को नीचा करना
2. इब्री कार्य विधि - II शमु; 17:23 और नया नियम में, मती 17:5
3. बेबिलोन की कार्य-विधि, हम्मूराबी की धर्म-संहिता
4. परसिया की कार्य विधि, एज्रा 6:11; एस्तेर 5:14; 7:9-10; 9:13, 25

(ब) नुकीले खुटां पर, एक व्यक्ति को सूली पर चढ़ाना

1. मिस्र के लोगों की कानूनी व्यवहार, उत; 40:19; 43S13
2. बेबिलोन के लोगों की कानूनी व्यवहार, हम्मूराबी की धर्मसंहित
3. असीरिया के लोगों की कानूनी व्यवहार

सामान्य रूप से यह किसी व्यक्ति की हत्या होने के बाद किया जाता था दूसरे तरह से जनता के समाने शर्मिन्दा करने का अर्थ है । प्राचीन लोगों के लिए एक उचित कब्र बहुत ही महत्वपूर्ण थी, और उनके संतुष्ट भविष्य जीवन की दृष्टिगोचर में प्रभाव डाली हुई थी (उदा. व्य. 21:23) ।

बाईबल के भीतर ही यह जानना कठिन है कि निश्चित रूपउसे #1 या #2 सही है । व्य. 21:22-23; यहोशू 10:26-27, I शमु 31:10, 12, II शमु 4:12;21:12, में स्पष्ट रूप से सामूहिक में लोगों को पहले से ही मरा हुआ प्रकट किया गया था, परंतु यहोशू 8:29 और II शमु 21:9 के विषय में क्या है ?

यीशु मसीह के दिनों में यहुदी गुरूओं ने इस मूलग्रंथ को क्रूस पर चढ़ाये होने के रूप में प्रकट किया है । धार्मिक अगुबों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाना चाहते थे ताकि मसीह संबंधी झूठा अधिकार मांगनेवाला यीशु को क्रूस पर चढ़ाना चाहते थे ताकि मसीहा संबंधी झूठा अकिधार मांगनेवाला यह यहोवा के द्वारा श्रापित ठहरे (व्य; 21:23) ईश्वर निंदा करने की साधारण मौत पत्थरवाह से थी । मैने प्राय: यह कहते हुए सुना है कि यीशु के दिनों में यहुड़ी अगुवों केपास रोमी नियम के अधीन में मुख्य दंड देने का कानूनी अधिकार था, इसलिए उन्होंने यीशु की हत्या करने के लिए पीलातुस पास इसे ले गये । किन्तु उन्होंने स्तिफनुस को बिना रोमी आज्ञा के पत्थरवाह किया । यीशु को क्यों नहीं किया वे न सिर्फ मृत्यु और जनता के बीच में उसे क्रूसित करने के द्वारा शर्मिन्दा दिखाना चाहते थे, परन्तु परमेश्वर की श्राम को भी प्रतिबिंबत करना चाहते थे ।

21:23 तू अवश्य उसे मिट्टी देना, यहोवा के क्रोध ने अपराधी की मृत्यु, उसके हठी विद्रोही के लिए एक जुर्माने के रूप में मांग की । किन्तु यदि वाचा भंग किये हुए व्यक्ति के शरीर को फांसी दिये जाने के बाद उचित रूप में और समय के अनुसार सभ्य समाज के साथ बर्ताव नहीं किया गया तो यहोवा की निराशा समाज की ओर परिवर्तित हो जायेगी ।

❖ क्योंकि जो लटकाया जाता है वह परमेश्वर की ओर से शापित ठहरता है, गला. 3:13 को देखें, जहां पौलूस ने इस पद्यांश का प्रयोग किया है । पौलूस ने यीशु मसीह की एवजी (दूसरे के बदले में कम करने वाला) मृत्यु को, मूसा के व्यवस्था के श्राप को स्वयं के ऊपर लेते हुए देखा । यथार्थ रूप से यह श्राप पवित्र भूमि या देश में दफन करते समय की उचित कानूनी व्यवहार से संबंधित था ।

विवादपूर्ण प्रश्ने :

1. क्यों निर्दोष शहर के लोग एक अनजान हत्या के लिए अपराधी थी ?
2. बछिया और उसकी मृत्यु के विषय में अनोखा या अलौकिक क्या है ?
3. क्यों बदीं स्त्रियां उनके सिर को मुंडाते थे ?
4. पहिलौठे के सौभाग्य की सूची तैयार करो ।
   अ.
   ब.
   स.
   द.
5. किस प्रकार यीशु की मृत्यु से पद; 23 भिन्न होता है ? किस प्रकार से वे संबंधित है ?

व्यवस्था विवरण 22
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
अनेक नियमें	अनेक नियमें	विभिन्न नियमें	विभिन्न नियम
(21:22-22-12)	(21:1-23:14)	(21:22-23:12)	(21:22-22:12)
		21:22-22:3	
21:1-3	22:1-3	22:1-3	22:1-3
			22:3
22:4	22:4	22:4	22:4
22:5	22:5	22:5	22:5
22:6-7	22:6-7	22:6-7	22:6-7
22:8	22:8	22:8	22:8
22:9	22:9	22:9	22:9
22:10	22:10	22:10	22:10
22:11	22:11	22:11	22:11
22:12	22:12	22:12	22:12
नैतिकता के नियम		पवित्र पुरूष स्त्री जाति	एक युवा पत्नि की
22:13-21		संबंधी नियमें	आदरमान
	22:13-19	22:13-14	22:13-19
		22:15-19	
	22:20-21	22:20-21	22:20-21
			व्यभिचार और पर स्त्री
			या पर पुरूष गमन
22:22	22:22	22:22	22:22
22:23-24	22:23-24	22:23-24	22:23-27
22:25-27	22:25-27	22:25-27	
22:28-29	22:28-29	22:28-29	22:28-23:1
22:30	22:30	22:30	

शब्द और वाक्यखंड अध्ययन

NASB मूल ग्रन्थ 22:1-4

22:1 तू भटकी हुई देखकर अनदेखी न करना, एक जरूरतमंद वाचा के भाई के धन-दौलत को उद्देश्यपूर्ण या उदासीन इनकार (स्वयं छिपाना बीडीबी 761, केबी 834, 22:1, 3,4; लैव्य; 20:4, नीति 28:27 यहे; 22:26) मना किया गया है (पद; 3 निर्ग 23:4-5) ।

❖ उसको पहुचां देना, इस सामान्य क्रिया का प्रयोग पद 1-2 में तीन बार हुआ है । इसका मूल अर्थ वापस आना या पीछे मुड़ना है ।

NASB मूल ग्रन्थ 22:5

22:5 आधुनिक आराधना में उचित वस्त्र पहनने की आज्ञा देने के लिए यह पद प्रमाणित मूलग्रंथ या लेख हुआ है (कलिसियामें स्त्रियां पायजामा नहीं पहन सकती है । यह निश्चित रूप से स्मरण रखना है कि प्राचीन पूर्वी में पुरूष और स्त्रियां पटुका पहना करते थे । सिफ एक ही भिन्नता थी इस्रायल की स्त्रियों के पटुको में इनके कंधों के चारों आरे की सजावट नीली थी ।

इस ग्रंथ कामूल प्रहार, पूर्वज संबंधी नहीं, परंतु कनानी आराधनाकार्यो की तिरस्कार है (उदा; घृणित, लैव्य, 18:26, 27,2930) । स्त्रियों और पुरूषों के बीच (उदा. सृजित क्रम) में परमेश्वर के दिये हुए भिन्नता के बीच में एक उचित अलगाव होना है । इसका अर्थ एक नकारात्मक, सीमाबद्ध अलगाव नहीं है, परन्तु जातियों के संस्कृति संबंधी कार्यो और अलग शक्ति की दृढ़-निश्चय है ।

निश्चित रूप से यह संभव है कि यह ग्रंथ, कनानियों के द्वारा आराधना के क्रम में सृदृश लिंग-भेद (होमोसेक्सुअलिटी) की मूसा के निंदा से संलग्न हैं ।

NASB मूल ग्रन्थ 22:6-7

22:6-7 ये पद इस्रायलियों की अनेक पीढ़ियों के लिए भोजन स्त्रोंतो से संबंधित दिखाई देता है । मानवजाति उत; अध्याय 3 के बाद मांस खा सकते थे, परन्तु इनको वाचा के भाईयों के (उदा; ताकि उसमें तेरे दिन बहुत हो, 4:40 की आनेवाली पीढ़ियों के लाभ के लिए मांस के स्रोतों के नष्ट होने के विरोध में चौकसी करना है । परमेश्वर का दान, जंगली जानवर, इसके लोगों के लिए एक रासायनिक तत्व थे । इनमें से कई विशिष्ठ नियमों के ब्यौरा इस्रायलियों को वाचा के लोगों प्रति वाचा के दायित्व के बारे में सोचने का कारण था ।

22:7 परन्तु मां को अवश्य छोड़ देना, इसी प्रकार का महत्व पद; 1 और 4 में (उदा; अनिश्चित निश्य और अपूर्ण क्रिया का समान मूल, बीडीबी 1018, केबी 1511) दुहराया हुआ पाया गया है ।

NASB मूल ग्रन्थ 22:8

22:8 छत पर आड के लिए मुण्डेर बनाना, लोगों को गिरने से बचाये रखने के लिए घर के समतल छत के चारों ओर सुरक्षा की आड एक मुण्डेर थी (बीडीबी 785 अरब भाषा में जिसका अर्थ रूकावट है) ।

NASB **मूल ग्रन्थ 22:9**

22:9 अपनी दाख की बारी में दो प्रकार के बीज न बोना, प्रकट रूप से यह विशिष्ठ तौर से मैदान में दाख के प्रकारों को प्रकट नहीं करता है, परन्तु यह सिद्धांत सिर्फ एक दाख की बारी आज्ञा देता मालूम हुआ है । यह दाख के सिर्फ एक बीच ऋतु संबंधी उपज बोने को प्रकट करते है।

यह प्रतिबिंबत कर सकता है (1) देवता को प्रकाशित करने का कनानी अभ्यास या कार्य या (2) सोच या विचार की मिश्रत चीज, शुद्धता की हानि का कारण होती है (लैव्य; 19:19)

❖ अपवित्र, कादोश का अर्थ परमेश्वर के लिए अलग रखना है (15:19) । इसका अर्थ हो सकता है (1) इसे नष्ट होना था या (2) याजक को दिया जाना था । क्या यह सिद्धांत आज लागू किया जाता है ? मैं दृढ़तापूर्वक स्वीकार करता है कि पुराने नियम को नये वाचा के भाइयों को बांधने के लिए नये निय में अव्य ही दुहाराया जाना चाहिए (प्रे.का.15; I कुरि; 8-10;गला.3) स्वयं, यीशु ने बलिदान सबंधी प्रकार और भोजन व्यवस्था के अस्तित्व को अस्वीकार किया (मर. 7:17-23) । नये नियम के इब्रानियों की किताब के पूरे सूत्र या सार को देखें (उदा. पुराने नियम के ऊपर नये नियम की सवोच्चता) । दो पुस्तके जिसने मुझे प्रकाशन के बारे में सोचने के लिए सहायता की है :

(1) हाऊदू रीड द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्द बाय गोर्डोन फी एंड डाऊग स्टार्ट

(2) गास्पल एंड स्पिरिट बाय गोर्डोन फी

NASB **मूल ग्रन्थ 22:10**

22:10 बैल और गदहा दोनों संग जोतकर हल न चलाना, बैल शुद्ध थे, गदहें अशुद्ध थे, परंत इस मनाही को, इसलिए यहुदी गुरूओं ने, मानव जाति के दृष्टिगोचर जो जानवरों के विभिन्न सामर्थों और चरित्रों पर कहा था । किन्तु इस संदर्भ में, एक और उदाहरण, चीजों का मिश्रण मत करें, था ।

NASB **मूल ग्रन्थ 22:11**

22:11 मिलावट से बना हुआ वस्त्र न पहनना, मिश्रित चीजों कीयह एक दूसरी निषेध है (लैव्य; 19:19) यह एक यहोवा और कनानी आराधना कार्यों के मिश्रण की लक्षण हुई है । कुछ लोग इसे ऐसा देखते है (1) जादू के कपड़ो से संबंधित (उदा. मिलावट से बनी हुई नमूना) या (2) मृत सागर सूचीपत्र (उदा; 4 क्यूएमएमटी) प्रदर्शित करते है कि सिर्फ निश्चित प्रकार के वस्त्र

मिश्रित किये जा सकते है (उदा; याजकीय वस्त्र, ऊन और सनी से बने होने थे, जो एक पवित्र विचार को प्रकट करते है । शायद इसी कारण अस्वीर मिश्रण को अपवित्र समझा गया था ।

NASB मूल ग्रन्थ 22:12

22:12 इस संदर्भ में यह संभवत: कनानियों के सभी चीजों के इनकार को लगातार बताता है । इस्रायल के पास, भिन्न आराधना, भिन्न परमेश्वर, भिन्न वस्त्र होना चाहिए था । इसी प्रकार की लाक्षणिक अर्थ का प्रयोग यीशु के दिन के तालिताह (प्रार्थना शाल) में प्रतिबिंबित हुआ है । वस्त्र एक आयताकार कपड़े को जिसका प्रयोग व्यक्ति के ऊपरी भाग को ढका हुआ प्रकट करता है विशिष्ठ रूप से आराधना, प्रार्थना और धर्मग्रंथ का अध्ययन करते समय है । यह अश्चित है यदि स्त्रियों के पहिराव पर झब्बा की भी मांग (या अनुमति) की गई थी । शायद यह विपरित-पहिराव से संबंधित दूसरी प्रकार की थी (पद;5) ।

NASB मूल ग्रन्थ 22:13-19

22:13 उसके पास जाने के समय, यह मैथुन के लिए तीनों में एक मंगल भाषण है जो इस संदर्भ में प्रयोग हुआ है :

(1) उसके पास जाने के समय, पद 13 (बीडीबी 97)

(2) जब इससे संगति की, पद 14 (बीडीबी 897)

(3) संग सोता हुआ, पद 22, 23, 25, 28, 29 (बीडीबी 1011)

❖ उसको अप्रिय लगे, इब्रानी शब्द घृणा है (बीडीबी 971, केबी 1338) यह 21:15 में प्रयोग हुई वही शब्द है जिसका अनुवाद, अप्रिय में हुआ है, और यह उपमा का इब्रानी मुहावरा है, जो अधिक प्रिय, अधिक आदर करने, के अभिप्राय से है, किन्तु यहां पर यह अस्वीकृत या नाखुश के अर्थ पर लेता है ।

22:15 कन्या के माता-पिता लाएँ, यह या तो (1) व्यवस्थाविरण के अभिप्राय से, परस्पर व्यवहार में एक स्त्री को व्यवस्था में सम्मिलित होने के लिए बनाना या (2) दो गवाहों की मांग हुई थी ।

22:18 उस पुरूष को पकडकर ताडना दे, इसका अर्थ उस व्यक्ति को चालीस कोडे मारने के साथ हो सकता है (25:2-3) परन्तु यदि ऐसाहै तो पुराने नियम में इस शब्द का प्रयोग सिर्फ यहीं है, यहां पर साधारण रूप से शिक्षा को प्रकट करता है (21:18) ।

22:19 इस पर जुर्माना लगाएँ, इस मनुष्य को दंड और जुर्माना लगाया जाना था, क्योंकि इस्रायल की एक कुंवारी पर इसने दोष लगाया था (शब्दानुसार, बुरा नाम बताया गया) । प्रकट रूप से जुर्माना दोगुना था जो उसने एक दुल्हन के रूप में कन्या के लिए दिया (दहेज) था (22:29) संभवत: झंझट यह हो सकता है कि साधारण रूप से वह अपने रूपये को, कन्या के पिता से वापस प्राप्त करना चाहता था ।

22:19,29 वह उसी की पत्नी बनी रहे, और वह जीवर भर उस स्त्री को त्यागने न पाए, व्यक्ति के अधिकार पर यह एक सीमा या अवधि था । इस्रायल की स्त्री के पास तलाक लेने का अधिकार नहीं था । यह नियम उत्तराधिकार के लिए स्त्री के बच्चों के अधिकार की सुरक्षा कर रही थी । (21:15-17) ।

NASB मूल ग्रन्थ 22:20-21

22:20-21 साधारण रूप से, नगर के द्वार के बाहर पथराव किया जाता था । देखें विशेष विषय इस्रायल में मृत्यु जुर्माना 21:11 में । क्योंकि देहत्व के इब्रानी अभिप्राय से, पिता, अपनी पुत्री के कार्य का जिम्मेवार था और इसलिए उसके द्वार पर दंड की सजा घटित हुई ।

सामान्य रूप से, एक झूठे गवाह की जुर्माना मृत्यु थी । यहां एक स्पष्ट दोहरा सिद्धांत देखा गया है यहां, यदि पति का दोष लगाना सत्य है तो कन्या को पथराव किया जाता है, परन्तु यदि यह झूठ है (यहां तक द्रोही) तो इस पुरूष को ताडना और जुर्माना लगाया जाता है, परन्तु पथराव नहीं किया जाता था (19:19) । पुराने नियम में पुरूषों के समान स्त्रियों के पास समान कानूनी अधिकार नहीं थे । दया, दिखाई गई है, परन्तु अकिधार नहीं ।

22:21 बुराई का काम, इस शब्द (बीडीबी 615) का प्रयोग अनुचित सहवास के क्रियाकलापों के लिए हुआ है :

(1) उत; 34:7 (याकूब की पुत्री पर गैर-इस्रायली ने कुकर्म किया)
(2) व्य; 22:21 (कुंवारीपन का नारा)
(3) न्या. 19:23; 20:6, 10) लेवी के रखेल पर मूर्तिपूजक का आक्रमण)
(4) II शमु. 13:12-13 (अम्मोन, दाऊद का प्रथम पुत्र, उसकी सौतेली बहन का बलात्कार करता है ।)

NASB मूल ग्रन्थ 22:22

22:22 यदि एक पुरूष एक विवाहित स्त्री के संग सोता हुआ पकडा जाए यद्यपि यदि यहां संदेहशील है तो वहां पर आश्रय या सहायक है (गि. 5:11-31)

वाक्यखंड एक विवाहित स्त्री, शब्दानुसार रूप से दूसरे पुरूष की पत्नी से है जो b'l शब्द (बीडीबी 127, केबी 142) का दुहरा प्रयोग है । यह शब्द, प्रभु या पति के लिए साधारण रूप से अनुवादित किया गया है, जो कनानियों के ऊपजाऊ देवता बाल के समान मूल है । पति उसके घर का प्रभु था । उसकी पत्नी और बच्चे, कानूनी अभिप्राय संपत्ति थे । सत्यता में, सहवास उल्लघन को परमेश्वर के विरूद्ध में एक पाप के रूप में देखा गया था । (उत; 39-9; II शमु; 12:13) । यह परमेश्वर के दिये हुए क्रम और समाज की स्थिरता को भंग करता है और परमेश्वर का दिया परिवारों और जातियों को प्रभावित करता है ।

❖ दोनों मार डाले जाएँ, बाद के यहुदी गुरूओं ने इसका अर्थ बच्चों के लिए भी अनुवाद किया, यदि स्त्री, गर्भावस्था में है, क्योंकि संगी पाप के विचार से है । स्मरण रखें दण्ड की बराबरी को, जो पुराने किया में असमान्य है ।

NASB मूल ग्रन्थ 22:23-24

22:23 विवाह की बात लगी हो, इस्रायल में विवाह की बात लगी होने का अर्थ कानूनी रूप से बंधी हुई, विवाह होने के समान है (उदा. युसुफ और मरीयम, मती; 1:18-19) ।

24:24 उस कन्या को तो इसलिए पथराव करना क्योंकि वह नगर में रहते हुई भी नहीं चिल्लाई, दोनों को ही मृत्यु के लिए पथराव किया जाएगा (लैव्य 20:10); पुरूष को इसलिए क्योंकि उसने पड़ोसी की पत्नी को नष्ट किया, स्त्री को इसलिए क्योंकि उसने सहायता के लिए नहीं चिल्लाया ।

❖ यों तू अपने मध्य से ऐसी बुराई को दूर करना, देखें लेख 13:5 में ।

NASB मूल ग्रन्थ 22:25-27

22:25-27 इस्रायल की कानून निर्माण का अर्थ न्याययुक्त होने से था न कि सिर्फ नियमानुसार से था । पापपूर्ण कार्यों में निर्दोष पक्ष भी वहां थे ।

NASB मूल ग्रन्थ 22:28-29

22:28 यदि किसी पुरूष को कोई कंवारी कन्या मिले, जिसके विवाह की बात न लगी हो, और वह उसे पकडकर उसके साथ कुकर्म करें, प्रारंभिक उम्र का विचार करते हुए, जिन यहूदी कन्याओं को सामान्य रूप से विवाह की बात लगी थी, ऐसा मुझे मालूम होता है कि यह संभवत: प्रकट कर सकता है । () सन्तति दुर्वव्यवहार या (2) गरीब परिवारों से दुर्वव्यवहार । मूसा की वाचा असौभाग्यशाली और सामाजिक रूप से सामर्थहीनों की रक्षा करती है ।

22:29 पुरूष उस कन्या के पिता को पचास शेकेल रूपा दे .... वह उसे त्यागने न पाएं, यदि एक पिता बहुत ही गरीब होने के कारण, अपनी बेटी की मंगनी न करने पाएं या कन्या मानसिक रूप से अयोग्य थी और एक पुरूष ने उसको नष्ट किया, तो वह उसके लिये जुर्माना दें और जीवन भर के लि उस कन्या के साथ विवाह करें (निर्ग; 22:16) ।

NASB मूल ग्रन्थ 22:30

22:30 कोई अपनी सौतेली माता को अपनी स्त्री न बनाए, संभवत: इसका अर्थ, एक पुरूष अपनी सौतेली माता से विवाह नहीं कर सकता है (संभवत: एक की अनेक पत्नियां) यद्यपि यदि पिता मर गया हो या स्त्री का तलाक हो गया हो ।

❖ अपने पिता का ओढ़ना, पिता के विवाह संबंधी कार्यो को प्रकट करने का यह एक मुहावरा संबंधी तरीका है (रूत; 3:9; यहे. 16:8) । एक स्त्री के साथ संबंध, जो पिछले समय

स्वयं के पिता के साथ संबंध बना चुकी थी, एक अभिप्राय में, पिता को खंडन करता है, (27:20; लैव्य 18:8; 20:11) ।

विवादपूर्ण प्रश्न :

(1) कितना अत्यधिक आप इस अध्याय को अपने संस्कृति में लागू करने के लिए कहेंगे ? किस प्रकार आप अपने निर्णय को समझते हैं ?

(2) इन नियमों की पृष्ठभूमि क्या है ?

*****

व्यवस्था विवरण 23
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
सभा से वे अलग किये गये है	अनेक जाति का नियम (21:1-23:14)	यहोवा की सभा में प्रवेश निषेध	व्यभिचार और पर स्त्री या परपुरूष गमन (22:22-23:1)
		23:1	सार्वजनिक आराधना में हिस्सेदारी
		23:2	23:2-7
		23:3-6	
		23:7-8	23:8-9
छावनी के स्थान का शुद्धिकरण		छावनी को शुद्ध रखना	तंबू में (छावनी) स्वास्थ्य के सिद्धांत
23:9-14	23:9	23:9-11	23:10-12
	23:10-11		
	23:12-14	23:12-14	23:13-15
	नियम का बर्ताव, मनुष्य जाति से प्रेम करनेवाला और धार्मिक बंधन से (23:15-25:19)	विभिन्न नियमें	अनेक जाति का
23:15-16	23:15-16	23:15-16	23:16-17
23:17-18	23:17-18	23:17-18	23:18-19
23:19-20	23:19-20	23:19-20	23:20-21
23:21-23	23:21-23	23:21-23	23:22-24
23:24-25	23:24	23:24-25	23:25-26
	23:25	-	(MT की गणना का अनुसरण)

NASB **मूल ग्रन्थ 22:1–6**

23:1 अण्ड कुचले, यह अंग्रेजी शब्द, दो इब्रानी शब्दों का अनुवाद किया हुआ है :

(1) कुचलने के द्वारा – बीडीबी 194

(2) चोट या आघात करना – बीडीबी केबी 954, क्वेल कर्म कृदन्त

यह प्रकट करता है (1) एक पुरूष के अण्ड को निकाल दिया गया या (2) शुक्राणु रस्सी को काटकर अलग किया गया (संभवत : कुचलने के द्वारा)

❖ या लिंग काट डाला गय हो, यह एक तीक्ष्ण शिश्न को बताता है (बीडीबी 1050, द्रव पदार्थ के बहाव का स्थान) । एक खोजा क व्याख्या करने कायह एक दूसरा तरीका होगा (मती 19:12) ये दोनों क्षतिपूर्ण पुरूष, क्रम में प्रथम है जो इस्रायल की सभाओं की उपस्थिति से अलग किये गये है (उदा; तंबू में घटना । उनका निषेध, शुद्धता का चिन्ह और परमेश्वर के लोगों की पूर्णता, याजकों के राज्य के रूप में देया गया है । पुराने नियम में अवरोध किये गये, इनमें से कई लोगों को बाद में सम्मिलित किया गया है (उदा; मोआबी रूत और याशा; 56:3–5 और प्रे.का. 8:26–40 का खोजा) ।

यह भी संभव है कि पुरूषों के लिंग को क्षति पहुंचाने का यह कार्य कनानियों के कार्यों का एक भाग था ।

❖ आने पाएं, इस क्रिया का प्रयोग इस अध्याय में कई बार हुआ है :

(1) आना, पद 1, 2 (दोहरा) 3 (तीन बार) 8, 11 (दोहरा) 20, 24, 25

(2) लाना, पद 18

अधिकतर प्रयोग संबंधित होते है :

(1) लोग जो इस्रायल की सभा में न आने पाएं :

(अ) क्षतिपूर्ण पुरूष (ब) कुकर्म से जन्मा हुआ या उनकी पीढ़ी

(स) अम्मोरी, ओअआबी या उनकी पीढ़ियां

(2) लोग जो आने पाए:

(अ) एदोमी (ब) मिस्त्री

(3) लोग, जिन्हें इस्रायल के तंबू को समय की एक अवधि के लिए अवश्य छोड़ना है

(अ) रात्रि संबंधी प्रवाह के साथ पुरूष (ब) सभी इस्रायली स्वयं को शांति दें

23:2 कुकर्म से जन्म हुआ, यह परिभाषित हुआ है या तो (1) विवाह से पहले एक बच्चे को गर्भधारन करना (2) निकट संबंधियों के साथ मैथुन या व्यभिचार की घटना (लैव्य; 18:6–18) या (3) मिश्रित विवाह का एक बच्चा (यहुदी और मूर्तिपूजक एज्रा; 9:2; नहे; 13:23–25; जकर्या; 9:6) । कार्यकलाप #2 में इब्रानी शब्द अति उत्तम बैठता है ।

23:23 दसवीं पीढ़ी, वाक्यखंड में समानांतर सूत्र, कभी आने (न) पाएं पद 2 और 3 को स्मरण रखें। संख्या दस, पूर्णता या सदैव के लिए मुहावरे संबंधी है (देखें विशेष विषय 4:40में)

विशेष विषय : धर्मग्रंथ में सांकेतिक संख्याएं

(अ) निम्नलिखित संख्याएं अंक संबंधी और लक्षण दोनों केसमान कार्य की है

(1) एक – परमेश्वर (उदा. व्य. 6:4; इफि. 4:4–6)

(2) छ: – मानव कमी (सात से एक कम, उदा: प्रका; 13:18)

(3) सात – अलौकिक सिद्धता (सृष्टि की सात दिन)। प्रकाशितवाक्य के सांकेतिक प्रयोग को ध्यान दे :

(i) सात दीवटें 1:13, 20;2:1

(ii) सात तारें 1,:16, 20;2:1

(iii) सात कलिसियाएँ 1:20

(iv) परमेश्वर की सात आत्माएँ 3:1, 4:5; 5:6

(v) सात दीपक 4:5

(vi) सात मुहरें 5:1, 5

(vii) सात सिंग और सात आंखें 5:6

(viii) सात स्वर्गदूत 8:2,6; 15:1,6,7,8; 16:1, 17:1

(ix) सात तुरहियाँ 8:2,6

(x) सात बिजलियां; 10:3, 4

(xi) सात हजार 11:13

(xii) सात सिर 13:1; 17:3, 76, 9

(xiii) सात महामारियाँ 15:,6,8; 21:9

(xiv) सात कोहरे, 15:7

(xv) सात राजा 17:10

(xvi) सात परदा 21:9

(4) दस – संपूर्णता

(अ) सुसमाचार में प्रयोग

(1) मती; 20:24; 25:1;28 (2) मर. 10:41 (3) लूका 14:31;15:8;17:12, 17;19:13 16, 17, 24, 25

(ब) प्रकाशित वाक्य में प्रयोग :

(1) 2:10, क्लेश के दस दिन (2) 12:3; 17:3, 7, 2,16 दस सिंग

(3) 13:1 दस मुकुट

(स) प्रकाशित वाक्य में दस (10) का गुणांक

(1) 144,000 + 12 x 12 x 10, 7:4;14:1,3

(2) 1,000 = 10 x 10 x 10, 20:2, 3, 6

(5) बारह – मानव संस्था

(अ) याकूब के बारह पुत्र (उदा ; इस्रायल के बारह गोत्र; उत 34:22; 49:28)

(ब) बारह खंभें, निर्ग 24:4

(स) महायाजक के सीनाबंद पर बारह पत्थर निर्ग; 28:21;39:14

(द) पवित्र स्थान की मेज में बाहर रोटी (बारह गोत्रों के लिए, परमेश्वर का प्रयोग सांकेतिक में) लैव्य 24:5; निर्ग. 25:30

(घ) बारह जासूस ट; 1:23; यहोशू 3:22; 4:2,3,4,8,920

(प) बारह प्रेरित, मती 10:1

(फ) प्रकाशित वाक्य में प्रयोग :

(1) दस हजार मुहर 7:5-8 (2) बारह तारे 12:1

(3) बारह द्वार, बारह स्वर्गदूत, बारह गोत्र 21:12

(4) बारह नींव के पत्थर, बारह प्रेरितों के नम 21:14

(5) नया यरूशलेम बारह हजार स्टाडिया स्क्वायड् था 21:16

(6) बारह मोतियों से बनी हुई बारह फाटक 21:12

(7) बार प्रकार के फल, जीवन के वृक्ष में 22:2

(6) चालीस – समय के लिए संख्या

(अ) कुछ समय मूलार्थक (निर्गमन और जंगल परिभ्रमण, उदा निर्ग 16:35); व्य 2:7;8:2

(ब) मूलार्थक या सांकेतिक हो सकता है ।

(i) बाढ़ उत 7:4, 17;8:6 (ii) सीनै पर्वत पर मूसा

(iii) मूसा के जीवन का विभाजन

(1) मिस्र में चालीस वर्ष

(2) मरूस्थल या जंगल में चालीस वर्ष

(3) इस्रायल की अगुवाई करने में चालीस वर्ष

(iv) यीशु ने चालीस दिनों का उपवास किया, मती 4:2, मर 1:13, लूका 4:2

(स) समय की संख्या को स्मरण रखें, यह संख्या बाईबल में समय नियुक्ति में प्रकट होती है ।

(7) सत्तर – लोगों के लिए ऐसी संख्या जिसमें ईकाई (या बडी संख्यामें दहाई) का विचार नहीं होता :

(अ) इस्रायल; निर्ग 1;5

(ब) सत्तर प्राचीन निर्ग 24:1, 9

(स) भविष्य संबंधी, दानि 9:2, 24

(द) सेवाकार्य दल लूका; 10:1, 17

(घ) क्षमा (70 X 7) मती 18:22

(ब) अच्छे वचन

(1) जॉन जे.डेविस बिबलिकल न्यूमरोलॉजी

(2) डी. ब्रेन्ट सेण्डि, प्लोसेअर्स एण्ड वर्निंग हुक्स

23:3 न कोई अम्मोनी या मोआमी, ये जातियां पद 2 में प्रदर्शित की गई निकट संबंधियों के साथ मैथुन करने के परिणाम थे । कुछ यहूदी गुरू कहते है कि उत; 19:30–38 (लूत का संबंध उसकी बेटियों के साथ होने से जातियां) दिखाता है कि यह सिर्फ पुरूषों के लिए ही सिर्फ लागू होता है, उसके उपाय से रूत का एक मोआबमी होना और राजा दाऊद की पुरखा हुई । किन्तु निकट संबंधियों के साथ मैथुन करने के अलावा उनको बाहर होने के लिए दूसरा वरिष्ठ कारण पद 4–6 में है ।

23:4 विलाम, यह नबी, अब्राहम की पीढ़ी में से नहीं था, परन्तु यहोवा को जानता था, जिस प्रकार मालिकिसेदेक और अय्युब जानते थे, जो अब्राहम के पीढ़ी में से नहीं थे । विलाम की कहानी गि. 22–24 में पुन: प्रदर्शित की गई है ।

23:5 इसलिए कि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझसे प्रेम रखता है, व्य. में यह बार–बार होने वाला आवर्तक विषय है :

(1) 4:37, उसने तुम्हारे पूर्वजों से प्रेम किया

(2) 7:7–8, वह तुम से प्रेम रखता है और शपथ को भी पूरी करना चाहता है जो उसने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी ।

(3) 7:12–13, वह तुझ से प्रेम रखेगा, और तुझे आशीष देगा और गिनती में बढ़ायेगा (यदि आज्ञाकारी है)

(4) 10:15, तो भी यहोवा ने तेरे पूर्वजों से स्नेह और प्रेम रखा

(5) 33:3, वह लोगों से प्रेम करता है ।

यहोवा का कार्य इसके चुनाव पर आधारित है, न कि इस्रायल की भलाइयों के आधार पर है (7:7–8) उसने संसार को चुनने के लिए अब्राहम को चुना (देखें विशेष विषय बॉक्स इवेजंलिकल बियासेस एट 4:6) ।

23:6 उनका कुशल और भलाई संभवत: यह संदर्भ से हो सकता है (1) संधि पत्र या विवाह-संबंध (एज्रा, 9:12) या (2) उनके लिए प्रार्थना (यिर्म 14:11)

23:7 अति घृणा करना, इस क्रिया (बीडीबी 1073, केबी 1765 पीयल अपूर्ण का प्रयोग दो बार हुआ है) का अर्थ घृणा करना जो संज्ञा घृणित (उदा. 7:26) से है । देखें विशेष विषय : घृणा 14:3 में ।

❖ एदोमी, क्योंकि वह तेरा भाई है, पद 3 और 7 के बीच भिन्नता को बताते हुए राशि कहता है कि पद 3 कीसूची के देश इस्रायल को पाप में गिराने का कारण था (उत, 36) । एदोम की जाति, याकूब के भाई एसाव की पीढ़ी से है (उत; 25:24-26; 36:1)

23:9 इस्रायल, पवित्र युद्ध में संलग्न था (उत; 20) यहोवा ने उनके लिए लड़ाई किया, परन्तु उन्हें इनके साथ बने रहने के लिए यहोवा की उपस्थिति में आदर से शुद्ध रहना अवश्य है (पद; 14; यहोशू 5:13-15) ।

23:10 रात्रि को आप से आप हुआ करती है, इब्रानी रात्रि की घटना या होना है, यह शारीरिक द्रव्य जैसे पेशाब और अतिसार के दूसरे प्रकारों को शामिल कर सकता है । शारीरिक द्रव्य के किसी भी प्रकार का बाहर निकला एक व्यक्ति को शिष्टाचार से अशुद्ध बनाता है (लैव्य 15) । स्मरण रखें, किस इसे शिष्टाचार शुद्धता के साथ लेन देन है न कि पाप से है ।

❖ सूर्य डूबना, सूर्य डूबने पर इस्रायल एक नयेदिन को प्रारंभ करता है, जो उत; 1 के नमूना का अनुसरण करता है ।

23:12 एक स्थान, इब्रानी में शब्द (बीडीबी 388) हहै तो संभवत: एक चिन्ह लगानेवाले को विष्ठा के उद्देश्य के लिये सामान्य क्षेत्र की नियुक्ति को प्रकट करता है (बीडीबी 844)।

23:14 तेरा परमेश्वर यहोवा तेरी छावनी के मध्य घूमता रहेगा, संभवत यह वाचा के संदूक को लेवियों के द्वारा उठाकर ले जाने का संदर्भ है इस्रायल को यरदन पार करने के बाद अदभुत उपस्थिति को चिन्ह के रूप में जिसने शेकेना बादल के स्थान को लिया । यदुदी गुरूओं ने मूलार्थक रूप से इस पद को लिया और नियम बनाया कि यरूशलेम नगर के बगीचों में किसी भी खाद का प्रयोग नहीं किया जायें ।

❖ कोई अशुद्ध वस्तु, यह नंगेपन बीडीबी 788,#2, 24:1) के साथ शब्द (बीडीबी182 IV #6) की एक निर्माण है । इस संदर्भ में यह शारीरिक द्रव्यों (लैव्य, 15) से संबंधित विधिपूर्वक शुद्धता को बताती है । इस्रायल को सिखाने का तरीका यह मालूम होता है कि इनके साथ की उवस्थिति और सामर्थ्य उनकी पवित्रता और नित्य रात्रीजागरण समान गुणवाला होना अवश्य है ।

NASB मूल ग्रन्थ 23:15-16

23:15 दास को उसके स्वामी के हाथ न पकड़ा दें, प्रधान आज्ञात्मक प्रश्न एक दास और उसके स्वामी की राष्ट्रीयता है। स्पष्ट रूप से यह किसको प्रकट करता है ? यह एक विदेशी दास या एक विदेशी दास स्वामी (या दोनों) को यह प्रकट करता है। इस्रायल की समझ को यह स्पष्ट रूप से दिखाता है कि एक दास, जीवित औजार से बढ़कर है। यहोवा दास्तव की अनुमति, मर्यादा और निश्चित सीमितता के नीचे देता है, परन्तु यह सामर्थहीनों, असहाय, की भी ध्यान रखता है।

23:16 यहोवा के आजादी की मांग एक भागे हुए विदेशी दास के लिए दुहराये जाने को ध्यान दें:

(1) तेरे संग रहने पाएं।

(2) जो नगर वह चुने।

(3) जो इसे अच्छा लगे

(4) तू उस पर अंधेर न करना।

कौन सी आजादी और सुरक्षा। प्राचीन निकट पूर्वी के सभी दूसरे धर्म सहिंता के नियम एक भागे हुए दस को लौटाने की मांग की गई थी। मूसा की वाचा, कमजोर, सामर्थहीन, सामाजिक रूप से बहिष्कृत और गरीब की सुरक्षा और अधिकार पर ध्यान केन्द्रित करता है। सुविधा वाक्यखंड विधवा, अनाथ और अजनबी है।

NASB मूल ग्रन्थ 23:17-18

23:17 देवदासी यह स्त्री जाति शब्द पवित्र जन है (बीडीबी 873I) यह कनान की धार्मिक वेश्यापन की उपस्थिति को दिखाती है (निर्ग 34:15-16; II राजा 23:7)। यदि वहां पर धार्मिक व्यभिचार था और ये घृणित भी इस्रायली समाज के भीतर उन्नतपूर्ण हुआ, यह इन्हें अत्यधिक बुरा बनाता है (होशे 4:11-14; लूका 12:48)

❖ देवदास, यह पुरूषजाति शब्द पवित्र जन है (बीडीबी 873I)। इस अवधि में एक पुरूष वेश्या को एक कुत्ता के नाम से पुकारा गया (पद;18)।

23:18 वेश्यापन की कीमत यह पद 17 के शब्द से अलग है (होशे 9:1)। यह उपज देनेवाले की आराधना के संगी के लिए एक सामान्य शब्द है (बीडीबी 1072)। यहां पर कुछ वाद-विवाद है कि पद; 17 की देवदासी का शब्द पद 78 के इस शब्द के समानान्तर है या यदि पद 18 गैर देवदासी को प्रकट करता है (बीडीबी 1072)। कई मूलग्रंथ में एक अलगाव है, परंतु यहां पर सदृश संबंधी उद्देश्पूर्ण मालूम पढ़ता है। परिश्रम का कीमती को ईश्वर को लौटाने के लिए लिया गया है (मीका; 1:7) यहोवा सभी मैथुन के कीमत की वार्षिक आय को तिरस्कार करता है।

❖ कुत्ते की कमाई, यह एक पुरूष वेश्या के द्वारा की कीमत है । यहोवा सभी उपज देने वाले की आराधना और इसकी कमाई को तिरस्कृत करता है ।

NASB **मूल ग्रन्थ 23:19-20**

23:19 ब्याज न लेना, मूलार्थ रूप से कुछ बीज का टुकुडापन, इब्रानी है (बीडीबी 675) । इसको निर्ग, 22:25 और लैव्य 25:35-37 में भी विवाद किया गया है ।

23:20 वाचा के सगी और अन्य जातियों के बीच एक अलग मार्गदर्शन को व्यवस्थित किया गया था (बीडीबी 684, 14:21;15:3) ।

NASB **मूल ग्रन्थ 23:21-23**

23:21 मन्नत, मन्नतों के नियमों (12:11, 17) की वार्तालाप लैव्य, 27 और गि. 30 (नाजीर की मन्नत की व्याख्या गि. 6 में है) में हुआ है । निश्चित घटनाओं और परिस्थितियों पर बनाई गई प्रतिज्ञा पर यह आधारित था ।

यदि आप एक मनन्न मानें, समय में इसे पूरा करें ।

❖ उसे तुझ से निश्चय ले लगा, यह वाक्यखंड आज्ञार्पू है । यहोवा, अपने नाम से ली गई मन्नत को गंभीरता से लेता है (सभों 5:1-7) ।

22:22 यह अविवेकी मन्नत न मानने की बुद्धिमता को दिखाता है (न्या 11) । यह बोले गये शब्द की महत्वपूर्णता और सामर्थ्य को जो इब्रानी की दृष्टि को दिखाता है (उदा. उत: 1; याशा; 55:11; यहु. 1:1)

NASB **मूल ग्रन्थ 23:24**

23:24-25 तू, यह देश के जरूरतमंद, अनाथ, विधवा, विदेशी, और गरीब के लिए बताता है । यह व्यवस्था के भाग की बटोरने का कार्य है । यह विभिन्न प्रकरणों में दर्शायी गई है । (लैव्य; 19:9-10; 23:22; व्य; 24:21; ह्रया 8:2; 20:45; रूत; 2;याशा; 17:6; 24:13; यिर्म 6:9, 49:9; मीका 7:1) । यह गरीबों के लिए परमेश्वर की चिंताऔर फसल पर इसके अधिकार दोनों को दिखाता है ।

23:24 तू पेट भर मनमाने खा, यह तुम्हारी इच्छानुसार (बीडीबी 659) और तुमहारी पर्यापत मात्रा की संग्रहण है । यह सिर्फ प्राप्त हुए पर्याप्त खाने के लिए नहीं परंतु तुम्हें जितनी आवश्यकता है खाने को बताता है । गरीब, जरूरतमंद, और परदेशी पथिक के लिए क्या ही अद्भुत प्रयोजन है । यहां पर कोई सीमितता भी नहीं है कि कितनी बार एक व्यक्ति लौट सकता है ।

NASB मूल ग्रन्थ 23:25

23:25 पद 24 और 25 दोनों दिखाता है कि जरूरतमंद व्यक्ति जितनी आवश्यक है इतनी खा सकताहै, परन्तु वे अपने साथ उपभोग या बेचने के लिए किसी भी फसल को नहीं ले जा सकता है (मती; 12:1-8; मर. 2:23-28; लेका 6:1-5) । यहोवा गरीबों और किसानों के अधिकार दोनों का ध्यान रखता है ।

विवादपूर्ण प्रश्न :

(1) क्यों परमेश्वर किसी व्यक्ति को जो उसके लोगों के साथ सहभागी होना चाहता है, ऐसा होने से अवरोध करेगा ?

(2) क्यों परमेश्वर ने निश्चित देशों के बीच एक अलगाव को बनाया ?

(3) पुराने नियम में पाप से संबंधित धार्मिक संबंधी शुद्धता किस प्रकार है ?

(4) पद 24-25, गरीब और जरूरतमंद व्यक्ति के साथ खेत के मालिक के अधिकार को कैसे निर्धारित या तुल्यता करता है ?

*****

व्यवस्था विवरण 24
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
तलाक से संबंधित नियम	मनुष्य जाति से प्रेम करने वाला लिखित प्रतिज्ञा के साथ नियमों की लेन-देन	तलाक और पुनर्विवाह	तलाक
24:1-4	24:1-4	24:1-4	24:1-4
अनेक जाति के नियम		विभिन्न	प्रत्ये व्यक्ति की सुरक्षा
24:5	24:5	24:5	24:5
24:6-7	24:6	24:6	24:6
	24:7	24:7	24:7
24:8-9	24:8-9	24:8-9	24:8-9
24:10-13	24:10-13	24:10-13	24:10-13
24:14-16	24:14-15	24:14-15	24:14-15
	24:16	24:16	24:16
24:17-18	24:17-18	24:17-18	24:17-18
(24:19-25:4)	24:19-20	24:19-22	24:19
24:19-25:3			
			24:20
	24:21-22		24:21
			24:22

शब्द और वाक्यखंड अध्ययन

NASB मूल ग्रन्थ 24:1-4

24:1 यदि.... तो, यह निर्माण हाइपोथिटिकल (कल्पित) कृदन्त के साथ, पूरा होने, की पूर्ण क्वेल पूर्ण है। यह कल्पित स्थिति प्रथम तीन पद में निरंतर है। पद; 1-4 एक ही वाक्य है जो पद 4 में निर्धारित समापन के साथ है। ध्यान दें कि यह तलाक पर साधारण विवाद नहीं है,

परन्तु तलाक, पुनर्विवाह, और तलाक/मृत्यु और वास्तविक संगी से पुनर्विवाह की विशिष्ठ स्थित है । इस संदर्भ से कई सारे सार्वभौमिक सच्चाइक्षों को निकालना कठिन है । तलाककभी भी उत्तम चुनाव नहीं हुआ है ।

❖ त्याग पत्र, यह अलगाव का कानूनी लेख था । इसमें दहेज को वापस देना भी संलग्न हो सकता है । बाद में यह कानूनी व्यवहार को संलग्नता की मांग को किया जो सर्गी या पति-पत्नि को मेल-मिलाप करने के लिए समय को विश्वास पूर्ण दिया, परन्तु यहां पर यह पति या उसके प्रतिधिधि (उदा. लेवी) के द्वारा लिखा होना मालूम पड़ता है ।

याजकों के संबंध में भी तलाक और पुर्नविवाह के लिए लैव्य 21:7, 14 और 22:13 में बातचीत किया गया है । यह अवश्य ही सामान्य होना है (गि. 30:9)

24:2 दूसरे पुरूष पत्नि होना, पुनर्विवाह का अधिकार निर्धारित और स्वीकृत था। यह कानूनी व्यवहार को उद्देश्यपूर्ण था ।

24:3 यदि उस दूसरे पुरूष को भी अप्रिय लगे, शब्द यदि इब्री एम एस एस में नही है । यह दूसरा कल्पित स्थिति (पद; 1 के समान) मालूम होती है ।

क्रिया अप्रिय लगना, यर्थाथ रूप से घृणा करना है और तलाक के लिए आरंभिक में प्रयोग किया गया था ।

❖ दूसरा पुरूष यदि मर जाये, यह नाटक की कथा की दूसरी संभवत: है ।

24:4 तो इसका पहला पति ... अपनी पत्नि न बनाये पाएं, वास्तिविक पति-पत्नि को मेल-मिलाप के लिए उत्साहित किया गया है, परन्तु एक बार अलग होने के बाद, पत्नि पुनर्विवाह करती है, तो मेल-मिलाप को मना किया गया है । पद 1-3 में पाई गई सभी शर्तों का उद्देश्य है । संभवत: यह दूसरी विवाह की सुरक्षा का तरीका या पद्धति है ।

NASB मूल ग्रन्थ 24:5

24:5 जब एक पुरूष विवाह करे, नये पति को सेना कार्य या दूसरे किसी भी काम को एक वर्ष तक न करने की मांग की गई थी । यह एक उत्तराधिकार या वारिस के बचाव के उद्देश्य के लिए था (20:7)

❖ अपनी ब्याही हुई स्त्री को प्रसन्न करता रहे, इस क्रिया का अर्थ आनंद करना, या मग्न होना है । यह यहोवा का उद्देश्य अपने वाचा के लोगों के लिए था । व्य. के नियम को पाप में गिरे हुए व्यक्ति में डालना या जोड़ना, ताकि वह एक खुशहाल, क्रमानुसार समाज की प्रप्ति और संवरने पाए ।

NASB **मूल ग्रन्थ 24:6**

24:6 चक्की या ऊपर के पाट, यह पीसने की दो पत्थर के ऊपर के पाट को प्रकट करती है । (बीडीबी 932, 939, निर्ग 11:5; न्या; 9:53; II शमु.11:21) जिसका प्रयोग दैनिक रोटी को तैयार करने के लिए किया जाता था। नीचे टुकडे के मिलान के बिना ऊपर का भाग व्यर्थ था ।

❖ बंधक, शब्द बन्धक का मूलरूप अर्थ बांधना है । जब एक व्यक्ति उधार लेता है तो उधारी चुकाने के लिए वह बंधक हुआ है । वापसी के (एक संगी इस्राइली को बिना ब्याज पर) इस सुरक्षा के लिए, ऋणदाता कुछ मूल्यवान चीज को ले सकता था और इसे रखकर :

(1) चक्की के पाट को 24:6 (2) कपडे को 24:17 निर्ग; 22:25-27; अय्यु 24:7, 10
(3) पूर्वजों की भूमि और घर; नहे 5:3 (संभवत: अय्यू 24:2) (4) प्रमुख जानवर, अय्यु 24:3
(5) प्रमुख सहायक, बच्चे; निर्ग 21:7 लैव्य 25:29-43 II राजा; 4:1 अय्यु 24:9

इनमें से प्रत्येक चीज दैनिक कृषि संबंधी स्थिरता की आवश्यक भाग है । इनमें से किसी एक को भी निकालना, परिवार को संपति में डालना, यहां तक जीवन का निकालने के समान है । इस्रायल को उन इस्रायलियों केसमान जिनके पास स्त्रोत थे उनके समान बनाने के लिए यहोवाकी ध्यान और चिंता थी । इनके दया के लिए परमेश्वर पर उन्हें आशीष देगा । उन्हें अत्यधिक दियाजायेगा ताकि वे और बांटने पांए (पद; 13; II कुरि. 9:6-10) ।

NASB **मूल ग्रन्थ 24:7**

24:7 चुराता हुआ इब्रानी क्रिया यहां पर चुराना है । अपहरण को एक जीवन को चुराने के रूप में देखा गया है । कई लोग विश्वास करते है कि इसलिए दस आज्ञा में इस आज्ञा, तू चोरीन करना को बताता है । इसके लिए दंड, मृत्यु था जो साधारण चोर के लिए दर्दनाक मालूम पड़त है (निर्ग; 21:16; व्य; 5:19)

❖ ताकि तू अपने मध्य से ऐसे बुराईयों को दूर करें, यह पुन: कथित मुहावरा है ।

NASB **मूल ग्रन्थ 24:8-9**

24:8 चौकस रहना, इस पद में तीन बार क्रिया का प्रयोग हुआ है :

1. निफाल आज्ञात्मक चौकस रहो
2. क्वेल अनिश्चित निर्माण, क्रिया विशेषण बहुत से संयोग के साथ क्रिया करना
3. क्वेल अपूर्ण करने में चौकीसी करना और क्रिया करना के संयोज से मूल अर्थ रखना, ध्यान देना, या रखना है । यहोवा के मार्गदर्शन के लिए सावधानपूर्ण आज्ञापालन को तीन पुन: दोहरा से बताया गया है ।

❖ कोढ़, यह आधुनिक रोग, जिसे हम जानते है वह नही है । यह शब्द कई विभिन्न चीजों का घेरा है (उदा; चमड़ा, कपड़ा, त्वचा, घर) लैव्य 13-14 में मार्गदर्शन और कानूनी व्यवहारों की बातचीत हुई है । यह संकेत करती है कि इस समय में लैव्य व्यवस्था पहिले से ही मौजूद थी । पंच पुस्तक पूरे को एक की हुई है ।

24:9 गि. 12 में दर्शायी गई घटना को प्रकट की हुई है । जहां पर हारून और मरियम मूसा की अगुवापन और कुशी स्त्री से विवाह (काली स्त्री) के विषय में आलोचना किये थै । प्रतिउत्तर में यहोवा मूसा के अगुवापन के सुनिश्चित करता है और मरियम को कोढ़ से ग्रसित करता है (मरियम अपने चमड़ी या त्वा को सुंदरता को खोती है), परन्तु मूसा के मध्यस्थता प्रार्थना से, यहोवा उसके रंग को पुन: देता है ।

NASB मूल ग्रन्थ 24:10-13

24:10 तब बंधक की वस्तु लेने के लिए उसके घर के भीतर न घुसना, एक के घर के सम्मान और एकान्तता सुरक्षित की गई थी । यह पुरुष चुनाव भी कर सकता था कि कौन सी वस्त्र या कपड़े को बंधक के लिए प्रयोग किया जाये ।

एक ही समान संज्ञा (बीडीबी 716) बंधक के प्रयोग के द्वारा किया अधिक गाढ़ा हुआ है । बंधक एक वस्तु कर्म है, इस संदर्भ में एक व्यक्ति के बाह्य वस्त्र को ऋण की सुरक्षा के रूप में प्रयोग किया गया है (पद 11-13)

यह वस्त्र अधिक मूल्यवान नहीं थी, परन्तु गरीब की दैनिक जरूरत के लिए आवश्यक थी । एक पुरूष के वस्त्र को लेना, ऋण के सुरक्षा से बढ़कर थी । परमेश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्य कीमती है क्योंकि वे उसकी समानता से स्वरूप में उत्पन्न हुए है (उत: 1:26-27) परमेश्वर के वाचा के लोग कीमत और मूल्य को अवश्य जानना है ।

24:12 यदि वह मनुष्य कंगाल हो, तो उसका बंधक अपने पास रखे हुए न सोनार, यह बाह्य अंगरखा को बताता है जिसे कंगाल व्यक्ति, सोने के समय ओढ़ने के लिए प्रयोग करता था (निर्ग 22:26-27) ।

24:13 अवश्य फेर देना, यह अत्यन्ता को प्रकट करता है ।

❖ तुझे आशीर्वाद दे, गरीब, विधवा, परदेशी और अनाथों के अधिकारों और मनुष्य की रक्षा, यहोवा करता है । उनसे अनुलित व्यवहार करने का कारण स्वयं यहोवा के विरूद्ध क्रिया करने से था (उदा; निर्ग; 22:23; व्य 15:9; 24:15) ।

❖ तेरे लिए धर्म का काम ठहरेगा, सत्तर धर्म गुरू इस शब्द को समझते है जिस प्रकार इसका प्रयोग यहां पर यहूदी दान करने को प्रकट करता है (6:25; 15:7-11; मती 6:1-4)

NASB **मूल ग्रन्थ 24:14-15**

24:14 परदेशियों में से हो, व्य. में स्पष्ट रूप से परदेशी और विधवा अनाथ के लिए परमेश्वर की चिंता को देखा गया है ।

24:15 मजदूरी करने ही के दिन तू उसकी मजदूरी देना, गरीब का प्रतिदिन की मजदूरी की जरूरत है ताकि व स्वयं और परिवार के लिए भोजन खरीदने पाएं । भूमि का स्वामी इसे रखना चाहता था ताकि वह सुनिश्चित रकें कि मजदूर दूसरे दिन को काम करने को वापस लौटेगा (लैव्य 19:13;मती 3:5 याकू. 5:4)

❖ ऐसा न हो कि वह कारण यहोवा की दोहाई दे, परमेश्वर गरीब, परदेश और बहिष्कृत की दोहाई को सुनता और ध्यान रखता है । देखें लेखे 24:13 में ।

❖ तू पापी ठहरे संदर्भ में यह पद 13, की धर्मी ठहरने की विरूद्ध स्थिति है ।

NASB **मूल ग्रन्थ 24:16**

24:16 यह पद यहे; 18:1-33, 17:12-20, यिर्म, 21:29-30 और II राजा 14:6 से बहुत ही मिलता जुलता है । यह कदाचित पुराने नियम को अभिप्राय, प्रत्येक व्यक्ति के दायित्व को ध्यानकेन्द्रित करता है । यह निर्ग; 20:5;34:7 गि. 14:18 की तुल्यता है । सामान्य तौर से पुराना नियम शरीरत्व पर ध्यान केदिन्त करता है (व्य; 5:9) । क्रिया मार डाला जाए, के तीगुना प्रयोग को स्मरण रखें बीडीबी 559, केबी 662; सभी होफाल अपूर्ण । विद्रोह एक गंभीर विषय है । अनाज्ञापालन के परिणाम है ।

यह नियम परमेश्वर के विरूद्ध को प्रकट नहीं करता है (उदा; मूर्तिपूजा) परन्तु नियुक्त जन संबंधी कार्यों को प्रकट करता है । मनुष्यों को व्यक्तिगत पापों के लिए जिम्मेदार रखा गया है, परन्तु प्राय: ये पाप, परिवार या संस्कृति कार्यो से संबंधित है । हम सभी ऐतिहासिक सास्कृतिक शर्तपूर्ण है । हम चुनाव करते है, परन्तु ये चुनाव नाजीर के द्वारा सीमित है । समाज परिवार और प्रत्येक व्यक्ति एक साथ अलग न करने योग्य बंधे हुए है । सभी माता-पिता संस्कृति और व्यक्तिगत चुनाव से प्रभावित है । समाज, परिवार और प्रत्येक व्यक्ति का न्याय परमेश्वर करता है । मानवीय आजादी अद्‌भुत/भयानक उपहार है ।

NASB **मूल ग्रन्थ 24:17-18**

24:17 तू न्याय न बिगाड़ना क्रिया का मूल अर्थ, छितराना, फैलाना या मुडना है प्राय: इसका प्रयोग आलंकारिक रूप से दाएं या बांए मुडना और स्पष्ट रूप से प्रकट हुए परमेश्वर के व्यवस्था को छोड़ना या त्यागना (व्य; 53:2; 17:11, 20;28;14; यहोशू 1:7;23:6) ।

कई विभिन्न स्थनों में जहां न्याय का बिगाड़ना या मुड़ने का यह कर्म है बीडीबी 1048 निर्गस 23:6 । इस्रायल समाज में प्रत्येक व्यक्ति के लिए परमेश्वर की इच्छा न्यायी है ।

❖ परदेशी मनुष्य या अनाथ न किसी विधवा के कपडे को बंधक रखना, देखें 10:18उ और निर्ग 22:22–24। मूसा की धर्मसहिंता, दूसरे प्राचीन मेसेपोटामिया धर्मसहिंता जिसमें गरीब, कंगाल और सामाजिक बलहीन से भिन्न है।

24:18 इसको स्मरण रखना, स्मरण रखें कि स्मरण रखें पर यह महत्व इस अध्याय में तीन बार (24:9,18,22) प्रदर्शित किया गया है। भविष्य में पिछला कार्य प्रभावित करता है। इस्रायल को स्मरण रखना और इसके बाद उचित रूप से आज कार्य करना था।

❖ छुड़ा लिया है, देखें विशेष विषय 7:8 में।

NASB मूल ग्रन्थ 24:19–20

24:19–21 ये कृषि संबंधी नियमों का अर्थ गरीब और कंगालों के लिए भोजन प्रदान करना था (देखें लैव्य 19:9–10; 23:22 रूत2)। इसे लवन के बाद छुटा हुआ अन्न बटोरना कहा गया है।

गरीब या कंगालों के लिए भोजन प्रदान करने के विषय में विभिन्न नियम है :

(1) गरीब या कंगाल के लिए तृतीय वर्ष में स्थानिक दशंमाश,
4:28–29; 26:12–15

(2) सप्ताह का पर्व/झोपड़ी का पर्व की उत्सव में भोजन प्रदान किया जाना 16:9–17

(3) वर्ष की फसल से वार्षिक अन्न बटोरना 24:19–20

NASB मूल ग्रन्थ 24:21–22

24:22 इस्रायलियों के दासों और परदेशियों पर दया दिखाना था क्योंकि एक बार वे भी मिस्र में ऐसी स्थिति में थे। परमेश्वर इन पर अनुग्रहकारी था, इन्हें भी दूसरे के लिए अनुग्रहकारी होना चाहिए।

विवादपूर्ण प्रश्न :

(1) किस प्रकार व्य; 24:1–4 तलाक और पुनर्विवाह से संबंध बनाता है।

(2) इस अध्याय में मानव जाति से प्रेम करने वाले तत्वों की सूची तैयार करों।

(3) क्यों अत्यधिक महत्वपूर्ण पद 16 है? इसे व्य 5:9 से संबंध बनाइये।

*****

व्यवस्था विवरण 25
आधुनिक अनुवादों की वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
अनेक जाति के नियम	मानवजाति से प्रेम करने वाले और धार्मिक नियमों के साथ नियमों का लेन-देन (23:15-25:19)	विभिन्न नियम (24:5-25:4)	प्रत्येक व्यक्ति की सुरक्षा 24:5-25:4)
24:19-25:3	25:1-3	25:1-3	25:1-3
25:4	25:4	25:4	25:4
		मृत भाई के प्रति कर्तव्य	
जीवित भाई का विवाह के प्रति कर्तव्य			
25:5-10	25:5-10	25:5-10	25:5-10
		दूसरे नियम	
अनेक जाति के नियम			ब्राउल्स में विशुद्धता
25:11-12	25:11-12	25:11-12	25:11-12
			परिशिष्ठ
25:13-16	25:13-16	25:13-16	25:13-16
		अमालेक के सर्वनाश की आज्ञा	
अमालेक की सर्वनाश			
25:17-19	25:17-19	25:17-19	25:17-19

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB **मूलग्रंथ; 25:1-3**

25:1यदि कोई झगड़ा हो, यह वाचा क भाईयों के बीच कानूनी मुकदमा को बताता है (बीडीबी 936, 17:8-3; 19:17;21:5) । कानूनी मुकदमा का अर्थ व्यक्तिगत क्रोध को रोकना है ।

25:2 न्यासी, या तो यह (1) ध्यान से निरीक्षण कनेवाला लेवी या (2) चित्त को आकर्षक करनेवाला लेवी है । बाद में यहुदी समाज ने मारपीट के दंड के लिए तीन गवाहों की मांग की । मारनेवाला, गिननेवाला, और धर्मसहिंता संबंधी भागों को पढ़ने वाला ।

❖ अपने सामने, शब्दानुसार यह अपने सामने है, जिसका अर्थ, न्यायी को अपने कथन को सुनिश्चित करने के लिए अवश्य ही देखाना है ।

❖ इसके दोष के अनुसाार कोडे गिन-गिनकर लगवाए, दंड को जुर्म के अनुसार उचित होता था । पीटने की संख्या अनेक थी (नहे. 13:25) ।

25:3 चालीस बार यह एक छड़ी (गिर्न; 21:20; मध्य असीरिया के नियम ए 18) या चमडे के बनी चाबुक के साथ मारने या पीटने की अधिकतम संख्या थी । नये नियम के समय में उन्तालीस कोडे अधिकतम थी (मीशनाह मक्कोथ;III13-14; II कुरि.11:24) ।

❖ कोड़े इस शब्द (बीडीबी 912 I) का अर्थ चाबुक की मार की दागें है । यह प्रकती है (1) एक घाव (याशा 1:6) या (2) एक रोग (28:61)

NASB **मूलग्रंथ; 25:4**

25:4 बैल का मुंह न बांधना, यह जानवरों की दयालुता का दिखाती है (22:67; नीति,12:10) नये नियम में मसीह अगुवों की मजदूरी सहायता के लिए पौलूस को द्वारा इसका प्रयोग हुआ है (I कुरि. 9:9; I तिमु, 5:18) । पौलूस प्रयोग कर रहा है (1) लेका; 10:7 में यीशु के वचन (तिमु; 5:18) और (2) व्याख्या और प्रार्थनापत्र की यहुदी गुरू संबंधी नियम छोटे से बड़ा कहा गया है ।

यदि बैल के लिए यह कथन सत्य है, निश्चित तौर से यह मानवीय कर्मचारियों के लिए सत्य है ।

NASB **मूलग्रंथ; 25:5-10**

25:5 जब सभी भाई संग रहते हो, लेविरेट विवाह की वाद-विवाद का यह प्रारंभ है (उत; 38) । शब्द लेविरेट, दामाद के लिए लैटिन शब्द से आया है । परिवार के भीतर वारिस रखने के लिए इस कानून निर्माण का पूरा उद्दशेय है । यदि परिवार में कोइ्र्र नहीं है जो विधवा को शादी या विवाह करना चाहता है तब इसके लिए वारिस होने के लिए भाई खड़े हो (मती: 22:24; मर; 12:19; लूका 20:28) ।

स्मरण रखें कि मूल ग्रंथ विशेष रूप से निदिष्ट करता है कि दो भाई एक साथ रहते हों ।

व्यवस्थाविवरण गांव और नगरों की स्थिरता को पहिले से देखता है । इसके नियम इस भीतरी कृषि संबंधी समाज के लिए उपकरण है।

25:6 प्रथम बेटा पहिलौठा पुत्र, मृत भाई के संपत्ति का वारिस बनेगा (गि; 27:6–11)

25:7 करना ना आए अभिप्राय अनिर्दिष्ट है, परन्तु जीवित भाई के भाग पर लालच हो सकता है या संभवत: मृत भाई के प्रति ईर्ष्या हो सकती है । अनिच्छुक भाई का परिणाम स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है ।

❖ फाटक पर, यह प्राचीनों या धर्मवृद्धों के स्थानिक न्यायालय के किराने था (16:18–20; 19:12; 21:1–9, 19; 22:15)

25:9–10 उसके पांव से जूती उतारे संदर्भ में यह कार्य नम्रता का है (याशा; 20:2) । एन.ई.टी. बाइबल पृ 381, एस #16, प्रदर्शित करता है कि जूते का उतारना लक्षण हो सकता है कि जीवित भाई, सभी कानूनी अधिकारों को भाई के वारिस के लिए त्यागता है । भ.स. 60:8 और 108:9 यहोवा के जूते को एदोम के बाहर रख रहा है जो लाक्षणिक रूप से यहोवा के स्वामित्व को दिखाता है । यह रूत 4 की व्याख्या करता है ।

25:9 उसके मुह पर थूक दें, यह आलंकारिक रूप से नम्रता का कार्य है (गि. 12:14) । यह एक व्यक्ति को शिष्टाचार सहित अशुद्ध बनाती है (लैव्य 15:8) ।

NASB **मूलग्रंथ; 25:11–12**

25:11 उसके गुप्त अंग, दुबारा, प्राचीन इस्रायल में वारिस के अधिकरी के महत्व को यह दिखाता है ।

25:12 उस स्त्री का हाथ काट डालना, मूसा के कानून में सिर्फ यही विशिष्ठ खण्डन प्रदर्शित हुआ है । इस मुकदमें में वास्तवित दंड आंख के बदले आखं संभवत: नहीं था । बाद में यहूदी धर्म ने इसकी व्याख्या, असली मालिक की वस्तु दे देने के लिए किया, जिसे उन्होंने अनेक मूसा के मूल लेखों में प्रकटीकरण किया ।

❖ इस पर तरस न खाना, अनेक संदर्भ में वाक्यखंड को दुहराया गया है (7:16; 13:8; 19:13, 21;25;12; और इसी समान वाक्यखंड 7:2 में) । मनुष्य की भावना नहीं, परमेश्वर की व्यवस्था को पूरा करना है ।

NASB **मूलग्रंथ; 25:13–16**

25:13 भांति भांति के तौल शब्दानुसार पत्थर और पत्थर, एक ही आकार से खरीदने के साथ, एक ही आकार से बेचने के साथ (भ.स. 11:1, 16:11) । भलाई और ईमानदारी, वाचा के भाईयों के बीच प्रमाणित था ।

25:15 इस देश में तेरी आयु बहुत हो यह समाज–संबंधी दीर्घायु प्रतिज्ञा है ।

25:16 ऐसे कामों में जितने कुटिलता करते है यहोवा की दृष्टि में घृणित है वाचा की आज्ञापालन से आशीष और श्राम संबंधित है (अध्याय 27–29) ।

❖ घृणित देखें विशेष विषय 14:3 में ।

NASB **मूलग्रंथ; 25:17–19**

25:17–19 पवित्र युद्ध में इस्रायल को कैसे सम्मिति होना है इसके संबंध में व्य. में अनेकों पद्यांश है । पवत्रि युद्ध, यहोवा का युद्ध था । इसमें विशिष्ठ नियम और विधि थी ।

25:17 अमालोक यह एसाव की पीढ़ियों का समूह (उत;3015–16) जो उनके आक्रमण विचारों के कारण इस्रायल के लिए बुराई का संकेत बना (पद 18–19;17:8–16) वे एक भ्रमणकारी समूह थे जो मृत सागर के दक्षिण के निवासी थे । दाऊद और शाऊल दोनों ने इनके साथ युद्ध किया था ।(I शमु; 15:2;27:8) ।

25:18 पीछे इस शब्द का अर्थ, किसी वस्तु का पिछला भाग है । जब क्रिया के रूप में प्रयोग हो इसका अर्थ आक्रमण करने से है (1) सबसे पीछे पर या (2) पीछे का सुरक्षाकर्मी । यह सिर्फ यहां और यहो. 10:19 में पाया गया है ।

25:19 तू मिटा डालना, पद 5–10 में भाई की मृत्यु बिना संतान के विषय में बातचीत किया गया है । यहां पर मृतक की पीढ़ियों को आज्ञा दी गई है । उन्होंने परमेश्वर का भय न खाया (पद 18) इन्होनें इस्रायल पर अधिकतर आक्रमण किया, उन्हें अवश्य मरना है (निर्ग; 17:14; I शमु; 15:2–4; 30:16–20; I इति; 4:43) ।

विवादपूर्ण प्रश्न :

(1) अध्यात्मविद्या के एिल पद;1 इतना महत्वपूर्ण क्यों हैं ?

(2) लेविरेट विवाह का उद्देश्य क्या था ?

(3) पंच–पुस्तक में पद 11–12 क्यों सम्मिलि किया गया है ?

(4) अमालोक कौन था और वे श्रापित क्यों है ?

*****

व्यवस्था विवरण 26
आधुनिक अनुवादों की वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
दशमांश और पहली उपज का अर्पण	कर्मकाण्ड और उपदेश की समाप्ति	उपज का अर्पण	पहली उपज
26:1-11	26:1-11	26:1-3	26:1-13
		26:4-10अ	26:4-10अ
		26:10ब-11	26:10ब-11
			तीसरे वर्ष का दशमांश
26:12-15	26:12-15	26:12-15	26:12-15
परमेश्वर के विशेष लोग		यहोवा के निजी लोग	द्वितीय उपदेश की अंत (26:16-28:68)
26:16-19	26:16-19	26:16-19	26:16
			26:17-19

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB मूलग्रंथ; 26:1-11

25:1 जब तू इस देश में पहुंचे यह लेख प्रमाण सत्य स्थापित करता है कि जब मूसा के इन शब्दों को दिया गया था, इस्रायल यरदन के पूर्वी तरफ से जो मोआब की समतल भूमि पर था।

❖ तेरा परमेश्वर यहोवा, देखें विशेष विषय; 1:3 में।

❖ तेरा निज भाग करके देता है, यह इस्रायल के चुनाव का मुहावरा है। देश यहोवा का है।

यदि यहोवा के वाचार इस्रायल आज्ञापालन नहीं है तो यहोवा इन्हें देश से निकाल देगा। परन0तु तब भी यहोवा के पास दया होगी (व्य. 4:29-31; 30:1-3,10)।

26:2 भांति-भांति की जो पहली उपज तू लेना, पहिली उपज के अर्पण के लिए वास्तविक मूल्य को विशेष रूप से नहीं कहा गया है (परन्तु यह एक टोकरी में रखना है पद: 3,4)। मोआब की भूमि पर इस मूल0य को, एक ही बार की घटना के रूप में मालूम होती है, परन्तु यह बाद के नियमित फसल धार्मिक विधि को प्रभावित करता है। (निर्ग 22:29;:23:16,19)। यह कार्य पूर्ण फसल पर यहोवा के स्वाम्तिव को आलंकारिक रूप में दिखाने की पद्धति है। इसी प्रकार का स्वामित्व के संकेत उदाहरणपूर्ण में हैं (1) पहिलौठा (2) दशमांश (3) सब्ज दिन (4) सब्त का वर्ष और (5) पचासवां वर्ष

26:3 इन दिनों के याजक के पास, प्रारंभ में यह हारून के वंश के प्रधान याजक को प्रकट करता मालूम होता है, परन्तु संदर्भ मांग करता है कि यह हारून संबंधी याजकों की विभिन्न परिवारों को, जो प्रमुख वेदी की सेवकाई के लक्ष्य को पाया है ।

26:4 याजक के तेरे हाथ से वह टोकरी लेकर यहोवा की वेदी के सामने रखदे, कई तुलनात्मक पद 10 और मतभेद का दावा । समस्या है कि हमारे पास धार्मिक विधि की पूरा ब्यौरा नहीं है ।

26:5 मेरा मूलपुरूष यह पूर्वज याकूब, जो बाद में इस्रायल कहलाया, इसे प्रकट करता है (उत; 32:28 और विशेष विषय:इस्रायल 1:1 में) यह परमेश्वर के चुने हुए लोग होग के विषय में अध्यातम्विद्या संबंधी कथन था ।

❖ अरामी, यह पदम–अराम या सीरिया को प्रकट करता है (बीडीबी 74; उत: 25:20; 28:5;31:20,24) लाबान इसी क्षेत्र से था जिसने हारान के नगर को शामिल किया उत; 31:40–42) । याकूब यहां पर कई वर्षो तक रहा और लाबान से तब भाग या निकला ।

❖ छोटे से परिवार, उत; 46:27 ओर निर्ग; 1:5 कहता है कि वे सिर्फ 70 व्यक्ति थे । जब इन्होने मिस्र को छोड़ा इनकी संख्या अधिक (1:10;20:22 निर्ग; 1:9) जैसे 1,500,000 से 2,500,000 व्यक्ति था । गिनती या संख्या इब्रानी शब्द हजार की उचित व्याख्या पर निर्भर करती है, इसका अर्थ हो सकता है (1) यथार्थ 1000 (2) जाति या (3) एक सैनिक दल समूह (निर्ग 12:37) देखें विशेष विषय 1:15 में ।

26:7 हमने परमेश्वर यहोवा की दोहाई ही ...... हमारी सुनकर हमारे दुख–श्रम पर दृष्टि की, परमेश्वर वायदा कर चुका है और इसके विषय में अब्राहम को पहिले से कह चुका था (उत; 15:12–21; निर्ग 3:7,9) ।

26:8 बलवंत हाथ और बढ़ाई हुई भुजा, यह ईश्वर शरीर रचना मे सामर्थ और विजय की भाषा में बताया गया है । देखें लेख 4:34 में । यह भी संभव है । कि इस विषेष मुहावरे को चुना गया था क्योंकि इसका प्रयोग किया गया है ।

❖ अति भयानक चिन्ह और चमत्कार दिखाकर यह मिस्र की दस महामारियोंृ से संबंध बनाता है (उदा. 4:34; 6:22; 7:19;11:3;26:8; 29:2;34:11) ।

26:9 देश जिसमें दूध और मधु की धारा बहती है, असीरिया के लेख में पलिश्ति के लिए यह स्पर्श संबंधी वर्णन और कानूनी उपाधि दोनों था परमेश्वर ने उन्हें अद्भुत रूप से उपज देनेवाली और सुंदर निज स्थान का दिया (कनान या पलिश्ति; 6:3; 11:9; 26:9; 27:3; 31:20) ।

26:10 हे यहोवा, तूने जो मुझे दिया है, जीवन में एक सत्य धार्मिक दृश्य को यह दिखाता है (पद 2;8:11-20)। यह पद संकेत करता है कि बढ़त की ऋतु समाप्त हो चुकी है या यह कि इस्रायलियों ने उपज को अर्पण कि जिसे उन्होंने बढ़त में पाया था।

26:11 जितने अच्छे पदार्थ तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे और तेरे घराने को दे, तू ... आनंद करना, वाचा के लोगों के साथ यहोवा परमेश्वर के लेन देन में पर्व के तत्व का लेख करें। दण्डवत् आनंद से होना चाहिए। आदर को चुप्पी और उदासीन से व्याख्या नहीं किया जा सकता है बाद में यहूदी गुरूओं ने इस पद का प्रयोग व्यवस्था के दिये जाने पर आनंद के लिए प्रकट किया (पद; 14)।

NASB मूलग्रंथ; 26:12-15

26:12 दशमांश नीचे दिये गये विशेष विषय को देखें।

विशेष विषय : मूसा के कानून में दशमांश

(अ) धर्मग्रन्थ आयते :

याजकों और पवित्र स्थान	स्थानिक लेवियों के लिए	स्थानिक गरीबों के लिए
1. लैव्य 27:30-32		
2. व्य; 12:6-7,11,17	व्य; 12:12	
3. व्य; 14:22-26	व्य; 14:27	व्य. 14:28-29
4.		व्य; 26:12-15
5. गि 18:21-24	गि; 18:25-29 (लेवियों को उनके दशमांश प्रधान पवित्र स्थान को देना था)	व्य; 18:21-29
6.	नहे. 10:37, 38	नहे. 12:44
7. मला 3:8, 19		

(ब) मूसा के कानून से पूर्व में दशमांश के उदाहरण

1. उत 14:20 अब्राहम ने मल्किसेदेक को दिया (इब्रा. 7:2-9)
2. उत; 28:22 याकूब ने यहोवा का दिया

(स) इस्रायल का दशमांश, पवित्र मंदिर की सहायता के लिए होता था, परन्तु तीसरे वर्ष का दशमांश, राष्ट्रीय दशमांश सीधे स्थानिक गरीबों के लिए केवल होती थी।

26:13 पवित्र वस्तु दशमांश यहोवा का है, इसलिए, पवित्र था (लैव्य 27:30)

26:14 शोक के समय, कुछ शोक की रीतियां प्रारंभ में मूर्तिपूजा था। यह इब्रानी शब्द मूर्तिपूजा से संलग्न हुआ है (बीडबी 19 होशे 9:4; और यिर्म 16:5-7) जिसमें इनमें से कुछ स्थानिक मूर्तिपूजा रीति रिवाज शामिल होता है। कई विद्वान पद 14 में प्रदर्शित सभी कार्य करने की रीतियां, स्थानिक कनानी लोगों की वार्षिक आराधना कार्यों से संबंधित है।

26:15 यह यहोवा को अति श्रेष्ठ शब्द में व्याख्या करता है (4:36; Iराजा; 8:27–30; याशा 66:1) । वह स्वर्ग में है । इसके लोगों की अगुवाई करने के लिए एक दूत को भेजा है । एक व्यक्ति को परमेश्वर की पवित्र परायापन को (अति श्रेष्ठ) और इसकी वर्तमान घनिष्ठ प्रेम को समान या बराबर रखना अवश्य है˙

क्रियाएं, दृष्टि करना और आशीष देना, आज्ञात्मक या निवेदन है ।

NASB **मूलग्रंथ; 26:16–19**

26:16 अध्याय 12–26 के विशिष्ठ नियमों के लिए यह एक सारांश समापन और आत्मसमर्पण है । वाचा की इस दृढ़निश्चय को प्रत्येक नई पीढ़ी के द्वारा दुहराया जाना चाहिए ।

26:19 सब जातियों से अधिक तुझे प्रतिष्ठित करें, 28:1, 13 में यह दुहराया गया है, परन्तु यिर्म; 13:11 और 7:23–26 में शोकान्त नाटक का लेख करें । द निडोट, वोल्यु 1, पृ. 1035, यहोवा के स्तुतियोग्यता को विश्व या संसार में प्रतिबिम्बित करने के लिए इस्रायल के कर्त्तव्य के रूप में इस पद को देखता है । इसलिए, यह एक महा–आज्ञा पद है । इस्रायल के पास एक सेवा कार्य लक्ष्य था (उदा; 3:17, 4:2; 12:14–17; 16:19; 33:9) । देखें विशेष विषय 4:6 में ।

❖ पवित्र प्रजा शब्दानुसार यह पवित्र है, जिसका अर्थ परमेश्वर के उपयोग के लिए अलग होना है ।

विवादपूर्ण प्रश्न :

1. किस प्रकार से पहली उपज, दंशमाश से संबंधित है ? कितनी प्रकार की दशमांश थी ?
2. क्यों पद; 5 अत्यधिक महत्वपूर्ण है ?
3. पद 14 की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिका की व्याख्या कीजिए ?
4. क्यों और किस प्रकार यहूदी चुने गये हैं ?

*****

व्यवस्था विवरण 27
आधुनिक अनुवादों की वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
पत्थर पर लिखी गई आज्ञा	रोकेम की धार्मिक रीति	पत्थरों पर खुदी गई परमेश्वर की आज्ञाएँ	आज्ञा का लिखा जाना और धार्मिक रीति
27:1-8	27:1-8	27:1-8	27:1-3
			27:4-8
27:9-10	27:9-10	27:9-10	27:9-10
एबाल पर्वत से अभिशाप वचन			
27:11-13	27:11-14	27:11-14	27:11-14
27:14-26			
	27:15	27:15	27:15
	27:16	27:16	27:16
	27:17	27:17	27:17
	27:18	27:18	27:18
	27:19	27:19	27:19
	27:20	27:20	27:20
	27:21	27:21	27:21
	27:22	27:22	27:22
	27:23	27:23	27:23
	27:24	27:24	27:24
	27:25	27:25	27:25
	27:26	27:26	27:26

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB मूलग्रंथ; 27:1-8

27:1 फिर इस्रायल के वृद्ध लोग, मूसा जानता था कि शीघ्र ही प्रतिज्ञा के देशमें लोग प्रवेश करेगें और वह स्वयं न जाने पाएगा। वह गात्रिय अगुवापन दल को सामर्थी बनाने की कोशिश या प्रयत्न कर रहा था।

27:2 और जब तुम यरदन पर होके.... तब तुम बड़े-बड़े पत्थर खड़े कर लेना, वहां पर पत्थर के तीन आवश्यक सामग्रियां थी :

(1) गिलगाल में (पद 1-3; यहो. 4) (2) शेकेम में (पद 4-8) (3) देशका बंटवारा और युद्ध के बाद, परमेश्वर की आज्ञा बड़े पत्थर पर पुस्तक/सूचीपत्र में लिखा गया (बीडीबी 706, यहो. 24:26-27) ।

यह संभव है कि उसी दिन को जब के रूप में समझा जा सकता है, अर्थ दोनों शेकेम को बताता है ।

वास्तविक रूप से पत्थर में क्या लिखा गया था विवादपूर्ण है । वे विशाल पत्थर थे, इसलिए वे शब्दों की अधिक मात्रा को ले सकता है । कई कहते या मानते है कि यह व्य; 12-26 या 27-28 या 5:8-21 या यहां तक निर्ग, 20:22-23:33 है ।

❖ इन पर चूना पोतना, यह क्रिया सिर्फ पुराने नियम के पद; 2 में और पद; 4 में पाई गई है यह प्रतिज्ञा की तैयारी का मिस्त्रि अभिप्राय या उपाय था। यह लिखावट को लबें समय तक दृष्टिगोचर रखने का तरीका था आज्ञा को लिखे जाने का कारण था कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं के लिए इसे पढ़ सके । (पद;8)

27:3 उन पर लिखना व्य. में अनेकों वचन है जिसमें मूसा के लिखावट प्रदर्शित करते है:

(1) निर्ग 17:14:24:4 34:27, 28

(2) गि. 33:2

(3) व्य. 27:3,8; 28:58; 29:21; 30:10 31:9, 22, 24-26

❖ इसलिए कि जो देश तेरे पूर्वजों का परमेश्वर यहोवा तुझे देता (पद 12) शेकेम (गिर्जीम पर्वत) वह स्थान जहां अब्राहम (उत: 12:6-9) और याकूब (उत, 33:18-20) ने वेदी बनाई । यह परमेश्वर के प्रारंभिक प्रतिज्ञा इनके साथ पूर्ण होते हुई दिखाई देती है ।

27:4 एबाल पहाड़, शेकेम नगर के प्रत्येक तरफ दो पहाड़ थे (उदा: 3080 फीट ऊंचा) । यह इनमें से एक था । शेकेम प्रथम स्थान था जाहां अब्राहम ने प्रारंभिक में वेदी को बनाया था (उत 12:6-7) ।

27:5 उन पर कोई औजार न चलाना, संभवत: यह कनानी वेदी की बनावट से संबंधित है (निर्ग. 20:24-25) परमेश्वर ने इच्छा रखी की उसकी वेदी, कनानियों की वेदी जो मनुष्य से बनाई गई है इससे भिन्न होना है । यह यहोशू 8:30-35 में प्रतिबिम्बत होती है ।

27:6 होमबलि, होमबलि वह है जो पूर्ण रूप से नष्ट हुआ हो (यहोवा को पूर्णता को दिया जाना, लैव्य 1:1-7)

27:7 मेलबलि इसमें आधे को वेदी पर जलाया जाता है, आधे को याजक, और आधे को भेंट देने वाले को, सामूहिक भोजन करके लिए लौटाया जाता है । (लैव्य 3:1-17)

❖ आनंद करना, व्य. में यह एक विषय है । यहोवा इस्रायल को आशीष देना चाहता है ताकि इससे चारों ओर के जातियों को ध्यान को आकर्षित करने पाएं।

NASB **मूलग्रंथ; 27:9–10**

27:9–10 इन पदों में मूसा और याजक, सारे इस्रायल को बोले हुए है । लोगों को आज्ञापालन करने के लिए शांत रहकर, सुनने की आज्ञा दी गई थी (पद;10)

NASB **मूलग्रंथ; 27:11–14**

27:11 इस पद का प्रारंभ श्राप और आशीष के भाग से होता है । विशिष्ट रूप से इस अध्याय में आशीषों की सूची नहीं बनाई गई है परन्तु 28 अध्याय में सूची तैयार की गई है ।

27:12–13 इस्रायल की आधी गोत्र गिरिज्जिम पहाड़ पर बसेगा (आशीष के बारे में 28:1–14) आधी गोत्र एबाल पहाड़ पर (श्राप के विषय में 28:15–68) बेसा, गिरिज्जिम पहाड दक्षिण और एबाल पहाड़ उत्तर में स्थित था । दोनों पहाड़ के बीच में वाचा के संदूक के साथ याजक खड़ा होता था (यहो. 8:30,35) ।

27:14 लेवी, अवश्य ही यह संदूक के रक्षकों को प्रकट करती है । सभी याजक, लेवी थे, परन्तु सभी लेवी, याजक नहीं थे । स्पष्ट रूप से, कुछ लेवी (लेवी के गोत्र में से पद 12) पहाड़ पर थे (पद 12) ।

NASB **मूलग्रंथ; 27:15**

27:15 निराले स्थान में स्थापना करें, क्रिया (बीडीबी 962, केबी 1321, क्वेल पूर्ण है; पद 24) सामान्य तौर से इसका प्रयोग दुष्टता कार्यों के लिये हुआ है ।

❖ आमीन, इस कर्मकाण्ड विधि का दुहराया जाना, लोगों के द्वारा नियमों की स्वीकृति को दिखाता है । यहूदी देहत्व के अभिप्राय का लेख करें ।

NASB **मूलग्रंथ; 27:16**

27:16 तुच्छ जोन, छोटा या कम बनाना है । इब्रानी शब्द आदार का यह विरूद्धार्थी है (बीडीबी 457, 5:16; निर्ग; 20:12) । विशेष रूप से यह एक बच्चे के द्वारा अपने माता–पिता को श्राप देने को बताता है । (निर्ग. 21:17; लैव्य; 20:9), परन्तु स्वयं शब्द का अर्थ आदर और सम्मान की कमी है, जो अनाज्ञापालन को संकेत करता है । माता–पिता के द्वारा धार्मिक शिक्षा आई (4:9; 19,20–25, न्यून या अपूर्ण विश्वास से है ।

NASB **मूलग्रंथ; 27:17**

27:17 जो किसी दूसरे की सीमा को हटाए, यह गंभीर था क्योंकि इसका अभिप्राय यहोशू के द्वारा दिये गये, परमेश्वर के निज भूमि की चोरी के साथ था यहो. 12–19; व्य 19:14; अय्यु. 24:2; नीति 22:28, 23:10; होशे 5:10) ।

NASB मूलग्रंथ; 27:18

27:18 अंधे को मार्ग से यह इब्रानी अलंकार है एक व्यक्ति के लिए जो किसी व्यक्ति को इस बारे में सलाह देता है जिसके विषय में वह जानकारी नहीं रखता है और इस प्रकार से बुरी सलाह को देता है । क्योंकि व्य. के दयालु या कृपालु चरित्र के कारण, मैं सोचता हूं कि साधारण रूप से यह अपंग लोगों को लाभ न उठाने के लिए कह रहा है (लैव्य;19:14) ।

NASB मूलग्रंथ; 27:19

27:19 शापित हो वह जो परदेशी, अनाथ, विधवा का न्याय बिगाड़े । तब सब लोग कहें आमीन । यह 24:17 के सदृश है और पक्षपात को नहीं दिखाता है या 1:17; 10:17 16:19 में रिश्वत या घूस न लेने को दिखाता है । क्रिया बिगाड़ना का अर्थ मुड़ना है परंतु यहां पर और 16:19;24:17; और निर्ग, 23:6 में यह इसचीज को जो सही/ठीक है उसे निचोड़ने या बिगाड़ने को प्रकट या सूचित करता है ।

NASB मूलग्रंथ; 27:20

27:20 कुकर्म करें, यह मैथुन संबंध के लिए मधुर शब्द है, सामान्य तौर पर सीमाबंद स्वभाव के लिए (उदा. संबंधियों के साथ मैथुन करना असभ्यता या एक ही लिंग का या सदृश मैथुन कार्य; लैव्य 20:11,12,13,18,20; व्य; 27:20,21,22,23 मानवीय संबंध बनाना (सेक्स) एक अदभुत वरदान और सामर्थी उत्तेजना है । यह शांतिपूर्ण अनंत समाज के लिए नियमित और परिभाषित किया जाना चाहिए ।

निकट संबंधियों के साथ मैथुन कार्य करना, घर, परिवार और साथ ही साथ समाज की स्थिरता को प्रभावित किया हुआ है । एक व्यक्ति को इस विशेष व्यक्ति से शादी करने के लिए मना किया है जिससे सभ्यता बदल सकती है, सभी सभ्यताओं में (मिस्त्री और राज परिवार को छोड़कर) निकट संबंधी के साथ मैथुन के विषय में नियम कानून है ।

❖ पिता का ओढ़ना, विवाह के कार्य का यह चिन्ह है (22:30; लैव्य 18:8) । यह आदर का दूसरा उपद्रव है ।

NASB मूलग्रंथ; 27:21

27:21 शापित हो वह जो किसी प्रकार के पशु से कुकर्म करें, यह लैव्य 18:23; 20:15; में मनाही किया गया है । संदर्भ रूप में इसका संबंध व्यभिचार के साथ (निर्ग; 22:19 और लूका 15:23 में दिखाता है ।

NASB मूलग्रंथ; 27:22

27:22 निकट संबंधितयों के साथ मैथुन करने के नियम के ये भाग है (लैव्य;18)

NASB मूलग्रंथ; 27:23

27:23 यह मनाही लैव्य 18:8; 20:14 में लेखा प्रमाणित है ।

NASB मूलग्रंथ; 27:24

27:24-25 यह निर्ग 23:6-8 में लेख प्रमाणित है । यह इन्हें प्रकट कर सकता है :

(1) एक हत्यारा या (2) घूस लेने वाला न्यायी, जिसे एक व्यक्ति को मृत्यु की सजा दी ।

NASB मूलग्रंथ; 27:26

27:26 शापित .... जो इस व्यवस्था को वचनों को पूरा न करें, यह दस आज्ञा (डिकालोग) के समापन से मिलता जुलता सारांश पद है । पौलूस के द्वारा गला; 3:10 में यह लिया गया है ।

विवादपूर्ण प्रश्न :

(1) क्यों मूसा को तृतीय पुरूष में प्रदर्शित किया गया है ?

(2) क्यों शेकेम (गिरिज्ज्म पहाड़) को इस प्रकार की महान उपाधि दिया गया है ?

(3) क्यों श्राम के साथ आशीषों को प्रदर्शित नहीं किया गया है ?

*****

व्यवस्था विवरण 28
आधुनिक अनुवादों की वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
आज्ञापालन की आशीषें	मूसा की द्वितीय सूचना का समापन	आज्ञापालन की आशीष	आशीष वचन
		28:1-2	28:1-2
28:1-14	28:1-2	28:3	28:3-8
	28:3	28:4	
	28:4	28:5	
	28:5	28:6	
	28:6	28:7	
	28:6	28:8	
	28:7-14	28:9-14	28:9-14
अनाज्ञापालन से श्राप		अनाज्ञापालन के परिणाम	श्राप
28:15-19	8:15	28:15	28:15
	28:16	28:16	28:16-19
	28:17	28:17	
	28:18	28:18	
	28:19	28:19	
28:20-46	28:20-24	28:20-24	28:20-26
	28:25-44	28:25-29	
			28:27-29अ
			28:29ब-35
		28:30-35	
		28:36-37	28:36-37
		28:38-42	28:38-42
		28:43-44	28:43-44
	28:45-46	28:45-52	28:45-46
			युवा और गुलामी का आगमन

28:47-57	28:47-57		28:47-48
			28:49-57
		28:53-57	
28:58-63	28:58-63	28:58-63	
			28:58-62 अ
			28:62ब-68
28:64-64	28:64-68		

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB **मूलग्रंथ; 28:1-2**

28:1 वह तुझे पृथ्वी की सब जातियों में श्रेष्ठ करेगा, श्रेष्ठ का उद्देश्य प्रकाशन है (26:19, 28:13) परमेश्वर विश्व को इस्रायल के द्वारा अपने पास लाना चाहता है (उत; 12:3; 22:18; निर्ग; 19:5-6) ।

28:2 आशीर्वाद शब्द मूल घूटने टेकने से संबंधित है । यहोवा, इस्रायल को चुनाव देता है (11:26-31; 30:1, 19) । यहोवा के वाचा की मांग इनके सम्मान के लिए इस निश्चय को समझती है ।

❖ तुम पर पूरे होगें, इस मुहावरायुक्त वाक्यखंड का प्रयोग आशीर्वाद के लिए यहां प्रयोग हुआ है, परन्तु श्राम के लिए पद 15 में हुआ है ।

NASB **मूलग्रंथ; 28:3**

28:3 धन्य हो तू नगर में, खेत में, यह सार्वभौतिक आशीर्वाद को प्रकट करने का आलंकारिक पद्धति है (पद 4-6, 8) ।

NASB **मूलग्रंथ; 28:4**

28:4 धन्य हो.... तेरी सन्तान.. भूमि की उपज... भेड़ बकरी ... पशुओं के बच्चे कई सारे और स्वास्थय पशु और बच्चे, उन्नत और धन-दौलत का चिन्ह था । एक मनुष्य, बड़ी परिवार, पशुओं की झुण्ड के साथ है तो वह परमेश्वर के द्वारा आशीष पाया हुआ मनुष्य है (7:13; 28:4, 11, 30:9) । ये सभी परमेश्वर के आशीषों की स्पर्शीय चिन्ह है या पदार्थ विज्ञान संबंधी चिन्ह है (उत; 1:22,28) ।

NASB **मूलग्रंथ; 28:5**

28:5 धन्य हो ...... टोकरी, इस टोकरी का प्रयोग फल या उपज को ले जाने के लिए किया जाता था (26:2) यह कृषि संबंधी कार्य में उन्नति को बताता है ।

NASB **मूलग्रंथ; 28:6**

28:6 धन्य हो .... तू भीतर आते समय .... तू बाहर जाते समय, जीवन के सभी क्षेत्रों में आशीष जीवन होने (पद; 19 में विभक्ति) की यह एक इब्रानी मुहावरा है (31:2; भ.स; 121:8; याशा; 37:28)।

28:7 शत्रु, इस अध्याय में 8 बार कृदन्त का प्रयोग किया गया है। (पद 7, 25, 31, 48, 53, 55, 57, 68)। यह एक मनुष्य या समूह के विरूद्ध में एक मनुष्य या समूह के मेहमानबाजी कार्यों को प्रकट करता है। यहोवा ने इस्रायल के शत्रुओं को अपना शत्रु बनाने का वायदा किया (निर्ग 23:22) परन्तु वाचा की अनाज्ञापालन के कारण इस्रायल का शत्रु अभी वह है।

यदि इस्रायल आज्ञाकारी बनेगा तो यहोवा उसके शत्रु से लड़ाई करेगा (30:7;33:27-29)।

28:8 तेरे खत्तों पर आशीष, यह उपज की कोठरी को बताता है (नीति 3:10)। बाद में यहुदी समाज कहा कि यह एकान्त में यहोवा की आशीष को बताता है।

28:9 यहोवा तुझें स्थिर करेगा, इस क्रिया का मूल रूप में अर्थ, ऊँचा उठाना है। हिपिल व्य. में विभन्न अभिप्रायों में इसका प्रयोग हुआ है (उदा; (1) वाचा को निश्चित करना 8:18; (2) तेरे मध्य से 18:15, 18; (3) गिरे हुए पशुओं को उठाना, 22:4 और (4) स्मरणीय पत्थरों को स्थिर करना 27:3) यहां पर इसका प्रयोग आलंकारिक रूप में स्थिरता के अभिप्राय से 25:7 और 29:13 के समान हुआ है।

❖ चलें, जीवन शैली विश्वास और आज्ञापालन के लिए यह एक बाईबल संबंधी अलंकार है।

28:10 और पृथ्वी के देश देश के सब लोग देखकर, कि तू यहोवा का कहलता है, वाक्यखंड, यहोवा का कहलाना, इस्रायल के ऊपर यहोवा के अधिकार को सूचित करता है।

यहोवा इस्रायल को आशीष देकर सभी देशों के ध्यान को लेना चाहता था उस उपाय से देशों को स्वयं के पास लाना चाहता था पद; 25:37) विशेष विषय 4:46 को देखें।

28:11 वाचा के लोगों के आज्ञापालन से परमेश्वर की आशीष का यह सारांश पद है (उदा: 11:14)

28:12 तेरे उत्तम भंडार, यह स्वर्ग और वर्ष का चिन्ह था (पद 23-24; भ.स. 85:12; मला. 3:10)। संभवत: यह बाल देवता की आराधना की निन्दापूर्ण वचन है। बाल देवता, उन्नति देने वाला, कनानियों का देवता है (उदा, वषा, I राजा 17-18) तथापि, यह यहोवा था जो अपने लोगों के सभी आशीर्वाद देता था (पद 47; 11:14; लैव्य 26:4)।

❖ तेरी भूमि पर समय में यह बरसाएगा इस क्रिया का प्रयोग निरंतर रूप से इस अध्याय में यहोवा की वाचा का उपहार, आर्शीवाद के लिए हुआ है । (पद 1,7,8,1,12,13) ।

यहोवा न केवल आकाश के झरोखे खोलेगा ओर बारिश भेजेगा, परन्तु वह उचित समय में यह करेगा ।

❖ तू बहुतेरी जातियों को उधार देगा, परन्तु किसी से तुझे उधार न लेना पड़ेगा, परमेश्वर की आशीष की यह दूसरी अंश है कि इनके पास ऋण देने के लिए अतिरिक्त भाग था (23:20) आनाज्ञापालन के परिणाम तीक्षण रूप से पद 44 में अंतरभेद हुआ है ।

28:13 इस पद में उन्नति और वसामर्थ की दो मुहावरें है :

(1) पूछ नहीं, किन्तु सिर ठहरायेगा

(2) तू नीचे नहीं परन्तु ऊपर ही रहेगा ।

परन्तु शर्तपूर्ण तत्व को लेख करें । इसी के समान मुहावरे को पद; 1 में करने में चौकसी करने के लिए किया गया था ।

28:14 दायें या बायें न मुड़ना, शब्दानुसार यह गि; 20:17; 22:26; व्य; 2:27, में प्रयोग हुआ है, परनतु मुख्य रूप से यह एक इब्रानी मुहावरा सीधे या स्पष्ट रूप से चिन्हित मार्ग से किसी भी प्रकार का भटकना या घटना पाप है (5:32; 17:11, 20 यहोशू 1:7, 23:6,II राजा 22:2) । स्मरण रखें कि यहां पर मूर्तिपूजा को विशेष रपू से उल्लेखित किया गया है (5:7-9; 27:15; निर्ग; 20:23; 34:17) ।

NASB मूलग्रंथ; 28:15

28:5 चौकरी करना, यह शब्द सिद्धांत और व्याकरण का वास्तविक रूप है जो पद 1;13; 32:46 में पाया गया है । इसी शब्द का समान रूप 28:58 और 29:8 में पाया गया है । आज्ञापालन भयाक है । यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानो ।

❖ श्राप, यह मूल न्यून होने का संज्ञा रूप है, (बीडीबी 886-887; 27:15-26;28:15-68) ये श्राप, इस्रायल को यहोवा के पास दुबारा लाने का साधन था ।

NASB मूलग्रंथ; 28:16

28:16-19 पूर्ण रूप से ये पदें समानांतर है । पद; 3-6 आशीर्वाद के है और पद 16-19 श्राप के है

28:18 यथार्थ वाक्यखंड तेरे पेट की उपज है । कई हृष्ट-पुष्ट, सुखी परिवार आशीषों में से एक है (पद 4,11); परन्तु अनाज्ञापालन, वाचा की प्रतिज्ञा को परिवर्तन में लेकर आया ।

NASB मूलग्रंथ; 28:20-24

28:20 भयातुर, यह वह शब्द है जिसका प्रयोग युद्ध के घर में हुआ है (7:23) । यह पद 7 और 25 का विरूद्धार्थी है । भयातुर, इस्रायल में होगा, यदि वह परमेश्वर के वचन का पालन नहीं करती है ।

❖ धमकी, इस शब्द का प्रयोग पुराने नियम में सिर्फ यहां पर हुआ है ।

28:21 मरी, यहोवा ने मिस्र पर (निर्ग 5:3; 9:15) जैसे भेजा, वैसी महामारी को यह बताता है लैव्य 26:25; निग. 14:12) ।

28:22 तलवार, अनाज्ञाकरी इस्रायल के ऊपर यहोवा के द्वारा भेजे जाने वाली चीजों को सूची तैयार करो :

(1) क्षयरोग (बीडीबी 1006, लैव्य; 26:16), फेफड़े की बीमारी

(2) ज्वर (बीडीबी 869, लैव्य 26:16)

(3) दाह (बीडीबी 196)

(4) बड़ी जलन (बीडीबी 359)

(5) ततवार (बीडीबी 352)

(6) झुलस (बीडीबी 34,I राजा 8:37; II इति; 6:28 आमोस 4:9; छगै; 2:17; शब्द का अर्थ हरा इसलिए एक घी गेरूई ।

कृषि संबंधी और मानवजाति दोनों पीढ़ित और मरेगें । पीढ़ा या कष्टों की सांकेतिक संख्या को ध्यान दें (उदा; 7 इस अध्याय में 7 आशीषों की भी सूची है) देखें विशेष विषय 23:3 में)

28:23 लोहे की, लोहे को प्राय: आलंकरिक रूप में कठिनाई के लिए है :

(1) भूमि उपज नहीं देगा, क्योंकि मेह नही बरसेगा, यह धातु के समान कठोर हो जायेगा, पद 23; लैव्य 26:19 ।

(2) लोहे का जुआ, इस्रायल के गर्दन पर रखा गया है; पद 48

(3) पीढ़ा या कष्ट के लोहे के भट्टे के समान मिस्र 4:20

NASB मूलग्रंथ; 28:25-26

28:25 तू एक मार्ग से इनका सामाना करेगा, परन्तु सात मार्ग से होकर उनके सामने से भाग जायेगा, लाक्षणिक रूप से यह व्याख्या कर रहा है कि इस्रायल के सौमिक योजनापूर्ण रूप से व्यर्थहीन हुई है। संख्या संबंधी सात पूर्णता के लिए चिन्ह है । पवित्र युद्ध की प्रतिज्ञा परिवर्तन हो चुकी है ।

28:26 तेरा शव आधार होगा इस्रायल के लिए न गाड़ा जाना एक महान शोकान्त या दुखान्त की बात है और पशुओं के द्वारा उठा लिया जाना भी है ।(I शमु. 17:44-46) । पढ़ियों प्रदर्शित होने के कारण कई लोग इसे भविष्य संबंधी संदर्भ के समान देखते है (याशा; 18:14; यिर्म 7:33; 16:4, 19:7; 34:20; यहे. 29:5; 32:4; 39:4) ।

NASB **मूलग्रंथ; 28:27-37**

28:27 मिस्र क से फोड़े महामारियों और समस्याओं की सूची को स्मरण रखें (मिस्र की महामारी और वाचा की आशीष में परिवर्तन) जो इस्रायल पर यहोवा भेजेगा, यदि वे उसकी वाचा को नही मानते है । जिसको अधिक दिया गया है, इससे अधिक लिया जायेगा । (लूका 12:48)

28:32 इस्रायली माता-पिता के इन दशा को स्मरण रखें :

(1) तेरे बेटे बेटियाँ दूसरे देश के लोगों के हाथ लग जायेंगे,

(2) ऐसा होते हुए वे देखते देखते रहेगें ।

(3) उनके लिए चाव से देखते देखते उनकी आंखे रह जाएगी ।

(4) इनका कुछ बस न चलेगा ।

28:33 अंधेर सहता, इस शब्द का प्रयोग प्राय: गरीब और समाज से निकाले गये लोगों का फायदा धनवानों के द्वारा उठाये जाने में हुआ परन्तु यहां पर इसका प्रयोग अपने अनाज्ञाकारी लोगों को खण्डन करता है ।

28:35 नख से शिख तक, यह एक विस्तृत बीमार का लक्षण है जिससे एक मनुष्य चंगा नहीं हो सकता है (अय्यु 2:7; याशा; 1:5-6) ।

28:36 तेरे राजा, मूसा को मालूम हुआ कि कभी भी कोई एक राजा होगा (17:14-20) इस्रायली एक गोत्रीय समाज था` वहां पर शाऊल से पहिले कोई राजा न हुआ था (I शमु;8)

NASB **मूलग्रंथ; 28:38-44**

28:38-42 सफलता पर इस्रायल के प्रयत्नों की सूची को दुबारा ध्यान दें, जिसको यहोवा तितर-बितर करेगा :

	इनका कार्य		**परिणाम**
(1)	बहुत सा बीज; पद; 38	-	टिड्डियाँ नष्ट करेगी
(2)	दाख की बारियाँ पद 39	-	कोड़े खा जायेगें
(3)	जैतून के वृक्ष; पद 40	-	झड़ जायेगें
(4)	तेरे बेटे बेटियाँ उत्पन्न होगें; पद41	-	बन्धुआई में चले जायेगें
(5)	सब वृक्ष और उपज, पद 42	-	टिड्डियाँ खा जायेगें ।

28:40 अपने शरीर में लगाना, प्राचीन निकट पूर्वी के लोग सफलता और आनंद के चिन्ह के रूप में जैतून के तेल को अपने चहेरे में लगाते थे (रूत; 3:3; II शमु; 12:20; 14:2) ।

28:43-44 दो-दो पद इस्रायल के अभिनय परिवर्तन और परदेशियों के निवास की व्याख्या करते है :

(1) परदेशी तुम से बढ़ता जायेगा,

(अ) वह तुझ से बढ़ेगा

(ब) तू आप घटता चला जाएगा (पद 13 की परिवर्तन)

(2) परदेशी तुझ को उधार देगा
(पद 12 की परिवर्तन)

(3) परदेशी तो सिर होगें
(पद; 13 की परिवर्तन)

NASB **मूलग्रंथ; 28:4-48**

28:45-48 यहोवा के बाचा के न्याय के प्रभाव और कारण को ध्यान दें :

(1) कारण :

(अ) यहोवा की विधियों और नियम को इस्रायल नहीं सुनेगा और मानेगा, पद;45

(ब) इस्रायल ने यहोवा की सेवा नहीं की; पद 47:

(i) आनंद के साथ (ii) प्रसन्नता के साथ (iii) बहुतायत होने पर धन्यवादित

(2) प्रभाव :

(अ) श्राप

(i) शाप तुझ पर आ पडेगे, पद 45 (ii) पीछे पड़े रहेगें; पद 45 (iii) तुझ को पकडेगें पद 45

(iv) तू नष्ट हो जायेगा, पद 45

(ब) शत्रु

(i) तुम अपने शत्रुओं की सेवा करेगा; पद 48

(1) भूखा (2) प्यासा (3) नंगा (4) पदार्थो से रहित (5) तेरे गर्दन पर लोहे का जुआ

(6) जब तक तू नष्ट न हो जाए (4:25-26)

28:46 सदा के लिए विशेष नियम 4:40 को देखें ।

NASB **मूलग्रंथ; 28:49-57**

28:49 यहोवा तेरे विरूद्ध एक जाति को चढ़ा लायेगा, यह असिरिया और/या बेबीलोन को बताता है (यिर्म; 5:15) (होशे; 8:1) ।

28:50 न तो बूढ़े का मुंह देखकर आदर करेगें, न बालकों पर दया करेगें, असीरिया के लोग, विशेष तौर से बेबीलोन के लोग दूर देश या प्रदेश और दूसरे के घर में पुन: व्यवस्थित होने से पहिले वे बूढ़े (लैव्य 19:32) और बच्चों की हत्या धर्मभ्रष्ट आजादी या जनसंख्या के रूप में करेगें ।

28:51 इस पद में आक्रमणकारी देशों की व्याख्या, योयल, आमोस और मीका की पुस्तकों की टिड्डी की महामारी के समान पूर्ण नष्टकारी स्त्रोत के शब्दों में किया गया है ।

28-52 ऊँची ऊँची और दृढ़ शहरपनाहें जिन पर तू भरोसा करेगा, इस्रायल उनके सैनिक दल की तैयारियों में भरोसा रखेगा (II कुरि; 32:7-8) ।

28:52-57 तू अपने निज बेटे-बेटियों का माँस खायेगा, यह एक घेरा के उददण्ड स्वभाव को दिखाता है (उदा; राक्षसपन, लैव्य 26:29 II राजा 6:24-30; यिर्म; 19:9; विला. 2:20;4:10; यहे. 5:10) ।

NASB मूलग्रंथ; 28:58-68

28:58-68 यदि ..... तो वाचा के नियमों और अनाज्ञापालन के परिणामों को ध्यान दे :

(अ) यदि तू

(1) इन व्यवस्था की सारे वचनों का पालन करने में चौकसी न करें ।

(2) इस आदरणीय और भय योग्य नाम का, जो यहोवा तेरे परमेश्वर का है ।

(3) पद 1,13,15,58;29;9;31:21;32:46 का लेख करें । आज्ञापालन कठिन है ।

(ब) तो

(1) यहोवा महामारियों को लेकर आएगा; पद 59

(i) अनोख दंड (ii) दुष्ट (iii) भारी दिनों तक रहने वाले रोग (iv) भारी-भारी दंड (v) आदि दण्ड

(2) मिस्र के सबे रोगों को फिर तेरे ऊपर लगा देगा, (7:15) जिससे तू भय खाता था (पद; 60)

(3) जितने रोग इस व्यवस्था में नहीं लिखे है; पद 61; उतनी बीमारी को लगा देगा (लैव्य 26:11) अपनी सफलता और अधिकता की प्रतिज्ञा को परिवर्तन करेगा; पद 62-63

(4) यहोवा अपने वाचा के लोगों को तितर-बितर करेगा ओर मिस्र से वायदे के देश के निर्गमन को परिवर्तन करेगा; पद 64

(i) दूसरे देवताओं की उपासना करेगा पद 64

(ii) तू चैन न पाएगा; पद 65 (iii) हृदय काँपता रहेगा पद 65

(iv)आखें धुधंती पड़ जोयगी पद 65, (v) तेरा मन व्याकुल रहेगा, पद 65

(vi) दिन रात थरथराता रहेगा; पद 66, 67 (vii) जीवन का कुछ भरोसा न रहेगा; पद 66

(viii) दास दासी होना पद 68

28:61 इस व्यवस्था की पुस्तक में लिखे है, यह अनिश्चित है; (3) व्य. के सभी (31:24)

(4) व्य. के भाग

(अ) धर्मसहिंता

(ब) श्राप और आशीर्वाद

सचमुच पुस्तक का अर्थ सूचीपत्र है, परन्तु यह सुनिश्चित करता है कि मूसा ने लिखा या किसी ने इसके द्वारा यहोवा की व्यवस्था को लिखे गये को शत प्रमाणित किया ।

28:52 थोड़े ही, यह अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा का परिवर्तन है । परमेश्वर ने वायदा किया था कि वे (1)आकारागण के समान (2) बालू के समान और धूलि के समान

28:63 यहोवा को तुमसे हर्ष होता है इस क्रिया को दो प्रकार से प्रयोग किया गया है :

(1) भलाई करने से (30:9)

(अ) सफल बनाने से

(ब) बढ़ती करने से

(2) श्राप देने से

(अ) सत्यानाश

(ब) भूमि पर से उखाड़ने पर

यहोवा दोनों उपहार को देता है और अपनी संतान को ताड़ना देता है । ताड़नाएँ, पुन: गठित और जमाव के उद्देश्य से है ।

28:65 आंखे धुधंली, इस अध्याय में अनेकों बार दृष्टि के खो जाने को बताता है :

(1) वाचा के अनापाज्ञपालन से यहोवा का दंड, अंधापन में; पदी 28-29

(2) तेरी आंखों के सामने दंझ को देखेगा; पद 30-33

(3) जिन बातों को अपनी आंखों से देखेगा, पागल हो जायेगा; पद 34

(4) दूसरे परिवार के सदस्यों में क्रूर दृष्टि से देखने के लिए अलंकार (उदा; उसकी ओर बुरी दृष्टि होगी) पद 54-56

(5) मिस्र के रोगों में से, जो एक घोर अंधकार का था; पद 60-61

(6) आंखों का धुधंलापन, भय और विनाश,पूर्ण आशाहीनता के लिए अलंकार; पद 65-66

(7) आखों की दृष्टि आगे को भय का करण हुआ; पद 67

❖ ठिकाना, उत; 8 में नूह के दिनों के बाढ़ के विषय में इस का प्रयोग दो बार हुआ है

(1) अरारत पर्वत पर जहाज का रूकना; पद 4

(2) कबूतर को सूखी भूमि को ढूढ़ने के लिए भेजा गया परन्तु इसे ठिकाना न मिला पाया; पद 9

यहोवा अपने लोगों के लिए ठिकाना चाहता है (उदा; प्रतिज्ञा का देश 3:20; 12:9-10; 25:19; यहोशू; 1:13, 15; 21:44) परन्तु इनके विचारपूर्ण वाचा की अनाज्ञाकारिता पुन: निर्गमन को लेकर आयी (उद; देश बहिष्कृत; भ.स;. 95:11) ।

28:68 यहोवा तुझ को मिस्र में लौटा लायेगा निर्गमन का परिवर्तन है इस्रायल का दुबारा दास्तव में होना है ।

तुम्हारा कोई ग्राहक न होगा, क्रिया खरीदना का प्रयोग प्राय: मिस्र के बंधुआई से इस्रायल के बाहर निकलने में यहोवा के खरीदने के लिए हुआ है (निर्ग 15:16; भ.;.74:2) परन्तु यहां पर इस्रायल के भाग्य के लिये हुआ है जहां पर मिस्र के लोग भी दासत्व के लिए उन्हें नहीं खरीदेगें । वे परमेश्वर और मुनष्यों के द्वारा पर्णू रूप से तिरस्कृत किये गये थे ।

विवादपूर्ण प्रश्न :

(1) क्यों श्राम के भाग, आशीषों की अपेक्षा अत्यकिध लंबी है ?

(2) इस अध्याय का क्या उद्देश्य है ?

(3) किस प्रकार कर्म धार्मिकता, यहां पर आशीष के सम्मेलन से संबंधित है ?

(4) क्यों परमेश्वर का न्याय इतना कठोर है ?

(5) इस इस्रायल के इतिहास में ये बातें घटित हुई है ?

*****

व्यवस्था विवरण 29
आधुनिक अनुवादों की वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
मोआबा देश में यहोवा की वाचा को पुन: अवस्था में लाया गया	मूसा का तीसरा प्रवचन (29:1-30:20)	मोआब के देश में परमेश्वर की वाचा	तीसरा उपदेश (28:69-20)
			ऐतिहासिक परिचय
29:1	29:1	29:1	29:1-3
29	29:2-9	29:2-9	29:4-5
29:2-9			29:6-7
			29:8
			मोआब में वाचा
			29:9-14
29:10-13	29:10-29	29:10-15	
20:14-29			29:15-16
		29:16-21	
			29:17-20
			देश बहिष्कृत की धमकी
			29:21-23
		29:22-28	
			29:24-28
		28:29	

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB मूलग्रंथ; 29:1

29:1 जो वाचा बांधने की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, व्य. में यह मूसा का तीसरा प्रवचन था (व्य; 29-30)। वह हमें स्मरण दिलाता है कि ये व्यवस्थाएँ, मेरी नहीं, वरन् यहोवा से हैं।

❖ वाचा से अलग, यह सीनै/होरेब पर्वत की वाचा को (देखें विशेष विषय 1:2;5:2; निर्ग 19-24) और मोआब की भूमि को बताता है (1:5;5:1,3;5/6) निर्ग; 20-31 में स्पष्ट रूप से बहिष्कृत किया गय है । यह निर्ग; 34; व्य; 29-30 और यहोशू, 24 में पुन: व्यवस्थित हुआ है । वाचा के लिए विशेष विषय 4:13 को देखें ।

NASB **मूलग्रंथ; 29:2-9**

29:2 सब इस्रायलियों, सामान्य रूप से यह सिर्फ वृद्धों को बताता है, परन्तु पद; 1-13 के कारण, यह पूर्व देश को प्रकट करता मालूम पड़ता है । इस्रायल के लिए विशेष विषय 1:1 को देखें ।

29:2-3 तुम्हारे देखते .... तुमने देखा है, यह बोली के बाह्य रूप है (4:34 7:19) क्योंकि ये लोग

इनकी संताने थे जिन्होने देखा था (गि; 14:29) । पद 2-8, अध्याय; 1-4 के समान ऐतिहासिक संबंधी पुन: गठित है, जो पूर्वी निकट प्रदेशों के साधारण तत्वरूप था ।

29:4 आज तक, इस्रायल का अंधापन; यहोवा के अंनतकालीय छुड़ौती योजना उनके विशेष स्थान के लिए एकपाचीन समस्या सिर्फ नहीं था (पद 4) परन्तु वर्ततान की समस्या भी थी (मती; 13:14-17; मर, 4:10-12; लूका; 8:9-10; यहु. 12:36 घ-43 प्रे.का. 28:26-27; विशेषत: रोमि 11:25-32)

सुसमाचार को परमेश्वर के पूर्व ज्ञान और पूर्व विचार किया हुआ योजना के रूप में व्याख्या किया गया है (प्रे.का.2:23 और 2:18;4:28;13:29 को लेख करें ।

29:5 और न वस्त्र पुराने हुए.... न जूतियां पुरानी हुई, राशि कहता है जिस प्रकार बच्चे बढ़े हुए उसी प्रकार कपड़े और जूते बढ़े (8:4; नहे; 9:21) ।

29:6 पद 5-6 न्याय की पूर्ण अवधि जिसे जंगल में भटकने की अवधि के रूप में जाना गया है इसी के दौरान परमेश्वर के ईश्वरीय ध्यान या चिंता को दिखाता है (8:2-3) यहोवा पर ध्यानकेन्द्रित करने के द्वारा इस्रायलियों को संबंध के उपकार को स्वीकृत करना था (मनुष्य के हाथ से भोजन, पानी उत्पन्न नहीं हुए है, परन्तु इसके प्रयोजन से है) । परन्तु ये पद परमेश्वर के लोगों की निरंतर आत्मिक अंधापन को दिखाता है । (याशा ; 6:9-10)

29:7 यह इस्रायल के एिल यहोवा की सैन्य दल की उपस्थिति को दिखाता है (गि. 21:21-24; 33-35; और व्य; 2:26-3:17) ।

29:8 ये वे गोत्र है जो यरदन के पूवी किनारे में आश्रित थे (3:12-13; गि; 32:28-32) । केबी 1581; क्वेल पूर्ण और करना, बीडीबी 793; केबी 8898 क्वेल पूर्ण) । इस्रायल के आत्मिक विश्वासयोग्यता का माप दृष्ट आज्ञापालन है । यहोवा से प्रेम करना ही यहोवा की आज्ञा मानता है ।

इस पद को बाद में यहुदी गुरूओं के द्वारा पढ़ा जाता था जब कुछ लोग सामुहिक के बीच में कोड़ा मारा जाता था (25:3) । यह 13 कोडे मारने के लिए 13 बातों को संग्रहित की है । भ.स. 78:38 को भी पढ़ा जाता था ।

NASB मूलग्रंथ; 29:10-13

29:10 तुम खड़े, पद 10-11 में दर्शाये गये इस्रायली समाज के भिन्न-भिन्न समूहों को ध्यान दे : (1) वृद्ध लोग (2) सरदार (3) मुख्य मुख्य पुरूष (4) गोत्र के सब पुरूष (5) बच्चे (6) स्त्रियाँ (7) छावनी में रहनेवाले परदेशी (8) दासों, की व्याख्या इनके दास के लक्ष्य में हुआ है।

ये सभी विभिन्न समूहों को इनके समर्पण, वाचा के प्रति में, इससे जोड़ने के लिए बुलाया गया था (14-15)

29:12-13 यह वाचा की पुन: स्थापित मूल-शब्द है । स्मरण रखें कि किस प्रकार वाचा और शपथ सदृश है । यहोवा के नियम उसके प्रतिज्ञा से जुड़े हुए है । लोगों को स्थापित करने के द्वारा परमेश्वर उत्पत्ति में पूर्वजों से की गई प्रतिज्ञा को उच्चतम स्थान में रखना चाहता है (28:9), वे लोग जो इसके चरित्र को प्रकाशित करें ।

NASB मूलग्रंथ; 29:14-21

29:15 उनको भी, जो आज हमारे संग यहां नही है, यह आनेवाली पीढ़ियों को प्रकट करता है ।

26:16-17 सारांश निक्षेप वाक्य से ये पद, इस्रायल का सामना, मूर्तिपूजक जातियों से वायदे के देश की यात्रा में हुआ था ।

29:18 वाचा की अनाज्ञाकारिता के विरूद्ध चेतावनियों को इस्रायली समाज में प्रत्येक व्यक्ति, सभी समूह और सामाजिक समूह के लिए स्पष्ट रूप से किया गया है (उदा; प्रत्येक जन; परिवार;गोत्र)

29:19 यह सोने कि चाहे मैं अपने मन के हठ पर चलूं, तो भी मेरा कुशल होगा, यह बलवा करने से सोचता है । परमेश्वर का दंड, हालाकि प्राय:देश से देने के लिए यहोवा बुलायेगा (उदा; जो हम बोते है उसे काटते है।

29:20 यहोवा इसका पाप क्षमा नहीं करेगा, किसी भी पश्चाताप किये हए विश्वासी को क्षमा करना और ग्रहण करने की यहोवा की इच्छा की पृष्ठभूमि के विरूद्ध इस अतिश्योक्ति का अवश्य ही देखा गया है । कुछ बाईबल के शिक्षक इस पद का भ.स. 103::9 के साथ जोड़ते है और सुनिशति करते है कि यहोवा के अनुग्रह की सीमितता है । समस्सा , परमेश्वर की क्षमा नही है, परन्तु पापी मनुष्य, मनुष्य का निरंतर पाप है । मानवजाति की ओर से सबंध को तोडा गया है और मानवजाति की ओर से ही टुटन है । अविश्वास और विद्रोही प्रकाशन, विनाश में है, जो थोड समय के लिए और अंनतकाल दोनों में है।

❖ उसका नाम धरती से मिटा डालेगा, इस मुहावरे का अर्थ (1) कोई संतान नहीं या (2) मृत्यु (उत; 7:4; निर्ग, 17:14;32:32; व्य; 9:14; II राजा; 14:27;भ.स.;9:5-6)

29:21 वाचा के सभी श्राम देखें पद 27-28, 27:15-26; 28:15-19, 20-26; 27:37; 38-48, 49-57 ।

NASB **मूलग्रंथ; 29:22-28**

29:22-23 यहोवा की आशीर्वाद, जिसका अभिप्राय उन लोगों को आकर्षित करना था जो इसे नहीं जानते थे, यह परदेशियों के द्वारा मजाक के प्रश्नों में बदल जायेगा : (1) देश की विपत्तियों; पद 22 (2) रोग; पद 22 (3) सब भूमि गंधक; पद 23 (4) लोन से भूमि; पद 23; (5) भूमि जल गई है; पद 23 (6) बोया जाता है, परन्तु कुछ जम नहीं सकता, पद 23 (7) भूमि उपज नहीं देती है; पद 23 (8) भूमि में कोई घास नहीं उगती (9) भूमि उपाड़ के नगरों के समान हो गय (उत; 19:24) सभी को यहोवा ने भेजा (पद 22-28)

29:22 आनेवाली पढ़िया कहेगें, इस शास्त्रीय रूप (उदा; बच्चे प्रश्न पूछें) को 6:20 में पहिले देखा गया है; जो निर्गस 13:8, 14; 10:2; 12:26, 27 को प्रकाशित करती है । व्य. प्राय: बच्चों को शिक्षा देने के विषय को बताती है (उदा; 4:10, 6:7) ।

22:23 सब भूमि गंधक और लोन से भट गई है, मृत सागर के क्षेत्र में समान होगी; जो सदोम और अमोरा का स्थान है (उत; 19:24-26) ।

29:24 सब जातियों के लोग पूछेगें, यहोवा के प्रति इस्रायल, सभी जातियों में एक चिन्ह था इसका अर्थ आशीर्वाद चिन्ह होना था परन्तु यदि दण्डित होता है, तो भी एक चिन्ह है ।

29:25 वाचा को उन्होंने तोड़ा है, ईश्वरीय श्राम का मुख्य कारण यह था और है (IIराजा 17:9-23;II इति, 36:13-21) ।

29:26 पराए देवताओ, शब्दानुसार यह एलोहिम है । यह शब्द बहुवचन में है । इसका सामन्य तौर में अनुवाद परमेश्वर हुआ है । यह स्वर्गदूतों और न्यायियों को भी प्रकट कर सकता है । विशेष विषय देखें; ईश्वरीय नाम 1:3 में ।

29:27 यहोवा का कोप इस देश में भड़क उठा है, इस्रायल के पाप के देश प्रभावित हुआ है (उत; 3:17) और मुख्यतौर से मानव पाप से हुआ है (रोमि; 8:18-22) । परमेश्वर प्राकृतिक उपायोग को मानवजाति के विचारों और उच्चतम स्थानों को रोकने के लिए प्रयोग करता है ।

29:28 यहोवा ने इन्हें उखाड़ दिया यह क्रिया (बीडीबी 684; केबी 737, क्वेल अपूर्ण; I राजा; 14:15; II इति; 7:20 यिर्म; 12:14) बोने का विरूद्धार्थी है । वाचा; परिवर्तित हुई है ।

यहोवा के कार्य की व्याख्या को ध्यान देवे :

(1) कोप (2) जलजलाहट (3) बड़ी क्रोध (4) उखाड़कर दूसरे देश में फेंक दिया (उदा; बहिष्कृत)

29:29 गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में है, यह बताता है (1) मनुष्यों की उपाधि (पद 19-20;) (2) परमेश्वर का पूर्ण ज्ञान; या (3) उसकी भविष्य योजना

❖ जो प्रकट की गई है वे हमारे लिए है, मानवजाति के पास जो प्रकाश है उनके लिए वे जिम्मेदार है (भ.स. 19:1-6; रोमि;1) । यदि वे धर्मग्रंथ को प्रकट किये, तो वे इसके सूची के जिम्मेदार हो । विश्वासी सच्चाई को जान सकते है और इसके लिए जिम्मेवार है ।

विवादपूर्ण प्रश्न :

(1) क्यों परमेश्वर ने प्राय: वाचा को पुन: स्थापित किया (पद 1) ?

(2) क्यों परमेश्वर ने यहुदी की आंखों को अपने उद्देश्यों के प्रति अंधा कर दिया (पद 4-6) ?

(3) क्यों मनुष्य के पाप के कारण भूमि को पीढ़ित होना पड़ता है (पद 27) ?

(4) पद 29 क्या को बताता है ?

*****

व्यवस्था विवरण 30
आधुनिक अनुवादों की वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
परमेश्वर के पास लौटने से आशीर्वाद	मूसा की तीसरी प्रवचन (29:1–30:20)	आशीष और पुनस्थापना की शर्ते	बंधुआई और धर्म परिवर्तन से वापस आना
30:1–10	30:1–5	30:1–10	30:1–5 30:6–10
जीवन और मृत्यु का चुनाव 30:11–14	30:6–10 30:11–14	30:11–14	30:11–14
			दो मार्ग
30:15–20	30:15:20	30:15–20	30:15–20

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB मूलग्रंथ; 30:1–5

30:1 ये सब बातें तुझ पर जब घटें, इस्रायल का भविष्य इनके वाचा के आज्ञापालन पर आधारित दो सच्चाईयों में से एक होगी। यहोवा की इच्छा आशीष देना है, परंतु उनका चुनाव विचार करेगा कि कौन सी सच्चाई (उदा; आशीष और श्राप) उनके भीतर आयेगी। यहां कोई दूसरी चुनाव नहीं है।

30:2 लौटआ, पद 1 में इसी क्रिया का प्रयोग किया गया है जिसमें यहोवा की वाचा पुन: इस्रायल को बुला रही है। यहां पर पश्चाताप के अभिप्राय से प्रयोग किया गया है।

30:2–3 विद्रोह समस्या नहीं है, परन्तु विद्रोह को स्थिर रखना है, जो निरंतर संबंधी विद्रोह है। परमेश्वर की ओर से पश्चाताप सदैव संभव है, परन्तु मनुष्य अपने हृदय को जानबूझकर विद्रोह और अनाज्ञापालन के साथ कठोर रखता है।

❖ प्रभु, परमेश्वर का वाचा नाम यहोवा है जो यहुदी गुरू कहते है कि इसकी दया प्रकाशित होती है (निर्ग; 3:13–14)। विशेष विषय देखें; ईश्वरीय नाम 1:3 में।

❖ परमेश्वर, परमेश्वर के लिए साधारण नाम एलोहिम है जो सामर्थ, शक्ति और बल को बताता है । यहुदी गुरू कहते है कि इसका प्रयोग परमेश्वर के न्याय और धार्मिकता के लिए किया गया है । इन दोनों नामों के बीच की दूरी को भ.स. 103;यहोवा, और भ.स. 104, एलोहिम, के नाम से देखा जा सकता है ।

30:3-4 परमेश्वर तितर-बितर करेगा और इकट्ठा करेगा, ध्यान देवें कि इतिहास के नियंत्रण में परमेश्वर है । वह जातियों और प्रत्येक व्यक्ति का प्रयोग करता है परन्तु वह प्रभुता करने वाला है (याशा; 10:5;44:28-435:1) ।

30:4 धरती के छोर तक, शब्दानुसार यह आकाश के छोर तक है, जो अतिश्योक्ति या निक्षेप वचन है (4:32, 28:64; यिर्म; 31:8) । यह सबसे अधिक दूरी की सभ्यता, को बताता है जिसे वे जानते थे (उदा; प्राचीन निकट पूर्वी और मेडिटरेनियन सभ्यताएँ ।

30:5 जिसके लिए पुरख, अधिकारी हुए थे, यह प्रकट कर सकता है :

(1) पूर्वज (मूसा के दिनों के) (2) बंधुआई से लौटने को

मेरे पढ़ाई के अनुसार #1 उत्तम दिखता है । पद 9 भी इसी समूह को बताता है ।

❖ वह तेरी भलाई, और गिनती में बढ़ाएगा, अब्राहम से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा का यह भाग है (उत; 12, 15,17 इत्यादि)

NASB मूलग्रंथ; 30:6-10

30:6 यहोवा तेरे मन का खतना करेगा, यह परमेश्वर के वचन को खुले और ग्रहण योग्य सुनने की अंकार है । पद; 17 में विरूद्धार्थी निर्दिष्ट है । इस्रायल को 10:16 और यिर्म; 4:4; 9:25-26 में इस आत्मिक कार्य को करने के लिए बुलाया गया है (रोमि 2:28-29)

तथापि यहां परमेश्वर अवश्य करता है । पमरेश्वर के प्रभुत्व और मनुष्य के कार्य के बीच में तनाव को यहे. 18:31 बनाम 36:26 में देखा गया है । यहां पर एक उचित आत्मिक गुण को खतना अलंकृत करता है ।

❖ मन, इब्रीयों के लिए यह मानसिक कार्यकलापों का केन्द्र था । विशेष विषय 2:30 को देखें अलंकार संबंधी अभिप्राय के लिए हुआ है (1:8; 4:37;10:15;11:9; 28:46-59, 30:6,19;31:21;34:4) ।

❖ प्राण, यह इब्रानी शब्द नेफेश है (बीडीबी 659) देखें लेख 11:13 में ।

30:8-9 यह प्रकाशित करता है जो परमेश्वर इस्रायल और पूरे विश्व के लिए करना चाहता था।

30:10 यदि .... यदि, यह वाचा के शर्तपूर्ण स्वभाव को दिखाता है । इस आज्ञापालन को स्मरण रखें (सुनना और मानना) जो ईमानदारी और पूर्ण समर्पण (पूरे हृदय और पूरे मन के साथ) के साथ समानांतर है ।

NASB मूलग्रंथ; 30:11-14

30:11-14 इस्त्रायल के लिए, यहोवा की इच्छा असंभव नहीं थी, (28:29) । यह पद पूर्ण भ्रष्टता को सुधार करने वाले सिद्धांत के मूल्य को कम करता मालूम होता है । पुराने नियम ऐसे अनेकों स्थान है जहां पर मनुष्य को पाप करने से रोकना संभव है (उदा; 4:7) ।

30:12 कौन आकाश तक चढ़कर पौलूस इसका प्रयोग रोमि; 10:6-9 में करता है । संभवत: यह एतान के सुमेरियन सेनापति को प्रकाशित करता है, परन्तु संभवत: यह परमेश्वर के प्रभुत्व जो इब्रानी दृष्टि को संबंधित करता है ।

आज्ञात्मक अभिप्राय से इस पद में कई क्रियाओं का प्रयोग हुआ है -

(1) करे या चढ़कर

(2) हमको सुनाये

(3) हम इसे मानें

30:13 समुद्र पार, कुछ लोग इसे बेबीलोन की बाढ़ के संदर्भ जो गिलगामेश एपिक कहलाता है इससे संबंधित देखते है, परन्तु यह संभवत: पृथ्वी के छोर की अलंकार या विक्रय से यहुदी भय संबंध को बताता है ।

30:14 परन्तु वचन तेरे बहुत निकट, वरन तेरे मुह और मन ही में है, यह योहवा के द्वारा प्रकट की गई वाचा है । प्राचीन पूर्वज धर्मग्रंथ को जोर से पढ़ते थे । उनको उचित रूप से आतंरित उत्तर या जवाब को देना पड़ता था, जो उन्होंने सुना था (उदा. स्वयं पढ़े और जोर से पढ़े) ।

❖ ताकि तू इस पर चले, मनुष्य को निर्णय अवश्य लेना है । ऐसा करना यह इसकी योग्यता में है । परमेश्वर आरंभ करता है परन्तु मानवजाति को प्रतिउत्तर और पश्चाताप, विश्वास और आज्ञापालन में निरंतर प्रतिउत्तर देना अवश्य है ।

NASB मूलग्रंथ; 30:15-20

सुन, इस क्रिया का प्रयोग अधिक ध्यान देने, के मुहावरा के रूप में हुआ है ।

30:16-18 ये पद वाचा के शर्त और परिणामों का सारांश है :

(1) दायित्व

(अ) प्रेम करना, पद 16 (ब) उसके मार्गो मे चलना, पद 16

(स) इसकी आज्ञाओं को मानना पद, 16

(2) आज्ञापालन के परिणाम

(अ) तू जीवित रहे, पद 16 (ब) तू बढ़ता जाए, पद 16 (3) तुझे आशीष दे पद16

(3) अनाज्ञापालन के शर्त और परिणाम

(अ) यदि तेरा मन भटक जाए, पद 17 (ब) यदि तु न सुने, पद 17

(स) मूर्तिपूजा

(i) भटककर (ii) दण्डवत करें (iii) उपासना करें

(द) नि:सन्देह तू नष्ट होगा, पद 18

(ध) तुम बहुत दिनों के लिए रहने न पाओगे, पद 18

ध्यान दें कि पद 20 कैसे इन वाचा के दायित्वों की संख्या को बढ़ाता है, ताकि पूर्वजों से संबंधित आशीर्वाद पूर्ण हो सकें । यह शब्द सिद्धांत व्य. का चरित्र गुण है ।

30:19 मैं आकाश और पृवी को इस बात की साक्षी बनाता हूं, इस्रायल की वाचा के प्रति ये गवाह या साक्षी अनोखे नहीं थे, परन्तु कई प्राचीन निकट पूर्वी ग्रंथों में ये पाये गये है । परमेश्वर के सृष्टि के ये दो बने रहने वाले भाव (उत;1:1) परमेश्वर के दो मांग की हुई गवाह के रूप में कार्य करते है (17:6; 19:15; गि; 35:30) । यह कानूनी महत्व ८; में कई बार प्रकटीकरण होता है (4:26; 30:19;31:28;32:1) ।

30:20 क्वेल अनिश्चित निर्माण की श्रेणी यहां है जो वाचा को संक्षिप्त करती है :

(1) दायित्व (अ) प्रेम करो (ब) बातें मानो (स) लिपटे रहो

(2) परिणाम

(अ) इस देश में बासा रहेगा

देखें लेख 30:16-18 में । यहोवा की वाचा ने प्रारंभिक और निरंतरता का विश्वास, प्रेम, आज्ञापालन और दीर्घ प्रयत्न की मांग यिा है ।

यहोवा ने इस्रायल के पूर्वजों को देश देने का वायदा किया (उत; 12:7; 13:14-17; व्य. 9:4-6) परन्तु इस्रायल को उसके वाचा की मांगों को मानना है या देश अधिकार खो देगी (11:31-32; 28:36; 63:68; 30:19-20)

विवादपूर्ण प्रश्न :

1. इस अध्याय का केन्द्रीय या मुख्य सच क्या है ?

2. क्या यह अध्याय किसी व्यक्ति के विश्वासी होने को या विश्वासियों को विश्वासयोग्य रहने के बारे

बताता है ?

3. क्या यह अध्याय पौलूस की शिक्षा जो व्यवस्था को मानने में मानवजाति की अयोग्यता के विषय में मतभेद करती है (उदा;गल; 3 रोमि:3)

*****

व्यवस्था विवरण 31

आधुनिक अनुवादों की वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
यहोशू, इस्रायल का नया अगुवा	मूसा के जीवन की घटना की समाप्ति	मूसा का उत्तराधिकारी यहोशू बनता है	यहोशू की नियुक्ति
31:1-8	31:1-6	31:1-6	31:1-6
	31:7-8	31:7-8	31:7-8
हर सातवें वर्ष व्यवस्था का पढ़ा जाना		हर सातवें वर्ष व्यवस्था का पढ़ा जाना	व्यवस्था को धार्मिक विधि से पढ़ना
31:9-13	31:9-13	31:9-13	31:9-13
इस्रायल के विद्रोह की भविष्यवाणी		मूसा को यहोवा की अंतिम आज्ञा	यहोवा की आज्ञा
31:14-15	31:14-15	31:14-15	31:14-15
31:16-23	31:16-22	31:16-18	31:16-18
			गवाहों के गीत
		31:19-21	31:19522
		31:22	
	31:23	31:23	31:23
			वाचा के संदूक के पास व्यवस्था को रखा गया
		31:24-27	31:24-27
			गीत को सुनने, इस्रायल इकट्‌ठा होते है (31:28-32:44)
मूसा के गीत (31:30-32:47)		मूसा के गीत (31:30-32:44)	31:28-29
31:30	31:30	31:30	31:30

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB मूलग्रंथ; 31:1-6

31:1 ये सब बातें सुनाई, संभवत: यह बोलना समाप्त होने को बताना चाहिए । यह मूसा के तृतीय प्रवचन का अंत है।

31:2 मैं एक सौ बीस वर्ष का हूं, मूसा के 120 वर्ष के जीवन को (34:7) तीन 40 वर्ष में विभाजन किय जा सकता है । मिस्र के राजकीय क्षेत्र में मूसा 40 वर्ष तक तैयार हो रहा था, इसकी बुलाहट के लिए 40 वर्ष तक मरूस्थल में प्रशिक्षण, जलते हुए झाड़ी के पास उपस्थित समय से लेकर 40 वर्ष, (निर्ग; 7:7; और प्रे.श. प:23) । क्यों इसकी आयु को दर्शाया गया है ? यहां पर तीन संभवत: कारण है (1) मिस्र के साहित्य में एक बुद्धिमान मनुष्य की आयु 110 वर्ष की होती थी, परन्तु सिरिया में 120 वर्ष होती थी (2) उत; 6:3 में आयु की सीमितता या (3) मूसाा की दूसरी बहावा कि क्यों वह वायदे के देश तक उन्हें अगुवाई नहीं कर जायेगा ।

31:3 तेरे आगे पारा जानेवाला तेरा परमेश्वर यहोवा ही है, परमेश्वर इनके लिए लड़ाई करता है, हालांकि इन्हें युद्ध और भाग लेने के लिए तैयार रहना है (पद; 3-6; पवित्र युद्ध शब्द किया) परमेश्वर के द्वारा मूसा औजार के रूप में प्रयोग किया गया । स्वयं परमेश्वर वह था जिसने लोगों को छुड़ाया । वास्तव में वह यहोवा है, न कि यहोशू, जो अपने लोगों के सामने युद्ध में जाता है ।

❖ यहोशू तेरे आगे पार जायेगा, क्योंकि मूसा की अनाज्ञाकारिता के कारण एक नये अगुवे आवश्यकता थी । परमेश्वर यहोशू क साथ रहेगा, परन्तु इसे भी इसके वाचा के कर्तव्यों को करना होगा (1:38; 3:28) ।

31:6 हियाव बांध, और दृढ़ हो, इस पद में अनेक आज्ञात्मक रूप है :

(1) हियाव बांध- पद 7, 23 (2) दृढ़ हो पद 7,23 (3) न डर, (4) न भयभीत हो; 1:29; 7:21; 20:3; यहोशू ;1:9

मूसा के द्वारा गि. 1 और 2 यहोशू को, पद 7 में दुहराया गया है और पद 8 में गि. 3 और 4 को दुहराया गया है ।

NASB मूलग्रंथ; 31:7-8

31:7 यह लोगों को सामर्थ प्रदान करना है˙ यह 1:38 और 3:28 की पूर्णता है ।

31:8 वह तेरे संग रहेगा, पुन शुरूआत है मैं तुम्हारे संग रहूंगा; पद 23 में । यहोवा की निजी उपस्थिति का वायदा महान आशीष है जिसे किदया गया है निर्ग; 3:12; 4:12, 15-33:14-16 व्य. 4:37, यहोशू, 1:5) । यही कारण है कि क्यों यहोवा के अनुयायी और लोगों को किसी भी व्यक्ति या चीजों से भयभीत नहीं होना चाहिए ।

NASB **मूलग्रंथ; 31:9-13**

31:9 मूसा ने इस व्यवस्था को लिखा मूसा ने लिखा कई बार पंच पुस्तक में यह कहता है (निर्ग; 17:14;24:4, 22; 34:1, 27,28 ; गि. 17:2, 3; 33:2; व्य; 4:13 5:22; 31; 9, 22) । मूसा ने इस्रायल को आनेवाली पीढ़ियों के लिए परमेश्वर की इच्छा को प्रमाण के अनुसार करने के लिए व्यवस्था को दिया ।

❖ लेवीय, याजकों को यह आश्चर्यजनक है कि वास्तव में कौन याजक है इसके लिए कुछ विचलन है :

(1) लेवी के गोत्र (सदैव)

(2) हारून के पुत्र (प्राय:)

सभी याजक लेवीय है, परन्तु सभी लेवीय याजक नहीं हैं ।

❖ वृद्ध लोगों को, यह गोत्र के वृद्धों को बताता है । इस पद में मूसा इस्रायल के धार्मिक और सांसारिक (उदा. गोत्र) अगुवों को व्यवस्था सौपता है । किन्तु, वास्तव में, सभी इस्रायल के अगुवों और व्यवस्थाओं को धार्मिक के रूप में देखा गया था (उदा; यहोवा की इच्छा) ।

31:10 इस पद में दो दिनांक को बताया गया है :

(1) एक जो प्रति वर्ष या, झोपड़ियों का पर्व

(अ) निर्ग; 23:16-17; 34:22 (ब) लैव; 23:33-43 (स) व्य; 16-13-15

(2) एक जो सात सात वर्ष के बिताने पर (उदा; सातवां वर्ष)

(अ) निर्गस 23:10-11 (ब) लैव्य 25:1-7 (स) व्य. 15:16

यहां पर मूसा वाचा की निरंतर धार्मिक विधि पढ़े जाने के लिए जोड़ता है ।

झोपड़ियों का पर्व एक वार्षिक वृतांत था जिसका उद्देश्य इस्रायल को मिस्र से छुटकारे का कार्य जो यहोवा के द्वारा अनुग्रहपूर्ण और सामर्थी था और जंगल परिभ्रमण के दौरान उसकी प्रयोजन एवं उपस्थिति को स्मरण करना था ।

विशेष विषय : इस्रायल के पर्व

I. मूसा के वार्षिक पर्व (निर्ग; 23:14-17; लैव्य 23; गि; 28; व्य; 16

(अ) सभी यहुदी पुरूषों को तीन वार्षिक पर्वों में सम्मिलित होना था । (निर्ग 23:14, 17;34:23) यदि संभव है ।

(ब) इन पर्वों में कृषि संबंधी और राष्ट्रीय महत्व भी है ।

(स) प्रत्येक, विश्राम का दिन, आराधना और सामूहिक संगति था ।

(द) मांग की हुई तीन वार्षिक पर्व

(1) फतह का पर्व (निर्ग; 12:1-14, 21-28; लैव्य 23:4-14; गि; 28:16-25; व्य; 16:1-8)

(अ) जौ की फसल की समर्पणता और धन्यवाद

(ब) निर्गमन की स्मरणार्थ उत्सव मनाना

(स) अखमीरी रोटी के पर्व के आठ दिन के बाद यह था (निर्ग;12:15-20; 34:18-20)

(2) पेन्तिकुस्त (सप्ताह का पर्व; निर्गस 23:16; 34:22)

(अ) गेहूं के फसल की समर्पणता और धन्यवाद

(ब) जंगल परिभ्रमण अवधि के प्रारंभ की स्मरणार्थ उत्सव मनाना

(स) निर्ग; 23:16; 34:22; लैव्य; 23:34-44; व्य; 16:13-17 को देखें

(द) आठ दिन के पर्व के बाद यह था (लैव्य 13:36; गि; 29:35-38)

(घ) दूसरे वार्षिक पर्व

(1) नव वर्ष का उत्सव (रोश हाशनाह)

(अ) लैव्य; 23:29-25; गि; 29:1-6

(ब) टीसरी के प्रथम दिन पर इस विश्राम के दिन और बलिदान को रखा गया था

(स) इस दिन का पर्व भाव; नये नियम में बहुत ही साधारण था। यह टोरह में दर्शाया नहीं गया है

(2) प्रायश्चित का दिन - ढाँपने का दिन, या योम किरपुर (सिर्फ उपवास दिन)

(अ) विश्राम, उपवास और पश्चाताप का दिन

(ब) संगी अशुद्धता को दूर करने के लिए धार्मिक विधि (तंबू, याजक और लोग)

(स) निर्ग; 30:10; लैव्य 16; 23:26-32; 25:9;गि 29:7-11

(द) यह सही बताना कठिन है कि कब इस पर्व को बंधुआई से निकलने के बाद पुन: डाला गया था।

II. मूसा-संबंधी पर्वो के दूसरे दिन

(अ) सब्त

(1) विश्राम और आराधना के सप्ताह का दिन

(2) उत; 2:1-3; गिर्ग; 16:22-30; 20:8-11, 23-12; 31:12-16; लैव्य; 23:1-3; गि; 28:9-10

(ब) सातवां वर्ष

(1) हर सातवें वर्ष में भूमि को विश्राम करना है (कोई बोआई नहीं)

(2) निर्ग; 23:10-11; लैव्य 25:1-7; व्य 15:1 को देखें

(3) यह बताता है कि यहोवा ने भूमि को खरीदा और इस्रायल को दिया

(4) सभी दासों को आजाद करना, (निर्ग 21:2-6) और सभी कर्ज माफ करना था व्य; 15:1-6)

(स) पचासंवा वर्ष

(1) हर एक सातवें वर्ष का सातवा वर्ष (उदा; पचासवा वर्ष; 50 वां वर्ष)

(2) लैव्य; 25:8-18; 27:17-24 देखें

(3) कर्ज को छोड़ना और भूमि को वापस करना, दोवों को मुक्त करना (लैव्य; 25:10;13 बहुत ही समान है सातवां वर्ष से)

(4) इसका उद्घाटन समारोह को कभी भी लेख प्रमाणित नहीं किया गया है ।

(द) नया चांद

(1) विशेष भेंट और विश्राम का दिन

(2) गि; 10:10; 28:11-15 देखें

(3) संभवत: तंबू के स्थापित करने के कारण स्मरणर्था उत्सव मनाया गया (निर्ग, 40:2,17)

(4) चंद्रमा संबंधी चक्र पर यहुइी कलेण्डर आधारित है ।

31:11 इस स्थान पर जिसे वह चुन लेगा, मूसा के दिनों में यह पद; वर्ष में तीन बार सभी पुरूषों के एकत्र होने को बताता है (लैव्य; 23) जो तम्बू में होते थे (निर्ग; 20:24; व्य; 12:5, 11, 13; 14:25; 15:20; 16:7, 16; 17:8, 10, 18;6; 26:2

❖ यह व्यवस्था सब इस्रायिों को पढ़कर सुनाना, यह वाचा के पुन: स्थापित का वृतान्त था । व्यवस्था, स्पष्ट रूप से प्रकट की गई थी (उदा;पढ़ा गया) और इस्रायलियों ने स्वयं इसे मानने के लिए समर्पित किया था । इस्रायली समाज के प्रत्येक लोग मौजूद थे (पद 12-13), यहां तक नयी पीढ़ी भी थी (उदा; बार मिजवाह की उदा; याशा; 7:16) ।

सिर्फ आने वाले राजा, और न ही वर्तमान में अगुवों के लिए व्यवस्था थी, परन्तु उनकी पीढ़ियों से आनेवाली सभी लोगों के लिए और वहां के निवासी परदेशीयों के लिए भी था ।

31:12 वे सुनकर ... सीखें.... भय खायें, क्रियाओं की बढ़ोत्तरी को ध्यान दें

(1) सुनना - बीडीबी 1033, केबी 1570, क्वेल अपूर्ण;व्य. में सामान्य अर्थ, सुनों, इसी प्रकार से करने के लिए

(2) सीखना, बीडीबी 540, केबी 531; क्वेल अपूर्ण

(3) भय खाना-बीडीबी 431, केबी 432; क्वेल पूर्ण (नीचे दिये गये अंतिम वाक्यखंड को देखें)

(4) पालन करने में चौकसी करना

(अ) बीडीबी 1036, केबी1581, क्वेल पूर्ण(ब) बीडीबी 793, केबी 89, क्वेल अनिश्चित निर्माण ध्यान देवें कि #1,2,3, को पद 13 में नयी पीढ़ी से संबंध बनाने के लिए, जो अभी तक नहीं जानते थे । दुहराया गया है (बीडीबी 393, केबी 390, क्वेल पूर्ण) इस व्यवस्था का अर्थ इस्रायल के बढ़ती पीढ़ियों के द्वारा मानने और जानने से था ।

किसी प्रकार से यह मुझे एज़्रा को स्मरण दिलाती है (एज़्रा. 7:10) । इस्रायल को यहोवा का भय और आदर रखना था (4:10; 14:23; 17:19) परन्तु दूसरे किसी चीज या लोग से भय न खाना था ।

NASB मूलग्रंथ; 31:14-18

31:14 बुलावा.... उपस्थित, ये दोनों आज्ञात्मक है ।

(1) बुलाना - बीडीबी 894, केबी 1128, क्वेल आज्ञात्मक

(2) उपस्थित होना - बीडीबी 428, केबी 427, हितपायल आज्ञात्मक (यहोवा के द्वारा कार्यालय आज्ञा को यह बताता है; I शमु; 10:19 या वाचा की पुन: स्थापना; यहोशू 24:1) ।

❖ कि मैं उसको आज्ञा दूं, पद 7 में मूसा, यहोशू को लोगों के सामने बुलात है । यहां पर मूसाऔर यहोशू को लोगों के सामने यहोवा स्वयं के पास बुलाता है ।

31:15 बादल के खंभे, यही बादल का खंभा था जिसने मिस्र की सेना से इस्राइल की संतान को अलग किया था (निर्ग; 13:21-22) यही खंभा जिसने मंदिर को भरा था, जब याशायाह ने परमेश्वर को ऊँचा और ऊपर उठाये जाने को याशा; 6 में देखा था । यह परमेश्वर की उपस्थित का स्पर्शीय चिन्ह था । यह इस्रायलियों के साथ इनके पूरे जंगल परिभ्रमण के दौरान रहता था । यह विभिन्न तरीकों में कार्य किया हुआ है :

(1) यह यहोवा की उपस्थिति को दिखाया हुआ है ।

(2) यह इस्रायलियों को एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए अगुवाई किया है ।

(3) दिन में यह इन्हें छाया प्रदान किया है ।

(4) रात्रि मं यह इनके तंबू में रोशनी दिया है ।

एक बार जब वे यरदन को पार किये, यहोवा की उपस्थिति वाचा के संदूक पर प्रकट हुई, परन्तु बादल छिप गया ।

31:16 ये लोग उठकर, व्यभिचारी हो जायेगें, यह इस्रायल के मूर्तिपूजा के निरतर पाप को बताता है जिसे यहोवा पहिले से जाना हुआ है (4:15; 28; 31:29)।

31:17 मेरा कोप इन पर भड़कगा, इस क्रिया का प्रयोब प्राय: यहोवा के क्रोध से हुआ है : (1) मूसा के लिए; निर्ग 4:14 (2) इस्रायल के लिए, निर्ग; 22:24;32:10 गि. 11:1,10; 32:10 व्य; 6:15; 7:4:11:17; 31:17; (3) जासूसों के लिए गि; 12:9 (4) बालाम के लिए; गि;22:22 (5) देश के लिए व्य; 29:26

31:18 पद 17 की धमकी (उदा;इनसे अपना मुंह छिपा लूंगा) को महत्वता देकर दुहराया गया है।

NASB **मूलग्रंथ; 31:19-22**

31:19 तुम यह गीत लिख लो, परमेश्वर के लिए यह इस्रायल के भविष्य कार्यों के विरूद्ध में एक गवाह या साक्षी होगा । यह, सचमुच, एक कानूनी अलंकार है 4:26;30:19; 31:28; यहोशू 24:22) प्रत्येक आने वाली पीढ़ी को यहोवा के व्यवस्था की शिक्षा देना इस्रायलियों का दायित्व था ।

31:20 और खाते-पीते इनका पेट भर जाये, और ये हृष्ट-पुष्ट हो जायेगें, तब ये परायें देवताओं की ओर फिरकर, परमेश्वर के लोगों के लिए, सबसे अधिक कठिन का समयअत्यधिक हृष्ट-पुष्ट होने के समय में है । हम अत्यधिक आसानी से भुलने की ओर झुक जाते है (6:10-15; 8:11-20; 32:15-18)

31:21 जब बहुत सी विपित्तियां और क्लेश इन पर आ पड़ेगें, ये विपत्तियां और क्लेश पद 17 में दर्शायी गई है जो 4:30 में पहिले से बतायी गयी थी ।

NASB **मूलग्रंथ; 31:23**

31:23 31:6 में मूसा ने इन वचनों को इस्रायलियों से कहा । मूसा ने इन वचनों को 31:7 में यहोशू से कहा (1:38; 3:28) । अब (पद 23) यहोवा इन बातों को यहोशू से सीधे रूप से कहता है (यहोशू; 1:6, 7,9), जो मूसा के साथ तंबू के द्वार पर खड़ा था ।

(1) हिसाब बाँध (2) दृढ़ हों

❖ मैं आप तेरे संग रहूंगा, यह कथन सर्वनाम वह पद 23 अ की पहचान करती है । यह यहोवा का उत्तर उपहार है (निर्ग; 3:12, 4;12,15;33:14-16; व्य; 4:37; 31:6,8; यहोशू 1:5) ।

NASB **मूलग्रंथ; 31:24-29**

31:26 संदूक के पास केजेवी में है, परंतु उत्तम अनुवाद पास है और संदूक के लिये निर्ग 25:10-22 देखें ।

स्पष्ट रूप से पुराने नियम में सिर्फ पत्थरों के दो पटियाओं पर, जिसमें परमेश्वर ने दस आज्ञाओं को लिखा (निर्ग 31:18) वाचा में रखा गया था (साथ ही इस टुकड़े को भी जिसे

मूसा ने तोड़ दिया था, उदा; निर्ग 32:19;34:1) । वहां पर दूसरे और तीन चीजों को संदूक के पास रखा गया था :

(1) मन्ना का पात्र निर्ग; 16:33-34

(2) हारून की छड़ी, गि; 17:10

(3) मूसा के द्वारा लिखी गई इस व्यवस्था की नकल

31:27 क्योंकि तेरे हठीपन और बलवा मुझे मालूम है, इस्रायल के विद्रोही विचारों को मूसा ने अपने जीवनकाल के दौरान अनुभव किया था (पद;21) (9:7-29) ।

31:28 इस पद में तीन आज्ञात्मक रूपी क्रियाएँ है :

(1) इकट्ठा करो

(2) सुनाकर

(3) बुलाओ

मूसा, अगुवों को सूचित करता है (उदा; अगुवे और सरदारों) जो सभी इस्रायलियों को, सीधे रूप से चिन्हित करते है॑ यह एक प्रस्तुत करने वाले राष्ट्रीय सलाह का बता सकता है (उदा; न्या; 21:16) ।

❖ आकाश और पृथ्वी को उनके विरूद्ध साक्षी बनाऊँ, वाचा के संदर्भ में प्राय: दृढ़िकरण गवाहों को दर्शाया गया है (4:26; 30:19;31:28; 32:1) ।

इस अध्याय में दो अन्य गवाह भी है :

(1) मूसा के गीत; पद 19, 21

(2) व्यवस्था की पुस्तक; पद 26

31:29 मूसा की मृत्यु के बाद नीचे की बढ़ोत्तरी और भविष्यवाणी को ध्यान दें (यहोशू; 24:19-28);

(1) तुम बिगड़ जाओगे - 4:16, 25, 9:12

(2) छोड़ दोगे

(3) तुम वह काम करोगे, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है

(4) अपनी बनाई हुई वस्तुओं के कारण इसको रिस दिलाओगें (उदा; मूर्तिपूजा)

31:30 इस पद को अध्याय 32 के साथ होना है ।

विवादपूर्ण प्रश्न :

(1) क्यों परमेश्वर अगुवों को बदल रहा है ?

(2) कैसे यह अध्याय परमेश्वर का पूर्व ज्ञान और मनुष्य के चुनाव से संबंधित है ।

(3) क्यों इस्रायल मुड़कर, परमेश्वर से दूर हुआ ?

*****

व्यवस्था विवरण 31:30-32:20
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
मूसा के गीत	मूसा के गीत	मूसा के बीत	गीत सुनाने के लिए इस्रायलियों
(31:30-32:47)	(31:30-32:47)	(31:30-32:44)	का एकत्रीकरण
32:1-14	32:1-43	21:1-43	32:1-44
(पद1-6)	(पद 1-3)	(पद 1-3)	(पद 1-3)
(पद 7-9)	(पद 4-9)	(पद 4-6)	(पद 4-6)
(पद 10-12)	(पद 10-27)	(पद 7-9)	
(पद 13-14)		(पद 10-12)	(पद10-11)
32:15-18			(पद 12-14)
32:19-22		(पद 13-14)	
32:23-27		(पद 15-18)	(पद 15-39)
32:28-33	(पद 28-33)	(पद 19-22)	
32:34-43		(पद 23-27)	
(पद 34-35)	(पद 34-38)	(पद 28-33)	
(पद 36-38)			
(पद 39-42)	(पद 39-43)	(पद 34-38)	
(पद 43)			
32:44-47	(पद 44-47)	(पद 39-42)	
			(पद 40-43)
		(पद 43)	(पद 43)
		(पद 44)	(पद 44)
		मूसा की अंतिम आज्ञाएँ	व्यवस्था जीवन का स्त्रोत
		32:45-47	32:45-47
नबों पर्वत पर मूसा को			मूसा की मृत्यु को
मरना होगा			पहिले से बताया जाना
32:48-52	32:48-52	32:48-52	32:48-52

<u>शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन</u>

NASB मूल ग्रन्थ 31:30

31:30 तब मूसा ने .... गीत के वचन को यह पद व्य 32 अध्याय के साथ होना चाहिए । ध्यान दें कि NASB इसे अंतिम विसर्ग चिन्ह के साथ वाक्यखंड की प्रारंभिक के रूप में चिन्हित करता है, न कि अवधि में (JP\SOA)।

❖ इस्रायल की सारी सभा में कह सुनाया कितने लोग इस सभा को बनाये है ।यह पुरूष, स्त्रियों और जवान या 31:12 के नमूनों को संलग्न किया होगा । परन्तु यह नगर या शहर को बताया हुआ है । एक मनुष्य के बोलने पर कितने लोग सुनने के योग्य होगें ? सामान्य तौर पर अगुवा ने इनसे कहा :

(1) गोत्र के अनुवों और उन्होंने इसे आगे बढ़ाया (31:28)

(2) लेवीयों को और उन्होंने इसे आगे बढ़ाया ।

NASB मूल ग्रन्थ 32:1-14

32:1-3 यहां पर आज्ञात्मक बोलियों की श्रेणियां है :

(1) पद 1 में तीन प्रकार के सुनने से संबंधित

(अ) कान लगा (ब) बोलू (स) सुन

(2) पद 2 में दो प्रकार के आद्रता या गीलापन

(अ) बरसेगा (ब) टपकेगा

(3) पद 3 में आरोपण करना (संभवत; प्रचार करना)

32:4 चट्टान इस नाम का प्रयोग पद 15, 18, 30 और भ.स. 18:1-2, 19:1; II शमु 22:2 भ.स. 78:35; याशा; 448 में परमेश्वर के लिए किया गया है । यह बताता है (1) एक सच्चे परमेश्वर के अपरिवत्ति स्वभाव, स्थिरता, सामर्थ या (2) परमेश्वर बलवान, दुर्जय किला के समान है ।

❖ खरा इब्रानी शब्द का अर्थ आत्म पूर्ण, संपूर्णता, पूर्णता (II शमु.22:31 भ.स. 18:30)

32:5 जिस प्रकार से पद 3-4 में यहोवा का वर्णन किया गया है, अब उसके वाचा की संतानों को, जिन्हें इसके चरित्र को प्रकाशित करना था (पद 3-4) परन्तु नहीं किये उनका वर्णन किया गया है :

(1) ये बिगड़ गये है

(2) ये उसके पुत्र नहीं है -

(3) क्योंकि उनके कलंक के कारण

(अ) शारीरिक दोष जो एक व्यक्ति को याजकीय कार्य से बहिष्कृत करती थी, लैव्य 21:17, 18,21, 23; और जानवरों या पशुओं को बलिदान होने से लैव्य 22:20–21 व्य 15:21:17:1

(ब) नैतिक कलंक या दोष, लैव्य 22:25 अय्यु 11:15; नीति 9:7

(4) टेढ़े, पद 20 मूल अर्थ मोड़ा गया है, जो यहोवा के चरित्र (धर्मी) के नियम से अलगाव को सूचित करता है ।

(5) तिरछे – बीडीबी 836, सिर्फ यही पाया गया है, #4 के अर्थ के सदृश है ।

32:6 तेरा पिता मूसा का यह गीत परमेश्वर की व्याख्या करने के लिए प्रारंभिक प्रयोग है (निर्ग, 4:22 व्य; 1:31; 8:5 और बाद के भविष्यवक्तताओं में याशशा; 1:2, 63:16 यिर्म 3:19 होशे; 11:1–3 मला. 1:6) । परमेश्वर को पैतृत्व में पद 6, 18 और 19–20 में दर्शाया गया है ।

32:6–14 इस इस्रायल का वर्णन निंरतर करती है और उनके विरूद्ध में कानूनी जुर्म को यथाक्रम के द्वारा प्रारंभ करती है इन सभी कार्यों को जो उनके लिए यहोवा ने किया था :

(1) परमेश्वर की ओर उनका कार्य

(अ) मूढ़ (ब) निर्बुद्धि

(2) उनकी ओर परमेश्वर का कार्य

(अ) वह उनकार पिता था पद (ब) उसने इन्हें बनाया था; पद 6– उत: 14:19, 22

(स) उसने इन्हें पद 6 – अय्यु 31:15; याशा : 62:7 स्थिर किया

(द) उसने उन्हें पाया पद 10– (i) मरूभूमि में (ii) सुनसान जंगल में

(ध) उसने इनके चारों ओर रहकर पद 10– उदा. सुरक्षा प्रदान किया

(न) उनकी सुधि ली पद 10

(च) उनकी रक्षा की पद 10– भ.स. 25:21; 31:23; 41:11 61:7 याशा 26:3 42:6; 49:8

(फ) माता इकाब के समान इनको देखभाल की पद 11; निर्ग 19:4

(i) घोसले को हिला हिलाकर – उदा; कार्यरत करने के लिये

(ii) ऊपर मण्डलाता – उत 1:2 (iii) बच्चों को उडना सिखाता है

(क) पंख फैलाकर (ख) पकडकर (ग) परों पर उठाया

(ब) वह उनकी अगुवाई करता है, पद 12

(भ) उसने इसको पृथ्वी की ऊंची–ऊंची पर सवार कराया पद 13–1याशा 58:14

(म) उसने उन्हें खिलाय पद 13–14 (i) खिलाई (ii) चुसाया (iii) पिया

32:7 यहोवा के ध्यान और प्रयोजन को इस्रायल को स्मरण कराने से संबंधित इस पद में अनेकों आज्ञाएँ है :(1) स्मरण करो(2) विचारों (3) पूछो (4) वृद्ध लोग तुझ से कहेगे

32:8 यह पद निश्चित करता है कि इस्रायल का परमेश्वर ही सिर्फ परमेश्वर है (4:35, 39; याशा 54:5, यिर्म; 32:27) । सिर्फ वही अकेला सभी देशों के चारों ओर घेरा डालता है (2:5, 9, 19; उत; 10) । यह हीनोथिष्म नहीं, परन्तु अद्धैतवाद है ।

❖ परमप्रधान, परमेश्वर के लिए इस नाम का प्रयोग गि. 24:16 (एलियोन) में प्रथम बार हुआ है । यह एल-एलियोन के लिए संक्षेप मालूम होता है (उत: 14:18, 19, 20, 21; भ.स. 78:35) । इस ईश्वरीय नाम का प्रयोग देशों के संयोग में हुआ है (भ.स.47:1-3) । ईश्वरीय नाम 1:3 में

32:9 यहोवा का अंश उसकी प्रजा है, विपरीत रूप से उसके लोगों काअंश स्वयं परमेश्वर है (निर्ग; 19:5; भ.स. 16:5; 73:26; विला 3:24) । अनोखे अभिप्राय से इस्रायली लोग, यहोवा के वाचा के विशिष्ठ लोग थे (4:20; 7:6; 14:2; 26:18) ।

32:10 उसने इसकों मरूभूमि में पाया, और जंगल में पाया इस्रायल के प्रति यहोवा के प्रारंभिक प्रेम को सामर्थी अलंकार में यह पफकट करता है ।

❖ उसकी आंख की पुतली, अंग्रेजी में यह उसकी आंखों की पुतली होगी । यह अलग अलंकार है जो इस्रायल को विशेष संतान के रूप में सूचित करती है (भ.स. 17:8) । शब्दानुसार इब्रानी उसकी आंख का छोटा मनुष्य है ।

32:11 यह परमेश्वर को पूर्ण रूप से सुरक्षा प्रदान करने वाला और सामर्थपूर्ण माता-पिता के रूप में दिखाता है (पद; 19) इकाब के समान परमेश्वर को एक मादा पानी के अभिप्रय से है (पद 18; उत: 1:2; निर्गस 19:4, मती 23:37 लूका 13:34) । ईश्वरत्वको पुरुष (पद 6) और स्त्री (पद 11) दोनों में व्याख्या किया गया है ।

22:12 यहोवा अकेला ही इनकी अगुवाई करता है, इस शब्द का प्रयोग इस्रायल से निषेधक संबंध को नियुक्त करने के लिए हुआ है । सिर्फ उसी ने इनकी अगुवाई की ।

32:13 पृथ्वी के ऊंचे ऊंचे स्थानों पर सवार कराया, इस्रायल को यहोवा के द्वारा प्रचुर मात्रा में दिये गये यह अलंकार है (याशा; 58:14, इब्रा. 3:19)

❖ चट्टान में से मधु, यह जंगली मधुमक्खियों के मधु को बताता है, जो प्राय: चट्टानों के दरारों में निवास करते थे (भ.स. 81:16) ।

❖ चकमक चट्टान से तेल, यह जंगली जैतून के वृक्ष को बताता है कि जो ऐसे स्थान में बढ़ा हुआ है जहां पर घास भी नहीं उग सकता था । पद 13 और 14 वायदे के देश की प्रचुर उपज के विषय में बताते हैं ।

NASB **मूल ग्रन्थ 32:15-18**

32:15 यशूरून, इस शब्द का अर्थ, खरा व्यक्ति है, और इस्रायल के लिए कविता संबीध नाम है । यह निंदापूर्ण वचन के ससंर्ग है (उदा, पद 15-16) ।

❖ लात मारने लगा, इस क्रिया का प्रयोग पुराने नियम में सिर्फ दो बार हुआ है और तिरस्कृत का अलंकार मालूम होता है (1 शमु;2:29) । जैसे पशु इनके स्वामी को लात मारता है इसी प्रकार इस्रायल अपने परमेश्वर को लात मारती है ।

32:17 इन्होंने पिशाचों के लिए जो ईश्वर न थे बलि चढ़ाए, इस अभिप्राय या विचार का प्रयोग भ.स; 106:37 में भी हुआ है । पुराना नियम पिशाचों के विषय में बहुत कम बताता है । पौलूस इस पद को I कुरि 10:20 में संकेत करता है ।

विशेष विषय : पुराने नियम में पिशाच संबंधी

(अ) गिरे हुए दूतों और पिशाचों (दुष्टात्माओं) के बीच का वास्तविक संबंध अनिश्चित है । मै हनोक निश्चित करता हूं कि उत; 6:1-8 का नेफिलिम, बुराई का स्त्रोत है (इस ग्रंथ में यहुदी गुरू भी ध्यानकेन्द्रित करते है न कि उत: 3 में) । मैं हनोक कहता हूं कि ये आधे दूत/आधे मानव जाति बाढ़ में मर गये थे (यह भी स्वीकृत करता है कि बाढ़ा का उद्देश्य उनकी मृत्यु थी । परन्तु अब इनकी बिना शरीर की आत्माएँ, शरीर की सेना की खोज कर रही है ।

(ब) पुराने नियम में अनेकों बैरी आत्माएँ और दुष्टात्माओं के नाम है :

(1) सटेर्स याबाल वाला, संभवत: बकरा दुष्टात्माएँ - लैव्य; 17:7 II इति; 11:15 याशा 13:21; 34:14

(2) शेडिम (बीडीबी 993) जिसके लिये बलिजदान चढ़ाया जाता था (मोलेक देवता के समान)

(3) लिलिथ, रात्रि की महिला पिशाच (दुष्टात्मा) (बीडीबी 539-याशा; 34:14 (बेबीलोन और अग्रीट मिथ के भाग)

(4) अजाजेल, मरूस्थल का दुष्टात्मा (प्रधान दुष्टात्मा का नाम, I हनोक 8:1; 9:6; 10:4-8 13:1-2; 54:5;55:4;69:2) लैव्य: 16:8,10,26

(5) भ.स. 91:5-6, महामारी को आरापेण करने वाला अलंकार है (पद; 10) न कि आत्मिक प्राणी है (सुलूमान के गीत,श्रेष्ठ गीत 3:8)

(6) याशा; 13:21 और 24:14 अनेकों मरूस्थलीय पशुओं कीसूची विनाश किये गये स्थानों की मरूस्थलीय निर्धनता को दिखाने के रूप में बनाता है । कुछ लोग मानते है कि यह सूची दुष्टात्माओं को दृष्टांत देने के लिए संलग्न करते है कि ये विनाश किये गये स्थान भी प्रेतग्रस्त है (मती 12:43; लूका; 11:24 प्रका, 18:2)

NASB मूल ग्रन्थ 32:19-22

32:19-22 यह वाक्यखंड पहिले के विषयों का दुहराव है । कविता बहुत ही दुहरावपूर्ण है । परमेश्वर के वाचा के उसे तिरस्कृत करते है और वह उन्हें तिरस्कृत करता है (होशे 1:9,2:23; रोमि 9:25) । उसका तिरस्कार (उदा. क्रोध) समझौते के उद्देश्य के लिए है । वह एक व्यक्ति को ईर्ष्या के लिए, इस्रायल को डाँटने के लिए प्रयोग करेगा (और विश्वासपूर्ण विश्वास; रोमि 11:11, 14) । पौलूस पद 21 को रोमि 10:19 में दुहराता है ।

संयोग किये गये लोहे के सदृश यह है कि इस्रायल ने अस्थाई देवताओं के यहोवा को छोड़ दिया है (यिर्म 2:13)। अरे, मानव मूर्तिपूजा की मूर्खता (याशा; 40:19-20; 44:9-20; यिम; 10:3-5,14) ।

32:20 क्योंकि इस जाति के लोग बहुत टेढ़े है, और धोखा देने वाले पुत्र है, कविता संबंधी ये दो पंक्तियों इस्रायल के दुखान्त नाटक को व्याख्या करते है जिनके पास यहोवा की विशेष ध्यान और उपस्थिति थी (रोमि 9:4-5) । इनका चरित्र-चित्रण इस प्रकार है :

(1) टेढे (बीडीबी 246) - मुख्यतौर से इस शब्द का प्रयोग नितिवचन में हुआ है । यह इब्रानी शब्द वृक्षस्तंभ से संबंधित है । जिसमें एक व्यक्ति के शरीर को तिरछे या घुमाये स्थिति में रखना है ।

(2) धोखा देने वाले - यह शब्द भी नितिवचन में प्रमुख है ।

(3) यह चरित्र चित्रण 32:5 के सदृश है :

(अ) टेढ़े (ब) तिरछे

यहोवा सच्चा सिद्धांत और नियम है (विशेष विषय 1:6 को देखें) । उसके वाचा के लोग सिद्धांत से अलग हो गये है ।

32:21 मूर्तियां, शब्दानुसार यह क्रिया अनुमान या व्यर्थ है और इन चीजों को प्रस्तुत करता है जो व्यर्थ या अस्थाई है । यहां पर यिर्मयाह, 2:5, 819;10:14-15;16:19-20 के समान, इसका प्रयोग मूर्तियों के लिए हुआ है॰ याशा;57:13 में एक शब्द के ऊपर खेल को देखें।

32:22 यह पद पूर्ण विनाश और दण्ड का आलंकारिक संबंधी है जिसे परमेश्वर, विद्रोही इस्रायल पर लायेगा (यिर्म; 15:14; 17:4) परमेश्वर को सभी सृष्टि ग्रसित हुई है (पृथ्वी, प्रेतस्थान) यह अनंत दंड के स्थान के लिए संदर्भ नहीं है ।

NASB मूल ग्रन्थ 32:23-27

32:23-25 यह वाक्यखंड आलंकारिक रूप से इस्रायल पर यहोवा के दंड की व्याख्या करते है:

(1) मैं उन पर विपत्तियां भेजूगां - बीडीबी 705; केबी 763;हिफिल अपूर्ण, सिर्फ यहां पाया गया है । क्वेल का अर्थ साफ करना या दूर करना है ।

(2) उन पर मैं अपने सब तीरों को छोड़ूगां, बीडीबी 477, केबी 476, पीयल अपूर्ण । इस क्रिया का मूल अर्थ, कुछ चीज को पूर्णता में लाने से है, उदा; पूर्णतया से नष्ट (पद 22)

(अ) भूख से दुर्बल पद 24;28:22

(ब) अगारों से ग्रसित पद 24 (या अकला बीडी 536 II अगारों)

(स) कठिन महारोग, पद 24 (या जहरीला महारोग #ध)

(द) पशुओं के दांत, पद 24, लैव्य 26:22

(ध) रेगनेवालों का विष, पद 24; आमो. 5:18-19

(ल) तलवार (बाहरी) पद 25

(प) भय से (आंतरिक) पद 25

(1) कुंवारे (2) कुवारियाँ (3) बच्चे (4) पक्के बाल वाले

32:26-27 यहोवा उन्हें नष्ट कर दिया होगा :

(1) उनको तितर-बितर करना; पद 26 (सिर्फ LXX में उन्हें तितर-बितर करना है)

(2) उनका स्मरण तक मिटा डालना, पद 26 (पूर्णरूप से बाहर कर देना)

(3) अनेको ग्रंथ में सिर्फ यही एक इस्रायल के पूर्ण विनाश को स्थापित करता है यदि वे वाचा का उल्लघंन करते है (4:26; 28:20-22; 30:19) ।

NASB मूल ग्रन्थ 32:28-33

32:28-33 प्रश्न यह है कि यह वाक्यखंड किसको केन्द्रित किया हुआ है - इस्रायल को या उनके शत्रुओं को (पद 26-27) ?

(1) इस्रायल के विरूद्ध ?

(अ) पद 28-29

(ब) पद 30 में एक पवत्रि युद्ध का उलटाव

(स) पद 32 में इस्रायल के वर्तमान द्रोहीपन

(2) उसके शत्रुओं के विरूद्ध ?

(अ) पद 30; में इस्रायल के वर्तमान सैनिकों की पराजय (यहोशू 23:10)

(ब) पद 31; उनके चट्टान उन्हें बेच डाले थे और यहोवा ने उन्हें छोड़ दिया था

(स) पद 32-33, कनानी लोगों की घृणित

(द) पद 34-43, कनानियों की मूर्तिपूजा के लिए दंड और यहोवा के तिरस्कार के विषय में है

NASB **मूल ग्रन्थ 32:34-43**

32:34 संदर्भ रूप में यह मुझे लगता है कि पद;34 का संबंध पद 32-3 से हो सकता है यह भी संभव है कि यह पद 35 को बताता है (यहोवा से उदा; पद 34-35) पद 39-42 के समान दुहराव) । सबसे बडी संदर्भ यहोवा जो इस्रायल पर दंड इकट्ठा कर रहा है ताकि जातियां गलत सदेंश को प्राप्त न करें । यहोवा उनका न्याय करेगा और अपने लोगों को बचायेगा । वाचा का उल्लंघन करने वाले लोग दो बुराईयों में छोटे है (उदा; मूर्तिपूजा करने वाले जाति) । मसीहा आयेगा और इस्रायल तब भी वाचा को तोड़ने वाले होगें ।

इस पद में दो क्वेल वाच्य कृदन्त है :

(1) सचिंत - बीडीबी485, केबी 481 (सिर्फ यहीं पाया गया है)

(2) मुहरबंद - बीडीबी 367, केबी 364; अय्यु; 14:17

32:35 इस पद की प्रथम पंक्ति को नये नियम के रोमि; 12:19 और इब्रा. 10:30 में दुहराया गया है । शब्द पलटा लेना को पद 41 और 43 में भी दर्शाया गया है । इसका प्रयोग प्राय: याशायाह और यिर्मयाह ने किया है :

(1) इस्रायल के खिलाफ - याशा 59:17

(2) इस्रायल के शत्रुओं के खिलाफ - याशा 34:8;35:4; 61:2; 63:4; यिर्म 46:10, 50, 18; 57:6,11

शब्द बदला का प्रयोग याशा, 59:18 (दोहरा) में हुआ है जहां यहोवा, पापी इस्रायल (उदा; सिय्योन) को इकट्ठा करेगा ।

❖ इनके पांव फिसलने के समय, यह क्रिया बता सकता है

(1) समस्या में निजी गिरावट - दाऊद, भ.स. 38:17

(2) एक अनोखा दण्ड - याशा;24:19

(3) इकट्ठा करने की अनोखी प्रतिज्ञा - भ.स. 94:18;याशा; 54:10

मानवीय ठोकर और स्वभाव तितर-बितर हुआ है (याशा; 24:19) परन्तु दोनों को परमेश्वर इकट्ठा करेगा (रोमि; 8:18-25)

32:36 चेतावनी के गीत और इस्रायल की अनाज्ञाकारिता के पूर्वकथन, अनोखी दंड का परिणाम को लेकर आ रही है, लेकिन वहां यहोवा की क्षमा और एकत्र करने की प्रतिज्ञा भी है ।

(1) परमेश्वर अपने लोगों को बचायेगा; भ.स; 135:14

(2) परमेश्वर अपने दासों पर दया दिखायेगा - परमेश्वर अपने लोगों का न्याय करेगा (भ.स. 7:8; 96:10) परन्तु ऐसा करने के लिए, उन्हें स्थिर करेगा ।

32:37-38 कनानियों के मूर्तिपूजा को यहोवा मजाक उडाता है । वह इनके ईश्वरों को इनकी सहायता करने के लिए कहता है (पद 38)

(1) वेही उठकर (2) सहायता करें (3) तुम्हारी आड़ हो ।

32:39-40 यहोवा अपनी अनोखेपन (अद्वैतवाद) को स्थिर करता है । विपरीत भाव संबंधी समानान्तर के प्रयोग को ध्यान देवें :

(1) देखलो (2) मैं ही वह हूं, निर्ग:3:13-14 (यहोवा); (3) मेरे संग कोई देवता नहीं
(4) मै ही मार डालता और जीवन भी देता हूं (5) मैं ही घायल करता और चंगा कभी करता हूं
(6) मेरे हाथ से कोई नही छुड़ा सकता ।

पद 40 में यहोवा (अनंतीय, सिर्फ जीवित परमेश्वर) अपने स्वयं चरित्र की शपथ लेंता है। पद 27 के बाहुबल जातियों के अपेक्षा में हो सकती है (उदा. इस्रायल पर जीत के चिन्ह के रूप में उनका हाथ उठाया गया है)। यहोवा अपना हाथ स्वयं की शपथ लेने के लिए उठाता है (यहे. 20:5-6)

32:41-43 मूर्तिपूजकों के खिलाफ में यहोवा अपने न्याय के कार्य की व्याख्या करता है (पद 41-42) पद 43 में वह इस्रायल के लिए अपनी प्रतिज्ञा की समर्पणता को स्थापित करता है ।

पौलूस शेमि 15:10 में पद 43 की प्रथम पंक्ति का प्रयोग करता और स्थापित करता है कि यहोवा प्रेम करता है और अन्य जाति को भी प्रेम करता है । रोमि; 15 में पौलूस भ.स.; 18:49 या II शमु; 22:5 भ.स. 117:1 और याशा; 11:10; 42:4 (मती; 12:2) को इसी सच्चाई के लिए स्थापित करता है ।

यहोवा इस्रायल को उनके कार्य के कारण नहीं, बल्कि अपने चरित्र और प्रतिज्ञा के आधार पर क्षमा देने की इच्छा रखता है । मानवीय आशा, पूर्ण रूप से परमेश्वर के न बदलने वाले चरित्र में है जिसकी समानता और स्वरूप में वे सृजे गये है ।

22:43 आनंद मनाओ, यह क्रियाएक क्वेल आज्ञात्मक है । यह आनंद की पुकार है अय्यु. 38:ह्न याश; 26:6 24:14; 44:23; 49:13; 54:1 यिर्म 31:7

❖ ध्यान देवें कि कैसे पद 34-43 में सर्वनाम तृतीय पुरूष से प्रथम पुरूष में बदलती है । शब्दानुसार यह भिन्नताएँ है, न कि विभिन्न लेखक है । यहोवा कह रहा है ।

NASB मूल ग्रन्थ 32:44-47

32:44 यहोशू, यहोशू और यीशु नाम दो इब्रानी शब्द, यहोवा और उद्धार (क्रिया को अवश्य ही प्रस्तुत करना है) पर आधारित है ।

लोगों के सामने यहोशू को मूसा के साथ, उसके अनुबापन को स्थिर और स्थाई करने के लिए पदवी दी गई है ।

32:46 अपना मन लगाओ, यह क्रिया क्वेल आज्ञात्मक है । इसी मुहावरे को यहे. 44:5 में देखा जा सकता है । इस्रायल के पास चुनाव और एक सूचित किया गया चुनाव, जो यहोवा के पिछले कार्य और वर्तमान के वायदों पर आधारित है (4:26; 30:19; 31:28) परन्तु उसे अभी चुनना है ।

हृदय या मन के लिए विशेष विषय 2:30 में देखें ।

❖ अपने बच्चों को दो, यह शिक्षा-संबंधी माता-पिता के दायित्व को महत्व देता है (32:7)

32:47 यह तुम्हारे लिए व्यर्थ काम नहीं, परन्तु तुम्हारा जीवन ही है, यह परमेश्वर के वचन से अभिप्राय है जिसको एक बार कहे जाने के बाद उसके पास स्वतंत्र सामर्थ है (व्य 8:3; भ.स; 33:6, 9; याशा 55:11) । यह वचन (मूसा की लिखावट) जीवन और स्वास्थ्य ला समकता है (30:20) या मृत्यु और विनाश (30:19) । आज्ञापालन इसके प्रभाव की निरंतरता की कुंजी है ।

NASB मूल ग्रन्थ 32:48-52

32:49-50 इन दो पदों में अनेकों आज्ञात्मक है :

(1) चढ़कर पद 49 (2) देख ले पद 49 (3) मर जायेगा पद 50

(4) मिल जायेगा पद 50

मूसा के अंतिम कार्य परमेश्वर के द्वारा लिखी गई, जो परमेश्वर उससे प्रेम करता था, इस्तेमाल करता था, और अपने कार्यों के लिए उसे दायित्व रखा था ।

32:49 अबीराम, यह पर्वतीय क्षेत्र है (गि; 27:12-14) ।

❖ नबो चोटी, उस पर्वत में यह ऊंची चोटी है । संभवत: यह मृत सागर की उत्तरी भाग के बहुत निकट की चोटी है ।

32:50 तू भी इस पहाड़ पर मर योगा, पद का संकेत यह है कि यह मूसा के पृथ्वी के जीवन की समाप्ति है (पद 34); परन्तु वह अपने परिवार और सगी लोगों के साथ जो पहले मर चुके है उनके साथ जीवित रहेगा ।

❖ होर पहाड़, हारून की मृत्यु और गाड़ा जाना; गि; 20:22-29; 33:38-39 में प्रथमल लेख प्रमाणित है । किन्तु व्य; 10:6 कहता है कि वह मरा और मोसेरोत में गाड़ा गया (गि. 33:30-31) । हार्ड सेइग्स ऑफ द बाईबल, पृ. 166 कहता है मोसेरोत एक क्षेत्र या स्थान का नाम है और होर पहाड़ एक विशिष्ठ पर्वत का नाम है ।

32:51 क्योंकि दोनों ने मुझे पवित्र न ठहराया (गि 20; 27:14; व्य; 1:37; 3:23-27) । यह क्योंकि तुमने मुझे पवित्र नहीं ठहराया का समानांतर है । गि. 20 और पुन: गि; 27

में मूसा ने खुले तौर और स्पष्ट रूप से लोगा के सामने आनाज्ञाकारिता किया, जिसके कारण परमेश्वर का न्याय, सामूहिक रूप में इनके साथ हुआ, और प्रतिज्ञा के देश पर प्रवेश करने की अनुमति नही दी गई ।

22:52 अध्याय 34 में यह आगे विस्तृत हुई है ।

*****

व्यवस्था विवरण 33

आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
इसस्रयलियों को मूसा अंतिम आशीर्वाद देता है	मूसा का आशीर्वाद देना	मूसा का इस्रायलियों को आशीर्वाद देना	गोत्र
33:1-5	33:1-29	33:1-5	33:1-29
	(पद 1-5)	(पद 2-5)	(पद 1)
			(पद 2)
			(पद 3)
			(पद 4-6)
33:6-7	(पद 6-7)	33:6	
		33:7	(पद 7)
(पद 8-11)	(पद 8-11)	33:8-11	(पद 8-11)
(पद 12)	(पद 12)	33:12	(पद 12)
(पद 13-17)	(पद 13-17)	33:13-17	(पद 13-17)
(पद 18-19)	(पद 18-19)	33:18-19	(पद 18-19)
(पद 20-21)	(पद 20-21)	33:20-21	(पद 20-21)
(पद -22)	(पद -22)	33:22	(पद -22)
(पद 23)	(पद 23)	33:23	(पद 23)
(पद 24-25)	(पद 24-25)	33:24-29	(पद 24-25)
		(पद 24-25)	
	(पद 26-29)	(पद 26-29)	(पद 26-29)

शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन

NASB मूल ग्रन्थ 33:1-5

33:1 आशीर्वाद ..., क्रिया और संज्ञा पद 1 में घटित होता है ।

❖ परमेश्वर के जन इस वाक्यखंड का प्रयोग नबी को वर्णन करने के लिए किया गया है यहोशू 14:6; I शमु;2:27 9:6-7; II राजा; 9:6;12:22; 13:1, 30 II राजा; 1:9-13; 5-8;23:17;यिर्म 35:4

32:2 यह यहोवा के खेलेटरी प्रकटीकरण इस्रायल के लिए व्याख्या करता है । यह अदभुत और मनुष्य के बीच अदभुत मुठभेड़ भयानक थी (निर्ग; 19;भ.स.; 50:2-3) यहोवा की उपस्थिति निरंतर विशिष्ठ बादल केरूप में थी (उदा; शेकेना, महिमा का बादल) । यहोवा आया और अपने लोगों के साथ सीनै/होरेब पर्वत से लेकर यरदन के पार होने तक था। इसके बाद भी, उसकी विशेष उपस्थिति संदूक के साथ थी, जोचेरूबीम के ऊपर में थी ।

इस पद को यह स्पष्ट है कि यहोवा को पर्वतों के साथ संगी होने के रूप में देखा गया है ।

(1) मोरिय्याह
(2) सीनै/होरेब पवर्त
(3) सेईट पर्वत
(4) पारा पर्वत
(5) एबाल/गिरिज्जिम
(6) ताबोर
(7) कर्मेल
(8) पिरिज्जिम
(9) सिय्योन पर्वत
(10) नीबो पर्वत

❖ सीनै यह व्यवस्था के दिये जाने का स्थान है । इसे सीनै के नाम से पुकारा गया है, जो व्यवस्थाविवरण में यही सिर्फ है । मुख्य रूप से इसे होरेब कहा गया है ।

33:3 वह लोगों से प्रेम करता है क्रिया 4:37;7:7-8;10:15 को प्रकाशित करता हुआ मालूम होता है ।

कर्म, लोग बहुवचन में है और पूर्वजों के वंश को प्रकट करता है ।

❖ उसके सब पवित्र लोग शब्द पवित्र लोग, वाचा के लोगों के लिए बताता है । इसका अनुवाद संत हो सकता था (उदा; 7:6; 14:2, 21 पवित्र जन)।

❖ एक एक तेरे वचनों से लाभ उठाता है । निर्ग 20 और आगे में सीनै/होरेब पर्वत में व्यवस्था के दिये जाने को यह बताता है । परमेश्वर की इच्छाऔर व्यवस्था को यहोवा के लोग जानते थे । वाचा के लोगों को परमेश्वर के चरित्र को प्रकाशित करने की विशिष्ठ दायित्व थी ।

33:4 मूसा ने हमें व्यवस्था दी, यह पूर्व पदों में विचारों को सुनिश्च्चित करता मालूम होता है कि पद 3 में उल्लेख किया हुआ, स्थान के नाम के लिए है और ये पद परमेश्वर के लोगों के विशेष विषय में न कि स्वर्गदूतों के विषय में बताती है ।

❖ याकूब की मंडली का निज भाग शब्द निज एक वारिस को बताती है । इसका प्रयोग इस्रायल के प्रथम गोत्र के लिए (याकूब बीडीबी 784) निर्ग; 6:8 में और प्राय: यहोजेकेल में प्रदर्शित किया गया है (11:15, 33:24; 36:2,3,5) ।

शब्द मंडली का अर्थ सभा है (23:2,3,4,8;31:30 में यही मूल) ।

पद 4 में समानांतर संबंधी के कारण, इस विशेषात्मक निज भाग का प्रयोग वाचा के लिए अलंकार हो सकता है (उदा; व्यवस्था) । परमेश्वर के लोग प्रकाशन और साथ ही एक देश के अधिकारी होते है ।

33:5 वह राजा ठहरा संभवत यह राजा, यहोवा के लिए उल्लेख किया गया है ।

❖ अंतिम दो पंक्तियों लोगों का हाथ और इस्रायल का गोत्र समानांतर है । यह सीनै/होरेब पर्वत पर परमेश्वर के नये लोगों के साथ वालाके उदघाटन समारोह को बताता है (निर्ग 19-20)

NASB **मूल ग्रन्थ 33:6**

33:6 रूबने न मरे, वरन जीवित रहे, पद 6 में तीन क्वेल जुसिव रूप है :

(1) जीवित (2) मरे (3) हों

याकूब का प्रथम पु9 रूबेन था, परंतु उसने अपने पिता के खिलाफ पाप किया (उत 35:22) और इसके अधिकार को खो दिया (उत 49:3-4) ।

NASB **मूल ग्रन्थ 33:7**

33:7 सुन व्य. में इस क्रिया का प्रयोग प्राय: हुआ है परन्तु मुख्य रूप से इस्रायल को यहोवा (या मूसा) कहता है ।

❖ यहूदा की सुन, संदर्भ में यहूदा की प्रार्थना को सुनने के लिए यहोवा से मूसा प्रार्थना कर रहा है (उदा; यहूदा के गोत्र की प्रार्थना) मूसा के आशीर्वाद में कुछ भी नहीं है जो यहूदा के विशिष्ठ स्थान एक राजकीय गोत्र के रूपमें संकेत करता है, ऐसाजो उत; 49:8-12 में याकूब के आशीर्वाद में स्पष्ठ है ।

NASB मूल ग्रन्थ 33:8

33:8 तेरे तुम्मीन और ऊरीम ये दो भिन्न भाग थे (1) बुद्धिरहित तरीका (उदा; भाग्य) या (2) एक दृष्टियोग्य प्रकाश जो एक भविष्यवाणी को जो परमेश्वर की इच्छा को जानने के लिए प्रकट की गई थी। स्पष्ट रूप से वे महायाजक के द्वारा छोटी थैली में छाती के पटुके पर रखते थै (निर्ग; 28:30 लैव्य 8:8; I शमु; 14:37-42, 23:29-12)। वास्तविकतामें वे क्या थे और कैसे उन्होंने कार्य किया था, इसे खो दिया (निडोट भाग1 पृ. 329-331)।

❖ तेरे भक्त, संभवतः हारून या मूसा या महायाजक के संतान को बताते है, परन्तु ऐतिहासिक उल्लेख मूसा को प्रदर्शित करते है।

❖ मस्सा... मरीबा, निर्ग 17:7 को पढ़े। किन्तु, किसी भी प्रकार से लेवी यायाजकों को इस क्षेत्र पर विद्रोह करने को नहीं दर्शाया गया है। वास्तविक संयोग, अनिश्चित है।

23:9 यह निर्ग; 32 के पद्यांश को बताता है। जहां पर इस्रायल सोने के बछड़े को बनाने और आराधना करने (उदा; अनैतिक संबंध) की मूर्तिपूजा में सम्मिलित हुआ। इसी समय परमूसा ने विश्वायोग्य लेवियों को (अपने स्वयं को गोत्र) उनके संगी इस्राइलियों को दंड देने के लिए हत्या करने की आज्ञा दी (32:25-29)।

इस कार्य को इनके निजी परिवारों के विरूद्ध में करने पर भी, वे इसके लिए प्रशंसनीय है :

(1) वे तेरे वचन का पालन किये है।

(2) वे तेरे वाचा क पालन किये है।

33:10 सिखायेगें...... धूप पर ..... और सर्वागं होमबलि ये सभी लेवीय याजकों का कर्त्तव्य है :

(1) शिक्षा देना 31:9-13, जिसमें न्याय करना भी शामिल है 17:9-10

(2) तम्बू/मंदिर में कार्य करना

33:11 इस छोटे पद में चार क्रियाएँ और दो कृदन्त है :

(1) आशीष दें - पद 1,13,20,24;28:3(दोहरा)4,5,6 (दोहरा) 8,12,19;30:16 इसी को जो यहोवा करना चाहता है।

(2) ग्रहण कर - यह एक बलिदान संबंधी शब्द है; लैव्य 1:4; 7:18;19;7; 22:23 25, 27 जिसका अर्थ आनंद करना भी हो सकताहै लैव्य 26:34 (दोहरा)

(3) तितिर बितर करना - 32:29 में यहोवा का प्रयोग, क्वेल आज्ञात्मक, यहां पर उनके शत्रुओं को (#4, #5 और #6)

(4) जो लोग उठते है – विरोधियों के लिए प्रयोग

(अ) परमेश्वर के खिलाफ, निर्ग 15:7

(ब) इस्रायल के खिलाफ निर्ग; 32:25; भ.स;109:28

(स) पड़ोसी के खिलाफ व्य; 19:11

(5) जो इससे घृणा करते है, म.स. में प्राय: शत्रुओं के लिए, 18:40; 44:7, 10;55:12 68:1 89:23

(6) दुबारा उठना – यह दूसरे इस्रायलियों को जिन्होंने जंगल परिभ्रमण की अवधि के दौरान मूसा और हारून की अगुवाई को आक्रमण किया था ।

❖ कमर पर मारना, यथाशब्द यह जांघ को तोड़ना है (उदा; शरीर की सबसे बड़ी मांसपेशी जिसका प्रयोग पूरे मनुष्य के लिए चिन्ह के रूप में है) । यह इब्रानी अलंकार, जो किसी व्यक्ति को सामर्थहीन बनाने के लिए है । यह भी संभव है कि इसका संबंध आनेवाली सृष्टि के रूकावट से है, जिस उपाय से,कोई आनेवाली वंशावली नहीं होगी ।

NASB **मूल ग्रन्थ 33:12**

33:12 विन्यामीन के .... यहोवा का प्रिय जन, वह यहोवा काप्रिय जन कहलाया जा सकता है क्यों वह अपने पिता याकूब का प्रिय था (उत; 44:20)

❖ उसके पास निडर वास करेगा, क्रिया (बीडीबी 1014; केबी 1496) एक क्वेल अपूर्ण है, परन्तु वाच्य अभिप्राय में, पद 12 (दुहरा) 16,20,28;निर्गस 25:8;29:45,46) । पद 12 मुं यहोवा उसका निकट सर्गी है ।

❖ वह इस पर छाया करेगा, सिर्फ यही इस क्रिया का प्रयोग हुआ है और अर्थ घिराव या घेरा डालना या ढांकना है ।

❖ उसके कंधों के बीच रहा करता है, यह अलंकार इनके लिए है (शांति और सुरक्षा का स्थान पद 20,28) या (2) छायाबद्ध स्थान में निवास करना (उदा, शीलजो, बेतेल या यरूशलेम (एस.आर.ड्राइवर की सुझाव) ।

NASB **मूल ग्रन्थ 33:13–17**

33:13:17 आशीर्वाद की बडी लालसा, लेवी को छोड़ युसुफ के पुत्र, प्रेम और मनश्शे के लिए होती है (पद; 17; मिस्र में उसके दो पुत्र) । ये उत्तरी गोत्रों में सबसे अधिक सामर्थी थे ।

पद 13–16 ब में मूसा इन दोनों गोत्रों पर कृषि संबंधी आशीर्वाद को यथाक्रम करता है । पद 16 स और द में मिस्र में युसुफ की विधियों को पहिचाना गया है । पद; 17 में इन दो गोत्रों के सामर्थ या शक्ति को पशु के अलंकारों में बताया गया है ।

33:13 यह पद ओस और भीतरी स्रोतों की भरपूर गीलापन को बताता है (उत; 49:25) जल या पानी का अर्थ भरपूर कृषि संबंधी है ।

33:15 प्राचीन पहाड़ो के उत्तम पदार्थ.... और सनातन पहाड़ियों के यह वृक्षों को, भोजन और निर्माण दोनों को प्रकट कर सकता है ।

33:16 जो इसमें भरे है और जो झाडी में रहता था, यह जलती हुई झाड़ी को प्रकट कर सकता है (निर्ग; 3:2-4) । शब्द साड़ी या प्रयोग पुराने नियम में पांच बार हुआ है, उनमें से चार का प्रयोग निर्ग; 3:2-4 में हुआ है ।

❖ इसी के सरि के चांद पर, जो अपने भाईयों से न्याय हुआ, यह उत; 49:26 में याकूब के आर्शीर्वाद को प्रकाशित करता है ँ युसुफ की श्रेष्ठता और अनुवापन निरंतर इसके पुत्रों के संतानों में हुई है ।

33:17 इसके सींग बनैले बैल के समान है, इब्रानी में शब्द सिंग एक सामर्थ या बल का चिन्ह है ।

NASB मूल ग्रन्थ 33:18-19

33:18 जबूलून ...... इस्साकार, ये दो गोत्र की एक साथ उत; 49:13-15 के समान प्रवृत हुई है ।

❖ आनंद करें, इस क्रिया का प्रयोग, भले सुरक्षित भरपूर जीवन में आनंद करने के अभिप्राय से हुआ है ।

❖ बाहर निकलते समय यह मुक्त जीवन के अभिप्राय में प्रयोग किया हुआ मालूम पड़ता है (28:6, 19;31:2) ।

❖ अपने डेरों में, यह जंगल परिभ्रमण अवधि के दौरान उनके घर को प्रकट करता है, परन्तु एक व्यक्ति के घर के लिए अलंकार बना है ।

ये दो समानान्तर पंक्तियां, एक स्थिर खुशी जीवन को सूचित करती है ।

33:19 पर्वत और धर्मयज्ञ के बीच समानांतर (भ.स. 4:4; 51:19) एक आराधना की स्थिति को सूचित करता है (निर्ग; 15:17) ।

❖ समुद्र का धन और बालू में छिपेहुए अनमोल पदार्थ ये दो पंक्तितयां समानांतर है । वे दोनों एक क्रिया के कर्म सोखना या खींचना है । यह प्रचुरता की अलंकार है । (32:13) ।

(1) प्रथम चीज प्रकट करती है :

(अ) भोजन (उदा; बलिदानें या भला जीवनयापन)

(ब) व्यापारी माल (उदा; मूंगा, छिलका, समुद्री, पदार्थ)

(2) दो कृदन्त वाच्य से दूसरा बनाया गया है ।

(अ) ढांकना, परन्त यहां पर सिर्फ इनका अर्थ, इकट्ठा किया गया या सुरक्षित रखा

(ब) छिपाना

वे जहाजी व्यवसाय को प्रकट करते मालूम होते है (उत; 49:13-14) ।

NASB **मूल ग्रन्थ 33:20-21**

33:20 धन्य है वह जो गाद को बढ़ाता है, यह यहोवा का उल्लेख करता हुआ मालूम होता है ।

❖ वह सिंहनी के समान रहात है, शब्द सिंहनी है । सिंहनी वह थी जो शिकार करती और सिंह और बच्चों को भोजन प्रदान करती थी । गाद की सिंहनी के समान बातया गया है । युद्ध में इनकी विश्वासयोग्यता के कारण, गाद का गोत्र धन्य था (उत: 49:19) ।

33:21 यह पद गाद या शूरवीर योद्धा को बताता है (सिंह के अलंकार में) । उसने, पैतृक संपत्ति के लिए यरदन के पूर्वी तरफ की भूमि के भाग को चुना, परन्तु वह और रूबेन के लोग और मनश्शे के आधे गोत्र, वायदे के देश के युद्ध में जाने वाले प्रथम सैनिक दल थे (यहोशू 4:12-13;22:13)

NASB **मूल ग्रन्थ 33:22**

23:22 दान तो बाशान से कूदनेवालासिंह का बच्चा है, दान का बाशान से किसी तरह से संबंधित के रूप में दर्शाना आश्चर्यपूर्ण है । मुख्य रूप से लूत के द्वारा दान की ाजतीय बंटवारा, दक्षिण पश्चिम में थी (उदा; पलिश्तियों का क्षेत्र) और बाद में दूर उत्तरी को चले गये (न्या; 18) यह संभवत: इस बिना अधिकार पुन: स्थापन से संबंधित भविष्यवाणी हैं ।

NASB **मूल ग्रन्थ 33:23**

33:23 तू पश्चिम और दक्षिण देश का अधिकारी हो, इस्रायल को देश का अधिकारी होने के लिए व्य. में अनेकों बार इस क्रिया का प्रयोग किया गया है । यह दबाव से प्राप्त करने और इसे सदैव की पैतृक धन के रूप में सुरक्षित रखने को सूचित करती है ।

NASB **मूल ग्रन्थ 33:24-25**

33:24 आशेर के विषय में कही । आशेर पुत्रों के विषय में आशीष पाए;

वह अपने भाईयों में प्रिय रहे, यह क्रिया एक क्वेल आज्ञार्थक है । यह इब्रानी मस्तिष्ट के कार्यों को दिखाता है । एक यहूदी के लिए, एक पुत्र महान आशीष था ।

इस पद को यहुदी गुरूओं ने अनुवाद इस थिऋ को बताने के लिए किया कि आशेर के पुत्रियों की अत्यधिक सुंदरता के कारण, इनको अधिक देखा गया था; इसके बाद में पुत्रों को देखा गया था । अर्थ, अनिश्चित है ।

❖ अपना पाँव तेल में डुबोए उत्तरी समुद्र तट पर आशेर की स्थापना, जैतून के लिए उत्तम क्षेत्र है । यह वाक्यखंड संभवत: पांव से जैतून को कुचलने के कार्य से तेल बहार निकालने को बताता है ।

33:25 तेरे जूते लोहे और पीतल के होगें, लॉक्स या बार्स की मूल इब्रानी जूते की अनुवाद हो सकता है । यहां प्रयोग की गई रूप सिफ यही पाई गई है । वह (स्त्रीलिंग) वायदे के देश की कुंजी ओर दरवाजा के रूप में समझी जानी गयी थी ।

NASB मूल ग्रन्थ 33:26-29

33:26 ईश्वर के तुल्य और कोई नहीं है देखें लेख 4:35 में ।

23:27 अनादि परमेश्वर, प्राय: एलोहिम, गुणों के साथ संयोग हुआ है :

(1) अनादि एलोहिम;यहां पर (2) अनंतीय एलोजित; याशा; 28

(3) सच्चा एलोहिम, II इति 15:3; याशा;56:16

(4) सभी जीवों का एलोहिम, यिर्म; 32:27 (गि; 16:22,; 27:16 के समान)

(5) स्वर्ग का एलोहिम; उत; 24:3, 7; II इति; 36:33 एज्रा; 1:2 नहे; 1:4, 5;2:4, 20

(6) निकट में एलोहिम यिर्म 23:23

(7) मेरा उद्धारक, एलोहिम, भ.स. 18:46;24:5; 25:5; 27:9; 65:5, 79:9; 85:4; याशा 17:10

(8) मेरी धार्मिकता, एलोहिम, भ.स. 4:1

(9) एलोहिम जो मेरी चट्टान है II शमु;22:3; भ.स.18:2

(10) एलोहिम जो मेरा गढ़ है भ.स. 43:2

(11) एलोहिम जो मेरी स्तुति है, भ.स. 109:1

(यह सूची बीडी पृ. 44#4ब की है)

32:28 याकूब का सोता अकेला ही रहता है, सोता (बीडीबी 745 II) का अर्थ उदगम और संतानों को प्रकट करता है । शब्द एकांत (बीडीबी 94, अकेला) सुरक्षा का अलंकार है ।

39:29 यह पद पवित्र शुद्ध सिद्धांत का प्रयोग, मिस्र से, मरूभूमि से और कनानियों से, यहोवा की छुड़ौती का वर्णन करती है ।

विवाहपूर्ण प्रश्न :

(1) क्यों मूसा वायदे के देश में प्रवेश न कर सका ?

(2) क्यों, 33:2-3 के इतने अधिक अनुवाद है ?

(3) क्यों शिमौन को आशीर्वाद में उल्लेखित नहीं किया गया है ?

*****

व्यवस्था विवरण 34
आधुनिक अनुवादों के वाक्यखण्ड विभाजन

NKJV	NRSV	TEV	NJB
नबो पहाड़ पर मूसा की मृत्यु	मूसा की मृत्यु	मूसा की मृत्यु	मूसा की मृत्यु
34:1-8	34:1-8	34:1-8	34:1-8 35:5-9
34:9-12	34:9 34:9-12	34:9 34:10-12	34:10-12

<u>शब्द और वाक्यखण्ड अध्ययन</u>

NASB मूल ग्रन्थ 34:1-8

34:1 मोआब के यह गिनती की समाप्ति (36:13), और व्यवस्थाविवरण की संपूर्ण पुस्तक की (4:44-9) भूगोलिक संबंधी योजना हैं। यह यरीहो के समाने, यरदन के पूर्वी ओर है; (पद 1)।

❖ नबो पहाड़ पर, जो विशगा की एक चोटी, इसी पहाड़ को व्य. (3:17) में दर्शाया गया है। यह इब्रानी शब्द पर्वतपृष्ठ या ऊंचा में है। यह मालूम होता है कि नबो पहाड़ और पिशगा (बीडीबी 820 दरार) इसी पहाड़ की चोटी को बताती है। यहोवा ने मूसा से की गई वचन को पूरा करने के लिए इस स्थापन या स्थान को अनोखे रूप से चुना, ताकि वह इसे वायदे के देश को दिखायें, जिस पर मूसा इस देश में प्रवेश नहीं कर पायेगा। इसके बाद पद 5 में नबो पहाड मूसा की मृत्यु का स्थान होगा। यहुदी इतिहास यह भी कहता या बताता है कि यिर्मयाह ने इसी पहाड़ पर वाचा के संदूक को छिपाया।

❖ और यहोवा ने सारा देश दिखाया, कई सारे पद्यांश है जो मूसा के पाप को प्रमाणित करते हैं जिसके कारण वायदे के देश में वह प्रवेश न कर पाया (व्य. 3:23-28; 32:48-52 और गि. 27:12-14)। इसके विषय में मूसा ने परमेश्वर से अनेकों प्रार्थना और विनती की तो भी उसे वायदे के देश में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी गई। हालांकि पापहमेशा अपने विषय में दौड़ता और इसके परिणाम भी है, परमेश्वर की कृपा को यहां देखा गया कि हालांकि मूसा वायदे के देश में प्रवेश न कर सकेगा, तो भी इसे वायदे के देश को देखनेकी अनुमति दी गई।

34:2 पश्चिम के समुद्र, यह मेडिटरेनियम समुद्र (11:24) को बताता है। शब्द पश्चिम यथाशब्द पीछे का स्थान होता है।

34:3 दक्षिण यह इब्रानी शब्द दक्षिण देश है और यह निवास न करने योग्य मरूभूमि को बताता है जो बेर्शेबा के दक्षिण में है।

❖ यरीहो नामक खजूर वाले जगह, यरीहो को खजूरवाले जगह नाम से जाना जाता है (न्या; 1:16) और इस विश्व के सबसे प्राचीन नगरों में से एक है। यह यरदन नदी के सामने का स्थान यहां पर इस्राइलियों ने डेरा किया था।

❖ सोअर शब्द का अर्थ महत्वहीन है (उत; 19:20–22)।

34:4 जिसके विषय में मैने अब्राहम, इसहाक और याकूक से शपथ खाकर था, वह यही है यह परमेश्वर के वायदे की पूर्णता है। जिसे उत 13:7;26:3;28:13 में लेख प्रमाणित किया गया है। अब्राहम सवे की गई प्रतिज्ञा में, देश और वंश दोनों संलग्न है। पुराना नियम में संतान और देश को महत्व देता है जबकि नये नियम में विशेष संतान को महत्व देता है (याशा 7–12) इस प्राचीन प्रतिज्ञा को प्राय: दुहराया गया है। यहां पर कुछ उदाहरण है; निर्ग 33:1;f;14:23;32:11; व्य; 1:8, 6:10; 9:5; 30:20

34:5 इसका दास मूसा, शब्द यहोवा का दास, मूसा को दिया हुए एक आदरणीय नाम है। यहोशू को यह इसकी मौत होने के बाद ही मिला। यह राजा दाऊद को दिया गया था। बाद में यह आने वाले मसीहा के लिएउ बताता है। (याशायाह 40–56 में दास का गीत) संभवत: यह नये नियम में पौलूस के वाक्यखंड परमेश्वर का दास का स्त्रोत है। पुराने नियम में दास का अभिप्राय, पूर्ण रूप से महत्वपूर्ण हैं। पुराने नियम के चुनाव और दासत्व, परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने से था, न कि उद्धार के लिए आवश्यक था। कुप्रुस को परमेश्वर का अभिषिक्त कहा गया है (याशा; 45:1) और असीरिया को इसके क्रोध की छड़ी कहा गया है (याशा 10:5)। ये दुष्ट जाति और मूर्तिपजूक राजा, परमेश्वर की योजना में ठीक स्थिर है, परन्तु आत्मिक रूप में नहीं है। शब्द चुनाव और चुनना नये नियम में सिर्फ आत्मिक संबंधी अनुमान है।

❖ तब यहोवा के कहने के अनुसारख वहीं मोआब के देश में मर गया, साहित्य इब्रानीह में यहोवा के मुंह के द्वारा, यहां है (बीडीबी 804) जो परमेश्वर के वचन का अलकार मालूम होता है (उत; 41:40;45:21; निर्ग 17:1;38:21; गि; 3:16, 39)।

किन्तु यहुदी गुरू कहते है कि यह, परमेश्वर का चुम्बन है। वे कहते है कि परमेश्वर ने मूसा के मुह पर चुना और उसकी स्वांस कोले लिया। यह हमारे सभ्यता के मुहावरे मृत्यु का चुम्बन के हीसमान है। यदि ऐसा है, तो यह मूसा के जीवन में, न्याय और परमेश्वर की दया के बीच तुल्यता का सुंदर मूल्य है।

34:6 और उसने मोआब के देश की तराई में उसे मिट्‌टी दी, उसने स्वयं परमेश्वर को संकेत करता है । यह उत: 7:16 के समान है, जहां पर परमेश्वर ने संदूक को द्धार को बंद किया। परमेश्वर के द्वारा मूसा को गाड़ने का एक कारण यह है कि परमेश्वर ने प्राचीन स्थानों और शिल्पकला को दूर कर दियाताकि ऐसा न हो कि हम उसके अलावा, इनकी आराधना करें । ध्यान दें कि मूसा को नबों पहाड़ पर नहीं, परन्तु एक तराई में मिट्‌टी दी गई थी । नये नियम की विचित्र पद्यांश यहुदा; 9 इस विषय से संबंधित है, परन्तु किस प्रकार वास्तविक रूप से स्पष्ट नहीं है । यहुदा;9 को दूसरी व्यवस्था की पुस्तक जो मूसा की कल्पना से लिया हुआ मालूम होता है । मूसा के शरीर याशव को शैतान के द्वारा चाहने की स्पष्ट उद्देश्य अनिश्चित है ।

❖ आज तक कोई नहीं जानता कि इसकी कब्र कहां है, स्पष्ट रूप से यह बाद के संपादक का कार्य है । कई लोग स्थापित करते हैं कि मूसा इस अंतिम अध्याय को जो इसकी मृत्यु से संबंधित है, लिख नहीं सकता है । राशि कहता है कि यहोशू ने मूसा की मृत्यु के बारे में लिखा। मैं टोरह को मूसा के लेखकथन में होने में विश्वास करता हूं, परन्तु यह कुछ संपादक संबंधी समालोचना को, जो इस प्रकार की है, जो काल से काल में प्रकट होती है, इसको क्रम से बाहर नहीं करता है ।

34:7 मूसा अपनी मृत्यु के समय एक सौ बीस वर्ष का था, इस एक सौ बीस वर्ष का फैलाव स्तिफनुस के प्रवचन, प्रे.का. 7:23 में प्रत्येक 40 वर्षो के त्रिगुण भगों में पुष्ठ किया है; (1) मिस्र की शिक्षा को प्राप्त करने में 40 वर्ष (2) निर्जन स्थान में 40 वर्ष; जिसके बाद वह इस्रायल की संतान को अगुवाई करेगा; या (3) जंगल परिभ्रमण अवधि में 40 वर्ष । डी.एल. मुडी ने कहा; 40 वर्ष के लिए मूसा ने सोचा कि वह एक मनुष्य था । 40 वर्ष के लिए उसने सोचा कि वह तुच्छ मनुष्य था । 40 वर्ष के लिए उसने पाया कि परमेश्वर, तुच्छ मनुष्य के साथ क्या कर सकता है ।

34:7 न तो उसकी आखें धुधंली पड़ी और न इसका पौरूष घटा था, यह मूसा के स्वास्थ्य को बताता है, जबकि व्य; 31:2 मूसा के द्वारा बहाने बनाने को मालूम होता है, कि किस कारण से वायदे के देश में वह प्रवेश नहीं कर सकता है (वह कमजोर और बूढ़ा था) ।

34:8 और इस्रायली मूसा के लिए तीस दिन तक रोते रहे, यह एक चन्द्रमा संबंधी चक्र है। हारून की मृत्यु के शोक मनाने में भी इसी समय के परिणाम को दिया गया था । (गि; 20:29) यहोशू और कालेब को छोड़कर, उस पीढ़ी के सारे लोग, जंगल में विद्रोह करने के कारण मर गये

NASB मूल ग्रन्थ 34:9–12

34:9 नून का पुत्र यहोशू, यहोशू नाम का अर्थ, यहोवा बचाता है (बीडीबी 221) । यह यीशु नाम के ही समान है (मती 1:21) । इसे इब्रानी शब्द होशे से लाया गया; जिसका अर्थ उद्धार और परमेश्वर के वाचा का नाम, उत्पत्ति से संयोग किया गया एक संक्षेप है ।

❖ बुद्धिमानी की आत्मा से परिपूर्ण, इस परिपूर्ण का अभिप्राय, गि; 217:18 के साथ तुलनात्मक किया जाना चाहिए और निर्ग; 28:3 में शिल्पकारों के लिए प्रयोग की गई उसी के समान अभिप्राय से है। स्पष्ट रूप से परमेश्वर की आत्मा; पुराने नियम और नये नियम में भी लोगों के जीवन में संलग्न थी।

❖ बुद्धि, यह यहोशू की योग्यता जो युद्ध में लोगों को मार्गदर्शन और शासन संबंधी न्याय को प्रकट करता मालूम होता है। लेवी के गोत्र से यहोशू नहीं था, और इसलिए किसी प्रकार से याजक नहीं बन सकता था, परन्तु वह एक पुरस्कृत अगुवा था।

❖ क्योंकि मूसा ने इस पर हाथ रखे थे, हाथ के रखने का यह अभिप्राय पुराने नियम में बहुत ही महत्वपूर्ण है। हम इस कार्य को गि; 27:22–23; और व्य. 31:1–8 के लेख में भी देखते है। यह बलिदान संबंधी बलि, जहां पर पाप को स्थानांतरण करने के लिए उसके ऊपर हाथ रखने से संबधित है। किसी प्रकार से मूसा का अगुवापन, यहोशू में स्थानांतरण हुआ था।

विशेष विषय : बाईबल में, हाथ को ऊपर रखने में

निजी सम्मेलन के इस दृष्टिगोचर को बाईबल में विभिन्न प्रकारों में प्रयोग हुआ है।

(1) पारिवारिक अगुवापन पर घटित होना (उत; 48:18)

(2) स्थानापूर्ति के रूप में बलि–पुश की मृत्यु के साथ पहिचाना जाना
 (1) याजक (निर्गस 29:10,15,19; लैव्य 16:21; गि; 18:12)
 (2) साधारण पुरूष (लैव्य 1:4; 3:2,8;4:4,15,24; II इति;29:23)

(3) परमेश्वर की सेवा, एक विशेष लक्ष्य या सवेकाई के लिए, चुने गये पुरूषों को अलग रखना (गि. 8:10; 27:18, 23; व्य; 34;9; प्रे.का;6:6;13:13; I तिमु 4:14; 5:22; II तिमु;1:6)।

(4) एक पापी व्यक्ति को पत्थरवाह करने के लिए यहुदी धर्म संबंधी में भाग लेना (लैव्य 24:14)

(5) स्वास्थय, खुशहाली और भक्तिपूर्ण के लिए आशीर्वाद को ग्रहण करने में मती; 19:13,15; मर. 10:16)

(6) शारीरिक चंगाई से संबंधित (मती; 9:18; मर. 5:23; 6:5; 7:32; 8:32; 16:18; लूका 4:40;13:13; प्रे.का 9:17; 28:8)

(7) पवित्रात्मा का प्राप्त करने में (प्रे.का. 8:17–19; 9:17;19:6)

34:10 और मूसा के समान इस्रायल में ऐसा कोई नबी नहीं उठा, मूसा के शास्त्री होने या, अत्यधिक संभवत: बाद के संपादक होने से पद 10-12 एक समालोचना है। यह प्रकट रूप से व्य; 18:15-22 की मसीहा संबंधी भवष्यिवाणी को बताता है। इब्रा: 3:1-6 में, यह विषय पुष्टि हुई है, जहाँ पर मूसा और यीशु की तुलना की गई है।

*****